# विफल विद्रोह

# प्रकाशक की ओर से—

फ्रांसीसी-भाषा का साहित्य संसार के उच्चतम कोटि के साहित्य का प्रधान अंग है। यूरोप में फ्रांसीसी-भाषा का ज्ञान रक्खे बिना कोई पूर्ण साहित्यिक नहीं समझा जाता। वास्तव में दर्शन-विज्ञान से लेकर उपन्यास-नाटक तक साहित्य की परिभाषा में आ सकनेवाले जितने भी विषय हैं, फ्रांसीसी भाषा उनसे परिपूर्ण है—ललित कलाओं के सम्बन्ध में तो यह कहा जाता है कि संसार की कोई भी भाषा फ्रांसीसी का मुक़ाबला नहीं कर सकती।

यहाँ हम उपन्यासों को ही लेंगे। फ्रांस में जितने धुरन्धर औपन्यासिक हो गये हैं, उनमें अलेग्ज़ैण्डर डूमा, विक्टर ह्यूगो और अनातोल फ्रांस की गणना सर्व-श्रेष्ठों में से है। अलेग्ज़ैण्डर डूमा ने फ्रांस के इतिहास को जो रूप दिया है, उसे पढ़कर उसकी अद्भुत प्रतिभा का क़ायल होना पड़ता है। उसकी कृतियाँ ऐसी विशाल हैं कि उन्हें देखकर आश्चर्य होने लगता है कि एक व्यक्ति के मस्तिष्क से इतना ठोस ऐतिहासिक मसाला मनोरंजक उपन्यास के रूप में किस प्रकार निकला होगा। इन उपन्यासों से यह भी पता चलता है कि डूमा में प्रचुर ऐतिहासिक सामग्री को पचाकर उसे आकर्षक रूप में रखने की कैसी क्षमता थी।

हमने फ्रांसीसी-साहित्य में सब से पहले डूमा के चुने हुए उपन्यासों को प्रकाशित करने का विचार किया है। प्रस्तुत उपन्यास हेनरी तृतीय के शासन-काल की कथा है, जिसमें उनके

पैंतालीस रक्षक सैनिकों की कार्यवाही का विस्तृत वर्णन किया गया है। प्रसंगानुसार इसमे हेनरी तृतीय के दरबारी हँसोड़ महाशय चिको का भी ज़िक्र आया है और उसके अद्भुत कारनामों का विशद विवेचन किया गया है, चिको का जीवन बहुज्ञता का रूपक है। वास्तव मे चिको के कार्य-कलाप ही इस उपन्यास के मुख्य भाग हैं। हमने निश्चय किया है कि चिको का सम्पूर्ण वृत्तान्त देने के लिये हम इसका वह अंश भी प्रकाशित करेंगे, जिसमें चिको ने राजदूत का कार्य सम्पन्न किया है।

—प्रकाशक

# प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक सन् १८४७ ई० में लिखी गयी थी। अलेग्ज़ैण्डर डूमा के सम-कालीन औपन्यासिक श्री जार्ज सैण्ड ने इस रचना की अत्यन्त प्रशंसा की थी और इसे पाँच-छः बार पढकर भी नहीं उकताये थे। इस उपन्यास से ड्यूमा की अद्भुत मेधा और बहुज्ञता का पता लगता है।

डूमा की पुस्तकें केवल उपन्यास ही नहीं होतीं—उनमें ऐतिहासिक सूत्रों का विशद् विवेचन होता है और विश्लेषण इतना पूर्ण और सविस्तर होता है कि लेखक को उपन्यासकार न कहकर इतिहासकार कहने को जी चाहता है। पात्रों के सम्वाद से ही सारी कथा का ऐसा सुन्दर और स्पष्ट दिग्दर्शन हो जाता है कि लेखक को अपनी ओर से विशेष-कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती।

जिस समय की घटना का वर्णन इस उपन्यास में किया गया है, उसी समय से फ्रांस-सम्राट् के विरुद्ध असन्तोष आरम्भ हो गया था और पेरिस में 'संघ' की स्थापना हो गयी थी। यह सच है कि उस समय तक सम्राट्-विरोधी आन्दोलन केवल चुने हुए नागरिकों और राज-परिवार के स्वार्थ-रत व्यक्तियों तक ही परिमित था; किन्तु धीरे-धीरे यह असन्तोषाग्नि बढ़ती गयी और आगे चलकर इतिहास-प्रसिद्ध फ्रांस की राजक्रान्ति हुई, जिसके फल-स्वरूप फ्रांस मे प्रजातंत्र राज्य स्थापित हो गया।

ऐतिहासिक घटना की दृष्टि से इस उपन्यास की एक बहुत बड़ी शृङ्खला है, जो चिको के कार्य-कलाप सम्बन्धी दूसरी पुस्तक मे

भी केवल आंशिक रूप में ही समाप्त होती है; किन्तु ड्यूमा की लेखनी-शैली ऐसी है कि उसके किसी उपन्यास का एक खण्ड पढ़कर भी पाठक निराश नहीं होता।

आशा है कि पाठक ड्यूमा की चमत्कार-पूर्ण लेखनी का नमूना इस उपन्यास में पाकर उसकी अगली कृतियों की भी प्रतीक्षा करेंगे।

# पात्र

हेनरी तृतीय—फ्रांस-सम्राट्।

लुई-डी-लोरिन—फ्रांस-समाज्ञी।

फ्रांसिस, ड्यूक-डी-अंजो—हेनरी तृतीय का भाई।

कैथेराइन-डी-मेडिसी—राजमाता।

चिको—शाही भाँड़ (दूसरा नाम राबर्ट ब्रिकेट)।

एनी, ड्यूक-डी-जायस—जहाजी बेड़े का प्रधान सेनापति।

हेनरी-डी-जायस, काउन्ट-डु-बाश<br>फ्रांसिस कार्डिनल-डी-जायस } उसके भाई।

नोगारे-डी-लावालेट, ड्यूक-डी-एपनों।

काउन्ट-डी-सेण्ट एनाँ।

महाशय-डी-लाइना, पैंतालीस शरीर-रक्षकों का कप्तान।

विकम एर्नाटन-डी-कार्मैंजस<br>महाशय-डी-सेण्ट-मालिन<br>महाशय डी-शालार<br>पडु का-डी-पिंकार्नें<br>पर्टिना-डी-माण्टक्रेबा<br>यूस्टाश-डी-मिराडो<br>हेक्टर-डी-बीरन } पैंतालीस शरीर रक्षकों में से।

महाशय-डी-क्रीलन—फ्रांसिसी गारद के कर्नल।

महाशय-डी-वेर्सी—काहोर स्थित-गढ़ के अधिष्ठाता।

दियाँ-डी-मेरीडोर।

रिमी-डी-हाडोइन।

हास्पिटैलिस के दल का प्रधान।

हेनरी—ड्यूक-डी-गाइज़।

ड्यूक-डी-मेन ।

डचेज़-डी-माण्टपेंसियर, उसकी वहन ।

महाशय-डी-मेनीविले ।

महाशय-डी-क्रूस ।

वसी, लेकलर्क ।

महाशय डी-माल्यूं ।

निकोला पोलेन—पेरिस के कोतवाल का लेफ्टिनेण्ट ।

कौंसिल के प्रेसीडेण्ट व्रिसन ।

महाशय-डी-सालसेड ।

हेनरी-डी-वार्वन—नवार सम्राट् ।

मार्गरिट—नवार-सम्राज्ञी ।

महाशय-डी-टर्नी
महाशय-डी-आविभाक
महाशय डुप्ले-डी-मार्ने
} नवार के दरबारी

मडमोसिल-डी-माण्टमोरेंसी—"लाफोसियस" नवार के राजा की अध्यापिका ।

विलियम आफ़ नसाऊ—आरेंज का युवराज ।

ऐंटवर्प का वर्गो मास्टर ।

गोए—एक फ्लेमिश मल्लाह ।

डाम माडेस्ट गोरेन फ्लोट
मदर यूसियो
मदर जैक
मदर यारोम
मदर पानुर्ज
} जैकोविन मठ के सदस्य ।

मेतर बोनहोम—"कार्नी-डी-एवाण्डैस" सरायवाला।

मेतर फ़ोर्निकन—"बहादुर की तलवार" वाली सराय का मालिक

डेम फ़ोर्निकन—उसकी स्त्री।

लार्डिल-डी-कैवेण्ट्रेड—यूस्टाश-डी-मिराडो की स्त्री।

मिलिटर-डी-कैवेण्ट्रेड—उसका लड़का।

मेतर मिलन<br>जीन फ्रियार्ड } मध्यम श्रेणी के व्यक्ति।

शमीराक—एक चिकित्सक।

# पहला परिच्छेद

—○○○—

## सेंट ऐंटोनी का फाटक

२६ वीं अक्तूबर, १५८५ ई० को सेण्ट ऐंटोनी का फाटक नियमानुसार न खुलकर साढ़े दस बजे तक बन्द रहा। चौथाई घण्टा और बीत जाने पर, तत्कालीन सम्राट् हेनरी तृतीय के बीस लाड़ले स्विस गारदों की टोली इस फाटक से गुज़री और उसके बाद फाटक फिर बन्द कर दिया गया। बाहर निकल जाने के बाद गारद-लोग सड़क के दोनों ओर फैली हुई झाड़ियों के पास खड़े हो गये।

फाटक के बाहर एक बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित हो रही थी, क्योंकि फाटक बन्द हो जाने के कारण पेरिस जानेवाले बहुत से

किसान इधर ही रुक गये थे। ये लोग तीन विभिन्न सड़कों से आ-आकर यहाँ एकत्रित हो रहे थे—कुछ माण्ट्रेइल से, कुछ विंसेंस से और कुछ सेण्टमार से। भीड़ क्षण-क्षण पर बढ़ती जा रही थी। पड़ोस की मठों से साधुओं का झुण्ड उमड़ता चला आरहा था; स्त्रियाँ पलानो पर बैठी नज़र आती थीं और किसान गाड़ियों पर। सब तरह-तरह के न्यूनाधिक आवश्यक प्रश्नों से लगातार काना-फूसी कर रहे थे, साथ ही कुछ लोग ऐसे भी थे, जो क्रोध और शिकायत-भरी आवाज़ से ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे थे।

शहर में आनेवाले लोगों की इस विशाल उत्सुक भीड़ के अतिरिक्त एक खासी भीड़ शहर से बाहर जानेवालों की भी देखने में आ रही थी। ये लोग फाटक की ओर न देखकर क्षितिज की उस दिशा में, जिधर जैकोबिन्स, विंसेन्स और क्राक्स-फाविन की मठें थीं, इस प्रकार नज़र गड़ाये हुए देख रहे थे, जैसे ईसा मसीह के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हों। इस दल में प्रधानतः मध्यम श्रेणी के लोग थे, जिन्होंने गरम कपड़े ओढ़ रक्खे थे, क्योंकि एक तो मौसिम ठण्ड का था और दूसरे उत्तर-पूर्व से हवा के झोंके ऐसी तेज़ी से चल रहे थे कि पेड़ों के बचे खुचे-पके और पीले पत्तों को गिराकर दम लेते प्रतीत होते थे।

इन मध्यम श्रेणी के लोगों में से तीन आदमी परस्पर बात-चीत कर रहे थे—दो बातें कर रहे थे, और तीसरा सुन रहा

था, वल्कि कहना तो यों चाहिए कि तीसरा विसेन्स की ओर ऐसा तन्मय होकर देख रहा था कि दोनों की बातचीत की ओर उसका ध्यान नहीं जाता प्रतीत होता था। हमें उस तीसरे व्यक्ति की ओर ध्यान देना चाहिए। वह ऐसा आदमी था कि तनकर खड़े होने पर अवश्य ही लम्बे क़द का दिखायी देता; किन्तु इस समय तो उसके लम्बे पाँव झुके हुए थे, और उसकी बाहे, जो अनुपात में छोटी नहीं थीं, मुड़कर छाती से लगी हुई थीं। वह घेरे पर झुककर खड़ा हुआ था, जिससे उसका चेहरा क़रीब-क़रीब अदृश्य था, और उसके आगे उसका हाथ भी इतना उठा हुआ था कि जिससे मुँह छिपा हुआ मालूम पड़ता था। उसके बगल में एक नाटे क़द का आदमी ऊँचाई पर बैठा हुआ एक लम्बे क़द के आदमी से बातें कर रहा था, जो उस ऊँचाई की ढाल पर बार-बार फ़िसल रहा था और हर बार फिसलने के बाद अपने पार्श्ववर्ती व्यक्ति के अंगरखे का बटन पकड़ लेता था।

"हाँ, मैटर मिटन," नाटे क़द के आदमी ने लम्बे से कहा—"मैं कहता हूँ, सालसेड के चबूतरे के चारों ओर लाखों आदमियों की भीड़ होगी—कम-से-कम लाखों की। बग़ैर गिने ही देखो, प्लेस-डी-ग्रेव पर कितने आदमी आ गये हैं, पेरिस के विभिन्न मुहल्लों से कितने आदमी रास्ते में हैं, और कितने यहाँ पहुँच गये हैं; सोलह दरवाज़ों में से केवल इस एक दरवाज़े का यह हाल है।"

"लाखों! यह बहुत बड़ी तादाद है, फ़्रियार्ड," लम्बे आदमी

किसान इधर ही रुक गये थे। ये लोग तीन विभिन्न सड़कों से आ-आकर यहाँ एकत्रित हो रहे थे—कुछ माण्ट्रेइल से, कुछ विंसेंस से और कुछ सेण्टमार से। भीड़ क्षण-क्षण पर बढ़ती जा रही थी। पड़ोस की मठों से साधुओं का झुण्ड उमड़ता चला आरहा था; स्त्रियाँ पलानो पर बैठी नज़र आती थीं और किसान गाड़ियों पर। सब तरह-तरह के न्यूनाधिक आवश्यक प्रश्नों से लगातार काना-फूसी कर रहे थे, साथ ही कुछ लोग ऐसे भी थे, जो क्रोध और शिकायत-भरी आवाज़ से ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे थे।

शहर में आनेवाले लोगों की इस विशाल उत्सुक भीड़ के अतिरिक्त एक ख़ासी भीड़ शहर से बाहर जानेवालों की भी देखने में आ रही थी। ये लोग फाटक की ओर न देखकर क्षितिज की उस दिशा में, जिधर जैकोबिन्स, विंसेन्स और क्राक्स-फ़ाबिन की मठें थीं, इस प्रकार नज़र गड़ाये हुए देख रहे थे, जैसे ईसा मसीह के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हों। इस दल में प्रधानतः मध्यम श्रेणी के लोग थे, जिन्होंने गरम कपड़े ओढ़ रक्खे थे, क्योंकि एक तो मौसिम ठण्ड का था और दूसरे उत्तर-पूर्व से हवा के झोंके ऐसी तेज़ी से चल रहे थे कि पेड़ों के बचे खुचे-पके और पीले पत्तों को गिराकर दम लेते प्रतीत होते थे।

इन मध्यम श्रेणी के लोगों में से तीन आदमी परस्पर बात-चीत कर रहे थे—दो बातें कर रहे थे, और तीसरा सुन रहा

था, वल्कि कहना तो यों चाहिए कि तीसरा विसेन्स की ओर ऐसा तन्मय होकर देख रहा था कि दोनों की बातचीत की ओर उसका ध्यान नहीं जाता प्रतीत होता था। हमें उस तीसरे व्यक्ति की ओर ध्यान देना चाहिए। वह ऐसा आदमी था कि तनकर खड़े होने पर अवश्य ही लम्बे क़द का दिखायी देता; किन्तु इस समय तो उसके लम्बे पाँव झुके हुए थे, और उसकी बाहें, जो अनुपात में छोटी नहीं थीं, मुड़कर छाती से लगी हुई थीं। वह घेरे पर झुककर खड़ा हुआ था, जिससे उसका चेहरा क़रीब-क़रीव अदृश्य था, और उसके आगे उसका हाथ भी इतना उठा हुआ था कि जिससे मुँह छिपा हुआ मालूम पड़ता था। उसके बग़ल में एक नाटे क़द का आदमी ऊँचाई पर बैठा हुआ एक लम्बे क़द के आदमी से बातें कर रहा था, जो उस ऊँचाई की ढाल पर बार-बार फ़िसल रहा था और हर बार फिसलने के बाद अपने पार्श्ववर्ती व्यक्ति के अंगरखे का बटन पकड़ लेता था।

"हाँ, मैटर मिटन," नाटे क़द के आदमी ने लम्बे से कहा—"मैं कहता हूं, सालसेड के चबूतरे के चारों ओर लाखों आदमियों की भीड़ होगी—कम-से-कम लाखों की। बग़ैर गिने ही देखो, प्लेस-डी-ग्रेव पर कितने आदमी आ गये हैं, पेरिस के विभिन्न मुहल्लों से कितने आदमी रास्ते में हैं, और कितने यहाँ पहुँच गये हैं; सोलह दरवाज़ों में से केवल इस एक दरवाज़े का यह हाल है।"

"लाखों! यह बहुत बड़ी तादाद है, फ़्रियार्ड," लम्बे आदमी

ने जवाब दिया—"तुम निश्चय मानो कि कितने ही आदमी मेरी तरह चुपचाप यहीं खड़े रहेंगे और शोर के डर के मारे उस कोने में खड़े हुए उस आदमी को देखने नहीं जायँगे।"

"मैटर मिटन," नाटे आदमी ने कहा—"सावधान रहो! तुम राजनीतिक बात कर रहे हो। मुझे निश्चय है कि किसी तरह की गड़बड़ न होगी।" फिर यह देखकर कि उसके साथी ने सन्दिग्ध भाव से सिर हिला दिया, वह लम्बे पाँवों और लम्बी बाहोंवाले आदमी की ओर रुख़ करके बोला—"मैं ठीक कह रहा हूँ न, महाशय?"

"क्या?" सम्बोधित व्यक्ति ने इस प्रकार कहा, जैसे उसने उक्त बात सुनी ही न हो।

"मैं यह कह रहा हूँ कि आज प्लेस-डी-ग्रेव में कुछ नहीं होगा।"

"मैं समझता हूँ, आपका ख़याल ग़लत है, और सालसेड को मृत्युदण्ड हो जायगा।" लम्बी बाहोंवाले आदमी ने धीरे से जवाब दिया।

"हाँ, बेशक; पर मेरा मतलब यह है कि इसके सम्बन्ध में कोई शोर नहीं होगा।"

"वे अपने घोड़ों पर चाबुक बरसायेंगे, तो उसका शोर तो होगा ही।"

"आपने नहीं समझा; 'शोर' से मेरा मतलब बखेड़े से है। अगर ऐसा होने की सम्भावना होती, तो सम्राट् अपने लिये वहाँ

जगह न वनवाते, न सम्राज्ञी-डुच के लिये होटल-डी-विले की जगह उपयुक्त समझी जाती।"

"क्या सम्राटों को कभी मालूम रहता है कि बखेड़ा कब होनेवाला है?" तीसरे ने सिर हिलाकर दया-सी दिखाते हुए जवाब दिया।

"ओ हो!" मैटर मिटन ने अपने साथी से गुप्त रूप से कहा—"यह आदमी अनोखे ढंग से बात कर रहा है। तुम जानते हो, यह कौन है?"

"नहीं।"

"तो फिर इससे बात क्यों करते हो? तुम ग़लती कर रहे हो। मैं नहीं समझता कि यह बात करना चाहता है।"

"तो भी मुझे तो ऐसा मालूम होता है," फ़ियार्ड ने इतने ज़ोर से कहा कि जिससे अपरिचित भी सुन सके—"कि विचार-विनिमय संसार के सर्वश्रेष्ठ सुखों में से है।"

"हाँ, पर उन्हीं के साथ, जिन्हें हम अच्छी तरह जानते हों।" मैटर मिटन ने जवाब दिया।

"पर जैसा कि धर्माचार्य लोग कहा करते हैं, क्या सारे मनुष्य भाई-भाई नहीं हैं?"

"आरम्भ में थे, किन्तु जिस जमाने में हम लोग रह रहे हैं, यह सम्बन्ध बिल्कुल ढीला हो चला है। इसलिये अगर तुम्हें बातें करनी ही हों, तो अपरिचित को अकेला छोड़कर मुझसे करो।"

"पर मैं तो तुम्हें इतनी अच्छी तरह जानता हूं कि मुझे मालूम है कि तुम क्या जवाब दोगे; यह अपरिचित तो मुझे नयी बातें बतला सकता है।"

"चुप! वह सुन रहा है।"

"अच्छा ही है; शायद जवाब भी देगा। तो महाशय, आपका क्या खयाल है," उसने अपरिचित की तरफ़ रुख़ करके कहा—"बखेड़ा होगा?"

"मेरा? मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही।"

"नहीं; पर मेरा ख़याल है कि आप ऐसा समझते हैं।"

"आपने किस आधार पर ऐसा अनुमान लगा लिया? आप कोई जादूगर है, महाशय फ़्रियार्ड?"

"क्यों, यह मुझे जानता है!"

"मैंने तुम्हारा नाम लेकर दो-तीन बार पुकारा जो था?" मिटन ने कहा।

"ओह, सच है! अच्छा, चूँकि यह मुझे जान गया है, इसलिये शायद जवाब देगा। अब मेरा विश्वास है कि तुम मुझसे सहमत हो, अन्यथा तुम उस जगह होते, पर तुम वहाँ न जाकर यही खड़े हो।"

"लेकिन, महाशय फ़्रियार्ड, चूँकि मैं जो बात सोचता हूँ, तुम उसके विपरीत समझते हो, इसलिये मैं पूछता हूं कि तुम प्लेस-डी-ग्रेव पर क्यों नही गये? मैंने समझा था कि वह दृश्य सम्राट् के सभी दोस्तों को सुखदायक मालूम होगा। शायद तुम

जवाब दोगे कि तुम सम्राट् के दोस्तों में से न होकर महाशय डी-गाइज़ के मित्रों में से हो, और यहाँ लारेन्स के इन्तज़ार में खड़े हो, जिनके सम्बन्ध में यह खबर है कि वह शीघ्र ही पेरिस में घुसकर महाशय-डी-सालसेड को छुड़ानेवाले हैं।"

"नहीं जी," नाटे-आदमी ने इस बात से प्रत्यक्षतः डरकर जवाब दिया—"मैं तो अपनी स्त्री निकोले फ़्रियार्ड का इन्तजार कर रहा हूं, जो जैकोबिन्स की मठ से चौबीस मेजपोश लाने गयी है—उसे माडेस्ट गारेनफ़्लोट, एवे* की धोबिन होने का सौभाग्य प्राप्त है।

"देखो," मिटन ने चिल्लाकर कहा—"देखो, वह लोग क्या कर रहे हैं !"

महाशय फ़्रियार्ड ने अपने दोस्त की उंगली से बतायी हुई दिशा में देखा, तो उन दरवाज़ों के अतिरिक्त, जिनके बन्द होने के कारण पहले ही से उत्तेजना फैल रही थी, एक और दरवाज़ा बन्द किया जारहा था, जिसके सामने स्विस गारदों का एक दल खड़ा था। "यह क्यों ! और फाटक भी बन्द हो रहे हैं।" उसने चिल्लाकर कहा।

"मैंने तुमसे क्या कहा था ?" मिटन ने कहा।

"पर यह अजीब बात है न ?" अपरिचित आदमी ने मुस्कराकर कहा।

इस नये प्रबन्ध को देखकर भीड़ से बहुत देर तक आश्चर्य-

---

* विशेष वस्त्र पहनने का अधिकारी।

पूर्ण आवाज़ें आती रहीं, और कुछ लोग भय से चिल्ला उठे।

"सड़क ख़ाली करो! पीछे हटो!" एक अफ़सर ने चिल्लाकर कहा।

यह सैनिक युक्ति बिना किसी कठिनाई के नहीं सफल हुई; गाड़ियों में बैठे और घोड़ों पर चढ़े हुए लोग पीछे हटने की कोशिश करने लगे और ऐसा करते समय उन्होंने अपने पीछे-वाली भीड़ को कुचल-सा डाला। स्त्रियाँ कराहने और पुरुष कोसने लगे, जो लोग भाग सके, वह दूसरों को ढकेल-ढकालकर भाग खड़े हुए।

"लारेन्स! लारेन्स!" शोरोगुल में से एक ऊँची आवाज़ सुनायी पड़ी।

"ओह," मिटन ने काँपते हुए चिल्लाकर कहा—"हम लोग भाग चलें!"

"भाग चले! कहाँ?" फ़्रियार्ड ने कहा।

"इस घेरे में।" मिटन ने झाड़ी को पकड़कर (जिससे उसके हाथ में काँटे चुभ गये) कहा।

"इस घेरे में? यह आसान काम नहीं है। कोई रास्ता तो है नहीं, और यह झाड़ी मैं फाँद नहीं सकता—इसकी उँचाई मेरे सिर से भी ज़्यादा है।"

"मैं तो कोशिश करूँगा।" मिटन ने नयी तदबीर सोचते हुए जवाब दिया।

"ओह, जरा ध्यान रक्खो, देवी ! तुम्हारे गधे का खुर मेरे पैर पर आगया।" फ्रियार्ड ने घबराकर कहा--"महाशयजी, सँभालिये, आपका घोड़ा लात मारने जारहा है।"

मैटर मिटन झाड़ी कूदने की कोशिश कर रहा था, और फ्रियार्ड घेरे में निकल भागने का रास्ता खोज रहा था, पर उनके पासवाला आदमी अपनी लम्बी टाँग फैलाकर झाड़ी को इस सरलता से लाँघ गया, जैसे कोई आदमी घोड़े पर चढ़ने के लिये उछलता है। आखिर मैटर मिटन ने भी लम्बे आदमी का अनुकरण किया, किन्तु झाड़ी के काँटों से उसके हाथ और कपड़े छिद गये। किन्तु बेचारा फ्रियार्ड पूरी कोशिश करने पर भी सफल नहीं हो सका, और अन्त में अपरिचित ने उसकी ओर अपनी लम्बी बाहें फैलाकर उसके अँगरखेका कालर पकड़ा और उसे दूसरी तरफ़ खींच लिया।

"ओह, महाशय," फ्रियार्ड ने ज़मीन पर पहुँच जाने के बाद कहा—"अपनी क़सम, आप तो वास्तविक हरकुलिज* हैं। आपका नाम क्या है, महाशयजी ?"

"मुझे ब्रिकेट—राबर्ट ब्रिकेट कहते हैं।"

"आपने मुझे बचा लिया, महाशय ब्रिकेट ! मेरी स्त्री आपको धन्यवाद देगी। पर, हे भगवान् इस भीड़ में तो वह घुटकर

*रोमन गाथाओं में हरकुलिज़ को 'बल का देवता' माना गया है।

मर ही जायगी। ओह, निगोड़े स्विसो, तुम्हें प्रजा को कुचलना ही आता है!"

वह बोल ही रहा था कि उसके कन्धे पर किसी ने भारी हाथ रक्खा, और उसने पीछे मुड़कर देखा, तो वह एक स्विस था। वह फ़ौरन वहाँ से भाग खड़ा हुआ—मिटन भी उसके पीछे हो लिया। तीसरा आदमी चुपचाप हँस पड़ा। फिर स्विस की ओर रुख़ करके उसने पूछा—"क्या लारेन्स आरहे हैं?"

"नहीं।"

"तो फिर उन्होंने दरवाजा क्यों बन्द कर दिया? मैं इस बात को नहीं समझ सका।"

"आपको समझने की ज़रूरत क्या है।" स्विस ने हँसते हुए कहा।

# दूसरा परिच्छेद

—:❁:—

## सेंट एंटोनी के दरवाज़े के बाहर

नागरिकों के एक दल की जन-संख्या काफ़ी बड़ी थी। उन्होंने चार-पाँच तगड़े घुड़सवारों को घेर रक्खा था, जो फाटक बन्द होने पर बहुत क्षुब्ध प्रतीत हो रहे थे, क्योंकि वे चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे—"फाटक! फाटक!"

राबर्ट ब्रिकेट इस दल की ओर बढ़ा और सब से अधिक ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगा—"फाटक! फाटक!"

घुड़सवारों में से एक ने यह सुनकर उसकी ओर रुख़ करके कहा—"क्या यह शर्म की बात नहीं है, महाशय, कि आप दिन-दहाड़े फाटक इस प्रकार बन्द कर दें, जैसे स्पेनी या अँग्रेज़ पेरिस को घेरने के लिये आ रहे हों?"

रावर्ट ब्रिकेट ने बोलनेवाले की ओर ध्यान से देखा, जो पैंतालीस वर्ष की उम्र का था और उन सब घुड़सवारों का सरदार मालूम होता था। "हाँ महाशय, आप ठीक कह रहे हैं; पर क्या मैं यह पूछने का साहस कर सकता हूँ कि उनकी इस चौकसी का उद्देश्य क्या है ?" उसने पूछा।

"उन्हें डर है कि उनके साल्सेड को कोई खा जायगा।"

"खुदा की क़सम," एक और आवाज़ आयी—"यह तो बुरा भोजन होगा।"

रावर्ट ब्रिकेट ने वक्ता की ओर रुख़ किया (जिसके स्वर में दृढ़ गैस्कनी* उच्चारण था) और बीस-पच्चीस वर्ष की उम्र के एक युवक को पहले बोलनेवाले (घुड़सवार) के घोड़े की दुमची† पर हाथ रक्खे देखा। वह नंगे सिर था; शायद हुल्लड़ में उसकी टोपी कहीं गिर गयी थी।

"लेकिन लोग तो कहते हैं," ब्रिकेट ने कहा—"कि साल्सेड का सम्बन्ध महाशय-डी-गाइज़ से है—"

"वाह ! लोग कहते हैं ?"

"तो आप इस पर विश्वास नहीं करते ?"

"बिल्कुल नहीं," घुड़सवार ने कहा—"निस्सन्देह, अगर ऐसा होता, तो ड्यूक उसे लाने न देते, या किसी भी हालत में

---

* गैस्कन (स्थान विशेष) का।

† घोड़े के पुट्ठे पर रस्सीनुमा चीज़ जो घोड़े की दुम के नीचे से होकर काठी में मिली होती है।

यह न स्वीकार करते कि विना उसे बचाने की कोशिश किये ही उसके हाथ-पावँ वांधकर ब्रुसेल्स से पेरिस लाने दें।"

"उसे छुड़ाने की कोशिश," ब्रिकेट ने जवाव दिया—"यह तो और भी ख़तरनाक सावित हो सकती थी, क्योंकि चाहे उसमें सफलता होती या असफलता, इससे ड्यूक पर सन्देह होता कि उन्होने ड्यूक-डी-अंजो के विरुद्ध षड्यंत्र रचा है।"

"मुझे निश्चय है कि महाशय-डी-गाइज़ इस विचार से रुक सकनेवाले नहीं थे। चूंकि उन्होंने सालसेड का पक्ष-समर्थन नहीं किया, इसलिये यह निश्चय है कि सालसेड उनके आदमियों में से नहीं है।"

"माफ़ कीजिएगा, महाशय, अगर मैं इस वात को हठ-पूर्वक कहूँ; क्योंकि मैं यह बात स्वयं नहीं बना रहा हूँ—मालूम होता है कि सालसेड ने अपराध स्वीकार कर लिया है।"

"कहाँ—जजों के सामने ?"

"नहीं, महाशय; मार के सामने।"

"लोग कहते है कि उन्होंने अपराध स्वीकार कर लिया; किन्तु वे यह नहीं बताते कि उन्होंने कहा क्या है।"

"मुझे फिर माफ़ कीजिएगा, लोग यह भी बताते हैं।"

"उसने क्या कहा है?" घुड़सवार ने अधीर होकर ज़ोर से पूछा—"आप वड़े जानकार मालूम होते हैं, उसके शब्द क्या थे ?"

"मैं बड़ा जानकार बनने का गर्व नहीं कर सकता,

क्योंकि इसके विपरीत मैं तो आपसे कुछ जानकारी प्राप्त करना चाहता हूँ।"

"सुनाइये," सवार ने अधीरतापूर्वक कहा—"आप कहते हैं कि सालसेड के शब्द तक मालूम हो गये हैं; वे क्या शब्द हैं? बोलिए।"

"मैं इसे प्रमाणित नहीं कर सकता कि ये शब्द उसीके हैं।" ब्रिकेट ने जवाब दिया। वह घुड़सवार को सताने में मज़ा-सा लेता मालूम होता था।

"अच्छा तो वही (शब्द) सुनाइये, जिन्हें लोग उसके नाम पर कह रहे हैं।"

"लोग कहते हैं कि उसने यह बात स्वीकार कर ली है कि उसने महाशय डी-गाइज़ की ओर से षड्यंत्र रचा था।"

"सम्राट् के विरुद्ध न?"

"नहीं; ड्यूक-डी-अंजो के विरुद्ध।"

"अगर उसने यह अपराध स्वीकार कर लिया कि—"

"क्या?"

"वह डरपोक है!" सवार ने भवें चढ़ाकर कहा।

"महाशय, जूते और खपीच* के बल पर बहुत-सी बातें स्वीकार करवा ली जाती हैं।"

"अफ़सोस! बात सच है, महाशय।"

"वाह!" गैस्कन ने टोककर कहा—"जूते और खपीच

*नाख़ून में बाँस या लोहे की कील चुभोकर दुःख पहुँचाना।

वाहियात बातें हैं; अगर सालसेड ने यह स्वीकार कर लिया, तो वह बेईमान था, साथ ही उसका रक्षक भी।"

"ज़ोर से कहिए, महाशय।" सवार ने कहा।

"जैसी मेरी इच्छा है, बोलता हूँ; जिन्हें यह नापसन्द है, उनकी मिट्टी-पलीद है।"

"और धीरे से।" एक अत्यन्त कोमल और आज्ञा-सूचक स्वर ने कहा। त्रिकेट बोलनेवाले का पता लगाने का व्यर्थ प्रयत्न करने लगा।

सवार मन-ही-मन अपने को दबाने की कुछ चेष्टा करने के बाद गैस्कन से धीमे स्वर में बोला—"आप जिनकी बातें कर रहे हैं, उन्हें जानते हैं?"

"सालसेड को?"

"हाँ।"

"बिल्कुल नहीं।"

"और ड्यूक-डी-गाइज को?"

"नहीं।"

"और ड्यूक-डी-अलेंकों को?"

"एकदम नहीं।"

"आप जानते हैं कि महाशय-डी-सालसेड बड़ा वीर पुरुष है?"

"अच्छा ही है; वह वीरतापूर्वक मरेगा।"

"और यह भी जानते हैं कि जब ड्यूक-डी-गाइज़ षड्यंत्र रचना चाहते हैं, तो वह अपने ही लिये षड्यंत्र रचते हैं?"

"मुझे इससे क्या ?"

"और यह भी कि ड्यूक-डि-अंजो ने, जो पहले महाशय-डी-अलेंकों थे, उन सबको या तो मार डाला, या मरवा डालने की स्वीकृति दे दी, जो उसमें दिलचस्पी रखते थे—लामोल, कोकोना, बसी और अन्य लोगों को ?"

"मैं इसकी पर्वाह नहीं करता।"

"क्या ! आप पर्वाह नहीं करते ?"

"मेनीविले ! मेनीविले !" उसने उसी स्वर ने कहा।

"निश्चय ही, मेरे लिये यह कुछ भी नहीं है। मैं केवल एक बात जानता हूँ। आज ही—अभी सुबह ही को मुझे पेरिस में काम है; और उस पागल सालसेड के मारे उन्होंने दरवाज़े ही बन्द कर दिये हैं। सालसेड तो दुष्ट है, और उसके जिन साथियों ने फाटक बन्द करवा दिये हैं, वे भी।"

इसी समय तुरही ही आवाज़ सुनायी पड़ी। सड़क का मध्य-भाग स्विस गारदों ने ख़ाली कर दिया था। उस पर एक ढिंढोरा करनेवाला फूलदार कुर्त्ता (जिसके सीने पर पेरिस की सेना का राजकीय चिह्न लगा था) पहने दिखायी दिया। वह अपने हाथ में लिये हुए काग़ज़ में से निम्नलिखित घोषणा पढ़ रहा था—

"पेरिस और उसके आस-पास के सज्जन निवासियों को सूचित किया जाता है कि एक घण्टे के लिये नगर के फाटक बन्द किये जायँगे और इस समय के अन्दर कोई

नगर के भीतर-बाहर नहीं आ-जा सकेगा। यह घोषणा श्रीमान् सम्राट् की इच्छानुसार शहर-कोतवाल ने कराई है।"

भीड़ ने इस पर बड़ा असन्तोष प्रकट किया और लोग लगे ज़ोर-ज़ोर से शोर मचाने। किन्तु ढिंढोरिया इसकी पर्वाह नहीं करता दीखता था। अफ़सर ने जनता को शान्त रहने का हुक्म दिया, और जब लोग शान्त हुए, तो ढिंढोरिये ने फिर चिल्लाकर पढ़ा—

"जिन लोगों के पास सरकारी चिह्न हैं, या जो राज-पत्र या राजाज्ञा द्वारा बुलाये गये हैं, उन पर यह नियम नहीं लागू होगा। यह आज्ञा होटल-डी-प्रिवोट-डी-पेरिस से २५ अक्तूबर, १५८५ ई० को प्रकाशित हुई।"

ढिंढोरिये ने मुश्किल से घोषणा पढ़कर समाप्त की थी, कि फ़ौजी सिपाहियों की क़तार के पीछे जनता साँप की तरह फुफ-कारने लगी। "इसका क्या मतलब है?" लोगों ने चिल्लाकर कहा।

"ओह! यह हम लोगों को शहर में न जाने देने के लिये एक चाल है," सवार ने अपने साथी से धीमी आवाज़ में कहा—"ये गारदवाले, यह ढिंढोरिया, ये किवाड़ और ये तुर-हियाँ, सब हमारे लिये हैं। हमें इनपर गर्व करना चाहिए।"

"जगह दो!" प्रधान अफ़सर ने चिल्लाकर कहा—"जिन लोगों को जाने का अधिकार है; उन्हे आगे बढ़ने के लिये जगह दो!"

"खुदा की क़सम! मैं जानता हूँ, कौन जायगा, और कौन बाहर रक्खा गया है!" खाली जगह में कूदते हुए गैस्कन ने कहा।

वह बोलनेवाले अफ़सर के पास सीधे पहुँच गया, जो कुछ देर तक उसकी ओर चुपचाप देखता रहा और फिर बोला—"आपकी टोपी खो गयी मालूम पड़ती है, महाशय?"

"जी, हाँ।"

"भीड़ में खो गयी?"

"नहीं, मुझे अभी-अभी अपनी प्रियतमा का एक पत्र मिला था, और यहाँ से लगभग एक मील की दूरी पर नदी के पास मैं उसे पढ़ रहा था। हवा के झोंके से मेरा पत्र और मेरी टोपी—दोनों चीज़ें उड़ गयीं। मैं टोपी की पर्वाह न कर पत्र को पकड़ने के लिये दौड़ा, यद्यपि मेरी टोपी पर हीरा जड़ा था। मैंने पत्र पकड़ लिया, पर टोपी हवा के साथ नदी की बीच-धारा में जा गिरी। किसी ग़रीब को मिलेगी, उसकी तक़दीर खुल जायगी—अच्छा ही हुआ!"

"इसीलिये आपके पास टोपी नहीं रही?"

"पेरिस में तो बहुतेरी टोपियाँ हैं! मैं एक और बढ़िया-सी ख़रीद लूँगा, और उसमें पहले हीरे से दुगुना बड़ा हीरा जड़वा लूँगा।"

अफ़सर ने धीरे से सिर हिलाकर कहा—"आपके पास कार्ड है?"

"अवश्य है—बल्कि एक की जगह दो हैं।"

"एक ही काफ़ी है, अगर वह असली हो।"

"पर यह नक़ली नहीं हो सकता नहीं! क्या मैं महाशय-डी-लाइना से बातें कर रहा हूँ?"

"सम्भव है।" अफ़सर ने शान्त-भाव से कहा। वह इस परिचय से आकर्षित नहीं मालूम होता था।

"महाशय-डी-लाइना; वही हमारा देश-भाई?"

"मैं नहीं कह सकता।"

"वही मेरा चचेरा भाई?"

"ठीक! आपका कार्ड?"

"यह रहा।" गैस्कन ने बढ़िया तरीक़े से कटा हुआ आधा कार्ड निकाला।

"मेरे पीछे-पीछे आइये।" लाइना ने कार्ड की ओर देखते हुए कहा—"और अगर कोई आपका साथी हो, तो हम लोग उसे भी प्रवेश की आज्ञा दे देंगे।"

गैस्कन अफ़सर के पीछे हो लिया। उसके पीछे-पीछे पाँच और भले-मानस भी आगे बढ़े। पहले ने एक ऐसी शानदार बख़्तर पहन रक्खी थी कि मालूम होता था, यह आश्चर्य-जनक चीज़ सेलिनी के हाथ की कारीगरी है। तो भी चूँकि इस (बख़्तर) की बनावट कुछ पुराने ढंग की थी, इसलिये उसकी विशेषता पर लोग प्रशंसा करने के बजाय हँसते थे, और यह सच है कि इस बख़्तर-धारी के शरीर पर का अन्य पहरावा

बस्तर के साथ मेल नहीं खाता था। दूसरा आदमी लंगड़ा था और उसके पीछे एक सफ़ेद बालोंवाला नौकर-सा था, जो संकोपंज़ा का हरकारा मालूम होता था। ( उसका मालिक डन क्विस्सो का नौकर मालूम होता था ) तीसरे की गोद में एक दस महीने का बच्चा था और उसके पीछे एक स्त्री थी, जिसने अपनी चमड़े की पेटी जोर से पकड़ रक्खी थी और दो और बच्चे, जो क्रमशः चार और पाँच वर्ष के थे, उसके दामन पकड़े हुए थे। चौथा आदमी एक बड़ी तलवार लिये हुए था, और पाँचवाँ, जो इस क़तार का आखिरी आदमी था, एक सुन्दर युवक था, जो एक काले घोड़े पर सवार था। औरों के साथ देखने पर वह राजा-सा जंचता था। आगे जानेवालों की शृङ्खला में बंधे रहने के विचार से उसे बाध्यतः धीरे-धीरे आगे बढ़ना पड़ रहा था। यकायक उसे मालूम हुआ कि कोई उसकी तलवार का म्यान खींच रहा है, तो वह पीछे घूम पड़ा और एक छरहरे वदन के सुन्दर युवक को पास खड़े देखा, जिसके बाल काले और आँखें चमकीली थीं।

"आप क्या चाहते हैं, महाशय ?" सवार ने पूछा।

"एक कृपा, महाशय।"

"कहिए; पर जल्दी कीजिए, क्योंकि मुझे आगे जाना है।"

"मैं शहर में प्रवेश करना चाहता हूं, महाशय; एक अत्यावश्यक कार्य से मेरा वहाँ पहुंचना ज़रूरी है। आप अकेले

हैं, और आपके रोबदाब से मालूम होता है कि आप एक ख़वास को साथ ले चल सकते है।"

"तो फिर?"

"मुझे साथ ले चलिए; मैं आपका ख़वास बन जाऊँगा।"

"धन्यवाद; पर मैं किसी से सेवा नहीं लेना चाहता।"

"मुझसे भी नहीं?" युवक ने सवार की ओर ऐसी विलक्षण दृष्टि से देखा कि अब तक पूर्णतः गम्भीर बने हुए सवार का हृदय पिघलने लगा।

"मेरा मतलब यह था कि मैं अपने साथ किसी को सेवक के रूप मे नहीं ले चल सकता।"

"हाँ, मैं जानता हूँ कि आप कोई धनाढ्य व्यक्ति नहीं हैं, महाशय एर्नाटन-डी-कार्मेंजस।" युवक ख़वास ने कहा। सवार चौंक उठा, पर वह लड़का बोलता ही गया—"इसीलिये तो मैं कोई मजदूरी नही माँगता; बल्कि उल्टे आपको, यदि आप स्वीकार करेंगे, तो मेरी इस सेवा के बदले सौगुनी रक़म देदी जायगी। मेरी प्रार्थना है कि अपने साथ मुझे भी अन्दर आ जाने दीजिए, और यह भी याद रखिए, कि आज जो आपसे प्रार्थना कर रहा है, वह कभी आज्ञा देने की हैसियत रखता था।" फिर उस फाटक की ओर जाती हुई क़तार की तरफ़, जिसका ऊपर ज़िक्र किया गया है, घूमकर नवयुवक ने दूसरे आदमी से धीरे से कहा—"मैं घुस चलूँगा; यह बहुत ज़रूरी है। पर मेनीविले, आप से कुछ हो सके, तो कोशिश कीजिए।"

"आपका घुस जाना ही सब कुछ नही है," मेनीविले ने कहा—"आवश्यकता तो इस बात की है कि वह आपको देख ले।"

"घबराइये नहीं; जहाँ मैं अन्दर पहुँचा, वह मुझे देखे बिना नही रहेगा।"

"वह सङ्केत न भूलें ?"

"मुँह पर दो उँगलियाँ, यही न ?"

"हाँ; आप सफल हों !"

"अच्छा, खवास मास्टर," काले घोड़े के सवार ने पुकार कर कहा—"तैयार हो न ?"

"जी हाँ।" कहकर वह कूदकर सवार के पीछे जा बैठा, जो शीघ्र ही आगे जाते हुए दोस्तों में जा मिला। वे लोग अपने-अपने कार्ड दिखाकर फाटक के अन्दर घुसने का अधिकार प्रमाणित कर रहे थे।

"धत्तेरे की !" रावर्ट ब्रिकेट ने कहा—"या तो ये सभी गैस्कन सिद्ध होंगे, या फिर मेरा सर्वनाश होगा।"

---

## तीसरा परिच्छेद

—○—

### परीक्षा

कार्डों की परीक्षा का कार्य इस प्रकार हो रहा था कि प्रवेश पाने के लिये आनेवालों के आधे कार्डों का मिलान अफ़सर के पासवाले शेष आधे कार्डों के साथ किया जा रहा था।

गैस्कन नंगे-सिर सबसे पहले पहुँचा।

"आपका नाम ?" लाद्ना ने पूछा।

"मेरा नाम, महाशय ? यह तो कार्ड पर लिखा हुआ है, साथ ही कुछ और भी लिखा है।"

"कोई हर्ज नहीं, आपका नाम ?" अफ़सर ने अधीरतापूर्वक दुहराया—"आप अपना नाम नहीं जानते ?"

"जानता हूँ, और अगर मैं भूल जाता, तो आपको बतला देना चाहिए था, क्योंकि हम दोनों देश-भाई ही नहीं, परस्पर चचेर भाई भी हैं।"

"नाम बोलिए! यह तो हुज्जत है। मेरे पास नाम याद करने के लिये समय नहीं है।"

"अच्छा, मुझे पड़ुका-डी-पिंकार्ने कहते हैं।"

इस पर लाइना ने कार्ड पर नज़र डालकर पढ़ा—"पड़ुका-डी-पिंकार्ने, २६ अक्तूबर, १५८५, ठीक दोपहर के समय। सेण्ट एँटोनी का फाटक।"

"अच्छा; ठीक है, अन्दर जाइए।" उसने कहा—"अब आप आइये।" उसने दूसरे से कहा।

बख्तर-वाला आदमी आगे बढ़ा।

"आपका कार्ड ?" लाइना ने कहा।

"क्या! महाशय, क्या आप अपने पुराने दोस्त के उस लड़के को ही नहीं जानते, जिसे आपने बीसों बार अपने घुटनों पर खिलाया है ?"

"नहीं।"

"मैं पर्टिना-डी-माण्टक्रेबा हूं;" युवक ने आश्चर्य-पूर्वक जवाब दिया—"क्या आप अब भी नहीं पहचान सके ?"

"जब मैं नौकरी पर होता हूं, तो किसी को नहीं पहचानता। आपका कार्ड, महाशय ?"

बख्तर-वाले युवक ने अपना कार्ड उसके हाथ पर रख दिया।

"अच्छा, जाइये !" लाइना ने कहा ।

अब तीसरे की बारी आयी और उसका कार्ड भी उपरोक्त ढंग से माँगा गया । उसने बकरे के चमड़ेवाली जाकेट की जेब में हाथ डाला, पर व्यर्थ; वह गोद के बच्चे के बोझ से ऐसा दब रहा था कि कार्ड उसके हाथ नहीं आया ।

"आप इस बच्चे को लेकर क्यों वाहियात भटक रहे हैं ?" लाइना ने पूछा ।

"यह मेरा लड़का है, महाशय ।"

"अच्छा, इसे नीचे उतार दीजिए ।" गैस्कन ने उतार दिया । बच्चा रोने लगा । "तो, आपकी शादी हो चुकी है ?" लाइना ने पूछा ।

"हाँ, महाशय ।"

"बीस ही वर्ष की उम्र में ?"

"हम लोगों में जल्दी शादी हो जाती है; आप लाइना महाशय को जानते होंगे, जिनकी शादी अठारह वर्ष ही की उम्र में हो गयी थी ।"

"ओह ?" लाइना ने सोचा—"यह भी मुझे जानता है ।"

"और इनकी शादी क्यों न होती भला ?" स्त्री ने आगे बढ़कर कहा—"क्या पेरिस में शादी करना भी फ़ैशन के ख़िलाफ़ है ? शादी हो गयी है; और यह दो बच्चे और हैं, जो इन्हीं की सन्तान हैं ।"

"हाँ, ये मेरी ही स्त्री के बच्चे हैं, लाइना महाशय, और

हमारे पीछे आनेवाला यह बड़ा लड़का भी। आगे आ, मिलिटर। लाइना महाशय को सलाम कर, ये हमारे देश-भाई हैं।"

सोलह-अठारह वर्ष की उम्र का एक हट्टा-कट्टा और चंचल लड़का आगे बढ़ा। उसकी टेढ़ी नाक बाज़-पक्षी की नाक से मिलती थी। उसकी रेखें भिन रही थीं और वह स्वभाव का ढीठ और रसिक भी मालूम होता था।

"यह मेरी स्त्री का पहला लड़का मिलिटर है, जो इसके पहले पति से है। लाइना महाशय, मेरी स्त्री शैवनट्रेड लाइना-लोगों से सम्बन्ध रखती है—मिलिटर-डी-शैवनट्रेड आपकी सेवा में हाजिर है। सलाम करो, मिलिटर।" फिर वह उस बच्चे की ओर झुकते हुए, जो सड़क पर सरक-सरककर रो रहा था, अपनी जेबें कार्ड के लिये अच्छी तरह टटोलकर बोला—"चुप रह, सिपियन; चुप रह, बच्चे।"

"महाशय, खुदा के लिये कार्ड लाइये!" लाइना ने अधीरता-पूर्वक चिल्लाकर कहा।

"लार्डी," गैस्कन ने अपनी स्त्री से कहा—"आओ, मेरी मदद करो।"

लार्डी ने आकर पति की जेब आदि टटोल डाली, पर कोई परिणाम नहीं निकला। "जरूर कहीं गिर गया!" उसने जोर से कहा।

"तो मैं आपको गिरफ़्तार करता हूँ।" लाइना ने कहा।

उस आदमी का चेहरा ज़र्द पड़ गया और वह बोला—"मैं

यूस्टाश--डी--मिकाडो हूं, और महाशय-डी-सेण्ट-मालिन मेरे संरक्षक हैं।"

"ओह!" लाड़ना ने यह नाम सुनकर कुछ ठण्डा पड़ते हुए कहा—"अच्छा, फिर खोजिए।"

वे फिर अपनी-अपनी जेबों में ढूंढ़ने लगे।

"क्यों, इस मूर्ख की आस्तीन पर मैं क्या देख रहा हूँ?" लाइना ने कहा।

"हाँ, हाँ!" पिता ने कहा—"मुझे अब याद आया, लार्डी ने कार्ड मिलिटर की आस्तीन पर सी दिया था।"

"मैं समझता हूं इसलिये कि वह भी कुछ-न-कुछ भार लेता चले।" लाइना ने व्यंग-भाव से कहा।

कार्ड देखा गया और ठीक साबित हुआ, तथा यह परिवार भी पूर्वोक्त लोगों की तरह फाटक के अन्दर घुसा।

चौथे आदमी ने आगे बढ़कर अपना नाम शालाब बताया। उसका कार्ड ठीक निकला और उसे भी अन्दर जाने दिया गया।

इसके बाद महाशय-डी-कार्मेजस का नम्बर आया। उसने घोड़ा आगे बढ़ाकर अपना कार्ड दिखाया और उसके खवास ने घोड़े की काठी ठीक करने के बहाने अपना मुँह दूसरी ओर कर लिया।

"यह खवास आपका है?" लाड़ना ने पूछा।

"हाँ, मेरे घोड़े को संभाल रहा है।"

"अच्छा, तो जाइये।"

"जल्दी कीजिए, सरकार!" ख़वास ने कहा।

इन लोगों के चले जाने के बाद फाटक बन्द कर दिया गया। भीड़ को इससे बड़ा असन्तोष हुआ। इधर राबर्ट ब्रिकेट फाटक के अधिकारी के कमरे की ओर पहुँचा, जिसमें दो खिड़कियाँ थीं—एक पेरिस नगर की तरफ़, दूसरी देहात की ओर। वह निरीक्षण के लिये अभी मुश्किल से अपनी जगह पर पहुँचा ही था, कि पेरिस नगर की ओर से अपने घोड़े को दौड़ाता हुआ एक व्यक्ति आ पहुंचा और तुरन्त घोड़े से उतरकर उस कमरे में घुसा और खिड़की के सामने दिखायी दिया।

"ओ हो!" लाइना ने कहा।

"मैं आ गया, लाइना महाशय।" आगन्तुक ने कहा।

"अच्छा। कहाँ से आरहे हो?"

"सेण्ट विक्टर के दरवाज़े से।"

"आपका नम्बर?"

"पाँच।"

"और वे कार्ड?"

"मेरे पास हैं।"

लाइना ने उन्हें हाथ में लेकर देखा, और एक स्लेट पर नम्बर पाँच लिखा। सन्देश-वाहक चला गया, और दो अन्य आदमी लगभग उसी समय आ पहुँचे। एक तो बार्डेल के दरवाज़े से आया, जो नम्बर चार अपने साथ लाया और दूसरा पोर्ट-डी-टेम्पिल से आया, जिसने अपना नम्बर छः बतलाया। इसके

बाद चार अन्य आदमी भी आये, जिनमें से पहला सेण्ट डेनिस के दरवाजे से नम्बर पांच लेकर, दूसरा सेण्ट जेक्स के दरवाजे से तीन नम्बर लेकर; तीसरा सेण्ट होनोर के दरवाजे से आठ नम्बर लेकर, और चौथा पोर्ट माण्ट मार्टर से चार नम्बर लेकर आया। अन्ततः वसी के दरवाजे से भी एक सन्देश-वाहक आया, जिसने नम्बर चार बतलाया। लाइना ने इन सब को लिख लिया और इन्हे सेण्ट ऐंटोनी के दरवाज़े के दर्ज किये हुए नम्बरों में मिलाया, और सबका जोड़ कुल पैंतालीस हुआ।

"ठीक!" उसने कहा—"अब फाटक खोल दिये जायँ और सबको आने जाने की स्वतंत्रता दे दी जाय।

फाटक खुल गये, और घोड़े, खच्चर, गाड़ियाँ, पुरुष, स्त्री और बच्चों के झुण्ड पेरिस नगर के अन्दर की ओर इस शीघ्रता से उमड़ पड़े कि बहुतों का गला घुटने लगा। चौथाई घण्टे में सारा जन-समूह गायब हो गया।

राबर्ट ब्रिकेट अन्त तक वहीं मौजूद रहा। "मैंने खूब देखा," उसने कहा—"क्या मेरे लिये महाशय-डा-सालसेड के चार टुकड़े होते देखना आसान होता? नहीं, मैंने राजनीति को त्याग दिया है; अब मैं खाना खाने जाऊँगा।"

# चौथा परिच्छेद

# सम्राट हेनरी तृतीय

फ्रियार्ड ने ठीक ही कहा था कि साल्सेड की फाँसी देखने के लिये प्लेस-डी-ग्रेव और उसके आसपास लाखों दर्शकों की भीड़ एकत्रित होगी। सारा पेरिस होटल-डी-विले पर एकत्रित हुआ मालूम पड़ता था। पेरिस भीड़-भाड़ करने में बड़ा पटु नगर है, और मेले-उत्सव में पहुँचने से कोई भी व्यक्ति नहीं चूकता। एक आदमी की मृत्यु भी तो एक मेला ही है, खासकर उस अवस्था में जब उस आदमी ने कितने ही लोगों के हृदय ऐसे भावावेश से भर दिये हों कि कोई उसे शाप देता हो तो कोई आशीर्वाद, और अधिकांश लोग उसकी मृत्यु पर शोक-प्रकाश करते हों।

जो दर्शक उक्त स्थान पर पहले पहुँचने में सफल हुए, उन्होंने देखा कि तीरन्दाज़ों, स्विस गारदों और घुड़सवारों ने लगभग चार फ़ीट ऊँचे एक चबूतरे को घेर रक्खा है। चबूतरा इतना नीचा था कि जो लोग बिल्कुल उसके क़रीब थे, वे, या मकानों की खिड़कियों से देखनेवाले ही उसे देख सकते थे। चार सफ़ेद रंग के ज़बर्दस्त घोड़े अधीर होकर अपनी टापों से ज़मीन ठोंक रहे थे, जिससे वे स्त्रियाँ डरके मारे कांप रही थीं, जो इस स्थान को ठीक समझकर, या भीड़ के धक्कम-धक्के से, वहाँ आगयी थीं। ये घोड़े कभी काम में नहीं लाये गये थे—जीवन-भर में उनसे केवल यही काम लिया गया था कि जब वे अपने जन्म-स्थान—देहात—में थे, तो उनकी चौड़ी पीठ पर सूर्यास्त के समय किसानों के मोटे बच्चे चढ़कर इन्हे धीरे-धीरे चरागाह से घर की ओर लाया करते थे।

चबूतरे और घोड़ों के अतिरिक्त दर्शकों की अधिक दिल-चस्पी की चीज़ होटल-डी-विले का बड़ा झरोखा था, जिसपर राजकीय शस्त्र-चिह्नों की बेलवाली लाल रंग की सुनहरी मख़मल झूल रही थी। यह स्थान सम्राट् के लिये था। डेढ़ बजते ही यह स्थान भर गया। पहले सम्राट् हेनरी तृतीय का आगमन हुआ। उनका चेहरा ज़र्द हो रहा था। उनके सिरके बाल लगभग झड़ चुके थे, यद्यपि उस समय उनकी अवस्था केवल पैंतीस वर्ष की थी। उनकी आँखें उनके नीलिमायुक्त नेत्र-मण्डल में घुसी जा रही थीं और उनके

ओठ घबराहट के मारे काँप रहे थे। वह उदासीन-भाव से आये और उनकी आँखें एकदम शानदार और चंचल हो उठीं, जो उनके चेहरे पर विलक्षण-सी दीख रही थीं। मालूम होता था कि वह जीवित मनुष्य न होकर किसी प्रेत की आकृति हैं; किसी सम्राट् की न होकर पिशाच की शक्ल है, जो प्रजा के लिये सदा दुर्भेद्य रहस्य-सी दीखती है। प्रजा जब उन्हे देखती थी, तो ऐसा प्रतीत होता था कि वह 'सम्राट् की जय' बोलना, या उसकी आत्मा के लिये प्रार्थना करना जानती ही नहीं। उन्होंने काले रंग की पोशाक पहन रक्खी थी, जिसमें किसी प्रकार के हीरे-जवाहर या राज-चिह्न नहीं लगे थे। केवल उनकी टोपी मे एक हीरा जड़ा था, जो तीन छोटी कलंगियों को जड़ने के काम में लाया गया था। उनके हाथ में एक छोटा-सा काला कुत्ता था, जिसे उनकी साली, मेरी स्टुअर्ट ने जेल से उनके लिये भेजा था और जिस पर पड़कर उनकी उंगलियाँ संगमर्मर-सी सफ़ेद दीख रही थीं।

सम्राट् के पीछे कैथेराइन-डी-मेडिसिस थीं, जो अवस्था अधिक होने के कारण झुक गयी थीं—क्योंकि इस समय उनकी आयु छासठ या सड़सठ वर्ष की हो चुकी थी—किन्तु उनका सिर अबभी दृढ़ और सीधा था, और अपनी घनी भँवों के नीचे से वह बड़ी पैनी दृष्टि से देख रही थीं। उनके बगल में सम्राज्ञी लुई-डी-लौरेनका उदास, किन्तु सुन्दर मुख-मण्डल दिखायी पड़ा। कैथेराइन आनन्द मनाने आयी थीं और लुई मृत्यु-दण्ड

देखने। इनके पीछे दो सुन्दर नवयुवक थे—जिनमें से एक की अवस्था मुश्किल से बीस वर्ष की थी, और दूसरे की पच्चीस से अधिक नहीं थी। दोनों एक दूसरे से लिपटे हुए थे, और इस प्रकार सम्राट् के सामने उस शिष्टाचार का उल्लङ्घन कर रहे थे, जिसके अनुसार गिरजे में ख़ुदा के सामने मनुष्य को किसी चीज़ से सम्बद्ध रहने की मनाही है। दोनों ही मुस्करा रहे थे—छोटा तो अवर्णनीय दुःख के कारण, और बड़ा अपने आकर्षक लावण्य से मुग्ध होकर। दोनों भाई-भाई थे। बड़े का नाम ड्यूक-डी-जायस था और छोटे का हेनरी-डी-जायस, कामटे-डी-बाचेग। प्रजा को सम्राट् के इन लाड़लों से ज़रा भी घृणा नहीं थी, यद्यपि मागिरोन केलस और शोमबर्ग के प्रति लोग घोर घृणा रखते थे, जिसका पूर्णाधिकारी वास्तव में डी-एपर्नो था।

हेनरी ने गम्भीर-भाव से प्रजा को नमस्कार किया, और फिर नवयुवकों की ओर रुख़ करके बोले—"दीवार से उठँग-कर खड़े हो जाओ, यहाँ काफ़ी देर लग जायगी।"

"मैं भी ऐसा ही समझती हूँ।" कैथेराइन ने कहा।

"तो क्या तुम्हारा ख़याल है कि सालसेड बोलेगा, माँ?"

"मेरा विश्वास है कि इससे हमारे दुश्मन घबरा जायँगे।" सम्राट् सन्दिग्ध-से-दीख रहे थे।

"बेटा," कैथेराइन ने कहा—"उधर कुछ तुरहियाँ दीख रही हैं न?"

"तुम्हारी नज़र कैसी तेज़ है ! मैं समझता हूँ, तुम ठीक कहती हो। मैं बुड्ढा नहीं हूँ फिर भी मेरी आँखें ऐसी खराब हैं,। हाँ, यह सालसेड आ रहा है।"

"वह डरता है," कैथेराइन ने कहा—"बोलेगा ज़रूर।"

"अगर ताक़त होगी, तो बोलेगा।" सम्राट् ने कहा—"देखो, उसका सिर मुर्दों की तरह लटक रहा है।"

"वह कैसा भयानक दीख रहा है।" जायस ने कहा।

"जिसके विचार ऐसे गन्दे हैं, वह सुन्दर क्योंकर हो सकता है ? एन, मैंने तुम्हें बतलाया था न कि सदाचार और शरीर का कैसा गुप्त सम्बन्ध है। हिपोक्रेट्ज़ और गैलेन ने इसे अच्छी तरह समझा और समझाया है ?"

"मैं मानता हूँ; पर मैं अच्छा विद्यार्थी नहीं हूँ। मैंने कभी-कभी बड़े ही कुरूप आदमियों को अत्यन्त वीरतापूर्ण कार्य करते देखा है। तुमने भी देखा है न, हेनरी ?" उसने भाई की ओर घूमकर कहा; पर हेनरी विचार-मग्न होने के कारण बिना कुछ देखे ही नज़र दौड़ा रहा था और बिना कुछ समझे ही सुन रहा था, इसलिये उसकी जगह सम्राट् ने जवाब दिया।

"प्यारे एन, कौन कहता है कि यह आदमी वीर नहीं है ? यह बहादुर ज़रूर है ! भेड़िये, भालू और साँप की तरह बहादुर है। इसने अपने एक शत्रु—एक नार्मन सज्जन को उनके घर में जीते-जी जला दिया था। यह दस बार द्वन्द्व-युद्ध कर चुका है और अपने तीन विपक्षियों को जान से मार

चुका है। अब यह षड्यंत्र करने में पकड़ा गया है; जिसके लिये इसे मृत्यु-दण्ड मिला है।"

"इसके व्यक्तित्व से बहुत-कुछ अनर्थ हो चुका है—अब शीघ्र ही इसका अस्तित्व मिट जायगा।"

"इसके विपरीत," कैथेराइन ने कहा—"मेरा तो विश्वास है कि इसका अन्त इतने विलम्ब से होगा, जितना सम्भव है।"

"महाशया," जायस ने कहा—"मैं उन चार हट्टे-कट्टे घोड़ों को देख रहा हूँ, जो अपनी अकर्मण्यता के कारण ऐसे अधीर हो रहे हैं कि मैं सालसेड की मांश-पेशियों, पट्ठों और हड्डियों की देरतक कुशल नहीं देखता।"

"हाँ, पर मेरा बेटा दयालु है," वह एक ऐसी मुस्कराहट के साथ बोली, जो उसके लिये विलक्षण थी—"और वह लोगों से कह देगा कि चुपचाप चले जाओ।"

"लेकिन महाशया," सम्राज्ञी ने भयातुर होकर कहा—"मैं ने आज सुबह आपको यह कहते सुना था कि वह सिर्फ़ दो ही बार के खींचने में समाप्त हो जायगा।"

"हाँ, अगर वह अपने को ठीक-ठीक परिचालित करे, तो ऐसी अवस्था में तो जल्दी-से-जल्दी काम खत्म हो जायगा, और चूँकि तुम उसमें अधिक दिलचस्पी लेती हो, इसलिये अच्छा हो कि उस पर अपने विचार प्रकट कर दो, बेटी।"

"महाशया," सम्राज्ञी ने कहा—"मैं किसी को पीड़ितावस्था में देखने की आपके बराबर ताक़त नहीं रखती।"

"तो उधर मत देखो।"

सम्राट् ने यह वार्तालाप नहीं सुना, क्योंकि वह सामने का दृश्य देखने में पूर्णतः व्यस्त थे। राज-सेवक, सालसेड को गाड़ी से उतारकर चबूतरे पर ले जारहे थे। उसके चारों तरफ़ तीरन्दाज़ों ने जगह ख़ाली करा ली थी, जिससे चबूतरे की ऊँचाई कम होने पर भी सब लोग अच्छी तरह देख सकें।

सालसेड की अवस्था पैंतीस वर्ष के लगभग थी। वह शरीर से खूब हट्टा-कट्टा और बलवान् था; और उसके पीले चेहरे पर खून चमक रहा था; वह पूर्णतः उत्तेजित था। अपने चारों ओर वह अवर्णनीय भावों से देख रहा था—कभी उसके चेहरे पर आशा के भाव लक्षित होते थे, तो कभी वेदना के। पहले उसने अपनी दृष्टि राज-परिवार पर डाली; पर मानों यह समझकर कि उसकी मृत्यु—जीवन नहीं—उसी दिशा से उसके पास आयी है, उसने उधर से अपनी नज़र हटा ली। वह भीड़ को—उस जन-समुद्र को—जलती हुई आँखों और प्रकम्पित ओठों पर काँपती हुई आत्मा से देख रहा था। भीड़ ने उसके प्रति किसी प्रकार का संकेत नहीं किया।

सालसेड कोई नीच-हत्यारा नहीं था; उसका जन्म कुलीन घराने में हुआ था; उस घराने में जिसका समाज्ञी के साथ दूर का रिश्ता था। वह एक प्रसिद्ध कप्तान रह चुका था। आज उसके जो हाथ बँधे हुए हैं, उनमें कभी शूरतापूर्ण तलवार चमक चुकी थी। उसके श्यामोन्मुख मस्तक से आज मृत्यु-

भय प्रकट हो रहा था। यह भय वह निस्सन्देह अपनी आत्मा की गहराई में छिपा लेता, यदि आशा-लता अब भी उसके हृदय में लहलहा न रही होती, और उसके मन में बड़ी-बड़ी अभिलाषाएं न होतीं। इसलिये, अधिकांश दर्शकों की दृष्टि में वह एक वीर पुरुष था; कुछ ऐसे थे, जिनकी नजर में वह अब मृत्यु का शिकारमात्र था। कुछ उसे हत्यारा समझते थे, किन्तु जनता ऐसे महान् हत्यारों को बुरी नज़र से शायद ही कभी देखती है, जो कोई ऐतिहासिक कार्य करते हैं। इस नियम के अनुसार भीड़ में यह चर्चा फैल गयी कि साल्सेड एक योद्धा-जाति का पुरुष है और उसका पिता कार्डिनल-डी-लारिन के विरुद्ध लड़ा था; किन्तु लड़के ने गाइज़ के साथ मिलकर फ़्लैण्डर्स से ड्यूक-डी-अंजो की बढ़ती हुई शक्ति को नष्ट करने की ठान ली; जो (ड्यूक-डी-अंजो) फ्रांस में घृणा की दृष्टि से देखा जाता था।

साल्सेड को गिरफ़्तार करके फ्रांस लाया गया, और यहाँ उसे छूट जाने की आशा थी; किन्तु उसके दुर्भाग्य से बिलीव महाशय ने ऐसी चौकसी कर रक्खी थी कि न तो स्पेनी लोग, न लारेन्स और न सम्राट्-विरोधी-दलवाले ही उसतक पहुँच सके। साल्सेड को जेल में आशा थी कि किसी प्रकार उसका छुटकारा हो जायगा, जिस समय उसे यातना पहुँचायी गयी, तब भी वह निराश नहीं हुआ था, गाड़ी में बैठने पर भी वह बिल्कुल हताश नहीं हुआ था, और अब चबूतरे पर आकर भी उसमें कुछ-कुछ आशा बाक़ी थी। उसे न तो साहस की ज़रूरत थी, न

परितोष की; बल्कि वह तो उन आदमियों में से था, जो आख़िरी दमतक आत्म-रक्षा करते हैं। उसने चिन्तित भाव से भीड़ की ओर देखा, पर उसे बराबर निराशा के साथ ही नज़र फेरनी पड़ती थी।

इसी समय राजकीय छोलदारी की चिक उठाकर एक द्वारपाल ने यह घोषणा की कि प्रधान ब्रिसन और चारों मंत्री क्षण-भर के लिये सम्राट् से मृत्यु-दण्ड के सम्बन्ध में वार्तालाप करने की इज़्ज़त हासिल करना चाहते हैं।

"अच्छी बात है," सम्राट् ने कहा—"माँ, तुम सन्तुष्ट हो जाओगी।"

"हुज़ूर, एक कृपा करें।" जायस ने कहा।

"कहो, जायस; किन्तु शर्त यह है कि अपराधी के लिये क्षमा मत माँगना।"

"हुज़ूर, मुझे और मेरे भाई को यहाँ से चले जाने की आज्ञा दें।"

"क्या! तुम मेरे मामलों में इतनी कम दिलचस्पी रखते हो कि ऐसे मौक़े पर यहाँ से चले जाना चाहते हो?"

"ऐसा न फ़रमाइए हुज़ूर। जो बात श्रीमान् से सम्बन्ध रखती है, उसमें मुझे पूर्णतः दिलचस्पी है; पर मेरा दिल बड़ा कमजोर है और इस सम्बन्ध में कमज़ोर-से-कमज़ोर स्त्री भी मुझ से अधिक मज़बूत सिद्ध होगी। मृत्यु-दण्ड देखकर मैं एक सप्ताह से कम बीमार नहीं रह सकता, और चूंकि लावर में

अकेला मैं ही हंसनेवाला हूं, और न-जाने क्यों मेरे भाई ने हंसना बन्द कर दिया है, इसलिये सोचिए कि अगर मैं भी दुखी होगया, तो उदास लावर की और भी कैसी बुरी अवस्था हो जायगी।"

"तो तुम मुझे छोड़ जाना चाहते हो, एन?"

"दुख है; हुजूर का ख़याल ठीक है। मृत्यु-दण्ड का दृश्य जिस प्रकार आपको प्रिय है, उसी प्रकार मुझे अप्रिय। आपके लिये क्या यही बहुत नहीं है, या आप अपने सुहृदों की कमज़ोरी का आनन्द लेना चाहते है?"

"अगर तुम ठहरो, जायस, तो तुम देखोगे कि यह दृश्य काफ़ी मनोरंजक है।"

"मुझे इसमें सन्देह नहीं है, हुजूर; मैं सोचता केवल यही हूं कि यह मनोरंजन उस हद तक पहुंच जायगा, जिसे मैं सहन नहीं कर सकता।" कहकर वह दरवाज़े की ओर मुड़ा।

"जाओ फिर," हेनरी ने ठण्डी सांस लेकर कहा—"मेरे भाग्य में अकेले रहना है।"

"जल्दी आओ, बाचेग" एन ने अपने भाई से कहा—"सम्राट् अभी तो 'हाँ' कह रहे हैं, और पाँच ही मिनट में 'नहीं' कह देंगे।"

"धन्यवाद है, भाई", बाचेज ने कहा—"मैं भी तुम्हारी ही तरह यहाँ से भागने के लिये चिन्तित था।"

# पाँचवाँ परिच्छेद

—※—

## मृत्यु-दण्ड

मंत्रीगण सम्राट के पास आये।

"सज्जनो," सम्राट् ने कहा—"क्या कोई नयी बात पैदा हुई है?"

"हुजूर," प्रधान ने कहा—"हम लोग श्रीमान् से अपराधी की प्राण-भिक्षा माँगने आये हैं। उसके द्वारा कई भेद खुलनेवाले हैं, इसलिये अगर श्रीमान् उसे प्राण-दान देने की प्रतिज्ञा करें, तो हम लोग उन रहस्यों को प्राप्त कर सकेंगे।"

"पर क्या हमें वे भेद मालूम नहीं हो गये हैं?"

"केवल आंशिक रूप में; क्या हुजूर के लिये वे ही पर्याप्त हैं?"

"नहीं," कैथेराइन ने कहा—"सम्राट् ने मृत्यु-दण्ड मुल्तवी रखने का निश्चय कर लिया है, वशर्ते कि अपराधी उत्पीड़न-द्वारा दिये गये बयान को सत्य प्रमाणित करते हुए अपनी अपराध-स्वीकृति पत्र पर हस्ताक्षर कर दे।"

"हाँ," हेनरी ने कहा—"आप क़ैदी से यह बात कह सकते हैं।"

"श्रीमान् और कुछ तो नहीं फ़र्मायेंगे ?"

"सिर्फ़ यही कि बयानों में कोई अन्तर नहीं होना चाहिये, नहीं तो मैं अपनी प्रतिज्ञा वापस ले लूँगा।"

"हुजूर; समझौता करनेवालों के नाम भी होने चाहिएं ?"

"सब नाम होने चाहिएँ।"

"चाहे वे ऊँचे ओहदे के आदमी भी क्यों न हों ?"

"चाहे वे मेरे निकटतम सम्बन्धी ही क्यों न हों।"

"हुजूर की इच्छानुसार ही होगा।"

"कोई ग़लतफ़हमी न हो, महाशय त्रिसन। क़ैदी के पास लिखने का सामान ले जाया जाय, और वह खुद अपनी अपराध-स्वीकृति लिखे; इसके बाद हम लोग देखेंगे।"

"पर मैं उससे आपकी ओर से प्राण-दान की प्रतिज्ञा कर सकता हूँ ?"

"हाँ; आप कर सकते हैं।"

महाशय त्रिसन और मन्त्रीगण चले गये।

"वह बोलेगा हुज़ूर," सम्राज्ञी ने कहा—"श्रीमान् मुझे माफ़ करेंगे। उसके ओठों की झाग देखिए।"

"नहीं," कैथेराइन ने कहा—"वह कुछ खोज-सा रहा है । भला क्या खोज रहा है वह ?"

"जुपीटर की क़सम,"* हेनरी ने कहा—"वह महाशय-ली-ड्यूक-डी-गाइज़, महाशय-ड्यूक-डी-पर्मा और मेरे भाई, कैथोलिक सम्राट् को खोज रहा है । हाँ, खोज, ठहर जा । क्या तू समझता है कि प्लेस-डी-ग्रेव पर फ़्लैण्डर्स के रास्ते की अपेक्षा निकल भागने का मौक़ा अच्छा है। क्या तू समझता है कि चबूतरे पर से भाग निकलने से रोकने के लिये यहाँ इतने सैनिक काफ़ी नहीं हैं, जिनमें से केवल एक ही ने तुझे गाड़ी पर से चबूतरे पर ला रक्खा है ?"

सालसेड ने देखा कि तीरन्दाज़ों को घोड़ों के लिये भेज दिया गया है; और उसने समझा कि दण्ड का हुक्म अब दिया ही जानेवाला है। इसके बाद उसके ओठों पर रक्तयुक्त झाग निकल पड़ा, जिसे समाज्ञी ने ख़ासतौर पर लक्ष्य किया। अभागे सालसेड ने भीषण रूप से अधीर होकर अपने ओठों को इतने ज़ोरसे चबाया था कि उनसे ख़ून निकल पड़ा।

"कोई भी नहीं !" उसने बड़बड़ाकर कहा—"जिन लोगों ने मदद देने की प्रतिज्ञा की थी, उनमें से कोई भी नहीं आया ! कायरो ! कायरो !"

घोड़े भीड़ में आते हुए दिखायी दिये, और अपने

---

* फ्रांस में किसी-न-किसी की क़सम खाकर बात करने की प्रथा उस समय बहुत अधिक थी ।

लिये जगह बनाते हुए आगे बढ़ने लगे। उनके आगे बढ़ते ही ख़ाली स्थान फिर घिर जाता था। जब वे रू-सेण्ट-वैनेरी पर पहुँचे, तो एक सुन्दर युवक को, जिसे हम पहले देख चुके है, प्रकटतया सत्रह वर्ष के एक लड़के ने अधीरतापूर्वक पीछे से धक्का दिया। यह युवक इर्नाटन-डी-कार्मेंजस, और लड़का उसका रहस्यपूर्ण-खवास था।

"जल्दी!" ख़वास ने चिल्लाकर कहा—"ख़ाली जगह में घुस पड़िये; क्षण-भर के लिये भी सुस्ती न कीजिए।"

"पर हम लोग दब जायेंगे; तुम पागल हो गये हो, दोस्त।"

"मुझे क़रीब पहुंचना है," ख़वास ने आज्ञा-सूचक ढंग से कहा—"घोड़ों के पीछे हट जाइये, अन्यथा हम लोग वहाँ नहीं पहुँच सकेंगे।"

"पर वहाँ पहुंचने के पहले तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े हो जायंगे।"

"मेरी पर्वाह न कीजिए; बस बढ़े चलिये।"

"घोड़े लात मार देंगे।"

"आख़िरी घोड़े की पूँछ पकड़ लीजिए; पूँछ पकड़ लेने पर घोड़ा कभी लात नहीं मारता।"

लड़के के रहस्यपूर्ण प्रभाव से एर्नाटन अपनी इच्छा न होते हुए भी राज़ी हो गया और उसने घोड़े की पूँछ पकड़ ली और ख़वास भी उसके पीछे चिमट गया। इस प्रकार भीड़ में होते हुए समुद्र की तरंग की भाँति कहीं उसके अँगरखे का टुकड़ा गिरा, और कहीं जाकेट के तार-तार उड़ते दिखायी दिये। अन्त

में दोनों घोड़ों के पीछे-पीछे उस चबूतरे के पास जा पहुँचे, जहाँ सालसेड निराशा के मारे जला जा रहा था।

"हम लोग पहुँच गये न?" लड़के ने हाँफते हुए पूछा।

"हाँ, ख़ुशी से!" एर्नाटन ने जवाब दिया—"पर मैं थक गया।"

"मैं तो कुछ देख नहीं रहा हूँ।"

"मेरे आगे आ जाओ।"

"नहीं! अभी नहीं! वे लोग क्या कर रहे हैं?"

"रस्सियों के सिरों पर गाँठें लगा रहे हैं!"

"और वह—वह क्या कर रहा है?"

"कौन?"

"वही अपराधी।"

"वह चारों ओर निगाह दौड़ा रहा है।"

घोड़े सालसेड के इतने निकट पहुँचा दिया गये थे कि जल्लाद अपराधी के हाथ-पाँव घोड़े की साज के साथ आसानी से बाँध सकते थे। जिस समय रस्सियाँ उसके शरीर में लगीं, सालसेड चिल्ला उठा।

"महाशय," लेफ़्टिनेण्ट टैंकन ने उससे नम्रता-पूर्वक कहा—"क्या आप जानता से कुछ कहना चाहेंगे?" और फिर फुस्फुसाकर कहा—"अगर अब भी अपराध स्वीकार कर लीजिए, तो जान बच सकती है।"

सालसेड ने उसकी ओर इस गम्भीरता के साथ देखा,

जैसे वह उसकी आँखों को देखकर उसकी सचाई का अध्ययन कर रहा हो।

"देखिए," टेकन ने फिर कहा—"सब लोग आपको छोड़ चुके। अब तो मैं जो बात कह रहा हूं, उसके अतिरिक्त संसार में आपके लिये कोई आशा नहीं है।"

"अच्छा।" सालसेड ने ठण्डी साँस लेकर कहा—"मैं बोलने के लिये तैयार हूँ!"

"सम्राट्, लिखित और हस्ताक्षर-युक्त अपराध-स्वीकृति चाहते हैं।"

"तो मेरे हाथ खोल दीजिए, और कलम दीजिए—मैं लिख दूँगा।"

उन्होंने सालसेड की कलाई से रस्सी खोल दी और मुसाहब ने जो वहीं खड़ा था, लेखन-सामाग्री उसके सामने चबूतरे पर रख दी।

- "अब," टैकन ने कहा—"सब-कुछ लिख दीजिए।"

"डरिये नहीं; जो मुझे भूल गये हैं, मैं उन्हें नहीं भूलूँगा।" पर यह कहते समय वह चारों ओर नज़र भी दौड़ाता जाता था।

निस्सन्देह अब वह समय आ गया था, जब खवास के प्रकट होने की ज़रूरत थी, क्योंकि उसने एर्नाटन का हाथ पकड़कर कहा—"महाशय, कृपा करके मुझे दोनों हाथों से पकड़कर इतनी ऊँचाई पर उठा दीजिए कि मैं इन लोगों के

सिर से और ऊंचा हो जाऊँ, जिनके कारण मैं कुछ नहीं देख रहा हूँ !"

"ओह ! तू बड़ा ही अधीर है, छोकरे !"

"बस, इतनी कृपा और कर दीजिए; मैं अपराधी को अवश्य देखना चाहता हूँ !"

एर्नाटन अब भी हिचकिचा रहा था, इसलिये लड़के ने चिल्लाकर कहा—"मेहरबानी कीजिए, महाशय; मैं हाथ जोड़ता हूँ !"

लड़का अब कोई अनूठा उपद्रवी न रहकर दुर्निवार प्रार्थी बन चुका था। एर्नाटन ने उसे दोनों हाथों से पकड़कर ऊपर उठाया, और उसके शरीर की कोमलता पर आश्चर्यान्वित हो गया। ज्यों ही सालसेड ने क़लम हाथ में ली, और जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं, उसने चारों ओर निगाह दौड़ाकर देखा, उसने भीड़ के ऊपर इस लड़के को देखा, जिसने अपनी दो उंगलियाँ ओठों पर रक्खी हुई थीं। उसी क्षण सालसेड के मुख-मण्डल पर एक अवर्णनीय आनन्द की ज्योति चमक उठी, क्योंकि जिस सङ्केत की वह इतनी देर से प्रतीक्षा कर रहा था, वह दिखलायी देगया, और उसे निश्चय हो गया कि सहायता निकट आ गयी है। क्षण-भर की हिचकिचाहट के बाद उसने कागज़ लेकर लिखना शुरू किया।

"वह लिख रहा है !" भीड़ चिल्ला उठी।

"वह लिख रहा है !" कैथेराइन ने चिल्लाकर कहा।

"वह लिख रहा है !" सम्राट् ने भी चिल्लाकर कहा—"अब मैं उसे माफ़ कर दूंगा।"

सहसा सालसेड रुका और उसने फिर लड़के की ओर देखा, जिसने फिर उपरोक्त संकेत दुहराया। वह फिर लिखने लगा और अन्त में एक बार फिर लड़के को देखा, जिसने फिर वही संकेत दुहराया।

"क्या लिख चुके ?" टैकन ने पूछा।

"हाँ।"

"तो फिर दस्तखत कर दीजिए।"

सालसेड ने दस्तखत कर दिया। उसकी आँखें अब भी लड़के की ओर लगी हुई थीं। "केवल सम्राट् ही इसे पढ़ें।" उसने कहा, और कागज़ कुछ हिचकिचाहट के साथ मुसाहब के हाथ में दे दिया।

"अगर आपने सारी बाते खोल दी हैं," टैकन ने कहा—"तो अपने को सुरक्षित समझिए।"

सालसेड के ओठों पर व्यंग और चिन्ता-मिश्रित मुस्कराहट खेल गयी। मालूम होता था कि वह अपने रहस्यपूर्ण सन्देश-वाहक से अधीरतापूर्वक कुछ प्रश्न करना चाहता है। एर्नाटन अब थक गया था, इसलिये लड़के को नीचे उतार देना चाहता था; लड़के ने भी कोई विरोध नहीं किया, और नीचे उतर गया। उसके साथ ही वह बात भी अन्तर्हित हो गयी, जिसने उस अभागे आदमी को सँभाल रक्खा था। उसने

घबराकर चारों ओर देखा और चिल्ला उठा—"अच्छा, आओ !"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया।

"जल्दी करो ! जल्दी ! सम्राट् कागज़ हाथ में ले रहे हैं; पढ़ रहे हैं !"

अब भी कहीं से कोई उत्तर नहीं आया।

सम्राट् ने मुड़े हुए कागज़ को खोला।

"पिशाचो !" सालसेड ने चिल्लाकर कहा—"तुमने मुझे धोखा तो नहीं दिया ! पर संकेत करनेवाली तो वही थी ! सच-मुच वही थी !"

सम्राट् ने अभी पहली पंक्ति भी पढ़कर समाप्त नहीं की थी कि उन्होंने क्रोधपूर्वक कहा—"ओह, बदमाश !"

"क्या है बेटा ?" कैथेराइन ने पूछा।

"यह तो मुकर रहा है—इसने यह बहाना किया है कि इसने अपराध स्वीकार नहीं किया था, और इस बात की घोषणा करता है कि गाइज़-लोग निरपराध हैं; उन्होंने कोई षड्यंत्र नहीं रचा !"

"लेकिन," कैथेराइन ने कहा—"अगर यह बात सच्ची हो ?"

"यह झूठा है !" सम्राट् ने चिल्लाकर कहा।

"तुम कैसे जानते हो, बेटा ? शायद गाइज़ों पर झूठा कलङ्क लगाया गया हो; जजों ने आवेश में आकर गवाहियों की ग़लत व्याख्या कर दी हो।"

"नहीं, मैंने गवाहियाँ खुद सुनी थीं!" हेनरी ने उच्च स्वर में कहा।

"तुमने, बेटा?"

"हाँ, मैंने!"

"यह कैसे?"

"इस प्रकार कि जब अभियुक्त से प्रश्न किये जा रहे थे, तो मैं पर्दे के पीछे था, और वहीं से मैंने सब सुन लिया था।"

"अच्छा, अगर ऐसा है, तो घोड़ों को खींचने का हुक्म दे दो।"

हेनरी ने क्रोध-पूर्वक इशारा किया। हुक्म दुहराया गया और रस्सियाँ फिर बाँध दी गयीं। चार आदमी घोड़ों पर सवार हो गये। घोड़े तेज़ चाबुक की मार खाकर विभिन्न दिशाओं को दौड़ पड़े। एक भयानक कड़कड़ाहट की आवाज़ हुई और रोमाञ्चकारी चिल्लाहट का शब्द। अभागे सालसेड के शरीर से खून की फुहार छूटी। उसका चेहरा पिशाच का सा भयानक हो रहा था।

"ओह, राजद्रोह, राजद्रोह!" उसने चिल्लाकर कहा—"मैं बोलूँगा, मैं बतलाऊँगा! ओह! धिक्कार, उच—"

आवाज़ स्पष्ट सुनायी पड़ी; पर सहसा रुक गयी।

पर अब सब व्यर्थ था। सालसेड का सिर विवशतः एक ओर को झुक चुका था, आँखे फैलकर हठ-पूर्वक उसी दिशा में फिर गयी थीं, जिधर खवास दिखायी पड़ा था। वह फिर नहीं बोल सका—उसके प्राण-पखेरू उड़ चुके थे। टैंकन ने तीरन्दाज़ों को

फ़ौरन कोई हुक्म दिया और वे भीड़ में उस दिशा को लपके, जिधर सालसेड की अन्तिम और दोषारोपण-सूचक दृष्टि पड़ी थी।

"पता लग गया।" खवास ने एर्नाटन से कहा—"कृपा करके मेरी मदद कीजिए! वे आ रहे हैं!"

"तुम क्या चाहते हो?"

"निकल भागना चाहता हूँ! आप देखते नहीं कि वे लोग मुझे खोज रहे हैं?"

"पर तुम हो कौन?"

"मैं स्त्री हूं। मुझे बचाइये! मेरी रक्षा कीजिए!"

एर्नाटन का चेहरा ज़र्द हो गया, पर आश्चर्य और भय पर दयालुता की विजय हुई। उसने अपने आश्रित को अपने आगे कर लिया और भीड़ को धक्का देते हुए उसे रू-डी-माटन के किनारे की ओर ले चला, जिसके सामने एक खुला दरवाजा नज़र आया। खवास कूदकर दरवाज़े की ओर लपका, जो उसी के लिये खुला मालूम पड़ता था, और उसके अन्दर जाते ही बन्द हो गया। एर्नाटन को इतना भी समय नहीं मिला कि उसका नाम या पता पूछता, पर जाते-जाते वह कुछ प्रतिज्ञा-सूचक संकेत कर गयी।

इधर कैथेराइन क्रुद्ध-भाव से अपनी जगह खड़ी थी।

"बेटा," अन्ततः उसने कहा—"तुम इस जल्लाद को बदल दो, तो अच्छा हो; यह लीग* का आदमी मालूम पड़ता है।"

*सम्राट् हेनरी का विरोधी-दल।

"तुम्हारा मतलब क्या है, माँ ?"

"सालसेड को सिर्फ़ एक ही झटके की तकलीफ़ हुई; और वह इतनी जल्दी मर गया।"

"यह तो इसलिये हुआ कि वह अधिक पीड़ा नहीं बर्दाश्त कर सकता था।"

"नहीं; इसलिये कि चबूतरे के नीचे उसके गले में एक बारीक रस्सी बंधी थी। इस प्रकार वह उन लोगों पर अभियोग लगा गया, जो उसे मारनेवाले हैं। उसकी डाक्टरी परीक्षा करवाओ, तो मालूम हो जायगा। उसके गले के चारों ओर रस्सी का निशान लगा होगा।"

"तुम ठीक कहती हो!" हेनरी ने ज़ोर से कहा—"इससे मेरा अपेक्षा मेरे चचेरे भाई गाइज़ों की अधिक ख़िदमत हुई है।"

"चुप, बेटा—गड़बड़ मत करो! लोग हमारी हँसी उड़ायेंगे, क्योंकि हमसे यह एक ग़लती और हो गयी।"

"अच्छा ही हुआ, जो जायस ने अलग जाकर अपना मनोरंजन किया," सम्राट् ने कहा—"संसार में किसी पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता—मृत्यु दण्ड पर भी नहीं। चलो, हम लोग चलें।"

# छठा परिच्छेद

—※—

## भाई-भाई

जैसा कि हम देख चुके हैं, जायस-बन्धु इस दृश्य को छोड़ गये थे। दोनों-भाई एक-दूसरे के बगल में होकर खूब घनी बस्तीवाले मुहल्ले की सड़कों पर जा रहे थे, जो उस दिन उजाड़ मालूम हो रही थीं। प्लेस-डी-ग्रेव पर इतने आदमी एकत्रित हो रहे थे कि तमाम जन-समूह वहीं जा पहुँचा था। हेनरी किसी विचार में मग्न और उदास मालूम पड़ता था और एन अपने भाई के कारण अशान्त था। पहले वही बोला—

"हेनरी," उसने कहा—"तुम मुझे कहाँ लिये जा रहे हो?"

"मैं तुम्हे कहीं 'लिये' नहीं जा रहा हूँ; मैं तो केवल तुम्हारे

आगे-आगे चल रहा हूँ। क्या तुम किसी ख़ास जगह चलना चाहते हो ?"

"और तुम ?"

"ओह, मुझे इस बात की पर्वाह नहीं है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ।"

"फिर भी तुम रोज शाम को कहीं जाया करते हो, क्योंकि नित्य तुम एक ही समय पर जाते हो और रात को देर से वापस आते हो।"

"क्या तुम मुझसे सवाल कर रहे हो, भाई ?" हेनरी ने कोमल स्वर में कहा।

"बिल्कुल नहीं; हम दोनों ही अपनी-अपनी गोपनीय बाते गुप्त रक्खें।"

"भाई, अगर तुम चाहो, तो मैं तुमसे कोई बात नहीं छिपाऊँगा।"

"नहीं छिपाओगे, ?"

"नहीं; क्या तुम मेरे बड़े भाई और मित्र नहीं हो ?"

"ओह! मैंने समझा था कि तुम मुझसे कुछ बातें गुप्त रखते हो। मैं तो एक तुच्छ और ज्ञानहीन आदमी हूँ। मैंने समझा कि तुमने हमारे उस विद्वान, आध्यात्मिक ज्ञान के स्तम्भ और गिरजाघर के प्रकाश—भाई—के सामने, जो कभी महन्त बनकर रहेगा, अपराध स्वीकार कर लिया है, और तुम्हें माफ़ी के साथ-साथ कुछ उपदेश भी प्राप्त हो गये हैं।"

हेनरी ने प्रेमपूर्वक भाई का हाथ पकड़ लिया। मेरे लिये तो तुम अपराध स्वीकार करनेवाले से भी अधिक हो, प्यारे एन—पिता से भी अधिक; तुम मेरे मित्र हो।"

"तो फिर, मित्र, तुम तो बहुत प्रसन्न रहा करते थे। अब ऐसे उदास क्यों रहते हो? और दिन को न जाकर केवल रात को ही बाहर क्यों जाया करते हो?"

"भाई, मैं उदास नहीं रहता।"

"तो फिर?"

"प्रेम-चिन्ता में अन्यमनस्क रहता हूँ।"

"अच्छा! और अन्यमनस्क क्यों रहते हो?"

"इसलिये कि मैं सदा प्रेम-भावना में चिन्तित रहता हूँ।"

"और यह कहते हुए ठण्डी साँस लेते हो?"

"हाँ।"

"तुम ठण्डी साँस लेते हो! तुम, हेनरी, कामटे-डी-बाचेय; जायस के भाई; तुम, जिसे लोग फ्राँस का तीसरा सम्राट् कहते हैं (तुम जानते हो कि गाइज़ अगर पहला नहीं, तो दूसरा है); तुम धनिक और खबसूरत हेनरी, जो पहले ही मौके पर अमीर और ड्यूक की पदवी प्राप्त करोगे, प्रेम-चिन्तन में ठण्डी साँस ले रहे हो! तुम, जिसे 'मोद-वर्द्धक' का उपनाम मिल चुका है!"

"प्यारे एन, मैंने कभी सम्पत्ति को, भूत और भविष्य के लिये सुखका साधन नहीं माना है; मुझे कोई अभिलाषा नहीं है।"

"मतलब यह कि इस समय कोई अभिलाषा नहीं है।"

"नहीं, जिन चीजों की बात तुम कर रहे हो, उसकी अभिलाषा कभी न होगी।"

"शायद अभी-अभी न होगी; पर बाद में तुम उनकी ओर झुकोगे।"

"कभी नहीं, भाई; मुझे किसी बात की इच्छा नहीं है; मैं कुछ नहीं चाहता।"

"तुम ग़लती पर हो। जिसका नाम—फ्रांस का सर्वोत्तम नाम—'जायस' है, और जिसका भाई सम्राट् का लाड़ला है, उसे सब बातों की इच्छा होगी, और उसके पास सब चीज़ें होंगी।"

हेनरी ने अपना सिर शोक-पूर्वक झुका लिया।

"सुनो," एन ने फिर कहा—"हमलोग यहाँ बिल्कुल एकान्त में हैं; तुम्हें कुछ मुझसे कहना है?"

"इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि मैं प्रेम-बद्ध हो चुका हूँ।"

"पागल! यह कोई बड़ी गम्भीर बात नहीं है; मैं भी तो प्रेम में फँस चुका हूँ।"

"पर मेरी तरह न फँसे होंगे, भाई।"

"मैं भी कभी-कभी अपनी प्रेमिका की बात सोचता हूँ।"

"हाँ, पर हमेशा नहीं।"

"मुझे तो कभी-कभी चिढ़ उत्पन्न होती है।"

"हाँ; पर तुम्हें आनन्द भी तो मिलता है, क्योंकि कोई तुम्हें भी प्रेम करता है।"

"ठीक है; पर मेरे मार्ग में बाधाएँ हैं। लोग मुझसे भेद की बातें मालूम कर लेते हैं।"

"मालूम कर लेते हैं! यदि तुम्हारी प्रेमिका ऐसी है, तब तो वह तुम्हें प्रेम करती है।"

"हाँ, वह मुझे और महाशय-डी-मेनी को प्रेम करती है—या केवल मुझे ही चाहती है, क्योंकि अगर उसे यह डर न होता कि वह उसे मार डालेगा, तो वह मेनी को फ़ौरन् त्याग दी; तुम जानते हो, मेनी की आदत है कि वह औरतों को जान से मार दिया करता है। पर मैं तो उन गाइज़ों से घृणा करता हूँ, और उनके ख़र्च से मज़े उड़ाने में मुझे आनन्द आता है। मैं दुहराता हूँ कि कभी-कभी मुझे चिढ़ उत्पन्न हो जाती है और मैं झगड़े पर उतारू हो जाता हूँ; पर इसके कारण मैं महन्तों की तरह गम्भीर भी नहीं बनता; मैं हँसता भी हूँ, अगर अधिक नहीं तो क्षण-भर में एक बार ज़रूर। अच्छा, अब यह बताओ कि तुम किसे प्रेम करते हो, हेनरी। तुम्हारी प्रेमिका भी कम-से-कम सुन्दरी तो है न?"

"अफ़सोस है कि वह अभी मेरी प्रेमिका नहीं है।"

"तो वह सुन्दरी तो है?"

"परम सुन्दरी।"

"उसका नाम?"

"मैं नाम नहीं जानता।"

"अच्छा!"

"कसम खाता हूं।"

"मैं अब समझ रहा हूँ कि मैंने जो बात सोची थी, यह उससे अधिक खतरनाक है;—यह उदासी नहीं, पागलपन है।"

"उसने मेरे सामने केवल एक ही बार मुंह खोला था; उसके बाद मैंने उसकी आवाज नहीं सुनी।"

"और तुमने उसके सम्बन्ध में जाँच भी नहीं की?"

"किससे जाँच करता?"

"पड़ोसियों से।"

"वह अपने ही घर में रहती है, और कोई उसे जानता भी नहीं।"

"ओह, तब तो वह पिशाचिनी है?"

"नहीं, है तो स्त्री ही; क़द में लम्बी और सुन्दरता में अप्सरा-जैसी; गम्भीरता में वह फ़रिश्ता जिबराइल के समान है।"

"तुम उससे कब मिले थे?"

"एक दिन मैं एक लड़की के पीछे-पीछे ला-जिप्सीन के गिरजे में गया। मैं गिरजे के पासवाले बग़ीचे में घुसा, जहाँ कुछ पेड़ों के नीचे पत्थर की बेंचें हैं। तुम उस बग़ीचे को जानते हो न?"

"नहीं; पर हर्ज क्या है। सुनाते चलो।"

"अंधेरा होने लगा था, मैं लड़की को नहीं देख सका, और

उसे खोजते-खोजते पेड़ के नीचे उस पत्थर की बेंच के पास आया, तो एक स्त्री की पोशाक देखकर मैंने अपने हाथ बढ़ा दिये। 'माफ़ कीजिए, महाशय!' एक मनुष्य ने कहा, जिसे मैंने बाद में देखा। उसने धीरे से, पर दृढ़ता-पूर्वक मुझे वहाँ से हटा दिया।"

"उसने तुम्हें छू लेने का साहस किया, हेनरी?"

"सुनो, उसने एक तरह की फ्राक में अपना मुँह छिपा रक्खा था, और मैंने उसे कोई फ़क़ीर समझा। इसके अतिरिक्त उसने नम्रतापूर्वक मुझे चेतावनी भी दी; क्योंकि बोलने के साथ ही उसने एक श्वेत-वसना सुन्दरी की ओर संकेत किया, जिसने मुझे आकर्षित कर लिया था और जो बेंच के सामने घुटनों के बल इस प्रकार बैठी थी, जैसे कोई देवस्थान में बैठता है। यह घटना सितम्बर के आरम्भ की है। हवा गर्म थी, क़ब्रों के चारों ओर मृतकों के मित्रों द्वारा लगाये गये पुष्प अपनी मधुर सुगन्ध से वातावरण भर रहे थे; और चन्द्रमा सफ़ेद बादलों के ऊपर से अपनी रजत-ज्योति धरातल पर फेंक रहा था। मैं नहीं जानता कि वह कोई स्थान था, या उस (चन्द्रमा) के गौरव का रूपक; किन्तु वह स्त्री मुझे संग-मर्मर की मूर्ति-सी मालूम होती थी, और मेरे मनमें उसके प्रति एक विलक्षण प्रतिष्ठा-सी होगयी। मैंने ध्यान-पूर्वक उसकी ओर देखा। वह बेंचपर झुक गयी और उस प्रस्तर-खण्ड को उसने अपनी गोद भर लिया। इसके बाद उसने उसपर अपने ओठ रख दिये,

और क्षण ही भर बाद मैंने उसे इस ज़ोर से सिसकियाँ लेते देखा। उसके कन्धे ऐसे जोर-ज़ोर से हिल रहे थे, जैसा तुमने कभी न देखा होगा, भाई। वह रो-रोकर उस पत्थर को बड़ी ही तल्लीनता के साथ चूमने लगी। उसके आँसू देखकर मुझे दुःख हुआ; पर उसके चुम्बनों को देखकर मैं पागल-सा हो गया।"

"पर पोप* की क़सम, पागल तो वह थी, जो पत्थर चूमकर फ़जूल सिसकियाँ ले रही थी।"

"ओह! उसे बड़ा भारी शोक था, जिसके कारण वह सिसकियाँ ले रही थी; वह पूर्ण प्रेम के कारण पत्थर चूमने लगी थी। पर वह किसे प्रेम करती थी? किसके लिये रोती थी? किसके लिये प्रार्थना करती थी? यह मैं नहीं जानता।"

"क्या तुमने उस आदमी से पूछा नहीं?"

"पूछा तो।"

"उसने क्या जवाब दिया?"

"यही कि उसका पति मर गया है।"

"वाह! पति के लिये कभी कोई इस प्रकार रोता है। तुम इस जवाब से सन्तुष्ट हो गये?"

"सन्तुष्ट होने के लिये बाध्य था, क्योंकि उसने मुझे और कोई जवाब नहीं दिया।"

"पर वह आदमी कौन था?"

"उस स्त्री के साथ रहनेवाला एक प्रकार का नौकर।"

---

*धर्माचार्य।

"उसका नाम ?"

"उसने मुझे नहीं बतलाया।"

"युवा था, या वृद्ध ?"

"लगभग तीस वर्ष का रहा होगा।"

"अच्छा, तो फिर ? उसने सारी रात प्रार्थना करने और रोने में तो नहीं गँवायी न ?"

"नहीं; जब वह रोते-रोते थक गयी, तो उठी। वह ऐसी शोकाकुल और रहस्यमयी प्रतीत होती थी कि मैं उसकी ओर जाने ( जैसा कि दूसरी स्त्री होती, तो मैं अवश्य करता ) के स्थान पर पीछे हट गया; किन्तु उसने मेरी ही ओर को रुख किया, यद्यपि उसने मुझे देखा नहीं। चन्द्रमा के प्रकाश में उसका उदास और शान्त मुख-मण्डल दिखायी पड़ा; उसके कपोलों पर आँसू की रेखाएँ अब भी स्पष्ट दीख रही थीं। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी; और नौकर उसे सँभालने के लिये आगे बढ़ा। पर भाई, उसमें अद्भुत और दैवी सौन्दर्य था! मैंने संसार मे ऐसा सौन्दर्य नहीं देखा है; केवल स्वप्न में कभी-कभी मैंने स्वर्ग खुलने का दृश्य देखा है और उस स्वप्न का सौन्दर्य इस वास्तविक सौन्दर्य की कुछ समता कर सकता है।"

"अच्छा, हेनरी, फिर क्या हुआ ?" एन ने अपने भाई की उन बातों में, जिस पर उसने हँसने का निश्चय कर रक्खा था, दिलचस्पी लेते हुए कहा।

"ओह, बात समाप्त हो गयी, भाई। उसके नौकर ने उससे

कुछ फुस्फुसाकर कहा। उसने अपना मुखावरण और नीचे खींच लिया। निस्सन्देह, उसने उससे यही कहा था कि वहाँ मैं मौजूद था; किन्तु उसने मेरी ओर नहीं देखा। मैंने फिर उसे नहीं देखा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि जब उसने आवरण से मुँह ढक लिया, तो आकाश-मण्डल अन्धकारमय हो गया, और यह कि वह स्त्री कोई जीवित वस्तु न होकर एक छाया-मात्र थी, जो उस क़ब्र से निकलकर मेरे आगे सरकती जा रही थी। वह बाग़ के बाहर गयी, और मैं उसके पीछे-पीछे हो लिया। उसके साथवाला आदमी रह-रहकर मेरी ओर देखता जाता था, क्योंकि मैं गुप्त रूप से उसके पीछे न लगकर प्रकटतया पीछा कर रहा था। अब भी मुझमें पुरानी आदतें और भावनाएँ मौजूद थीं।"

"तुम्हारा मतलब क्या है, हेनरी ?"

युवक मुस्कराया। "मेरा मतलब यह है, भाई," उसने कहा—"कि मैं बहुधा सोचा करता हूँ कि मैंने पहले भी प्रेम किया है और अब तक मैंने जिन स्त्रियों को प्रेम किया है, वे मेरी होकर रही हैं।"

"ओह ! और वह स्त्री है क्या ?" एन ने मुँह पर प्रसन्नता लाने की चेष्टा की—जो उसकी इच्छा के विरुद्ध—भाई का यह उपाख्यान सुनकर लुप्त होने लगी थी।

"भाई," हेनरी ने अपने भाई का हाथ ज़ोर से पकड़ते हुए कहा—"मैं अपने जीवन के समान ही इस बात को सच मानता

हूं कि मैं यह नहीं समझ पाया कि वह सुन्दरी इसी संसार की है, या नहीं।"

"पोप की क़सम! अगर जायस डरना जान सकता है, तो इस बात से डरे बिना नहीं रहेगा। तो भी चूँकि वह स्त्री चलती, रोती और चुम्बन देती है, इसलिये मुझे शकुन अच्छे ही दीखते हैं। पर आगे तो सुनाओ।"

"बस, आगे तो थोड़ी ही बात और रह गयी है। मैं उसके पीछे लग गया, और उसने न तो मेरी नज़र बचाकर निकल जाने की चेष्टा की, न मुझे इधर-उधर भटकाया ही; ऐसा प्रतीत होता था कि उसके मन में यह विचार ही नहीं आया।"

"अच्छा, तो वह रहती कहाँ है?"

"बेस्तिल-दुर्ग के पास रू-डी-लेसडिजियर में। दरवाज़े पर पहुँचकर नौकर ने मेरी तरफ़ फिरकर देखा।"

"तुमने यह इशारा किया कि तुम उससे बातें करना चाहते हो?"

"तुम्हे आश्चर्य होगा, पर मैं ऐसा करने का साहस नहीं कर सका। मालकिन की तरह उस नौकर की छाप भी मुझ-पर पड़ गयी।"

"तो फिर तुम घर में घुसे?"

"नहीं, भाई।"

"वास्तव में हेनरी, मैं तुमसे कहता तो नहीं; पर मुझे याद है कि तुम एक दिन शाम को जाकर दूसरे दिन लौटे थे?"

"हाँ, पर उसका कोई नतीजा नहीं निकला; मैं व्यर्थ ही ला-जिप्सीन गया था।"

"तो वह ग़ायब हो गयी थी ?"

"हाँ; छाया की तरह।"

"पर तुमने दरियाफ़्त तो किया था ?"

"सड़क पर थोड़े ही आदमी थे और कोई उसे जानता भी नहीं था। किन्तु प्रतिदिन संध्या-समय वेनेटियन की खिड़की में रोशनी देखकर मुझे यह जानकर तसल्ली होती थी कि वह अब भी वहीं है। मैंने उस घर में घुसने के लिये सैकड़ों उपाय किये—पत्र, सन्देश, फूल और भेंटें भेजीं, किन्तु सब व्यर्थ हुआ। एक दिन शाम को रोशनी नहीं दिखायी पड़ी, फिर उसके बाद कभी भी रोशनी नहीं दिखी। निस्सन्देह, पीछे पड़ जाने के कारण वह महिला तंग आकर रू-डी-लेसडिजियर छोड़ गयी, और किसी को मालूम भी नहीं कि वह कहाँ चली गयी।"

"पर वह तुमसे फिर मिली तो ?"

"हाँ, मौका ही ऐसा आ गया, जिसने मेरी मदद की। सुनो, सचमुच यह अद्भुत बात है। लगभग पन्द्रह दिन पहले मैं रू-डी-बसी में जा रहा था—आधी रात का समय था। तुम जानते हो आग-सम्बन्धी क़ानून कैसे कठोर है,—मैंने न-केवल खिड़कियों में ही रोशनी देखी, प्रत्युत दूसरी मंजिल के ऊपर वास्तव में आग जलती देखी। मैंने दरवाजा खटखटाया,

और खिड़की पर एक आदमी आया। 'आपके घर में आग जल रही है ?' मैंने चिल्लाकर पूछा। 'मेरी प्रार्थना है कि आप शान्त रहिए ! मैं बुझा रहा हूँ।' उसने कहा। 'मैं पुलिस बुलाऊँ ?' मैंने पूछा। 'नहीं, खुदा के लिये किसी को बुलाइये नहीं !' 'पर क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ ?' मैंने पूछा। 'आप मदद करेंगे ? मैं बड़ा कृतज्ञ होऊँगा।' उसने खिड़की के बाहर मेरे लिये चाबी फेंक दी।

"मैं शीघ्रतापूर्वक ज़ीने पर चढ़ा और उस कमरे में जा घुसा, जहाँ आग जल रही थी; वह रसायनघर-सा बना मालूम होता था; और मुझे नहीं मालूम उसमें किस चीज का प्रयोग हो रहा था। कोई जलनेवाला तरल पदार्थ फ़र्श पर फैला हुआ था, जिसके कारण आग सुलग रही थी। जिस समय मैं अन्दर पहुँचा, आग लगभग बुझ चुकी थी। मैंने उस आदमी की ओर देखा। एम भयानक चकत्ता उसके गाल पर था, एक माथे पर—बाक़ी मुंह दाढ़ी से ढका हुआ था। "मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, महाशय," उसने कहा—"पर देखिए, अब तो आग बुझ गयी। अगर आप ऐसे शौक़ीन हैं, जैसे कि आप मालूम होते हैं, तो यहाँ से चले जाइये, क्योंकि मेरी मालकिन अब आने ही वाली हैं, और वे एक अपरिचित को यहाँ देखकर क्रुद्ध होंगी।"

"उसकी आवाज सुनकर मैं तुरन्त चौंक पड़ा। मैं चिल्लाने ही वाला था कि ला-जिप्सीन वाले आदमी आप ही हैं

( क्योंकि तुम्हें याद होगा कि मैंने पहले उसका मुह नहीं देखा था, केवल उसकी आवाज ही सुनी थी ) कि सहसा दरवाजा खुला और एक स्त्री अन्दर आयी। 'बात क्या है, रिमी, और तुमने शोर क्यों मचा रक्खा है ?' उसने अपने नौकर से पूछा। ओह, भाई, यह वही स्त्री थी !—आग की चमकीली रोशनी में उसका रंग उससे कहीं सुन्दर दिखायी दिया, जैसा कमरे की रोशनी में दिखायी पड़ता। यह वही स्त्री थी !—वही जिसकी स्मृति मेरे हृदय में सदा बनी रहती थी। मेरी आवाज़ सुनकर उस नौकर ने मेरी ओर संकीर्ण दृष्टि से देखकर कहा—'धन्यवाद, महाशय, अब आग बुझ गयी है, इसलिये मेरी प्रार्थना है कि आप चले जाइये।' 'दोस्त,' मैंने कहा—'आप मुझे बड़े अक्खड़पने के साथ भगा रहे हैं।'

"'महाशया !' उसने अपनी मालकिन से कहा—'यह वही महाशय हैं।' 'कौन ?' 'वही जो हमें बाग में मिले थे, और हम लोगों के पीछे-पीछे घर तक गये थे।' उसने मेरी ओर रुख करके कहा—'महाशय, मेरी प्रार्थना है कि आप चले जायँ।' मैं हिचकिचाया। मैं कुछ कहना चाहता था; पर मेरे मुँह से शब्द नहीं निकल सके। मैं चुपचाप मूर्तिवत् खड़ा उसकी ओर देखता रहा। 'सावधान हो जाइए, महाशय,' नौकर ने खिन्न होकर कहा—'आप इन्हें फिर भगायेंगे।' 'ईश्वर बचाये।' मैंने चिल्लाकर कहा—'पर मैंने आपको कैसे कष्ट पहुँचाया, महाशया ?' उसने कोई जवाब नहीं दिया। बेहोश, चुप और ठण्डी-सी

होकर वह इस प्रकार खड़ी रही, जैसे उसने मेरी बात सुनी ही न हो, उसने मुँह फेर लिया, और मैंने देखा कि वह क्रमशः छाया में विलुप्त हो गयी।"

"बस ?"

"हाँ, बस। नौकर यह कहकर मुझे दरवाज़े पर ले गया कि 'मुझे माफ़ कीजिएगा।' मैं चकित और अर्द्ध-विक्षिप्त-सा होकर वहाँ से चला आया और तब से प्रति सन्ध्या मैं उस गली में जाता हूँ और वहाँ उसके सामनेवाले मकान के एक कोने में झरोखे के नीचे छिपकर दस बार में एक बार उसके कमरे की रोशनी देख पाता हूँ—यही मेरा जीवन, और यही सुख है।"

"कैसा अच्छा सुख है !"

"शोक ! क्या करूँ, अगर अधिक के लिये चेष्टा करूँ, तो इससे भी हाथ धो बैठूँगा।"

"पर अगर इस परितुष्टि का अभ्यास करते-करते तुम अपने आपको गँवा बैठो, तो ?"

"भाई," हेनरी ने वेदनापूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा—"मेरा सुख इसी तरह का है।"

"यह तो असम्भव सुख है।"

"तुम और क्या लोगे ? सुख तो सम्बन्धित चीज़ है। मैं यह जानता हूँ, वह उसी मकान में रहती है; वहीं उठती-बैठती और श्वास-प्रश्वास लेती है। मैं दीवारों की ओट से भी उसे

देखता हू, बल्कि ऐसा मालूम होता है कि मैं उसे स्पष्ट देख रहा हूँ। अगर वह उस मकान को छोड़ दे, और मुझे उसी प्रकार पन्द्रह दिन और बिताने पड़ें, जैसे मैंने पहले बिताये थे, तो मैं या तो पागल हो जाऊँगा, या फ़क़ीर।"

"ऐसा मत करना! एक परिवार में एक ही फ़क़ीर काफ़ी है।"

"दिल्लगी मत करो, भाई।"

"पर मैं एक बात कहूँ?"

"वह क्या?"

"यही कि तुम्हारी हालत स्कूल के लड़के की सी हो रही है।"

"नहीं; यह बात नहीं है; मैंने तो केवल अपेक्षाकृत दृढ़ शक्ति के आगे सिर झुका लिया है। जब कोई प्रबल धारा तुम्हें बहाने लगे, तो तुम उसके विरुद्ध नही लड़ सकते।"

"पर अगर वह अथाह नरक की ओर बहा ले जाय?"

"तो तुम उसमें डूब जाओगे।"

"तुम्हारा ऐसा विचार है?"

"हाँ।"

"मैं ऐसा नही समझता, और तुम्हारी जगह—"

"मेरी जगह तुम क्या करते?"

"खूब करता, उसका नाम मालूम करके और—"

"पर, तुम तो उसे जानते नहीं।"

"मैं तुम्हें तो जानता हूँ। तुम्हारे पास पचास हज़ार क्राउन* थे, जो मैं ने सम्राट् के दिये हुए अन्तिम एक लाख क्राउनों में से तुम्हें दिये थे।"

"वे तो अब भी मेरे सन्दूक़ में मौजूद हैं, एन; मैंने उनमें से एक भी कौड़ी खर्च नहीं की है।"

"यह और भी बुरा किया; अगर वे तुम्हारे सन्दूक़ से खर्च हो गये होते, तो वह औरत अब तक तुम्हारे शयनागार में आ गयी होती।"

"ओह, भाई!"

"निश्चय ही। दस क्राउन में एक मामूली नौकर आ जाता है, सौ खर्च कर दो तो, अच्छा नौकर मिल सकता है, और कहीं एक हज़ार गिनने को तैयार हो जाओ, तो अद्भुत नौकर आ सकता है; किन्तु अगर दस हज़ार क्राउन खर्च कर देने का साहस करो, तब तो एक अनुपम व्यक्ति हाथ लग सकता है। आओ देखें फिर, मान लो कोई व्यक्ति अनुपम और आदर्श स्वामिभक्त है, फिर भी, पोप की क़स्म, बीस हज़ार में तुम उसे खरीद सकते हो। इसके बाद तुम्हारे पास तीस हज़ार क्राउन रह जायेंगे। इस अनुपम और आदर्श स्वामिभक्त नौकर के द्वारा तुम उस अनुपम और आदर्श स्त्री को प्राप्त कर सकते हो। दोस्त हेनरी, तुम बड़े भोले हो।"

"एन," हेनरी ने ठण्डी साँस लेते हुए कहा—"ऐसे भी

---

*क्राउन लगभग साढ़े तीन रुपये के बराबर होता है।

व्यक्ति हैं, जिन्हें खरीदा नहीं जा सकता; ऐसे भी हृदय हैं, जिनका क्रय करना सम्राट् की शक्ति के बाहर है।"

"शायद ऐसा हो; पर हृदय कभी-कभी दान में भी मिलजाते हैं। तुमने उस सौन्दर्य-मूर्ति का हृदय जीतने के लिये किया क्या है ?"

"मेरा तो ऐसा विश्वास है कि मैं इसके लिये जो-कुछ भी कर सकता था, सब कर चुका हूँ।"

"सचमुच कामटे-डी-बाचेग, तुम तो पागल हो। तुम एक स्त्री को दुखी, एकाकी और उदास देखते हो, और तुम उसकी अपेक्षा अधिक दुखी, अधिक एकाकी और अधिक उदास हो जाते हो। वह अकेली है, तो तुम उसका साथ दो; वह दुखी है तो तुम प्रसन्न हो जाओ; वह शोक करती है, तो उसे दिलासा दो; उसका दुख प्रसन्नता मे परिणत कर दो।"

"यह असम्भव है, भाई।"

"क्या तुमने कोशिश की है ? तुम प्रेम करते हो, या नहीं ?"

"मेरे पास यह व्यक्त करने के लिये शब्द नहीं हैं कि मैं कितना प्रेम करता हूँ !"

"अच्छा, पन्द्रह दिन में तुम अपनी प्रेयसी को प्राप्त कर लोगे।"

"भाई !"

"जायस का विश्वास करो ! मैं समझता हूँ, तुम निराश नहीं हुए हो ?"

"नहीं, क्योंकि मैंने कभी आशा की ही नहीं थी।"

"तुम उसे देखते किस समय हो ?"

"मैंने तुमसे कहा न कि मैं उसे नहीं देख पाता।"

"कभी नहीं ?"

"उसकी छाया भी नहीं।"

"तो हमें यह अवस्था दूर करनी पड़ेगी। क्या तुम समझते हो कि उसका कोई प्रेमी है ?"

"मैंने रेमी के अतिरिक्त (जिसके सम्बन्ध में मैं तुम्हें बतला चुका) और किसी को उसके घर में घुसते नही देखा।"

"उसके सामनेवाला मकान किराये पर ले लो।"

"अगर वह किराये पर न मिले, तो ?"

"वाह ! दुगना किराया दो।"

"पर अगर वह मुझे वहाँ देख लेगी, तो पहले ही की तरह गायब हो जायगी।"

"आज शाम को तुम उसे देखोगे।"

"मैं !"

"हाँ, आठ बजे उसके झरोखे के नीचे जाना।"

"मैं वहाँ रोज़ की तरह जाऊँगा, पर रोज़ से अधिक आशा करके नहीं।"

"अच्छा, मुझे पता बताओ"

"बसी के दरवाज़े और होटल-डी-डेनी के बीच में रू-डी-आगस्टिन के मोड़ के पास, बड़ी सराय से कुछ ही क़दम आगे 'बहादुर सवार की तलवार' का निशाना याद रखना।"

"बहुत अच्छा; आज शामको आठ बजे।"

"पर तुम करना क्या चाहते हो?"

"तुम देखोगे। तब तक घर जाकर अपनी सब से अच्छी पोशाक पहनकर सर्वोत्तम सुगन्ध लगाओ। आज शाम को तुम उसके घर में प्रवेश करोगे।"

"भगवान् तुम्हारी बात सुन ले, भाई।"

"हेनरी, भगवान् बहरा है, तो शैतान वैसा नहीं है। मैं अब जा रहा हूं—मेरी प्रेमिका मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी—नहीं मुझे कहना चाहिए मेन की प्रेमिका। पोप की क़सम! कुछ भी हो वह बगला-भक्तिन नहीं है।"

"भाई!"

"माफ़ करो, प्रेम-भक्त, मैं उन दोनों महिलाओं की तुलना नहीं करता, यह निश्चय रक्खो, यद्यपि तुमने जो कुछ कहा है, उससे मैं अपनी को, बल्कि हमारी को, अधिक पसन्द करता हूँ। किन्तु वह मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी, और मैं उससे प्रतीक्षा नहीं कराना चाहता। हेनरी, अब शाम तक के लिये विदा।"

दोनों भाई हाथ मिलाकर पृथक् हुए।

---

# सातवाँ परिच्छेद

—○:✻:○—

## 'बहादुर सवार की तलवार'

उपरोक्त बातचीत इतनी देरतक होती रही कि रात आरम्भ हो गयी थी और नगर नमी से भरे हुए धुन्ध के वातावरण से भर गया था।

सालसेड की मृत्यु हो गयी। सभी दर्शक प्लेस-डी-ग्रेव से अपने-अपने घरों की ओर जारहे हैं और सड़कें नर-नारियों से भरी हुई हैं। पाठक अब बसी के पास चलकर अपने कुछ पूर्व-परिचितों को देखें और कुछ नये व्यक्तियों से परिचय प्राप्त करें। एक गुलाबी रंग में रँगे हुए नीली और सफ़ेद पच्ची-कारी वाले मकान के पास जाने पर, जो 'बहादुर सिपाही की

तलवार' के निशान के नाम से विख्यात था, एक ऐसी आवाज सुनायी दे रही थी, जैसी सूर्यास्त के समय मधु-मक्खियों के भन-भनाने से होती है। यह एक बड़ी-सी सराय थी, जो हाल में ही इस नये मुहल्ले में बनकर तैयार हुई थी। इस मकान की सजावट ऐसे ढंगसे की गयी थी कि उसे सभी रुचि के लोग पसन्द कर सकते थे। दीवार पर एक देव और एक अजगर की लड़ाई का दृश्य दिखाया गया था, जिसमें अजगर की साँस के साथ आग की लपट निकल रही थी और कलाकार ने भावुकता में आकर वीरता और धार्मिकता के भावों से ओत-प्रोत 'बहादुर सवार' के हाथ में तलवार न दिखाकर क्रास दिखाया था, जिससे उसने उस अभागे विषधर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये थे, और उसके रक्त-वेष्टित टुकड़े ज़मीन पर पड़े दीखते थे। चित्र के नीचे दर्शकों को इस रूप में चित्रित किया गया था, मानो वह स्वर्ग की ओर हाथ उठाये हुए हैं, और बहादुर सवार की प्रशंसा में तालियाँ पिट रही हैं। फिर, मानो यह दिखाने के लिये कि चित्रकार सभी तरह की चित्रकारी दिखा सकता है, उसने दृश्य के चारों ओर कद्दू, अंगूर, गुलाब के पौदे में घोंघे और दो ख़रगोश—एक सफ़ेद और एक काला—चित्रित कर रक्खे थे।

यह निश्चय है कि इस मकान का मालिक आसानी से खुश होनेवाला आदमी नहीं रहा होगा, तभी तो चित्रकार ने अपनी कारीगरी यहाँ तक दिखायी थी कि इतनी जगह भी ख़ाली नहीं छोड़ी थी कि एक तितली का चित्रण और किया जा सकता।

यह सारा आकर्षक प्रदर्शन होते हुए भी यह सराय या होटल कुछ चल नहीं रहा था; इसमें आधी से अधिक जगह कभी नहीं घिरती थी, यद्यपि यह काफ़ी विशाल और सुखदायक बनाया गया था। दुर्भाग्य-वश इसके पास की जगह से लेकर प्री-आक्स-क्लर्स तक लड़ने-झगड़नेवाली इतनी युगल जोड़ियाँ आती थीं कि शान्तिप्रिय व्यक्ति यहाँ कम आते थे। वास्तव में जिस लावण्य के साथ उसका अन्तर्भाग सजाया गया था, उसे देखते हुए वहाँ आने-जानेवाले ग्राहकों में कभी-कभी पधारनेवाले भी कम थे, और मकान-मालकिन—श्रीमती फ़ार्निकन—हमेशा यह शिकायत करती थी कि ऐसी चित्रकारियों के कारण ही उसे दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा है, और अगर उसकी इच्छानुसार कार्य हुआ होता और चित्रकारी के लिये अच्छे दृश्य—जैसे गुलाब के फूल, ज्वलन्त हृदयों से घिरे हुए प्रेम आदि के सुन्दर चित्रण किये गये होते, तो सभी नवयुवक और नवयुवतियों की जोड़ी केवल उसीके होटल में आया करती।

कुछ भी हो, पर फ़ोर्निकन महाशय इसी चित्रकारी को उत्तम मानने के लिये डटे रहे और वह कहा करते थे कि वह युद्ध का दृश्य अधिक पसन्द करते है, क्योंकि एक लड़ाकू उसके होटल में आकर छः प्रेमियों के बराबर शराब पीता है, इसलिये अगर वह अपने हिसाब का आधा रुपया भी चुका दे, तो भी फ़ायदा ही रहेगा, क्योंकि कितना ही उड़ाऊ प्रेमी क्यों न हो, वह तीन लड़ाकू आदमियों के बराबर पैसा नहीं खर्च कर

सकता। इसके अतिरिक्त वह यह भी कहा करता कि प्रेम करने की अपेक्षा शराब पीना अधिक सदाचार-युक्त है।

इसके जवाब में श्रीमती फ़ोर्निकन अपने मोटे कन्धे इस प्रकार हिलाती, जिससे सदाचार के सम्बन्ध मे उसका अपना ही मत प्रकट होता था।

इस प्रकार फ़ोर्निकन के व्यापार की विचित्र अवस्था हो रही थी और रू-डी-वरी में भी उनका व्यवसाय वैसा ही पनप रहा था, जैसा रू-सेण्ट-होनोर में चमका था। यहाँ एक अदृष्ट ने सब-कुछ बदल दिया, और मेटर फ़ोर्निकन को वह शुभ शकुन-युक्त दृश्य बनवाना पड़ा, जिसमें प्रकृति के प्रत्येक विभाग की चित्रकारी दृष्टिगोचर होती थी।

सालसेड के मृत्यु-दण्ड से एक मास पूर्व इस होटल के मालिक और मालिकन, जिनके सभी कमरे उस समय ख़ाली पड़े थे, खिड़की से उदासीन भाव से प्री-आक्स-क्लर्स पर होनेवाली सिपाहियों की क़वायद देख रहे थे। उन्हे एक अफ़सर घुड़सवार, जिसके पीछे एक सिपाही था, होटल की ओर आता दिखायी दिया। वह वहाँ से गुज़रकर आगे जानेवाला था कि इतने में होटल के मालिक ने ज़ोर से पुकारा—"प्यारी, देखो यह घोड़ा कैसा बढ़िया है!"

श्रीमती फ़ोर्निकन ने वैसे ही उच्च स्वर में जवाब दिया—"और वह सवार भी कैसा सुन्दर है!"

अफ़सर ने, जो आकृति से इस चापलूसी से प्रभावान्वित

मालूम होता था, सिर उठाकर पहले होटल के मालिक को देखा, फिर मालकिन को और उसके बाद होटल को। फ़ोर्निकन दौड़कर नीचे आया और दरवाज़े पर खड़ा हो गया।

"क्या यह मकान ख़ाली है ?" अफ़सर ने पूछा।

"हाँ महाशय, इस समय तो है," मालिक ने कुछ लज्जित-सा होकर कहा—"किन्तु साधारणतः ख़ाली नहीं रहता।"

तो भी श्रीमती फ़ोर्निकन, अधिकांश स्त्रियों की भाँति, अपने पति की अपेक्षा अधिक सूक्ष्मदर्शी थी। उसने तत्काल कहा—"महाशय, अगर आप एकान्त चाहते हैं, तो यहाँ आ सकते हैं।"

"हाँ, श्रीमतीजी, इस समय तो मैं एकान्त ही चाहता हूँ।" कहकर अफ़सर घोड़े से उतरा, और लगाम सिपाही को पकड़ाकर होटल के अन्दर घुस गया।

अफ़सर की अवस्था लगभग पैंतीस वर्ष की थी; पर वह ऐसी सावधानी के साथ वर्दी से सजा-बजा था कि देखने पर अट्ठाईस से अधिक का नहीं जंचता था। वह लम्बे क़द, सुन्दर मुख-मण्डल और अच्छे जंचाव का आदमी था।

"ओह, अच्छा है !" उसने कहा—"काफ़ी बड़ा कमरा है, और एक भी आदमी इसमें नहीं है।"

मेटर फ़ोर्निकन ने उसकी ओर आश्चर्य-पूर्वक देखा, और श्रीमती फ़ोर्निकन ने मुस्कराकर अर्थपूर्ण दृष्टि से।

"लेकिन," कप्तान ने फिर कहा—"आपके मकान, या आपके व्यवहार में ऐसी कोई बात जरूर होगी, जिसके कारण लोग यहाँ नहीं रहते।"

"कोई भी ऐसी बात नहीं है," श्रीमती फ़ोर्निकन ने जवाब दिया—"केवल यह जगह नयी है, और हम ग्राहक चुने हुए रखते हैं।"

"ओहो! यह तो बड़ी अच्छी बात है!"

इधर मेटर फ़ोर्निकन ने अपनी स्त्री के जवाबों पर नम्रता-पूर्वक स्वीकृति-सूचक सिर हिलाता रहा।

"उदाहरण के लिये," श्रीमती फ़ोर्निकन ने कहना जारी रक्खा—"हुजूर-जैसे बड़े आदमी के आने पर तो हम दर्जनों मामूली ग्राहकों को ठहराने से इन्कार कर सकते हैं।"

"बड़ी ही नम्र हैं आप, श्रीमतीजी, धन्यवाद।"

"क्या श्रीमान् कुछ शराब चखेंगे?" फ़ोर्निकन ने पूछा।

"क्या हुजूर कमरों का निरीक्षण करेंगे?" श्रीमती फ़ोर्निकन ने और जोड़ा।

"अगर आप चाहें, तो दोनों ही काम कर सकता हूँ।"

फ़ोर्निकन शराब के भण्डार-घर में गया।

"आप यहाँ कितने आदमी ठहरा सकती हैं?" कप्तान ने श्रीमती फ़ोर्निकन से पूछा।

"तीस।"

"यह तो काफ़ी नहीं है।"

"यह क्यों, महाशय ?"

"मेरा एक विचार था; पर उसके सम्बन्ध में अब हम कोई बात नहीं करेंगे।"

"ओह, महाशय, आपको इससे बड़े कमरे राजमहल के अतिरिक्त और कहीं नहीं मिलेंगे।"

"अच्छा, तो आप तीस व्यक्तियों को तो ठहरा ही लेंगी ?"

"हाँ, बेशक।"

"लेकिन एक दिन के लिये कितने ठहरा सकेंगी।"

"ओह ! एक दिन के लिये तो चालीस-पैंतालीस तक ठहराये जा सकते हैं।"

"पैंतालीस ? खूब ! बस हमें इतने ही आदमी ठहराने हैं।"

"सचमुच ? तब तो सब ठीक है।"

"इससे कोई शोरो-गुल तो न होगा ?"

"हमने तो रविवार को अक्सर अस्सी सिपाहियों तक यहाँ ठहराये हैं।"

"और घर के सामने कोई भीड़-भड़क्का, या पड़ोसियों-द्वारा कोई भेद लेने की बात तो नहीं होगी ?"

"नहीं ! बिल्कुल नहीं ! हमारे निकटतम पड़ोसी उच्च श्रेणी के व्यक्ति हैं, जो किसी के मामले में दखल नहीं देते, और एक महिला यहाँ ऐसा एकान्तवास करती है कि यद्यपि वह यहाँ तीन सप्ताह से रह रही है, फिर भी मैंने अभी तक उसकी सूरत नहीं देखी।"

"तब तो बहुत अच्छा होगा।"

"सब अच्छा ही होगा।"

"आज से एक महीना बाद—"

"यानी २६ अक्तूबर को।"

"ठीक। उसी दिन के लिये मैं आपकी सराय किराये पर ले रहा हूं।"

"पूरी सराय?"

"हाँ, पूरी। मैं कुछ देहातियों, अफ़सरों—या कम-से-कम सिपाहियों—को आश्चर्य में डालना चाहता हूं; उन्हे यहाँ आने के लिये हुक्म दिया जायगा।"

"लेकिन अगर यह आश्चर्य की बात हुई—"

"अगर आप उत्सुकता या अविवेक से काम लेंगी—"

"नहीं, नहीं, महाशय।" श्रीमती फ़ोर्निकन ने कहा।

मेटर फ़ोर्निकन ने, जो सब बातें सुन रहा था, बोला—"महाशय, आप यहाँ मालिक की तरह रहेंगे, और आपसे कोई प्रश्न नहीं किया जायगा; आपके सब मित्र सस्वागत टिकाये जायंगे।"

"मैंने 'मित्रों' के लिये नहीं कहा; मैंने तो देहातियों के लिये कहा है।" अफ़सर ने उद्धत-भाव से कहा।

"हाँ, महाशय! मुझसे ग़लती हुई।"

"आप उन्हें शाम का खाना खिलायेंगे।"

"निश्चय-पूर्वक।"

"अगर ज़रूरी हुआ, तो वे यहीं सोयेंगे भी।

"हाँ, महाशय।"

"मतलब यह है कि उनकी सभी आवश्यकताएं पूरी कीजिए, किन्तु उनसे कोई प्रश्न न कीजिए।"

"बहुत अच्छा, महाशय।"

"अच्छा यह तीस लिवर्स* पेशगी लीजिए।"

"अच्छा, महाशय, इन सज्जनों की राजाओं की सी ख़ातिर की जायगी। आप शराब चखकर इसका निश्चय कर सकते हैं?"

"धन्यवाद; मैं शराब नहीं पीता।"

"लेकिन महाशय, मैं उन सज्जनों को कैसे पहचानूँगा!"

"आप ठीक पूछते हैं! मैं भूल गया था। मुझे काग़ज़ रोशनी और मोम दीजिए।"

उक्त चीज़ों के लाये जाने पर कप्तान ने अपनी उंगली में से अँगूठी निकालकर काग़ज़ पर मुहर लगायी। "आप यह आकृति देखते हैं?" उसने कहा।

"हाँ, एक सुन्दरी की है।"

"हाँ, उनमें से प्रत्येक आदमी इसी प्रकार की मुहर दिखायेगा, जिसे देखकर आप उसे ठहरायेंगे। बाद में आपको और भी आदेश दिये जायँगे।"

इसके बाद कप्तान ज़ीने से उतरा और घोड़े पर चढ़कर

*एक लिवर लगभग पाँच आने के बराबर होता है।

चलता बना। इधर फ्लोर्निकन-दम्पति तीस लिवरों की पेशगी पाकर निहाल हो रहा था।

"निश्चय ही," आगन्तुक ने कहा—"यह निशान हमारे सौभाग्य का कारण हुआ है।"

---

# आठवाँ परिच्छेद

—:卐:—

## गैस्कन

हम यह कहने का साहस नहीं कर सकते कि श्रीमती फ़ोर्निकन ने उतने विवेक से काम लिया, जितने का उसने वादा किया था, क्योंकि उसने पहले फ़ौजी सिपाही को देखते ही उससे पूछा कि जिन कप्तान साहब ने फ़ौजी क़वायद का निरीक्षण किया है, उनका नाम क्या है। सिपाही ने उसकी अपेक्षा अधिक सतर्कता दिखाते हुए पूछा कि वह कप्तान का नाम क्यों जानना चाहती है।

"क्योंकि वह अभी-अभी यहाँ आये थे," उसने जवाब दिया—"और जिससे बातचीत की जाय, उसका नाम जानने की इच्छा होती ही है।"

सिपाही हँसा। "क़वायद देखनेवाले कप्तान इस होटल में नहीं आये होंगे।" उसने कहा।

"क्यों नहीं ? क्या वह ऐसे बड़े आदमी हैं ?"

"शायद ऐसा ही है।"

"अच्छा, यह होटल तो वे अपने लिये नहीं चाहते होंगे।"

"तो फिर किसके लिये ?"

"अपने दोस्तों के लिये।"

"मुझे निश्चय है कि वे अपने मित्रों को यहाँ नहीं ठहरायेंगे।"

"सुनिए! आप भगे क्यों जा रहे हैं, सिपाहीजी! वह कौन बड़ा आदमी है, जो पेरिस के सर्वश्रेष्ठ होटल में अपने मित्रों को ठहराने से अपनी हेठी समझ सकता है ?"

"श्रीमतीजी, फ़ौजी क़वायद देखनेवाले महाशय-ली-ड्यूक नोगारे-डी-लावालेट-डी-एपर्नों थे, जो फ्रांस के प्रख्यात रईस और पैदल सेना के कर्नल-जनरल हैं। कहिए, अब आप क्या कहती हैं ?"

"तो अगर वे थे, तब तो उन्होंने मुझे बड़ी इज़्ज़त दी।"

"क्या आपने उन्हें 'ख़ूब' कहते सुना था।"

"हाँ; हाँ!"

अब हम सोच सकते हैं कि २६वीं अक्तूबर की प्रतीक्षा किस धैर्य के साथ की जाती रही होगी। २५ वीं तारीख़ की शाम को एक व्यक्ति एक भारी झोला लिये हुए होटल में आया और उसने उसे फ़ोर्निकन की मेज़ पर रख दिया।

"कल के भोजन की क़ीमत है।" उस आदमी ने कहा।

"कितना प्रति मनुष्य के हिसाब से ?"

"छः लिव्र।"

"तो क्या वे केवल एक ही बार यहाँ भोजन करेंगे ?"

"बस।"

"तो क्या कप्तान ने उनके लिये सोने की जगह प्राप्त कर ली ?"

"ऐसा ही मालूम होता है।" सन्देश-वाहक ने कहा, और किसी और प्रश्न का उत्तर देने से इन्कार करके वहाँ से चला गया।

अन्ततः वह अत्यभिलषित दिन आ पहुँचा। ठीक साढ़े बारह बजे होटल के दरवाज़े पर कुछ सवार आ खड़े हुए। उनमें से एक उनका सरदार मालूम होता था, जिसके साथ दो अर्दली सवार भी थे। प्रत्येक ने सुन्दरी की मोहर दिखायी और उनका—ख़ासकर अर्दलीवाले युवक का—विशेष रूप से आदर-पूर्वक स्वागत किया गया। उनमें से सभी भीरु और चिन्तित-से मालूम होते थे, ख़ासकर उस अवस्था में और भी जब वे अपनी-अपनी जेबों में हाथ डाल रहे थे। उनमें से अधिकांश भोजन के समय तक के लिये या तो सालसेड का मृत्यु-दण्ड या पेरिस नगर का दृश्य देखने के लिये बाहर चले गये।

लगभग दो बजे छोटी-छोटी टुकड़ियों में एक दर्जन यात्री और आये। एक आदमी नंगे सिर हाथ में बेत लिये अकेला अन्दर आकर पेरिस नगर को गालियाँ देने लगा, जहाँ

ऐसे चालाक आदमी रहते हैं, जिन्हों ने भीड़ में गुज़रते समय उसकी टोपी चुरा ली, और वह देख भी नहीं सका कि किसने उड़ा ली। तो भी उसने क़सूर अपना ही बतलाया, क्योंकि उसे ऐसे बहुमूल्य हीरे से जड़ी हुई टोपी नहीं पहननी चाहिए थी। ठीक चार बजे चालीस आदमी आ पहुँचे।

"यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है।" फ़ोर्निकन ने अपनी स्त्री से कहा—"ये सभी गैस्कन हैं।"

"तो, इससे क्या? कप्तान ने कहा था कि सब देहाती होंगे, और ये गैस्कन हैं। महाशय डी-एपर्नों तो तालोज़ के रहने-वाले हैं।"

"तो तुम अब भी यही समझती हो कि वे डी-एपर्नों थे?"

"क्या उन्होंने अपना मशहूर 'ख़ूब' नहीं कहा था?"

"मशहूर 'ख़ूब' कहा था?" फ़ोर्निकन ने चिन्तित भाव से पूछा—"यह 'ख़ब' कौन-सा जानवर होता है?"

"यह उनका तकिया-कलाम है?"

"अच्छा!"

"आश्चर्य की तो केवल यही बात है कि गैस्कनों की संख्या केवल चालीस है; किन्तु होनी चाहिए पैंतालीस।"

किन्तु पाँच बजे पाँच और गैस्कन आ पहुँचे, और इस प्रकार आगन्तुकों की संख्या पूरी हो गयी। गैस्कनों के चेहरों पर ऐसा आश्चर्य और कभी देखने में नहीं आया था। घण्टे-भर तक तो 'वाह' 'ख़ूब' आदि के अतिरिक्त और कुछ नहीं

सुनायी पड़ा, और उनका हर्ष ऐसा प्रखर और तुमुल-ध्वनि-युक्त था कि क्रोनिकन को मालूम हुआ कि उनके कमरों में बाज़ार-सा लगा रहा है। सब एक दूसरे से मिलकर प्रसन्नता प्रकट कर रहे थे।

"क्या यह अद्वितीय बात नहीं है कि यहाँ इतने गैस्कन एकत्रित हुए हैं।" एक ने पूछा।

"नहीं!" एड्का-डी-पिकार्न ने जवाब दिया—"यह प्रतिष्ठित आदमियों के लिये एक प्रलोभन का चिह्न है।"

"ओह, आप हैं?" सेण्ट-मालिन ने, जिसके साथ अर्दली था, कहा—"आपने मुझे अभी तक यह नहीं समझाया कि जिस समय भीड़ हमसे अलग हुई, तो आप क्या करने जा रहे थे।"

"क्या करने जा रहा था?" पिकार्न ने क्रुध होकर पूछा।

"यह कैसे हुआ कि जब मैं आपसे अंगोलेम और एँगर्स की बीच की सड़क पर मिला था, तो आपका सिर ऐसा ही नंगा था, जैसा अब है।"

"आप इसमें बड़ी दिलचस्पी ले रहे हैं, महाशय?"

"हाँ! हाँ। पाइतीर पेरिस से दूर है, और आप पाइतीर के और परे से आये हैं।"

"हाँ, सेंण्ट सेण्ड्री-डी-कुब्सा से।"

"और इसी तरह नंगे सिर?"

"ओह! इसमें क्या कठिनाई है। मेरे पिता के पास दो

बढ़िया घोड़े हैं, और जो दुर्घटना मेरे साथ हुई, है उसके कारण वह मुझे उत्तराधिकार से वञ्चित कर सकते हैं।"

"कैसी दुर्घटना ?"

"मैं उपरोक्त दो घोड़ों में से एक पर चढ़ा हुआ आ रहा था कि सहसा तोप दग़ने की आवाज़ सुनकर घोड़ा डर गया और मुझे लेकर भाग निकला। डार्डोन नदी के किनारे पहुँच-कर वह उसमें कूद पड़ा।"

"आपको पीठ पर लिये हुए ?"

"नहीं; सौभाग्य-वश मुझे कूद पड़ने का समय मिल गया, नहीं तो मैं घोड़े समेत डूब जाता।"

"ओह ! तब तो बेचारा जानवर डूब गया होगा ?"

"सचमुच ! आप डार्डोन को तो जानते हैं—आधे लीग* का पाट है उसका।"

"अच्छा तो फिर क्या हुआ ?"

"फिर मैंने घर न लौटने का निश्चय कर लिया; और अपने पिता के क्रोध से बचने के लिये जहाँतक सम्भव हो, दूर भागने का इरादा कर लिया।"

"लेकिन आपकी टोपी ?"

"वह अभागी टोपी ! वह गिर गयी।"

"आपकी ही तरह ?"

"मैं तो गिरा नहीं; कूद पड़ा था।"

---

*लीग की दूरी लगभग तीन मील के बराबर होती है।

"और आपकी टोपी ?"

"ओह! मेरी टोपी गिर पड़ी। मैंने उसे ढूंढ़ा; मेरा एकमात्र सहारा तो वही टोपी थी, क्योंकि मैं रुपये लेकर नहीं चला था।"

"पर टोपी 'एकमात्र सहारा' कैसे हो सकती थी ?"

"क्यों नहीं! वह बड़ी क़ीमती टोपी थी। उसकी कलँगी पर वह हीरा जड़ा था, जिसे स्वर्गीय सम्राट् चार्ल्स पंचम ने स्पेन से फ़्लैण्डर्स जाते समय हमारी कोठी पर ठहरने पर मेरे दादा को दिया था।"

"तब तो आपने उसे बेच लिया होगा, और दोस्त, आप तो हम सब से अधिक धनी आदमी बन गये होंगे। तब तो आपको नये दस्ताने ख़रीद लेने चाहिए थे, आपके दोनों हाथ यकसाँ नहीं हैं—एक तो स्त्री का-सा सफ़ेद है, और दूसरा निग्रो का-सा काला।

"पर सुनिये तो सही; जब मैं लौटकर अपनी टोपी खोजने लगा, तो मैंने देखा कि एक बहुत बड़े कौवे ने अपनी चोंच में उसे पकड़ रक्खा है।"

"टोपी को ?"

"नहीं उसके फ़ीते को; वह उस (हीरे) की चमक पर ऐसा रीझा कि मेरे चिल्लाने पर भी वह उसे चोंच में दबाये हुए ही उड़ गया, और फिर मैं उसे नहीं देख सका। इस दुहरे नुक़सान से व्याकुल होकर मैं घर लौटने का साहस नहीं कर सका, और किसी रोज़ी-रोज़गार की खोज में पेरिस चला आया।""

"खूब," एक तीसरे व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा—"हवा अब कव्वे के रूप में परिवर्तित हो गयी। मैंने आपको महाशय लाइना से कहते सुना था कि जब आप अपनी प्रेमिका का पत्र पढ़ रहे थे, तो टोपी को हवा उड़ा ले गयी।"

"सुनिये," सेण्ट-मालिन ने उच्च-स्वर से कहा—"मैं महाशय-डी-आबिन से परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त कर चुका हूं, जो एक बहादुर सिपाही होने के अतिरिक्त लिखते भी अच्छा हैं। मैं सिफ़ारिश करता हूँ कि आप उन्हें अपनी टोपी की कहानी सुना दें। वह इस पर एक सुन्दर कहानी लिख देंगे।"

इस पर कितने ही लोग दबी आवाज़ से हँस पड़े।

"ओह, सज्जनो," गेस्कन ने चिल्लाकर कहा—"आप लोग मुझपर हँस रहे हैं?"

वे लोग फिर हँस पड़े।

पर्डुका ने अपने चारों ओर निगाह दौड़ायी, और अँगीठी के पास एक युवक को हाथों से मुँह ढके हुए देखा। उसने समझा कि वह आदमी हँस रहा है, और पास जाकर उसके कन्धे पर हाथ रखकर बोला—"महाशय, आप हमेशा हँसते ही रहते हैं; अपना मुँह तो दिखाइए।"

युवक ने उसकी ओर देखा। यह वही हमारा पूर्व परिचित्र एर्नाटन-डी-कार्मेंजस था, जो ला-ग्रेव की घटना से अब भी मर्माहत-सा हो रहा था। "मेहरबानी करके मुझे न छेड़िए," उसने कहा—"मैं आपकी बात नहीं सोच रहा था।"

"ओह, बहुत अच्छा," पिंकार्न ने गुनगुनाकर कहा—"अगर आप मेरी बात नहीं सोच रहे थे, तो मुझे कुछ नहीं कहना है।"

"महाशय," यूस्टाश-डी-मिराडो ने कामँजस से बड़ी ही मिलनसारी का भाव प्रदर्शित करते हुए कहा—"आप हमारे देश-भाई से नम्रतापूर्ण व्यवहार नहीं कर रहे हैं।"

"पर आपको इस बात से क्या सरोकार है, महाशय?" एनांटन ने और भी अधिक क्रोधावेश दिखाकर कहा।

"आप ठीक कहते हैं," मिराडो ने सलाम करते हुए कहा—"इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है।" और वह लार्डी के पास जाने लगा, जो अँगीठी के पास बैठी थी।

लेकिन किसी ने उसका रास्ता रोक लिया। यह मिल्टिर था, जो दोनों हाथ कमर पर रक्खे चालाकी के साथ मुस्कराता हुआ उसके सामने खड़ा था। "कहिए फिर चाचा।" उसने कहा।

"क्या?"

"इसके बारे में आपको क्या कहना है?"

"किसके बारे में?"

"यही, जिस ढंग से उन सज्जन ने आपको चुप कर दिया?"

"क्या!"

"उन्होंने खूब छकाया आपको।"

"अच्छा, आप देख रहे थे?" यूस्टाश ने मिल्टिर के पास

से आगे बढ़ने की चेष्टा करते हुए कहा। किन्तु मिलिटर ने बायीं ओर बढ़कर फिर उसका मार्ग रोक लिया और उसके सामने डट गया।

"नहीं, केवल मैं ही नहीं," मिलिटर ने कहा—"बल्कि सबने यह दृश्य देखा है। देखिए लोग कैसे हँस रहे हैं।"

वास्तव में सब लोग हँस तो रहे थे, किन्तु उनकी हँसी का कारण उपरोक्त बात नहीं, कुछ और ही था। यूस्टाश का चेहरा लाल हो गया।

"सुनिए चाचा," मिलिटर ने कहा—"मामले को ठण्डा मत होने दीजिए।"

यूस्टाश घमण्ड में भरकर कार्मेंजस के पास पहुँचा। "लोग कहते हैं, महाशय," उसने कहा—"आपने मेरे प्रति खास तौर से घृणा प्रकट की है।"

"कब?"

"अभी-अभी।"

"आपके प्रति?"

"हाँ, मेरे प्रति।"

"ऐसा कौन कहता है?"

"ये महाशय।" यूस्टाश ने मिलिटर की ओर इशारा करते हुए कहा।

"तो ये महाशय," कार्मेंजस ने व्यंग-भाव से कहा—"मुर्गी हैं।"

"ओ हो !" मिल्टिर ने क्रोध-पूर्वक कहा।

"और मेरी प्रार्थना है," कामेंजस ने फिर कहा—"कि यह अपनी धृष्टता से मुझे दुखी न करें, नहीं तो मुझे लाइना महाशय की सम्मति याद दिलानी पड़ेगी।"

"लाइना महोदय ने यह नहीं कहा कि मैं मुर्गी हूँ, महाशय।"

"नहीं, उन्होंने कहा है कि आप गधे हैं; क्या आप अपने लिये यह पदवी अधिक पसन्द करते हैं? मेरे लिये इनके परिणामों में विशेष अन्तर नहीं है। अगर आप गधे हैं, तो मैं चाबुक लगाऊँगा, और अगर मुर्गी हैं, तो नोच डालूँगा।"

"महाशय," यूस्टाश ने कहा—"यह मेरा गोद लिया हुआ लड़का है। मेरी प्रार्थना है कि आप मेरे लिये इसके साथ ज़रा अधिक नम्रता-पूर्वक व्यवहार कीजिए।"

"ओह! आप इस तरह मेरी रक्षा करते हैं, चाचा!" मिल्टिर ने क्रोध-पूर्वक कहा—"मैं अकेले ही अपनी रक्षा कर सकता हूँ।"

"स्कूल जाओ, लड़को!" एर्नाटन ने कहा—"स्कूल जाओ।"

"स्कूल!" मिल्टिर ने मुक्का तानकर कामेंजस की ओर बढ़ते हुए कहा—"मेरी उम्र सत्रह साल की है, समझते हैं, महाशय?"

"और मैं पचीस का हूँ," एर्नाटन ने कहा—"इसलिये मैं आपको समुचित दण्ड दूँगा।" और एक हाथ से उसका कालर तथा दूसरे से कमर-पेटी पकड़कर उसे जमीन से उठा लिया,

और फिर खिड़की के रास्ते सड़क पर इस प्रकार डाल दिया, जैसे कोई बँधा हुआ सामान फेंकता है। लार्डी अपना सारा ज़ोर लगाकर चिल्ला उठी।

"अब," एर्नाटन ने धीरे से कहा—"चाचा, गोद के पुत्र, और अन्य लोग, जो कोई भी मुझे फिर छेड़ेगा, उसका कोफ़्ता बनाकर छोड़ूँगा।"

"क़सम से," मिराडो ने कहा—"मेरी समझ में आपने ठीक किया।"

"ओह! यहाँ लोग आदमियों को खिड़की के बाहर फेंकते है?" एक अफ़सर ने अन्दर आकर कहा—"कैसी शैतानी है! अगर कोई ऐसा तमाशा करने लगे, तो उसे कम-से-कम यह कहकर फेंकना चाहिए कि 'कोई नीचे हो, तो हट जाय।'"

"महाशय लाइना!" बीस आवाज़ों ने एक साथ कहा।

"महाशया लाइना!" पैंतालीसों ने एक साथ कहा।

यह नाम सुनकर, जो समस्त गैस्कनी में प्रख्यात था, प्रत्येक व्यक्ति उठ खड़ा हुआ, और होटल में निस्तब्धता छा गयी।

# नवाँ परिच्छेद

—०—

## महाशय लाइना

महाशय लाइना के बाद मिलिटर अन्दर आया, जो चारों-खाने-चित्त गिरने के कारण ज़ख्मी और क्रोध से लाल हो रहा था।

"महाशयो," लाइना ने कहा—"मुझे मालूम होता है कि हम लोग बड़ा शोर मचा रहे हैं। ओह! मालूम होता है मेटर मिलिटर ने फिर दुष्टता की है, और उसकी नाक को दण्ड भुगतना पड़ा है।"

"मैं बदला ले लूँगा," कामेंजस की ओर मुक्का हिलाते हुए मिलिटर ने कहा।

"खाने की तैयारी कीजिए, महाशय फ्रोनिंकन," लाइना ने उच्च स्वर से कहा—"ख़ैर, अब सबको परस्पर मित्र बन जाना चाहिए और एक दूसरे को भाई की तरह मानना चाहिए।"

"हूँ!" सेण्ट-मालिन ने कहा।

"यह तो मुश्किल होगा।" एर्नाटन बोल उठा।

"देखिए," पिंकार्ने ने कहा--"ये लोग मुझ पर इसलिये हँस रहे हैं कि मेरे पास टोपी नहीं है, यद्यपि माण्टक्रेबा, सम्राट् पर्टिना के ज़माने का बख़्तर (जो सम्भवतः उन्हीं के ज़माने से पीढ़ी-दर-पीढ़ी बराबर पहना जाता रहा होगा) पहनकर खाना खाने जा रहा है। देखिए, आत्मरक्षा का अस्त्र इसे कहते हैं।"

"सज्जनो," माण्टक्रेबा ने चिल्लाकर कहा—"मैं इसे उतार देता हूँ, लेकिन जो लोग मुझे आत्मरक्षा की जगह आक्रमण का शस्त्र ग्रहण करते देखना पसन्द करते हैं, उनके लिये यह और भी बुरा है।" और अपना बख़्तर उतारकर अपने पचास वर्ष के बुड्ढे ख़वास को दे दिया।

"ख़ामोश!" लाइना ने चिल्लाकर कहा—"अब हमें खाना खाने के लिये चलना चाहिए।"

इधर ख़वास ने पर्टिना से धीरे से कहा—"और मैं क्या भूखा ही रहूँगा? मुझे भी तो खाना खिलाओ, पर्टिना! मैं भूखों मर रहा हूँ।"

पर्टिना इस सुपरिचित सम्बोधन से क्रुद्ध न हो मुस्कराकर बोला—"मैं कोशिश करूँगा, पर तुम खुद चेष्टा करके कुछ प्राप्त कर लो, तो अच्छा हो।"

"हूँ ! इसका क्या निश्चय है कि मिल सकेगा।"

"क्या तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं ?"

"हमने तो 'सेन' में ही सब-कुछ खर्च कर दिया था।"

"उफ़ ! तब तो कोई चीज़ बेचने की कोशिश करो।"

इसके कुछ ही मिनट बाद सड़क पर से—"लाओ पुराना लोहा बेचना हो तो ! लाओ पुराना लोहा बेचना हो तो ?" की आवाज़ आयी।

श्रीमती फ़ोर्निकन दरवाज़े की ओर दौड़ गयी, और फ़ोर्निकन खाना परोसने में लग गया। जिस चाव के साथ लोगों ने खाना शुरू किया, उसको देखते हुए खाना बहुत ही अच्छा बना था। फ़ोर्निकन इस विषय में अपनी प्रशंसा अकेले न सहन कर सकने के कारण अपनी स्त्री को बुलाने का विफल-प्रयत्न करने लगा; क्योंकि वह वहाँ से गायब हो चुकी थी। बार-बार बुलाने पर भी जब वह नहीं आयी, तो उसने अपने नौकर से पूछा—"आख़िर वह कर क्या रही है ?"

"सरकार," उसने जवाब दिया—"वे तो आपका तमाम पुराना लोहा बेचकर रुपये वसूल कर रही हैं।"

"मेरे हथियार और बख्तर तो नहीं बेच रही है।" उसने दरवाज़े की ओर दौड़ते हुए कहा।

"नहीं," लाइना ने कहा—"हथियारों का ख़रीदना तो क़ानूनन मना है।"

श्रीमती फ़ोनिंकन विजय-सूचक मुद्रा के साथ वापस आयी।

"तुम मेरे हथियार तो नहीं बेच रही थीं?" उसके पति ने उच्च स्वर में पूछा।

"हाँ, मैंने बेच दिये।"

"मैं उन्हें बेचने नहीं दूँगा।"

"वाह! अब तो युद्ध का समय नहीं है, इसलिये दो तश्तरियाँ एक पुराने बख़्तर से अधिक क़ीमती होंगी।"

"तो भी, पुराने लोहे का व्यापार तो राजाज्ञा के अनुसार बन्द कर देना चाहिए, जैसा कि महाशय लाइना ने अभी-अभी कहा है।" शालार ने कहा।

"महाशय, इसके विपरीत," श्रीमती फ़ोर्निकन ने कहा—"बहुत दिनों से यही व्यापारी दाम लगा-लगाकर मुझे लोभ दिला रहा था। आज मैं लोभ-संवरण नहीं कर सकी, और मौक़ा पाकर बेच ही डाला। महाशय, दस क्राउन की भी कुछ रक़म होती है, और पुराने बख़्तर की क्या बिसात? वह तो आख़िर पुराना ही था।"

"क्या! दस क्राउन?" शालार ने कहा—"इतना महँगा?"

"दस क्राउन! सैमुएल, सुनते हो?" पर्टिना अपने नौकर को खोजते हुए बोला; किन्तु वह वहाँ से ग़ायब था।

"मुझे ऐसा मालूम होता है," लाइना ने कहा—"यह आदमी खतरनाक व्यापार करता है। पर वह तमाम पुराना लोहा बटोरकर करता क्या है?"

"वज़न करके बेच देता है।"

"वज़न करके! और आप कहती है कि आपको उसने दस क्राउन दिये हैं—किसके बदले में?"

"एक बख्तर और एक लोहिया मुँड़ासे के बदले में।"

"अच्छा, अगर इनका वजन बीस पौण्ड* हो, तो एक पौण्ड की क़ीमत आध क्राउन हुई। इसमें कुछ रहस्य है।"

यह दल अधिकाधिक प्रफुल्लित होता गया, जिसका श्रेय फ़ोर्निकन की बर्गण्डी शराब को था। लोग अधिक ऊँची आवाज से बोलने लगे। तश्तरियों की खटाखट जारी रही। प्रत्येक गैस्कन पर शराब का नशा झूमने लगा, और उसे प्रत्येक वस्तु में गुलाबी रंग दीखने लगा—केवल मिलिटर और कार्मेंजस को यह उमंग नहीं आयी, क्योंकि पहले का ध्यान तो अपनी चोटों की ओर था और दूसरे का विचार अपने ख़वास की बात सोचने की ओर।

"देखिए कितने ही लोग कैसे खुश हो रहे हैं," लाइना ने अपने पास बैठे हुए युवक—एर्नाटन—से कहा—"ये लोग नहीं जानते कि ये क्यों प्रसन्न हो रहे हैं!"

"न मैं ही इसका कारण जानता हूँ," कार्मेंजस ने जवाब

*पौण्ड लगभग आध सेर का होता है।

दिया—"किन्तु मैं इनसे पृथक् हूँ। मेरे मन में बिल्कुल ही ख़ुशी नहीं है।"

"आप ग़लती कर रहे हैं, महाशय, क्योंकि आप उन आदमियों में से हैं, जिनके लिये पेरिस सोने की खान, प्रतिष्ठा का स्वर्ग और आनन्द का संसार है?"

एर्नाटन ने सिर हिलाया।

"बहुत अच्छा! हम लोग देखेंगे।"

"मेरी दिल्लगी न उड़ाइये, लाइना महाशय।"

"मैं दिल्लगी नहीं उड़ा रहा हूं। मैंने आपको तुरन्त पहचान लिया था, और उस दूसरे युवक को भी, जो बहुत गम्भीर दीख रहा है।"

"वह कौन है?"

"सेण्ट-मालिन।"

"और अगर मेरा प्रश्न अधिक आश्चर्य-जनक न हो, तो बतलाइए कि यह पहचान क्यों हो रही है?"

"मैं आपको जानता हूं, बस।"

"मुझे! आप मुझे जानते हैं?"

"आपको, उनको, और यहाँ जितने आदमी हैं, सबको।"

"यह तो अद्भुत बात है।"

"हाँ, पर है जरूरी।"

"क्यों?"

"क्योंकि एक प्रधान के लिये यह उचित है कि वह अपने सिपाहियों को जाने।"

"और ये सभी आदमी—?"

"कल मेरे सिपाही हो जायँगे।"

"किन्तु मैंने समझा था कि महाशय-डी-एपनों—"

"चुप! चुप! यहाँ उनका नाम न लीजिए—उन्हींका नहीं, बल्कि कोई भी नाम न लीजिए। कान खोल रखिए, लेकिन मुँह न खोलिये। चूँकि मैं आप पर अनुग्रह करने का वचन दे चुका हूँ, इसलिए मैं पहले आपको यही आदेश देता हूँ;" फिर लाइना ने उठकर कहा—"सज्जनो, चूँकि मौक़े से हम पैंतालीस देश-भाई यहाँ एकत्रित हो गये हैं, इसलिये हमें सबके सौभाग्य के नाम पर एक-एक गिलास ख़ाली करने चाहिएँ।"

इस प्रस्ताव से सब में उत्तमता-पूर्ण प्रसन्नता फैल गयी। "इन लोगों में से लगभग सभी आधी शराब पी चुके हैं," लाइना ने कहा—"यह अच्छा होगा कि इन्हें अपना इतिहास दुहराने का मौक़ा दिया जाय, किन्तु हमारे पास समय बाक़ी नहीं है।" इसके बाद वह फिर उच्च स्वर से बोला—"महाशय फ़ोर्निकन, कमरे में से स्त्रियों, बच्चों और ख़वासों को हटा दीजिए।"

लार्डी गुनगुनाकर चली गयी। वह अभी अपना भोजन समाप्त नहीं कर सकी थी। मिलिटर अपनी जगह से नहीं हिला।

"तुमने सुना नहीं, मिलिटर?" लाइना ने कहा—"रसोई-घर में चले जाओ!"

जब केवल पैंतालीसो युवक रह गये, तो लाइना ने कहा—"अब सज्जनो, हम में से प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि उसे पेरिस

किसने बुलाया है। ठीक है! इतना ही काफ़ी है; उसका नाम मत लीजिए। आप यह भी जानते हैं कि आप उसकी आज्ञा का पालन करने के लिये आये हैं।"

सब के मुँह से गुनगुनाने के साथ स्वीकृति-सूचक आवाज़ निकली, जिसमें आश्चय भी मिश्रित था; क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति यही जानता था कि उस बात का सम्बन्ध केवल उसी से है, और इस बात से अनभिज्ञ था कि उसका पार्श्वस्थित व्यक्ति भी उसी भावना से प्रभावान्वित हो रहा है।"

"बहुत अच्छा !" लाइना ने फिर कहा—"बाद में आप एक-दूसरे से सुपरिचित हो जायँगे। आप यह बात तो मानते हैं कि आप यहाँ उसकी आज्ञा का पालन करने के लिये आये हैं ?"

"हाँ, हाँ।" सबने उच्च स्वर से कहा।

"तो आरम्भ में यह काम कीजिये कि इस होटल से चुप-चाप वहाँ चले जाइये, जहाँ आपलोगों के रहने का प्रबन्ध किया गया है।"

"सबके लिये ?" सेण्ट-मालिन ने पूछा।

"हाँ, सबके लिये।"

"हम सबको आज्ञा दी गयी है, और यहाँ हम सब परस्पर बराबर हैं।" पर्डुका ने ऊँचे स्वर में कहा। उसके पाँव ऐसे अस्थिर हो रहे थे कि उसे अपने को संभालने के लिये शालार की गर्दन पर हाथ रखकर सहारा लेना पड़ा।

"हाँ," लाइना ने जवाब दिया—"हाँ, मालिक की इच्छा के सामने हमलोग बराबर हैं।"

"ओह !" कॉमंजस ने उच्च स्वर में कहा—"मुझे नहीं मालूम था कि एद्नाँ-महोदय हमारे मालिक कहे जायँगे।"

"ठहरिए !"

"मुझे ऐसी आशा नहीं थी।"

"ठहरिए, क्रोधी महाशय ! मैंने आपसे यह तो नहीं कहा कि आपका मालिक कौन हो रहा है।"

"नहीं, पर आपने कहा है कि कोई हमारा मालिक होना चाहिए।"

"प्रत्येक व्यक्ति का कोई-न-कोई मालिक है; और अगर आप उसको स्वीकार करने को ऐसे गौरवान्वित हैं, जिसके सम्बन्ध में हम बातें कर रहे हैं, तो आप और भी गर्व कर सकते हैं। मैं आपको अधिकार देता हूँ।"

"सम्राट् !" कॉमंजस ने गुनगुनाकर कहा।

"शान्ति !" लाइना ने कहा—"आप यहाँ आज्ञा-पालन के लिये आये हैं, इसलिये अब आज्ञा-पालन कीजिए। तब तक यह हुक्म आप ज़ोर से पढ़कर सुना दीजिए, महाशय एनाँटन।"

एनाँटन ने हाथ में लेकर निम्नलिखित आज्ञापत्र पढ़ा—

"सम्राट् की आज्ञा से मैंने जिन पैंतालीस सज्जनों को पेरिस बुलाया है, उनके संचालन और प्रधानता का कार्य महाशय-

टी-लाइना को दिया जाता है।—नगारे-डी-लावालेट, ड्यूक-डी-एपर्नों।"

यह हुक्म सुनकर सब झुके।

"इस प्रकार" लाइना ने फिर कहा—"आपको तुरन्त मेरा अनुसरण करना होगा। आपके सामान और नौकर यहीं रहेंगे। महाशय फ़ोर्निकन उसकी रखवाली करेंगे, और बाद में मैं इन्हे यहाँ बुला लूँगा; पर अब जल्दी कीजिए। नावें तैयार हैं।"

"नावे !" गैस्कनों ने चिल्लाकर पूछा—"तो क्या हमें जल-यात्रा करनी होगी ?"

"अवश्य, लावर जाने के लिए हमें जल-मार्ग से जाना होगा।"

"लावर !" सब ने प्रसन्नता से चिल्लाकर कहा—"हम लोग लावर चल रहे हैं।"

लाइना ने सबको वहाँ से अपने सामने चलता किया, और होटल से निकलते समय सब को एक-एक करके गिनता गया, और फिर उन्हे उस जगह ले गया, जहाँ तीन बड़ी-बड़ी नावे उनका इन्तज़ार कर रही थीं।

# दसवाँ परिच्छेद

—○○○—

## बख्तरों की ख़रीदारी

ज्यों ही पर्टिना के नौकर ने श्रीमती फ़ोर्निकन की बात सुनी, वह पुराने लोहे के व्यापारी के पीछे दौड़ पड़ा। वह बहुत पिछड़ गया था, और व्यापारी को जल्दी भी थी, अतः जब सैमुएल ने होटल से निकलकर उसका पीछा किया, तो वह कुछ दूर निकल गया था। बाध्य होकर सैमुएल ने आवाज़ लगायी। आरम्भ में व्यापारी कुछ हिचकिचाता प्रतीत हुआ; किन्तु बाद में यह देखकर कि सैमुएल बिक्री का सामान ला रहा है, वह रुक गया।

"आप क्या चाहते हैं, दोस्त?" उसने पूछा।

"मैं कुछ सौदा बेचना चाहता हूँ।"

"अच्छा, तो जल्दी कीजिए!"

"आपको जल्दी है?"

"हाँ।"

"जब आप देख लेंगे कि मैं आपके लिये क्या लाया हूँ, तो आप रुकने के लिये तैयार हो जायँगे।"

"क्या लाये हैं?"

"एक ऐसी शानदार चीज, जिसका काम.... ., पर आप तो मेरी बात ही नहीं सुन रहे हैं।"

"हाँ, मैं जरा इधर-उधर भी देख रहा हूँ।"

"क्यों?"

"क्या आप नहीं जानते कि अस्त्र-शस्त्र खरीदने की मनाही है?"

सैमुएल ने यही बहाना करना ठीक समझा कि वह इस मनाही से अनभिज्ञ है, और वह बोला—"मैं कुछ नहीं जानता, मैं तो अभी अभी माण्ट-डी-मार्सां से आरहा हूँ।"

"यह दूसरी बात है; पर अभी-अभी आने पर भी आप यह कैसे जानते हैं कि मैं शस्त्र खरीदता हूं।"

"हाँ, यह तो मैं जानता हूँ।"

"आपसे किसने कहा?"

"मुझे किसी के बताने की क्या ज़रूरत थी; अभी थोड़ी ही देर पहले तो आपने काफ़ी जोर से चिल्लाकर कहा था।"

"किस जगह ?"

"बहादुर सवार के निशानवाले होटल के दरवाजे पर।"

"तो आप वहीं थे ?"

"हाँ।"

"किसके साथ ?"

"दोस्तों की टोली के साथ।"

"दोस्तों की टोली ? यहाँ तो साधारणतः कोई नहीं रहता। यह दोस्तों की टोली कहाँ से आयी है ?"

"मेरी ही तरह सब गैस्कनी से आये हैं।"

"तो आप नवार-सम्राट् के लिये आये हुए हैं ?"

"यह क्यों ! हम तो दिलोजान से फ्राँसोसी हैं।"

"हाँ; पर ह्यूगोनाट* भी तो है ?"

"ईश्वर की अनुकम्पा से पवित्र पिता पोप की तरह हम भी कैथोलिक हैं !" सैमुएल ने अपनी टोपी उतारते हुए कहा—"पर हमें अब इससे कोई मतलब नहीं है; हमें तो बख्तर की बात करनी चाहिए।"

"अच्छा तो इस दहलीज़ में आ जाइए, खुली सड़क पर इसका सौदा करना ठीक नहीं। पहले मुझे इस बख्तर को अच्छी तरह देख लेने दीजिए।" दहलीज़ में जाकर उसने कहा।

"देखिए," सैमुएल ने कहा—"यह कैसा वज़नी है।"

---

*सम्प्रदाय-विशेष से सम्बन्ध रखनेवाले, जिन्हें प्रोटेस्टेण्ट भी कहते हैं।

"यह तो पुराना और अप्रचलित है।"

"कला की चीज़ है।"

"मैं छः क्राउन दूंगा।"

"क्या! छः क्राउन! और आपने अभी-अभी पुरानी चीज़ के लिये दस क्राउन दिये हैं—"

"छः से ज़्यादा नहीं दे सकता।"

"पर जरा नक़्क़ाशी तो देखिए।"

"नक़्क़ाशी से फ़ायदा क्या होगा, जब मैं इनका वजन करके बेचता हूं?"

"दस क्राउन का तो इस पर मुलम्मा हो रहा है।"

"अच्छा मैं सात क्राउन दे दूंगा।"

"आप यहाँ तो मोल करते हैं और वहाँ सराय में चुपचाप गिन आये। आप क़ानून के विरुद्ध कार्यवाही करते है, फिर भी ईमानदारों को ठगने की कोशिश करते है।"

"इतने ज़ोर से न बोलिये।"

"मुझे क्या डर है," सैमुएल ने और भी उच्च स्वर से कहा—"मैं कोई ग़ैर-क़ानूनी व्यापार थोड़े ही कर रहा हूँ, मुझे छिपने की क्या ज़रूरत है।"

अच्छा तो दस क्राउन लीजिए, और यहाँ से चलते बनिए।"

"मैंने आपसे कह दिया कि यह चीज़ नहीं, सोना है। अच्छा आप भागना चाहते है, मैं पुलिस को बुलाता हूँ।"

शोर सुनकर सामने की खिड़की खुली। पुराने लोहे का

व्यापारी डर गया। "अच्छा," उसने कहा—"आप जो चाहते हैं, वही दे दूँगा। लीजिये पन्द्रह क्राउन; अब जाइए।"

"हाँ, यह काफ़ी है।" सैमुएल ने कहा—"यह तो मेरे मालिक के लिये है। अब मेरे लिये भी कुछ दीजिए।"

व्यापारी ने अपनी कटार आधी खींच ली।

"हाँ, हाँ, मैं आपकी कटार देख रहा हूँ," सैमुएल ने कहा—"पर मैं खिड़की में से तुम्हारी ओर देखनेवाले व्यक्ति को भी देख रहा हूं।"

व्यापारी का चेहरा डरके मारे फ़क़ हो गया। उसने ऊपर की ओर नज़र डाली, तो उस आदमी को देखा, जो चुपचाप खड़ा सारा दृश्य देख रहा था। "ओह," उसने हँसने की चेष्टा करते हुए कहा—"आप जो चाहते हैं, वही दूँगा; लीजिए एक क्राउन और। कहाँ का शैतान आगया!" उसने अन्तिम बात धीमे स्वर में कही।

"धन्यवाद है, दोस्त।" कहकर सैमुएल चलता बना।

व्यापारी अपना सामान लादकर जाने ही वाला था कि खिड़की पर खड़े हुए नागरिक ने पुकारकर कहा—"मालूम होता है, आप अस्त्र-शस्त्र ख़रीदते हैं, महाशय।"

"नहीं साहब," अभागे व्यापारी ने कहा—"यह तो सिर्फ़, ऐसा ही मौक़ा पड़ गया था।"

"यह मौक़ा तो मेरे लिये भी अच्छा सिद्ध होगा।"

"किस दृष्टि से, महाशय?"

"मेरे पास बहुत-सी ऐसी पुरानी चीज़ें पड़ी हैं, जिनसे मैं छुटकारा पाना चाहता हूँ।"

"मेरे पास तो इतना सामान हो गया है, जितना लेकर मैं चल सकता हूँ।"

"पर मैं आपको वे चीजें दिखा तो दूं।"

"दिखाना व्यर्थ है; मेरे पास और रुपये भी नहीं बचे हैं।"

"कोई पर्वाह नही, मैं उधार दे दूँगा, आप ईमानदार आदमी मालूम होते है।"

"धन्यवाद; पर अब मैं रुक नहीं सकता।"

"बात तो अनोखी है; पर ऐसा मालूम होता है कि मैं आपको जानता हूँ।"

"मुझे जानते हैं?" व्यापारी ने उच्च स्वर में काँपते हुए कहा।

"इस मुँड़ासे की ओर देखिए," नागरिक ने खिड़की से दिखाते हुए कहा।

"आप कहते हैं कि आप मुझे जानते है?" व्यापारी ने पूछा।

"मैंने यही समझा था। क्या आपका नाम—" वह नाम याद करता प्रतीत हुआ—"क्या आप निकोला नहीं है? रू-डी-ला-काज़ोनेरी का निकोला ट्रशो, लोहेवाला?"

"नहीं, नही!" उस आदमी ने फिर कुछ सुस्थिर होकर कहा।

"कोई हर्ज नहीं; क्या आप मेरे हथियार--बख़्तर, तलवार आदि ख़रीदेंगे ?"

"इनके ख़रीदने की तो मनाही है।"

"यह मैं जानता हूँ; जिसका सौदा आपने अभी ख़रीदा है, यह बात उसने बहुत ज़ोर से कही थी।"

"आपने वह बात सुनी है ?"

"हाँ, सब; और आप पिघल भी गये थे। पर घबराइए नहीं, मैं आपके साथ कोई सख़्ती नहीं करूँगा। मैं ख़ुद व्यापारी रह चुका हूँ।"

"आप क्या बेचते थे ?"

"इसकी कोई पर्वाह नहीं; मैंने काफ़ी धन कमा लिया है।"

"मैं आपको बधाई देता हूँ।"

"और फलतः मैं अब सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ, मैं पुराना लोहा इसलिए बेचना चाहता हूँ कि यह मेरे मार्ग में बाधक बन रहा है।"

"मैं यह बात समझ रहा हूँ।"

"और मेरे पास लोहिया जानु-रक्षक और दस्ताने भी हैं।"

"पर ये सब तो मेरे लिये बेकार है।"

"और मेरे लिये भी।"

"मैं सिर्फ़ बख़्तर ले लूँगा।"

"तो आप सिर्फ़ बख़्तर ही ख़रीदा करते है ?"

"जी हाँ।"

"यह विलक्षण बात है, क्योंकि अगर आप वज़न करके ख़रीदते और बेचते हैं, तब तो सभी लोहे एक-से हैं।"

"यह सच है; पर पसन्द बख़्तर ही किया जाता है।"

"अच्छा, तो सिर्फ़ बख़्तर ही ख़रीद लीजिए, या बल्कि—अब मैं यह सोचता हूँ कि कुछ न ख़रीदिए।"

"आपका मतलब क्या है ?"

"मेरा मतलब यह है कि आजकल सबको हथियारों की ज़रूरत है।"

"क्या! ऐसी पूर्ण शान्ति के दिनों में ?"

"दोस्त, अगर हम लोग पूर्ण शान्ति के दिनों में होते, तो बख़्तरों की इतनी माँग न होती·········!"

"महाशय!"

"और ऐसी गुप्त रीति से · ।"

व्यापारी जाने का उपक्रम करने लगा।

"पर मैं जितना ही अधिक देर तक आपको देखता हूं, उतना ही मैं समझता हूँ कि मैं आपको जानता हूँ। आप निकोला ट्रशो नहीं हैं, तो भी मैं आपको जानता हूँ।"

"शान्त रहिए!"

"और अगर आप बख़्तर ख़रीदें—"

"तो ?"

"तो मुझे निश्चय हो जायगा कि यह भगवान् की इच्छा-नुसार कार्य होगा।"

"चुप हो जाइए।"

"आप मुझे भ्रम में डाल रहे हैं!" नागरिक ने चिल्लाकर कहा, और खिड़की से अपनी बाहें निकालकर व्यापारी को पकड़ लिया।

"तो फिर आप हैं कौन!" उसने कहा। उसे ऐसा मालूम हुआ कि उसका हाथ किसी ने शिकंजे में दबा लिया है।

"मैं सम्प्रदायवादियों का काल, संघवादियों का मित्र क्रूर कैथोलिक हूँ; और अब मैं निश्चितरूप से आपको पहचानता हूँ।"

व्यापारी का चेहरा सफ़ेद हो गया।

"आप निकोला—ग्रिम्बेलो, चमड़ेवाले हैं।"

"नहीं, आप ग़लती पर हैं। अच्छा अब विदा, महाशय राबर्ट ब्रिकेट; आपका परिचय पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई।" कह-कर व्यापारी ने खिड़की की ओर पीठ फेर ली।

"क्या! आप चले जा रहे हैं?"

"हाँ, यह तो आप देख ही रहे हैं।"

"और मेरा पुराना लोहा लिये बिना ही!"

"मैंने आपसे कहा न कि मेरे पास रुपये नहीं हैं।"

"मेरा नौकर आपके साथ चला जायगा।"

"यह असम्भव है।"

"तो फिर क्या किया जाय?"

"कुछ नहीं। जैसे हैं, वैसे रहें।"

"इससे मेरा काम नहीं बनेगा; आपका परिचय प्राप्त करने की मुझे बड़ी प्रबल इच्छा है।"

"और मेरी प्रबल इच्छा यहाँ से भाग जाने की है।" व्यापारी ने जवाब दिया, और अपने बख़्तर आदि वहीं छोड़कर किसी के द्वारा पहचाने जाने के भय से भाग खड़ा हुआ।

किन्तु राबर्ट ब्रिकेट परास्त होनेवाला आदमी नहीं था; वह खिड़की से कूदकर तेज़ी से दौड़ पड़ा, और उसने व्यापारी को जा पकड़ा।

"आप पागल हैं!" उसने अपनी विशाल बाहु व्यापारी के हाथ पर रखकर कहा—"अगर मैं आपका शत्रु होता, तो मेरे लिये तो केवल शोर मचा देना ही काफ़ी था, और पुलिस यहाँ चौराहे पर ही है; लेकिन आप तो मेरे दोस्त हैं; और अब मैं आपका नाम जान गया हूं।"

इस बार व्यापारी ने हँसना शुरू कर दिया।

"आप पेरिस के कोतवाल के लेफ़्टिनेंट निकोला पोलेन हैं। मैं निकोला के बाद की अल्ल भूल गया था।"

"मैं तो मर लिया!" वह आदमी बड़बड़ा उठा।

"नहीं; आप बच गये। मैं आपकी अपेक्षा सदुद्देश्य के लिये अधिक कार्य करूँगा।"

निकोला पोलेन कराह उठा।

"हिम्मत कीजिए!" राबर्ट ब्रिकेट ने कहा—"अपनी तबियत को सँभालिये। आपको भाई मिल गया—भाई ब्रिकेट। एक बख़्तर आप ले लीजिए; बाक़ी दोनों मैं ले लूँगा। मैं अपने

दस्ताने और अन्य हथियार मुफ़्त में दिये देता हूँ। आइये, संघ चिरंजीवी हो!"

"आप मेरे साथ चलेंगे?"

"हाँ, मैं इन बख्तरों को, जो फ़िलिस्तीन की विजय के लिये एकत्रित किये जा रहे है, पहुँचाने में आपकी मदद करूँगा। चलिये, मैं भी आपके पीछे-पीछे चलता हूँ।"

लेफ़्टिनेण्ट के मन से अब भी सन्देह दूर नहीं हुआ था, पर उसने मन-ही-मन सोचा—"अगर यह मेरा बुरा चाहता, तो यह बात न स्वीकार करता कि यह मुझे जानता है। आइए फिर!" उसने प्रकटतया कहा—"अगर आप चाहें, तो चलिए।"

"जीवन और मृत्यु का प्रश्न है!" त्रिकेट ने कहा, और होटल गाइज़ पहुँचने तक वह इसी ढंग से बातें करता रहा। वहाँ निकोला पोलेन रुक गया।

मैंने भी सोचा था कि इसी जगह आना होगा।" त्रिकेट ने सोचा।

"अब," निकोला ने शोकपूर्ण ढंग से कहा—"शेर की माँद में घुसने के पहले अब भी भाग निकलने का समय है।"

"वाह! मैं कितनी ही माँदों में घुस चुका हूँ।" त्रिकेट ने कहा।

"आप समझते है?"

"सो तो आप देख ही रहे हैं।"

"कैसा शिकार है।" पोलेन ने सोचा—"शिक्षित, दृढ़, साहसी और सम्पन्न!" फिर वह प्रकट-रूप में बोला—"अच्छा तो

अब हमें घुसना चाहिए," और वह ब्रिकेट के आगे-आगे होटल के दरवाज़े की ओर चला। दरवार में गारद और वर्दीधारी आदमी भरे थे, और कोने में लगाम और काठी से सजे-सजाये आठ घोड़े खड़े थे; किन्तु कहीं रोशनी नहीं दिखायी देती थी। पोलेन ने द्वारपाल को अपना नाम बताया, और बोला—"मैं एक अच्छा साथी लाया हूँ।"

"जाइए फिर।"

"इसे शस्त्रागार को ले जाओ।" पोलेन ने बख़्तर सिपाही को देते हुए कहा।

"अच्छा! तो यहाँ शस्त्रागार भी हैं।" ब्रिकेट ने मन-ही-मन कहा—"आप बड़े ज़बर्दस्त संगठनकर्त्ता हैं, महाशय!" उसने प्रकटतः कहा।

"हाँ, हाँ, आप में समझने की बुद्धि है," पोलेन ने गर्वपूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा—"पर आइये आपको मिला दूँ।"

"नहीं, मैं बड़ा डरपोक हूँ। जब मैं कुछ काम कर लूँगा, तो उनसे मिलूँगा।"

"जैसी आपकी इच्छा। तो फिर यहीं ठहरकर मेरा इन्तज़ार कीजिए।"

"हम लोग अब इन्तज़ार किसका कर रहे हैं?"

"मालिक का।" दूसरे ने जवाब दिया।

इसी समय एक लम्बे क़द का आदमी आया। "महाशयो," उसने कहा—"उनके नाम पर मैं आया हूँ।"

"ओह ! यह महाशय मेनीविले हैं ।" पोलेन ने कहा ।

"ओह ! सचमुच !" त्रिकेट ने भयानक-रूप से मुंह बनाकर कहा, जिससे उसके चेहरे का रंग ही पूर्णतः बदल गया ।

"चलिए, ऊपर चलें, महाशयो," मेनीविले ने कहा, और वह मेहराबदार ज़ीने पर चढ़ने लगा ।

"अन्य लोग भी पीछे-पीछे चले । त्रिकेट आगे-आगे चलता हुआ गुनगुनाया—"पर वह खवास ! वह शैतान खवास कहाँ है ?"

---

# ग्यारहवाँ परिच्छेद

—○○—

## संघ

जिस समय रावर्ट त्रिकेट अन्दर घुसने लगा, तो उसने योलेन को अपना इन्तज़ार करते देखा ।

"माफ़ कीजिएगा," उसने कहा—"पर मेरे दोस्त आपको नहीं जानते, और जब तक वे आपके सम्बन्ध में अधिक जानकारी नहीं प्राप्त कर लेते, तब तक आपसे मिलने के लिये इन्कार करते हैं।"

"यह तो ठीक ही है, और मेरे अन्दर जो स्वाभाविक कल्पालुता है, वह इस आपत्ति की आशा पहले ही से कर रही थी।"

"आप ठीक कहते हैं," ब्रिकेट ने कहा—"आप बड़े अच्छे आदमी हैं।"

"तो अब मैं जा रहा हूँ," ब्रिकेट ने कहा—"एक ही शाम को कैथोलिक संघ के इतने संरक्षक देखकर मुझे प्रसन्नता हुई।"

"तो मैं आपको पहुँचा आऊँ ?"

"नहीं, धन्यवाद; मैं आपको कष्ट नहीं दूँगा।"

"लेकिन शायद वे लोग आपके लिये दरवाज़ा नहीं खोलेंगे; फिर भी मेरी ज़रूरत होगी।"

"क्या निकलने के लिये कोई सांकेतिक शब्द नहीं नियत है ?"

"हाँ, है।"

"तो मुझे बतला दीजिए। मैं मित्र-दल का हूँ, यह तो आप जानते ही हैं।"

"ठीक है। वे शब्द 'परमा और लोरेन' हैं।"

"इससे वे दरवाज़ा खोल देंगे ?"

"हाँ।"

"धन्यवाद, अब आप अपने मित्रों के पास जा सकते हैं।"

ब्रिकेट कुछ क़दम आगे बढ़ाकर बाहर जाता प्रतीत हुआ। फिर वह ठहरकर वहाँ की चीज़ों का निरीक्षण करने लगा। इस पर्यवेक्षण के फल-स्वरूप वह इस परिणाम पर पहुँचा कि ज़ीने का मेहराबदार रास्ता बाहरी दीवार के समानान्तर होकर या है, और ऊपर जाकर उस हाल में समाप्त हुआ है, जहाँ

वह रहस्यपूर्ण कौंसिल होनेवाली थी, जिसमें उसे प्रवेश नहीं करने दिया गया। इससे वह इस निश्चय पर पहुँचा कि दीवार की जिस बन्द खिड़की से रोशनी चमक रही है, उसे लकड़ी के सींकचे लगाकर इस प्रकार बन्द कर दिया गया है, जैसे मठों और जेलखानों की खिड़कियाँ बन्द करके दूसरी ओर का दृश्य देखनेवालों की नज़र से गुप्त रक्खा जाता है, किन्तु हवा का आना-जाना फिर भी जारी रहता है। त्रिकेट ने अनुमान लगाया कि जो खिड़की दीख रही है, वह बग़ल के हाल में खुली होगी, और सोचा कि अगर वह वहाँ स्थान प्राप्त कर सके, तो अन्दर की सारी कार्यवाही देख सकता है। उसने अपने चारों ओर देखा; दरबार में कई सिपाही और नौकर थे; किन्तु स्थान बहुत विस्तृत था और रात थी अँधेरी। इसके अतिरिक्त कोई त्रिकेट के लौटने की आशा भी नहीं कर रहा था। द्वारपाल रात को सोने के लिये अपना विस्तर बिछा रहा था।

त्रिकेट फुर्ती के साथ कूदकर कगर पर चढ़ गया, जो उपर्युक्त खिड़की से जाकर मिली थी, और दीवार से लटककर बन्दर की तरह मज़बूती के साथ कगर की नक़्क़ाशी की उभाड़ पकड़ते हुए, हाथों तथा पैरों से आगे बढ़ा। यदि सिपाही अँधेरे में बिना किसी प्रकट सहारे के दीवार से चिपटकर चलनेवाले इस जीव को देख पाते, तो वे 'जादू' कहकर ज़रूर चिल्ला उठते; किन्तु उन्होंने उसे देखा नहीं। चार ही छलाँग में वह खिड़की के पास पहुँच गया और सींकचों के सहारे जाकर

बैठ गया। इस प्रकार वह दोनों ही तरफ़ के लोगों की दृष्टि से सुरक्षित हो गया।

खिड़की पर बैठकर उसने एक बड़ा हाल देखा, जिसमें रोशनी जल रही थी और सब तरह के हथियारों के ढेर लगे थे—भाले, तलवार, तबर, और बन्दूकों का ऐसा समूह जमा था, जिससे चार फ़ौजें सज सकती थीं। उसने हथियारों की तरफ़ इतना ध्यान न देकर उनके बाँटनेवालों को अधिक ध्यानपूर्वक देखा, और उसकी तीक्ष्ण दृष्टि वहाँ के ख़ास-ख़ास लोगों को पहचानने में लग गयी।

"ओह, हो!" उसने कहा—"यहाँ तो महाशय क्रूस, बिगार्ड और लेकलर्क भी हैं, जो अपने को 'बली' कहने का साहस करते हैं। ख़ूब! अधिकांश संख्या में मध्यम श्रेणी के ही नागरिक यहाँ हैं, पर अमीर लोग···ओह! मेनीविले, निकोला पोलेन से हाथ मिला रहा है; कैसा भाईचारा दिखा रहा है! यह एक वक्ता भी तो है।" मेनीविले को उपस्थित लोगों को सम्बोधन करने का उपक्रम करते देख उसने कहा।

ब्रिकेट व्याख्यान का एक शब्द भी नहीं सुन सका; पर उसने यह समझ लिया कि श्रोताओं पर वक्ता का कोई ख़ास प्रभाव नहीं पड़ रहा है, क्योंकि व्याख्यान सुनकर कोई अपनी गर्दन हिला रहा था, तो कोई वक्ता की ओर पीठ फेर रहा था। पर अन्त में सब वक्ता के पास पहुँचे और उसका हाथ पकड़-पकड़कर अपनी-अपनी टोपियाँ हवा में उछालने लगे।

किन्तु यद्यपि त्रिकेट वहाँ की कार्यवाही सुन नहीं सका; फिर भी पाठकों का उससे अवगत होना आवश्यक है।

आरम्भ में क्रूस, मात्यू और वसी ने ड्यूक-डी-गाइज की अकर्मण्यता की शिकायत की। फिर मात्यू प्रतिनिधि के रूप में बोला—"महाशय मेनीविले, ड्यूक-डी-गाइज़ के स्थान पर आप आ रहे हैं, और हम आपको उनके दूत के रूप में स्वीकार करते है, किन्तु स्वयं ड्यूक की उपस्थिति भी अनिवार्य है। उनके यशस्वी पिता की मृत्यु के बाद जब वे केवल अठारह वर्ष के थे, तभी सब फ्राँसीसियों को इस संघ में सम्मिलित किया गया था और हम लोगों को इस झण्डे के नीचे एकत्रित किया गया था। इस पवित्र उद्देश्य की विजय के लिये हमने अपनी शपथ के अनुसार जान जोखों में डाल दी और अपना सर्वस्व क़ुर्बान कर दिया, किन्तु इतनी क़ुर्बानी करने पर भी कोई उन्नति दृष्टिगोचर नहीं हुई; न कुछ निश्चय ही हुआ। सावधान हो जाइये, महाशय मेनीविले, पेरिस जब इस प्रकार की क़ुर्बानियाँ करते-करते थक जायगा, तो आप क्या करेंगे ?"

इस व्याख्यान की सभी श्रोताओं ने प्रशंसा की।

महाशय मेनीविले ने जवाब दिया—"सज्जनो, अगर अभी तक कुछ भी निश्चय नहीं हुआ है, तो इसका कारण यह है कि अभी कुछ परिपक्व नहीं हुआ है। हमारी स्थिति पर विचार कीजिए—ड्यूक महोदय और उनके भाई नैन्सी में हैं। उनमें से एक तो फ़्लैण्डर्स के ह्यूगोनाट्स को रोकने के लिये एक सेना

संगठित कर रहे हैं, जिन्हें महाशय अंजो हमारा विरोधी बना देना चाहते हैं, और दूसरे महाशय फ्रांस के पादरियों और पोप के पास सन्देशों पर सन्देशा भेज रहे हैं कि वे संघ को अंगीकार कर लें। ड्यूक-डी-गाइज़ यह बात, जिससे कि आप अनभिज्ञ हैं, जानते हैं कि ड्यूक-डी-अंजो और बर्निया का पुराना सम्बन्ध क्या है, और पेरिस आने के पहले स्वत्वापहरण और विरोध का नाम मिटा देना चाहते हैं। किन्तु गाइज़-महोदय की अनुपस्थिति में हमारे साथ मेन-महाशय हैं, जो सैनिक और राजनीतिक—दोनों ही प्रकार के परामर्श देने में पूर्ण पटु हैं। वे अभी यहाँ आनेवाले हैं।"

"मतलब यह कि आपके अमीर भाई उन सभी जगहों पर मौजूद हैं, जहाँ उनकी ज़रूरत नहीं है," वसी ने कहा—"श्रीमती माण्टपेंसियर कहाँ हैं?"

"वे आज सुबह ही पेरिस आ गयी हैं।"

"किसीने उन्हें देखा नहीं?"

"हाँ, देखा है।"

"किसने?"

"सालसेड ने।"

"ओह, हो।" सबने चिल्लाकर कहा।

"किन्तु," क्रूस ने कहा—"क्या वह अदृश्य हो गयीं?"

"बिल्कुल नहीं; वह तो अवलंघनीय हो गयी हैं।"

"और क्या कोई जानता है कि वह इस समय यहीं हैं?"

निकोला पोलेन ने पूछा—"मैं समझता हूँ, सालसेड ने आपको यह नहीं बताया।"

"मैं जानता हूँ कि वह यहीं हैं," मेनीविले ने जवाब दिया—"क्योंकि मैं सेण्ट-ऐण्टोनी के फाटक तक उनके साथ ही आया हूँ।"

"मैं ने सुना है कि उन्होंने फाटक बन्द कर दिये थे।"

"हाँ, कर तो दिये थे।"

"तो वह अन्दर कैसे आयीं ?"

"अपने अनोखे ढंग से।"

"तब तो उनमें पेरिस के फाटक खोल लेने की ताक़त भी आ गयी ?" संघवादियों ने उस ईर्ष्या और सन्देह के भाव से कहा, जो साधारण आदमियों में बड़े आदमियों से मिलने पर उत्पन्न हो जाया करता है।

"सज्जनो," मेनीविले ने कहा—"पेरिस के फाटकों पर आज प्रातः कुछ ऐसी घटना हुई है, जिससे आप अनभिज्ञ प्रतीत होते हैं। केवल उन्हीं को अन्दर आने की आज्ञा मिली थी, जिनके पास प्रवेश-पत्र थे; उन पर, मुझे मालूम नहीं किसके हस्ताक्षर थे। उसी समय पाँच-छः व्यक्ति, जिनमें से कुछ बहुत घटिया कपड़े पहने हुए थे, हमारी आँखों के सामने ही प्रवेश-पत्र दिखाकर अन्दर आये थे। वे आदमी कौन थे ? और वे प्रवेश-पत्र कैसे थे ? पेरिस के वे सज्जन इस बात का जवाब दें, जिन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि वे अपने नगर के सम्बन्ध में तमाम बातें मालूम करके आयेंगे।"

इस प्रकार मेनीविले एक अभियुक्त से अब अभियोक्ता बन बैठे, जो कि वक्ता की सब से बड़ी कला है।

"प्रवेश-पत्र, और अपवाद रूपसे कुछ व्यक्तियों का प्रवेश!" निकोला पोलेन ने उच्च स्वर से कहा—"इसका मतलब क्या है?"

"अगर आप यहाँ के रहनेवाले होकर भी यह नहीं जानते, तो भला हम लोरेन-निवासी इसे कैसे जान सकते हैं, जो संघ में सम्मिलित होने के लिये सारा समय सफ़र में व्यतीत कर देते हैं?"

"तो वे लोग किस प्रकार आये?"

"कुछ पैदल और कुछ घोड़ों पर; कुछ अकेले और कुछ ख़वासों के साथ।"

"क्या वे सम्राट् के आदमी थे?"

"उनमें से तीन-चार तो भिखमंगे-से मालूम होते थे।"

"क्या वे सैनिक थे?"

"छः आदमियों में केवल दो के पास बन्दूकें थीं।"

"तो क्या वे अजनबी थे?"

"मैं समझता हूं, वे गैस्कन थे।"

"ओह!" कितने ही घृणापूर्ण स्वर एक साथ निकल पड़े।

"कोई हर्ज नहीं," बसी ने कहा—"अगर वे तुर्क होते, तब तो हमें उधर ध्यान देने की ज़रूरत थी। हमें उनके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। महाशय पोलेन, यह काम आपका है। किन्तु इन सब बातों से संघ के मामलों पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता।"

"एक नयी तरकीब है," महाशय मेनीविले ने कहा—"आपको कल मालूम हो जायगा कि सालसेड, जिसने हमें धोखा दिया, और फिर देने ही वाला था, न-केवल चुप ही रहा, बल्कि चबूतरे पर बोलने से साफ़ इन्कार कर गया,—डचेज़ को अनेक धन्यवाद जो इन प्रवेशपत्र लेकर आनेवालों की पोशाक में भीड़ में घुसती हुई दण्ड-स्थल तक पहुँच गयीं, और अपने पकड़े जाने के ख़तरे का ख़याल न रखते हुए भी, अपने-आपको सालसेड के सामने प्रकट होने का साहस किया। उनको देखकर ही सालसेड ने अपराध-स्वीकार नहीं किया, और क्षण-ही भर बाद जल्लाद ने उसके पश्चात्ताप का अन्त कर दिया। इस प्रकार सज्जनो, हमारे फ़्लैंडर्स के महोद्योग के सम्बन्ध में डरने की ज़रूरत नहीं है; यह रहस्य हमेशा के लिए क़ब्र में गड़ गया।"

इस अन्तिम बात से सभी संघवादी बहुत प्रसन्न हुए। उनकी ख़ुशी क्रिकेट के क्रोध का कारण बन रही थी; वह फ़ौरन् वहाँ से नीचे उतर आया और दरवाज़े पर जाकर ड्योढ़ीवान से कहा—"परमा और लोरेन!" दरवाज़ा खुल गया और वह चलता बना।

बाद में क्या हुआ, यह इतिहास हमें बताता है। महाशय मेनीविले गाइज़ों के पास से राजद्रोह की युक्ति मालूम करके आये, जिसके फल-स्वरूप नगर के उन प्रधान पुरुषों की हत्याएँ की गयीं, जो सम्राट् के पक्ष के प्रसिद्ध थे, और सड़कों पर घूम-घूम

कर विद्रोहियों ने "शत्रुओं का नाश हो!" के नारे लगाये—इस प्रकार सेण्ट बार्थोलोमो का काण्ड दुहराया गया, जिसमें सभी विरोधी कैथोलिक प्रोटेस्टेण्टों से मिल गये, और इस प्रकार उन्हें दो ईश्वर की सेवा करनी पड़ी—एक उसकी, जो स्वर्ग का शासन करता है, और दूसरे उसकी जो पृथ्वी का शासन करता है—अर्थात्, महाशय गाइज़।

---

# बारहवाँ परिच्छेद

## सम्राट हेनरी तृतीय का दरबार

लावरे के एक बड़े कमरे में सम्राट् हेनरी बैठे थे। उनका चेहरा पीला पड़ रहा था और उससे अशान्ति टपक रही थी। चूँकि उनके लाड़ले सरदार शोवर्ग, क्वेलस, और मागिरों द्वन्द्व-युद्ध में मारे गये थे, और सेण्ट-मेग्रिन का बध महाशय-डी-मेन ने कर डाला था, अतः सम्राट् के मन में उनकी मृत्यु की स्मृतियाँ अभीतक ताज़ी थीं। पुराने सरदारों के साथ उनका जिस प्रकार का प्रेम था, नये सरदारों के साथ उससे भिन्न प्रकार का था। उन्होंने डी-एपर्नो-महाशय पर इतनी अनुकंपा की थी, पर वे उनको प्रेम तो केवल यों-ही करते थे, बल्कि

कभी-कभी वह उनको घृणा की दृष्टि से देखते और उन पर कायरता तथा लोलुपता का अभियोग भी लगाते थे ।

डी-एपर्नों जानते थे कि उसे अपनी अभिलाषाएँ किस प्रकार छिपा रखनी चाहिएँ, जो वास्तव में अस्पष्ट थीं; किन्तु उनमें लोभ की मात्रा इतनी थी, जो हमेशा उन पर पूर्णतः शासन किया करती थी । जब उनके पास धन होता था, तो वह हंसमुख और अच्छे स्वभाव के प्रतीत होते थे; पर जब उन्हें रुपयों की ज़रूरत होती, तो वह अपने मकान में पड़े रहते थे, जहाँ क्रोध और उदासी में पड़कर वह तब तक अपने भाग्य को कोसते, जब सम्राट् की कमज़ोरी उन्हें कोई नया तोहफ़ा नहीं प्रदान कर देती थी ।

जायस बिल्कुल ही भिन्न प्रकृति का था । वह सम्राट् को प्रेम करता था और सम्राट् भी उसके लिये पितृवत् प्रेम रखते थे । युवक और जोशीला होने के साथ ही उसमें गर्व भी काफ़ी था, और वह अपने सुख के आगे किसी बात की पर्वाह नहीं करता था । प्रकृति ने उसे ऐसा सुन्दर, वीर और धन-सम्पन्न बनाया था, कि सम्राट् प्रायः इस बात पर खेद किया करते थे कि उसे किस वस्तु का अभाव है, जो वह उसे दे ।

सम्राट् इन दोनों को अच्छी तरह जानते थे और निस्सन्देह उनकी भिन्न प्रकृति के होते हुए भी उन्हें प्रेम करते थे । अपनी सन्दिग्धता और अन्ध-विश्वास के आवरण में, सम्राट् एक ऐसी दार्शनिक गम्भीरता छिपाये हुए थे, जो कैथेराइन

के अतिरिक्त, अन्य सभी दिशाओं में विकसित हुई थी। प्रायः धोखा खा जाने के कारण सम्राट् हेनरी ऐसे बन गये थे कि अब उन्हें कभी धोखा नहीं दिया जा सकता था।

इस प्रकार सम्राट् अपने मित्रों के चरित्र की पूरी समझ रखते हुए और उनकी त्रुटियों और गुणों को अच्छी तरह जानते हुए, उन सबसे दूर, उस एकान्त जगह में, उदासीन कमरे में बैठे, वह उन पर, अपने आप पर और अपने जीवन पर विचार कर रहे थे तथा उसी विचार की छाया में भविष्य के उस शोकयुक्त क्षितिज की सूक्ष्म रेखाओं पर भी दृष्टिपात करते जाते थे, जो औरों की अपेक्षा उसकी दृष्टि में अधिक स्पष्ट दीख रही थी।

"आख़िर," उन्होंने अपने मन में सोचा—"मैं बेचैन क्यों होऊँ? मुझे अब और लड़ाइयाँ तो लड़नी नहीं हैं। गाइज़ नैन्सी में हैं और हेनरी पा में; एक को बाध्यतः अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति करनी पड़ेगी, और दूसरे के पास कुछ है ही नहीं। उद्योगी लोग इस समय शान्त हैं; किसी भी फ्राँसीसी के मन में उस असम्भवनीय उद्योग का विचार नहीं है,—कोई भी अपने सम्राट् को राज-च्युत करने की बात नहीं सोच रहा है। श्रीमती माण्टपेंसियर की सुनहली क़ैंची—ज़बान—ने जिस तीसरे सम्राट् के राज्यारोहण की प्रतिज्ञा की थी, वह एक औरत की उचंगमात्र थी, जो उसके गर्व से उत्पन्न हुई थी। केवल मेरी माँ ही ऐसी है, जो सर्वस्वापहरण का स्वप्न देख रही है,

पर वह अपहरणकारी को दिखा नहीं सकती। किन्तु मैं, जो एक पुरुष हूँ; जिसके मस्तिष्क में शोकोद्वेग होते हुए भी तारुण्य है, जानता हूँ कि उन ढोंगियों के विरुद्ध क्या कार्य-वाही की जानी चाहिए, जिन पर माँ को सन्देह है। मैं हेनरी-डी-नवार को परिहासास्पद और गाइज़ को घृणास्पद बनाकर छोड़ूँगा, और हाथ में तलवार लेकर बाहरी षड्यंत्रों को चकनाचूर कर दूँगा। जरनाक और मानकैण्टो में मैं उतना मज़बूत नहीं था, जितना आज हूँ। हाँ," वे अपना सिर छाती की ओर झुकाते हुए सोचते रहे—"पर यहाँ मैं अकेला हूँ; और अकेला रहना कितना भयावह है। मेरा एकमात्र और वास्तविक षड्यंत्रकारी यह मानसिक अवसाद भी तो है; मेरी माँ ने इसके बारे में कभी कुछ भी नहीं कहा। देखूँ, अब शाम को कोई आता है? जायस यहाँ जल्दी आने का वादा कर गया था। वह मज़े उड़ाता फिरता है। वह किस प्रकार का मन-बहलाव करता होगा? एपर्नों,—वह किसी तरह के मज़े में नहीं पड़ता, उदास रहता है; अच्छा, उसे आराम के साथ उदासीनतापूर्वक समय काटने दो।"

हुज़ूर द्वारपाल ने कहा—"महाशय ली-ड्यूक-डी-एपर्नों।"

जो लोग प्रतीक्षा में बैठे रहने का कष्ट जानते हैं, वे इस बात को समझते हैं कि ज्यों-ही वह व्यक्ति मिलता है, जिसकी प्रतीक्षा की जाती है, उसकी सारी शिकायतों के बादल छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। इस नियम के अनुसार यह सहज में ही

समझा जा सकता है कि सम्राट् ने किस उत्सुकता के साथ ड्यूक महोदय के लिये कुर्सी मंगवायी होगी। "ओह, गुड इवनिंग,* ड्यूक," उन्होंने कहा—"मैं आपको देखकर मुग्ध हो गया।"

डी-एपर्नों ने प्रतिष्ठा-सूचक सिर झुकाया।

"आप साल्सेड के मृत्यु-दण्ड के समय उपस्थित नहीं थे? मैंने आपसे कह दिया था कि झरोखे पर आपके लिये भी स्थान रिक्त रहेगा।"

"हुज़ूर, मैं श्रीमान् की कृपा का उपयोग करने में असमर्थ रहा।"

"असमर्थ?"

"हाँ, हुज़ूर; मैं बहुत व्यस्त था।"

"कोई भी आपको देखकर यही कहेगा कि आप मेरे सचिव हैं, और गम्भीर मुँह बनाकर यह घोषित करने जा रहे हैं कि कोई आर्थिक सहायता नहीं प्राप्त हुई है।"

"सचमुच, श्रीमान् सच कह रहे हैं। आर्थिक सहायता सचमुच नहीं प्राप्त हुई है और मेरे पास कौड़ी नहीं रही है। किन्तु मेरी चिन्ता का विषय यह नहीं है।"

"फिर क्या है?"

"श्रीमान् को मालूम है कि साल्सेड के मृत्यु-दण्ड के समय क्या घटना हुई है?"

"मैं वहीं था।"

---

*शाम की सलाम।

"वे लोग अपराधी को उड़ाकर ले जाना चाहते थे।"

"यह तो मैंने नहीं देखा।"

"तो भी सारे नगर में यह अफ़वाह फैली हुई है।"

"यह अफ़वाह निराधार है।"

"मेरा विश्वास है कि श्रीमान् का ख़याल ग़लत है।"

"आपके विश्वास का आधार क्या है?"

"यह तथ्य कि सालसेड ने जजों के सामने जो बयान दिया था, जनता के सामने उसे इन्कार कर दिया।"

"ओह। यह तो आप पहले ही से जानते थे।"

"मैं वह सभी बातें जानना चाहता हूँ, जिनमें श्रीमान् दिलचस्पी रखते हैं।"

"धन्यवाद; किन्तु इन बातों से आपने क्या परिणाम निकाला?"

"यही कि जो व्यक्ति सालसेड की तरह मरता है, वह एक अच्छा सेवक है, हुज़ूर।"

"अच्छा, और?"

"और जिसके पास ऐसे अनुयायी मौजूद हैं, वह सौभाग्य-शाली है।"

"आपका मतलब यह है कि मेरे पास ऐसे सेवक नहीं हैं, या अब मेरा सम्बन्ध ऐसे सेवकों से नहीं रहा। अगर आपका मतलब यही है, तब तो आप ठीक कहते हैं।"

"मेरा मतलब यह नहीं था; अवसर आने पर मुझे निश्चय

है कि हुजूर भी ऐसे सेवकों का परिचय प्राप्त कर लेंगे, जिस प्रकार सालसेड के स्वामी ने प्राप्त किया है।"

"सालसेड के स्वामी ने ! आप नाम क्यों नहीं लेते ! सालसेड का स्वामी कौन है ?"

"हुजूर मेरी अपेक्षा अधिक अच्छी तरह जानते हैं।"

"मैं जो-कुछ जानता हूँ, सो तो जानता ही हूँ, आप क्या जानते हैं, सो बताइये।"

"मैं तो कुछ नहीं जानता; पर मुझे सन्देह बहुत है।"

"ठीक !" हेनरी ने क्रुद्ध-भाव से कहा—"आप यहाँ ख़ाह-मख़ाह मुझे परेशान करने और अप्रिय बातें सुनाने आये हैं ? धन्यवाद, मैं आपको अच्छी तरह पहचान गया।"

"तब तो हुजूर मेरे साथ अन्याय करेंगे।"

"मैं तो इसे न्याय समझ रहा हूँ।"

"नहीं हुजूर, एक स्वामि-भक्त नौकर उस बात से सावधान करता है, जो भ्रमात्मक प्रमाणित होती है; किन्तु फिर भी ऐसा करने में वह अपने कर्त्तव्य का पालन करता है।"

"यह तो मेरे सोचने की बात है।"

"ओह ! चूँकि श्रीमान् ऐसा समझते हैं, इसलिये हम लोग उनके सम्बन्ध में अब कुछ न कहेंगे।"

कुछ देर तक दोनों चुप रहे। आखिर सम्राट् फिर बोले। "मुझे अब दिक़ मत कीजिए, ड्यूक," उन्होंने कहा—"मैं पहले ही से उदास हो रहा हूँ। मुझे हर्षित कीजिए।"

"प्रसन्नता ज़बर्दस्ती नहीं लायी जा सकती, हुज़ूर।"

सम्राट् ने क्रोध-पूर्वक मेज़ पर हाथ पटका। "आप कुमित्र हैं," उन्होंने कहा—"पहले मित्रों के साथ मैंने सब-कुछ खो दिया।"

"क्या मैं श्रीमान् से अर्ज़ कर सकता हूँ कि हुज़ूर नये मित्रों को मुश्किल से प्रोत्साहन देते हैं?"

सम्राट् ने उनकी ओर एक ऐसी दृष्टि से देखा, जिसे उन्होंने भली भाँति समझ लिया।

"ओह! श्रीमान् अपनी कृपाओं का ख़याल करते हुए मुझे कलंकित करते हैं," ड्यूक ने कहा—"पर मैं अपनी स्वामि-भक्ति का ख़याल करते हुए हुज़ूर को नहीं कलंकित करता।"

"लावालेट," हेनरी ने उच्च स्वर से कहा—"आप मुझे दुखी कर रहे हैं—आप ऐसे चतुर हैं कि मुझे आसानी से आनन्दित कर सकते थे। मेरे पुराने लाड़लों की तरह आपका स्वभाव लगातार लड़ते रहने का नहीं है; बल्कि आप तो हँसोड़ और दिल्लगीबाज़ हैं, और कभी-कभी अच्छा परामर्श भी दे बैठते हैं। मेरे उस मित्र की तरह, जिसके साथ मैंने कभी क्षण-भर भी उदासीनता का अनुभव नहीं किया, आप मेरे सभी मामलों को जानते हैं।"

"हुज़ूर किस मित्र की बात कर रहे हैं?"

"अपने हँसोड़ मित्र चिको की। हाय, वह कहाँ चला गया?"

डी-एपनों अप्रसन्न होकर उठ खड़ा हुआ—"आज श्रीमान् अन्य लोगों के प्रति प्रसन्न नहीं प्रतीत होते।" उसने कहा।

"ऐसा क्यों ?"

"हुजूर, शायद इस इरादे से नहीं, पर श्रीमान् ने मेरी तुलना चिको के साथ की है, जो बड़ी प्रसन्नता की बात नही है।"

"आपका खयाल ग़लत है, डी-एपनों; मैं केवल ऐसे आदमी की तुलना चिको के साथ कर सकता हूँ, जो मुझे प्रेम करता हो, और जिसे मैं प्रेम करता हूँ। चिको एक विश्वासपात्र और बुद्धिमान सेवक था।"

"मैं समझता हूँ, श्रीमान् ने चिको के साथ समानता करने के लिये मुझे ड्यूक नहीं बनाया ?"

"मैं तो केवल इतना ही कह सकता हूँ कि चिको मुझे प्रेम करता था, और मैंने उसे खो दिया। ओह, जब मैं सोचता हूँ कि जिस जगह अब आप हैं, यहाँ यदि वे सभी सुन्दर, वीर और विश्वासपात्र नवयुवक होते, और वहाँ जिस कुर्सी पर आपने अपनी टोपी रक्खी हुई है, चिको होता, जो सैकड़ों बार इस पर सो चुका था—"

"तो उसके बड़े भारी दिमाग़ का प्रदर्शन होता," ड्यूक ने बात काटते हुए कहा—"किन्तु वह कोई बड़ी प्रतिष्ठा की बात तो न होती, यह निश्चय है।"

"अफ़सोस! अब न तो दिमाग़ ही रहा, न वह शरीर ही।"

"वह हो क्या गया ?"

"मेरे अन्य प्रेमियों की तरह वह भी मर गया।"

"हुज़ूर, मैं समझता हूँ, उसने मर कर अच्छा ही किया; क्योंकि वह बिगड़ता जा रहा था और उसके मज़ाक भी पुराने हो चले थे, और मैंने सुना है कि गम्भीरता का उसमें बिल्कुल अभाव था। उस बेचारे को मर्ज़ क्या हो गया था—बदहज़मी ?"

"नहीं, शोकातिरेक।"

"उसने आपसे ऐसा इसलिये कह दिया कि आप एक बार और हँस लें।

"आप का ख़याल ग़लत है; वह अपनी बीमारी की ख़बर भेजकर मुझे दुखी नहीं करना चाहता था। वह जानता था कि मैं अपने मित्रों के दुःख में कैसा दुखी होता हूँ; उसने मुझे बहुधा उनके कारण रोते देखा था।"

"तो क्या उसकी प्रतिच्छाया ने आकर आपसे यह बात कही थी ?"

"नहीं; मैंने तो उसकी प्रतिच्छाया भी नहीं देखी। उसके योग्य मित्र गोरेनफ़्लोट ने मुझे यह दुःखद समाचार लिखा था।"

"मैं देखता हूं कि अगर वह जीवित होता, तो हुज़ूर उसे सचिव का पद ज़रूर देते।"

"मेरी यह अर्ज़ है, ड्यूक, कि जो लोग मुझे प्रेम करते थे, और जिन्हें मैं प्रेम करता था, आप उनकी हँसी न उड़ायें।"

"हुज़ूर मैं हँसी नहीं उड़ाना चाहता; किन्तु अभी-अभी आपने मुझ पर हँसी के अभाव का आरोप लगाया था...... ।"

"अच्छा अब मैं ठण्डा हो गया; अब मैं वैसी अवस्था में आ गया हूँ, जिसमें आप कुटिल ढंग से बातें शुरूकरने के समय देखना चाहते थे। अच्छा, तो अब अपने कु-समाचार सुनाइये, डी-एपर्नों। सम्राट् में सदा पूरे मर्द के बराबर ताक़त होती है।"

"मुझे इसमें सन्देह नहीं है, हुज़ूर।"

"और यह सौभाग्य की बात है; क्योंकि मेरी रक्षा का प्रबन्ध जैसा बुरा है, उसे देखते हुए यदि मैं स्वतः अपनी रक्षा न करूँ, तो दिन में दस बार मरूँ।"

"जो हमारे कितने ही परिचितों की प्रसन्नता का कारण हो जाय।"

"ओह! उनके विरुद्ध तो हमारे स्विसों के अस्त्र-शस्त्र हैं ही।"

"मैंने उनकी अपेक्षा आपके लिये अधिक पटु रक्षक नियत किये हैं।"

"आपने ?"

"हाँ, हुज़ूर।"

"यह कैसे ?"

"हुज़ूर मेरे साथ लावर की इमारत तक चलेंगे ?"

"रू-डी-ली-आस्ट्रूस के ठिकाने पर ?"

"हाँ, वहीं।"

"मैं वहाँ क्या देखूँगा ?"

"ओह, पहले आइये तो!"

"वह तो बड़ी दूर है, ड्यूक।"

"छज्जेवाले रास्ते से हम पाँच ही मिनट में वहाँ पहुँच सकते हैं।"

"डी-एपनों—"

"हाँ, हुजूर ?"

"जो चीज़ आप मुझे दिखाने ले चल रहे हैं, वह अगर देखने-योग्य न हो, तो विचार कर लीजिए।"

"मैं इसकी जवाबदेही लेता हूं, हुजूर।"

"अच्छा तो आइये।" सम्राट् ने उठकर कहा।

ड्यूक ने अपना अंगरखा सँभाला और सम्राट् की तलवार उन्हें सौंपकर रोशनी हाथ में ले आगे-आगे चले।

---

# तेरहवाँ परिच्छेद

——::o::——

## शयनागार

पाँच मिनट के पहले ही वे अपने अभीष्ट स्थान पर पहुँच गये। ड्यूक ने एक चाबी निकाली और आँगन पार करके एक मेहराबदार दरवाज़ा खोला, जिसके नीचे बहुत-सी घास जम रही थी। वे एक अँधेरे छज्जे से होकर जीने पर चढ़े और अन्ततः अभीष्ट कमरे में पहुँच गये। इस दरवाज़े की भी चाबी डी-एपनों के पास मौजूद थी। उन्होंने दरवाज़ा खोला और सम्राट् को पैंतालीस बिस्तरे बिछे दिखाये, जिनमें से प्रत्येक पर एक-एक आदमी शयन कर रहा था।

सम्राट् ने चिन्तापूर्ण उत्सुकता के साथ यह सब देखा। "अच्छा," उन्होंने कहा—"ये लोग कौन हैं?"

"यह वे लोग हैं, जो रात को तो सो रहे हैं; पर कल सोते नहीं मिलेंगे; बारी-बारी से काम करेंगे।"

"क्यों?"

"जिससे हुजूर शान्ति के साथ सो सकें।"

"साफ़-साफ़ कहिए। क्या ये आपके मित्र हैं?"

"मेरे चुने हुए हैं, हुज़ूर; वीर और निडर रक्षक हैं, जो श्रीमान् की छाया नहीं छोड़ेंगे। हुज़ूर जहाँ-कहीं जायँगे, वहीं जा सकेंगे, और किसी को हुज़ूर के पास फटकने नहीं देंगे।"

"इसका विचार पहले आपने ही किया था, डी-एपर्नों?"

"केवल मैंने ही, हुज़ूर।"

"लोग हमारी हँसी उड़ायेंगे।"

"नहीं, लोग हमसे डरेंगे।"

"पर ये मेरा सर्वनाश कर डालेंगे!"

"सम्राट् का सर्वनाश कैसे हो सकता है?"

"मैं अपने स्विसों को तनख़ाह नहीं दे सकूँगा।"

"इन आदमियों की ओर देखिए, हुज़ूर। क्या आप समझते हैं, इनके रखने में बहुत ख़र्च करना पड़ेगा?"

"पर ये हमेशा इस तरह नहीं रह सकेंगे; इनका दम घुट जायगा। और इनकी पोशाक की ओर तो देखिए!"

ओह, मैं मानता हूँ कि ये ठाठ-बाट के साथ कपड़े नहीं पहने हुए हैं; पर अगर ये ड्यूक और प्रधान के रूप में होते—"

"हाँ, मैं समझता हूँ; उस अवस्था में मुझे अधिक खर्च करना पड़ता ?"

"ठीक यही बात है।"

"अच्छा, इन्हें क्या देना होगा ? इससे शायद मैं निश्चय कर सकूँगा, क्योंकि वास्तव में ये मुझे बहुत आकर्षक नहीं प्रतीत होते।"

"हुज़ूर, मैं जानता हूँ कि ये अधिक दुबले और दक्खिनी धूप से झुलसे हुए हैं, किन्तु जब मैं पेरिस आया था, तो मेरी शक्ल भी ऐसी ही थी। मेरी तरह ये भी मोटे और सफ़ेद हो जायँगे।"

"ये कैसे खर्राटे ले रहे हैं !"

"हुज़ूर, आज ही इनका विचार न करें; आज इन्होंने भर-पेट खाना खाया है।"

"ठहरिये, कोई सोते-सोते ही बड़बड़ा रहा है। सुनिये !"

सचमुच सोनेवालों में से एक बड़बड़ा रहा था—"अगर तू स्त्री है, तो भाग जा !"

सम्राट् धीरे-धीरे उक्त आदमी के पास पहुँचे। "ओह, हो," उन्होंने कहा—"यह तो बड़ा बहादुर है।"

"आप इसके बारे में क्या सोच रहे हैं, हुज़ूर ?"

"इसका मुँह देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है; इसके हाथ सफ़ेद हैं और दाढ़ी भी अच्छे ढंग की है।"

"यह एर्नाटन-डी-कार्मेंजस है। बड़ा अच्छा युवक है, और बहुत-से काम करने की योग्यता रखता है।"

"मैं समझता हूँ, यह बेचारा अपनी प्रेमिका को छोड़कर आया है। पर इसके बग़लवाला आदमी कैसा विलक्षण है!"

"ओह! यह शालार है, अगर यह हुज़ूर का नुक़सान करेगा, तो फ़ायदा भी खूब पहुँचायेगा, मैं यह बात दावे के साथ कह सकता हूँ।"

"और वह उदास-सा दीखनेवाला आदमी ऐसा प्रतीत होता है, मानो इसने कभी प्रेम का स्वप्न भी नहीं देखा।"

"किस नम्बर का आदमी, हुज़ूर?"

"वह बारह नम्बरवाला।"

"वह सेण्ट-मालिन है, जो बड़ा ही बहादुर और दृढ़-हृदय आदमी है।"

"अच्छा, लावालेट, आपको तो इन आदमियों का अच्छा ज्ञान है।"

"मैं ऐसा ही समझता हूँ। ज़रा इस बात पर भी तो विचार कीजिए कि जब ये लोग हुज़ूर की छाया की भाँति साथ-साथ डोलेंगे, तो उसका परिणाम क्या होगा।"

"हाँ, हाँ; लेकिन ये इस पोशाक में मेरे पीछे छाया की तरह नहीं घूम सकते। मेरा शरीर सुसंगठित है, इसलिये मैं उसकी छाया या छाया-समूह को विकृत रूप में देखकर उसकी अप्रतिष्ठा नहीं करनी चाहता।"

"हुज़ूर, अब हमें रुपये के प्रश्न पर विचार करना चाहिए।"

"तो आप क्या आशा कर रहे थे कि यह प्रश्न टल जायगा।"

"बिल्कुल नहीं; इसके विपरीत यह तो सभी मामलों में बुनियादी सवाल है। पर इसके सम्बन्ध में भी मेरा एक ख़याल है।"

"डी-एपर्नों!"

"हुजूर के कार्य के लिये मेरे मन में जो उत्साह है, उससे मेरी कल्पना बढ़ती जा रही है।"

"अच्छा, सुनाइये।"

"अगर मुझसे पूछते हैं, तो कल सुबह ही इन सबको बिस्तरे के पास आरम्भ के छः महीनों की तनख़ाह के रूप में हज़ार-हज़ार क्राउन की थैलियाँ रक्खी मिलनी चाहिएँ।"

"छः मास के लिये एक हज़ार क्राउन; छः हज़ार लिवर सालाना! आप पागल हो गये हैं, ड्यूक; पूरी फ़ौज़ का ख़र्च भी इतना नहीं पड़ता।"

"आप भूलते हैं, हुज़ूर, ये श्रीमान् की छाया बननेवाले हैं; और आपने स्वयं कहा है कि उन्हें अच्छी पोशाक पहननी चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने हजार क्राउनों में से अस्त्र-शस्त्र और अन्य सामान भी बनवाने पड़ेंगे। हुज़ूर की प्रतिष्ठार्थ यदि पन्द्रह सौ लिवर निकाल दिये जायँ, तो पहले साल का व्यय पैंतालीस सौ लिवर होगा। फिर दूसरे साल आप तीन हज़ार लिवर ही दे सकते हैं।"

"यह अधिक उचित मालूम होता है।"

"तो श्रीमान् इसे स्वीकार करते हैं ?"

"केवल एक कठिनाई है, ड्यूक।"

"वह क्या ?"

"रुपयों का अभाव।"

"हुजूर, मैंने एक तरीक़ा सोचा है। छः मास पहले शिकार करने और मछली मारने पर कर लगाया गया था।"

"तो ?"

"शुरू के छः महीनों में उससे पैंसठ हज़ार क्राउन की आमदनी हुई थी। यह रक़म अभी तक ख़ज़ाने में जमा नहीं हुई है, और श्रीमान् की आज्ञा के लिये रोक रक्खी गयी है।"

"उसे तो मैंने युद्ध के लिये छोड़ रक्खा था, ड्यूक।"

"साम्राज्य का पहला हित सम्राट् की रक्षा है।"

"अच्छा; तो भी फ़ौज के लिये बीस हज़ार क्राउन बच रहेंगे।"

"क्षमा करें, हुजूर; पर मैंने उन्हें भी ख़र्च कर दिया।"

"ओ हो !"

"हाँ, हुजूर; श्रीमान् ने मुझे रुपये देने का वादा किया था।"

"मुझे यह निश्चय था," सम्राट् ने कहा—"आप मुझे गारद इसीलिये दे रहे हैं कि आप अपने रुपये प्राप्त कर सकेंगे।"

"ओह, हुजूर।"

"लेकिन यह पैंतालीस की संख्या क्यों ?" सम्राट् ने एक नया विचार व्यक्त करते हुए कहा।

"मैं बतलाऊँगा, हुज़ूर। तीन की संख्या अधिक आरम्भिक और ईश्वरीय है; इसके अतिरिक्त यह सुविधाजनक भी है— उदाहरण के लिये अगर एक सवार के पास तीन घोड़े हों, तो उसे कभी पैदल चलने की नौबत नहीं आती। पहला थके, तो दूसरा तैयार होता है, और ज़ख्म लगने या बीमार होने की अवस्था में दूसरे को बदलने के लिये तीसरा उद्यत मिलता है। इस प्रकार आपके पास पन्द्रह रक्षकों के तिक्के मौजूद रहेंगे— पन्द्रह क्रियात्मक सेवा में, और तीस अवकाश में। प्रति दिन बारह घण्टे की नौकरी रहेगी, जिसमें हर वक्त पाँच आपके दाहिने तरफ़, पाँच बाँयी ओर, और दो आगे तथा तीन पीछे लगे रहेंगे। ऐसे प्रबन्ध के बाद भला कोई आप पर आक्रमण कर तो दे!"

"है तो चतुरतापूर्ण युक्ति, ड्यूक; मैं आपको बधाई देता हूं।"

"इनकी ओर देखिए, हुज़ूर; क्या इनका अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा?"

"हाँ, जब वर्दी पहन लेंगे, तो ये बुरे नहीं मालूम होंगे। अच्छा तो ऐसा ही कीजिए।"

"तो हुज़ूर, मैं एक मेहरबानी चाहता हूँ।"

"न चाहते, तो मुझे आश्चर्य होता।"

"श्रीमान् का मिज़ाज आज कड़ुवा हो रहा है।"

"ओह, मेरा मतलब सिर्फ़ यही है कि मेरी सेवा करने के बाद आपको बदले मे कुछ माँगने का अधिकार है।"

"अच्छा तो हुज़ूर, मैं एक नियुक्ति चाहता हूँ।"

"क्यों, आप तो पहले ही से पैदल सेना के कर्नल-जनरल हैं; और अधिक भार डालने पर तो आप कुचल उठेंगे।"

"हुज़ूर की सेवा में मैं ख़ूब शक्तिशाली हो रहा हूँ।"

"तो फिर आप क्या चाहते हैं ?"

"मैं इन पैंतालीसों का संचालक बनना चाहता हूँ।"

"क्या ! क्या आप मेरे आगे और पीछे दौड़ना चाहते हैं ? आप अपनी स्वामिभक्ति को यहाँ तक बढ़ाते हैं ? आप इन रक्षकों के कप्तान बनना चाहते हैं ?"

"नहीं, मुझे एक सहायक की आवश्यकता होगी; मैं तो केवल इतना ही चाहता हूँ कि ये मुझे अपना अफ़सर समझें।"

"अच्छा, आपको यह पद मिलेगा। पर आपका सहायक कौन होगा ?"

"महाशय-डी-लाइना, हुज़ूर।"

"ओह ! तब तो अच्छा ही है।"

"वह हुज़ूर को ख़ुश रखते हैं ?"

"पूरे तौर से।"

"तो यह निश्चय रहा ?"

"हाँ; आपकी इच्छानुसार ही होगा।"

"तो मैं फ़ौरन् ख़ज़ांची के पास जाकर पैंतालीस तोड़े ले लूँगा !"

"अभी रात को ही ?"

"इन्हें सुबह सोकर उठते ही रुपये मिल जाते हैं न।"

"अच्छा; तो अब मैं वापस जाऊँगा।"

"हुज़ूर, सन्तुष्ट हैं न?"

"हाँ, हूँ ही।"

"आप हमेशा सुरक्षित रहेंगे।"

"इन्हीं लोगों के द्वारा जो सो रहे हैं?"

"ये कल सोते नहीं रहेंगे, हुज़ूर।"

डी-एपर्नों सम्राट् को छज्जे की ओर लिवा ले गये और उन्हें वापसी के लिये गुप्त मार्ग पर छोड़कर लौट पड़े। वह मन-ही-मन कह रहे थे कि अगर मैं सम्राट् नहीं हूँ, तो कम-से-कम मेरे पास सम्राटों की तरह रक्षक तो हैं; और तारीफ़ यह कि इन पर मुझे कुछ खर्च नहीं करना पड़ता; खूब!"

---

# चौदहवाँ परिच्छेद

---

## चिको की छाया

जैसा कि हम पहले कह आये हैं, सम्राट् ने अपने मित्रों के चरित्र और स्वभाव जानने के सम्बन्ध में कभी धोखा नहीं खाया था। वह इस बात को पूर्णतः जानते थे कि डी-एपर्नो अपनी ही सुविधा के लिये काम करते थे; किन्तु चूँकि उन्हें यह आशा नहीं थी कि उन्हें सेवा के बदले में कुछ मिलेगा; अतः अब पैंतालीस रक्षक प्राप्त करके वह बहुत प्रसन्न हो रहा था। इसके अतिरिक्त यह एक ऐसी नयी बात थी, जो बेचारे फ्रांस-सम्राटों—विशेषतः सम्राट् तृतीय—के भाग्य में नहीं थी। हेनरी की सवारी जब वापस आती थी, तो वह

अपने कुत्तों को गिनकर ठण्डी साँस लेते थे, और फिर उन्हें कोई विशेष कार्य नहीं होता था। इसीलिये आज जब वह एपनों के पास से अपने कमरे में वापस आये, तो वह अधिक सन्तुष्ट नज़र आते थे।

"निस्सन्देह, ये आदमी बहादुर हैं, और शायद बड़े स्वामि-भक्त भी होंगे," उसने मन-ही-मन सोचा—"और पैंतालीस तलवारें सदा म्यान से निकलने को तैयार रहेंगी, यह कोई साधारण बात नहीं है।"

इस विचार के साथ ही उनके मन में उन स्वामि-भक्त तलवार-धारियों की भी याद आयी, जिनके विछोह से उन्हें बड़ा ही दुःख होता था। वह फिर उदासीनता में गोते लगाने लगे, जिसमें प्रायः डूबना-उतराना उनकी आदत-सी हो गयी थी। समय ऐसा अशुभ, मनुष्य ऐसे दुष्ट और सम्राटों के मस्तकों को शोभा देनेवाले मुकुट ऐसे ढीले पड़ गये हैं, यह विचार उनके मस्तिष्क में ऐसी प्रबलता के साथ उठे कि उन्हें यह दृढ़ इच्छा हुई कि वह या तो मर जायँ, या फिर चैतन्य हो उठें; पर उस अवस्था में न रहें, जिस ( उदासीनता ) को हमसे श्रेष्ठ अँग्रेज़ लोग 'कुस्वभाव' कहा करते हैं। वह चारों ओर आँखे दौड़ाकर जायस को खोजने लगे और उसे न देखकर उन्होंने उसके सम्बन्ध में जाँच की।

"ड्यूक महोदय अभी नहीं आये हैं।" द्वारपाल ने कहा।

"तो मेरे महलात के ख़वास को बुलाओ।"

जब वह शयन के लिये लेटे, तो उनसे पूछा गया कि पुस्तकें पढ़कर सुनानेवाला 'पाठक' उनकी सेवा में उपस्थित हो या नहीं; क्योंकि हेनरी को प्रायः बहुत रात तक नींद नहीं आती थी और उन्हें किताबें सुना-सुनाकर सुलाया जाता था।

"नहीं," सम्राट् ने जवाब दिया—"मुझे किसी की ज़रूरत नहीं है; सिर्फ़ अगर जायस वापस आ जाय, तो उसे मेरे पास लाना।"

"अगर वह बहुत देर से वापस आयें, हुज़ूर।"

"अफ़सोस! वह हमेशा देरी से लौटता है; पर जब भी आये, उसे मेरे पास हाज़िर करो।"

नौकर ने मोमबत्तियाँ बुझा दीं, और केवल ख़ुशबूदार तेल का एक चिराग़ जला दिया, जिसकी पीली रोशनी सम्राट् को बहुत भाती थी। हेनरी वास्तविक ख़तरे के वक्त़ बहादुर होते हुए भी बच्चों और स्त्रियों की भाँति भीरु और कमज़ोरियों के शिकार थे। वह भूत-प्रेत और पिशाचों के नाम से डरते थे। दीवार पर अपनी ही छाया देखकर, अपने शयनागार का अँधेरा कोना देखकर और हल्की-से-हल्की आवाज़ सुनते हुए वह अन्ततः सो गये। किन्तु उनकी नींद स्थायी नहीं थी, थोड़ी ही देर बाद यह सोचकर कि उन्होंने कोई आवाज़ सुनी है, वह जाग उठे।

"जायस," उन्होंने कहा—"तुम हो?"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। धुँधली रोशनी जल रही थी, और बख़्त की नक़्क़ाशीदार छत पर हल्का प्रकाश पड़ रहा था।

"अब भी अकेला ही हूँ!" सम्राट् ने गुनगुनाकर कहा—"भगवान्! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं अपने जीवन में वैसे ही अकेला रह सकूँ, जैसे मृत्यु के बाद रहूँगा।"

"हाँ! मृत्यु के बाद अकेला? इसका निश्चय क्या है," उसकी शय्या से कुछ ही क़दम के फ़ासले पर तीव्र स्वर सुनायी पड़ा—"और कीड़े-मकोड़े!···उनके सम्बन्ध में क्या होता है?"

सम्राट् चौंक पड़े और भयातुर होकर चारों ओर देखने लगे। "ओह, मैं इस आवाज़ को जानता हूँ!" उन्होंने गुनगुनाकर कहा।

"यह तो सौभाग्य की बात है।" उस आवाज ने जवाब दिया।

"यह तो चिको की सी आवाज मालूम होती है।"

"तुम जल जाओ, हेनरी; भस्म हो जाओ।"

इसके बाद सम्राट् पलँग से आधे उठ बैठे और उन्होंने उसी कुर्सी पर—जिसे उन्होंने डी-एपर्नों को यह कहकर दिखलाई थी कि चिको उसी पर बैठा करता था—एक आदमी को बैठा हुआ देखा।

"भगवान, बचाओ!" उन्होंने चिल्लाकर कहा—"यह तो चिको की छाया है।"

"ओह ! बेचारे हेनरीकट, तुम अभी तक वैसे ही बेवक़ूफ़ बने हुए हो।"

"तुम्हारा मतलब क्या है ?"

"छाया बोल नहीं सकती, मूर्ख; उसके शरीर तो होता ही नहीं, ज़बान कहाँ से आयेगी।"

"तो तुम स्वयं चिको हो ?" सम्राट् प्रसन्नतापूर्वक उच्च स्वर से बोले।

"मुझे इसके बारे में कुछ नहीं कहना है; बाद में हमलोग देख लेंगे कि मैं कौन हूँ।"

"तो तुम मरे नहीं हो, प्यारे चिको ?"

"ठीक; तुम चील की तरह चिल्ला रहे हो। हाँ, मैं मरा हूँ; सौ बार मरा हूँ।"

"मेरे एकमात्र दोस्त, चिको !"

"तुम में कोई भी परिवर्तन नहीं आया; तुम हमेशा एक ही सी बात करते हो।"

"और तुम चिको, क्या तुम बदल गये हो ?"

"मुझे तो ऐसी ही आशा है।"

"मेरे दोस्त, चिको, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया ?"

"इसलिये कि मैं मर गया हूँ।"

"तुमने अभी-अभी तो कहा था कि तुम मरे नहीं हो।"

"कुछ लोगों के लिये मर गया हूँ; कुछ के लिये जीवित हूँ।"

"और मेरे लिये ?"

"मर गया हूँ।"

"मेरे लिये मर क्यों गये हो ?"

"यह तो आसानी से समझा जा सकता है; तुम अब मेरे स्वामी नहीं रहे।"

"तुम्हारा मतलब क्या है ?"

"जो लोग तुम्हारी सेवा करते हैं, तुम उनके लिये कुछ नही कर सकते।"

"चिको !"

"क्रोध मत करो, अन्यथा मैं भी वैसा ही करूँगा।"

"अच्छा तो बोलो, मेरे दोस्त।" सम्राट् ने इस डर से कहा कि कहीं चिको अन्तर्हित न हो जाय।

"मुझे महाशय-डी-मेन के साथ एक छोटे-से मामले का फ़ैसला करना था, यह आपको याद है ?"

"अच्छी तरह।"

"मैंने फ़ैसला कर लिया कि मैं उस बहादुर कप्तान को बिना किसी दया के मारूँगा। वह मुझे फाँसी देने के लिये ढूँढ़ रहा था, और तुमने, जिससे कि मुझे आशा थी कि मेरी रक्षा करेगा, मुझे छोड़ दिया, और उसके साथ सन्धि कर ली। इसके बाद मैंने अपने को, अपने मित्र गोरेनफ़्लोट की सहायता से मृत घोषित कर दिया, जिससे महाशय-डी-मेन ने मेरी खोज बन्द कर दी।"

"कैसा भयानक साहस तुम में था, चिको ! क्या तुम्हें यह नहीं मालूम था कि तुम्हारी मृत्यु से मुझे कितना दुःख होगा ?"

"हाँ, यह साहसपूर्ण कार्य तो है; पर भयानक बिल्कुल नहीं। जब से दुनिया ने मुझे मृतक समझ लिया, तब से मैं जिस शान्ति के साथ जीवन व्यतीत कर रहा हूँ, वैसा पहले कभी नहीं किया था।"

"चिको, मेरा सिर चक्कर खा रहा है। तुम मुझे डरा रहे हो; मैं नहीं जानता कि मैं अब क्या समझूँ।"

"अच्छा! अब कुछ फ़ैसला करो।"

"मैं समझता हूँ कि तुम गये और—"

"तो मैं झूठ बोल रहा हूँ; तुम बड़े नम्र हो।"

"तुम सत्य का कुछ अंश मुझसे छिपा रहे हो; किन्तु प्रकटतया प्राचीन व्याख्याताओं की भाँति तुम मुझे भयानक सत्य सुनाओगे।"

"इसके लिये तो मैं 'नहीं' नहीं कह सकता। तैयार हो जाओ, अभागे सम्राट्!"

"अगर तुम छाया नहीं हो, तो सबकी नजर बचाकर मेरे शयनागार में कैसे घुस आये, जबकि रास्ते में पहरा लगा हुआ है?" कहकर सम्राट् नये भय का विचार त्यागकर फिर पलँग पर लेट गये और उन्होंने ओढ़ने से मुँह ढक लिया।"

"सुनो!" चिको ने ऊँची आवाज़ में कहा—"निश्चय करने के लिये तो तुम्हें केवल मेरा स्पर्शमात्र कर लेने की आवश्यकता है।"

"तो फिर तुम प्रतिहिंसा के सन्देश-वाहक तो नहीं हो न?"

"क्या शैतानों की तरह मेरे सिर पर सींगें हैं, या देव माइकेल की तरह मेरे पास जलती हुई तलवार है ?"

"पर तुम आये किस तरह ?"

"अब भी मेरे पास वह चाबी मौजूद है, जो तुमने दी थी, और जिसे गले में बाँधे रखकर मैं यहाँ के सज्जनों को क्रोध दिलाता हूँ; इसी के द्वारा मैं अन्दर आया हूँ।"

"उस गुप्त द्वार से ?"

"अवश्य।"

"पर कल न आकर आज क्यों आये ?"

"यह तुम्हे मालूम हो जायगा।"

सम्राट् फिर उठ बैठे और बच्चे की तरह बोले—"मुझे कोई अप्रिय बात मत सुनाओ, चिको। अगर तुम जान पाते कि मैं फिर तुम्हे देखकर कैसा प्रसन्न हुआ हूँ !"

"मैं कहूँगा सच ही; अगर वह आपको अप्रिय लगे, तो बुरी बात है।"

"पर मेन के प्रति तुम्हारा भय क्या गम्भीर है ?"

"गम्भीर नहीं, बल्कि अत्यन्त गम्भीर है। तुम समझते हो कि महाशय-डी-मेन ने मुझे रिकाब के चमड़े से पचास चाबुकें लगायी थीं, जिसके बदले में मैंने उसे अपनी तलवार के म्यान से सौ चोटें मारी थीं। निस्सन्देह, इससे वह सोचता है कि अभी उसकी पचास चोटें मुझ पर निकलती हैं—ऐसी अवस्था में अगर मुझे यह मालूम न हो जाता कि वह यहाँ न ह

में है, तो चाहे आपको मेरी कैसी ही प्रबल आवश्यकता क्यों न होती, मैं यहाँ न आता।"

"अच्छा, चिको, अब मैं तुम्हें अपनी रक्षा में रक्खूँगा, और मेरी इच्छा है कि—"

"क्या इच्छा है ? सावधान हो जाओ, हेनरीक्वट ! जब भी तुम यह कहते हो कि 'मेरी इच्छा है,' तो उसका यह मतलब होता है कि तुम कोई मूर्खतापूर्ण बात कहने जा रहे हो।"

"मेरी यह इच्छा है कि तुम अब पुनर्जीवित होकर अपने को प्रकट कर दो।"

"यह ! मैंने भी यही कहा था।"

"मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।"

"ठीक !"

"चिको, मैं अपना राज-वचन देता हूँ।"

"ओह, मेरे पास उससे भी बढ़िया चीज़ है।"

"वह क्या ?"

"मेरी बिल; जिसमें मैं रहता हूँ।"

"मैं कहता हूँ कि तुम्हारी रक्षा करूँगा।" सम्राट ने कूद-कर पलँग से उठते हुए कहा।

"हेनरी, तुम्हें ठण्ड लग जायगी; पलँग पर लेट जाओ।"

"तुम ठीक कहते हो; पर मुझे खिजा रहे हो। जब मेरे पास काफ़ी रक्षक, स्विस, स्काच और फ्राँसीसी अपनी रक्षा के लिये हैं, तो तुम्हारी रक्षा के लिये काफ़ी क्यों न होंगे ?"

"देखा जायगा; तुम्हारे पास स्विस—"

"हाँ, टोकनों की प्रधानता में स्विस हैं।"

"ठीक! और तुम्हारे पास स्काच—"

"हाँ, लाशों की प्रधानता में स्काच हैं।"

"बहुत अच्छा! और तुम्हारे पास फ्राँसीसी गारद—"

"हाँ, क्रीलों की अध्यक्षता में फ्राँसीसी गारद है। और फिर—पर मैं नहीं जानता कि यह बात तुमसे कहनी चाहिए—"

"मैंने तुमसे पूछा कब था।"

"एक नवीनता है, चिको!"

"नवीनता?"

"हाँ; सोचो पैंतालीस बहादुर आदमी।"

"पैंतालीस? तुम्हारा मतलब क्या है?"

"पैंतालीस सज्जन।"

"वे आपको कहाँ से मिले हैं? मैं समझता हूँ पेरिस से तो मिले नहीं।"

"नहीं; पर कल वह यहाँ आ गये हैं।"

"ओह!" सहसा चिको ने सतेज होकर कहा—"मैं उन सज्जनों को जानता हूँ।"

"सचमुच!"

"पैंतालीस भिक्षुक, जो केवल थैली के भूखे हैं—और जिनकी शक्ल देखकर हँसी के मारे प्राण निकलते हैं।"

"चिको, उनमें शानदार आदमी भी हैं।"

"तुम्हारो पैदल सेना के कर्नल-जनरल की तरह सब गैस्कन हैं।"

"तुम्हारी तरह, चिको। तो भी मेरी आज्ञा पर पैंतालीस भयानक तलवारें तैयार रहेंगी।"

"और उनकी प्रधानता डी-एपर्नों की छियालीसवीं भयानक तलवार करेगी।"

"नहीं; ख़ास वही नहीं।"

"तो फिर?"

"लाइना की।"

"और आप इनके बल पर अपने को सुरक्षित समझ रहे है?"

"हाँ, हाँ।" हेनरी ने क्रुद्ध होकर कहा।"

"अच्छा, तब तो तुम्हारी अपेक्षा मेरे पास अधिक रिसाले हैं।"

"तुम्हारे पास रिसाले है?"

"क्यों नहीं।"

"कौन-से?"

"तुम्हें मालूम हो जायगा। पहला रिसाला तो वह है, जिसका संगठन लोरेन में गाइज़ कर रहा है।"

"तुम पागल हो गये हो?"

"नहीं; एक वास्तविक सेना—जिसमें कम से कम छः हज़ार आदमी होंगे।"

"लेकिन तुम-जैसे आदमी की रक्षा, जो मेन से इतना डरता है, गाइज़ के सिपाही कैसे कर सकते हैं?"

"इसलिये कि मैं मर गया हूँ।"

"फिर वही दिल्लगी।"

"मेन चिको से द्वेष करता था। इसीलिये मैंने अपनी मृत्यु से यह लाभ उठाया कि अपना शरीर, नाम और अपनी सामाजिक अवस्था बदल दी।"

"तो तुम अब चिको नहीं हो?"

"नहीं।"

"फिर क्या हो?"

"मैं व्यापारी और संघवादी रावर्ट ब्रिकेट हूँ।"

"तुम संघवादी हो?"

"कट्टर संघवादी; इसी से मैं मेन से दूर रहता हूँ। फिर मेरी रक्षा के लिये—मुझ, पवित्र संघ के सदस्य ब्रिकेट के लिये—पहले तो लोरेन की सेना है, जिसमें छः हज़ार आदमी हैं। यह संख्या याद रखना।"

"सुन रहा हूँ।"

"फिर लगभग एक लाख पेरिस-निवासी हैं।"

"प्रसिद्ध सैनिक!"

"आपको क्रुद्ध करने के लिये इतना ही बहुत है, मेरे सम्राट्। छः हज़ार और एक लाख के अतिरिक्त पोप, स्पेनियों की सेना, महाशय-डी-बार्बन, फ़्लेमिंग्स, हेनरी-डी-नवार, ड्यूक-डी-अंजो—"

"बस?" हेनरी ने अधीर होकर टोका।

"अभी तीन श्रेणी के लोग और हैं, जो आपके विरोधी हैं।"

"वे कौन-कौन-से हैं ?"

"पहले तो कैथोलिक हैं, जो तुमसे इसलिये घृणा करते हैं कि तुमने ह्यूगोनाट्स के तीन मकानात तुड़वा दिये हैं, दूसरे खुद ह्यूगोनाट्स हैं, जो अपने तीन मकानात के भूमिसात् किये जाने के कारण तुमसे नफ़रत करते हैं, और तीसरा एक ऐसा दल है, जो न तुमको चाहता है, न तुम्हारे भाई को, और न ही गाइज़ को; वह चाहता है आपके बहनोई हेनरी-डी-नवार को !"

"बशर्ते कि वह शपथ करे ? पर जिन आदमियों का नाम आज ले रहे हैं, वे सभी फ्रांस के हैं।"

"ठीक। ये मेरे संघ की सेनाएँ हैं, अब जोड़िए और तुलना कीजिए।"

"तुम दिल्लगी कर रहे हो न, चिको ?"

"क्या यह दिल्लगी करने का समय है, जब तमाम दुनिया के विरुद्ध तुम अकेले हो, अभागे हेनरीकट ?"

हेनरी ने राजोचित गौरव प्रदर्शित करने के लिये मुंह बनाया—"मैं अकेला हूँ," उसने कहा—"किन्तु फिर भी मैं अकेले ही सैन्य-संचालन कर सकता हूँ। तुम फ़ौजें तो गिना रहे हो, पर उनका संचालक कहाँ है ? तुम कहोगे गाइज़, पर क्या मैं उसे नैंसी में नहीं रोके हुए हूँ। मेन के सम्बन्ध में तुम खुद कह रहे हो कि वह सोज़ाँ में है, ड्यूक-डी-अंजो ब्रूसेल्स में है और नवार-सम्राट् 'पा' में। ऐसी अवस्था में मैं अकेला हूं, तो

स्वतन्त्र भी हूँ। मैं उस शिकारी की तरह हूँ, जो मैदान में बैठा अपने शिकार के पास आने की प्रतीक्षा करता है।"

चिको अपनी नाक खुजाने लगा। सम्राट् ने समझा कि उसे उनकी बात का विश्वास हो गया है। "इसका क्या जवाब है तुम्हारे पास ?" उन्होंने पूछा।

"तुम हमेशा बड़ी सफ़ाई से बोलते हो, हेनरी ! तुम्हारी ज़बान तुम्हारे बस में है; वास्तव में तुमने मेरी आशा से कहीं अधिक कहा। मैं तुम्हें हार्दिक बधाई देता हूँ। तुम्हारी बातों में मैं केवल एक ही बात पर आपत्ति करता हूँ।"

"वह कौन-सी बात है ?"

"ओह, कुछ नहीं,—लगभग कुछ नहीं—केवल एक अलंकारिक बात है; मैं तुम्हारी उपमा पर आपत्ति करता हूँ।"

"किस दृष्टि से ?"

"तुम कह रहे हो कि तुम शिकारी की तरह शिकार की प्रतीक्षा कर रहे हो, जब कि मैं इसके विपरीत यह सोच रहा हूँ कि तुम शिकार हो, जिसका चरण-चिह्न देखकर शिकारी लोग उसकी माँद की ओर जा रहे हैं।"

"चिको !"

"अच्छा, प्रतीक्षा में बैठे हुए शिकारी, तुमने किसी शिकारी को पास आते हुए भी देखा है ?"

"किसी को नहीं !"

"फिर भी कोई आ गया है।"

"जिनका नाम मैंने लिया है, उनमें से ?"

"ठीक-ठीक उन्हीं में से नहीं, पर लगभग उसी कोटि के आदमियों में से।"

"कौन ?"

"एक स्त्री।"

"मेरी बहन मारगोट ?"

"नहीं; डचेज़-डी-माण्टपेंसियर।"

"वह ! पेरिस आ गयी है ?"

"हाँ।"

"अच्छा, अगर वह आ भी गयी हो, तो इससे क्या ? मैं स्त्रियों से नहीं डरता।"

"सच है; पर वह तो अपने भाई के आगमन की सूचना देने आयी है।"

"गाइज़ के ?"

"हाँ।"

"ओह ! तुम्हें इन बातों से घबराहट भी नहीं होती।"

"मुझे दवात-क़लम और काग़ज़ दो।"

"किसलिये ? गाइज़ के लिये एक हुक्म लिख भेजूँगा कि वह नैन्सी में ही ठहरा रहे ?"

"ठीक; यह विचार अवश्य ही अच्छा होगा, क्योंकि तुम्हारा पूर्व-विचार भी यही रहा होगा।"

"यह फ़ज़ूल बात है, बल्कि मेरा विचार तो इसके विपरीत था।"

"क्यों ?"

"उसे ज्यों ही यह आज्ञापत्र मिलेगा, वह समझेगा कि पेरिस में उसकी आवश्यकता है; और वह आ धमकेगा।"

सम्राट् को क्रोध आ गया। "अगर तुम्हें ऐसी ही बातें करनी थीं," उसने कहा—"तब तो तुम्हारा दूर रहना ही अच्छा होता।"

"तुम्हें और क्या चाहिए था, हेनरी ? प्रेत कहीं चापलूस हुआ करते है ?"

"तब तो तुम मानते हो कि तुम प्रेत हो ?"

"मैंने इससे इन्कार कब किया है।"

"चिको !"

"सुनो, क्रोध मत करो, तुम चूँकि निकटदर्शी हो, इसलिये अन्धे हो जाओगे। आओ देखें। क्या तुमने नहीं कहा कि तुमने अपने भाई को फ़्लैण्डर्स में रख छोड़ा है ?"

"अवश्य, और मेरा ख़याल है कि यह एक अच्छी नीति है।"

"अच्छा, अब सुनो और उत्तेजना को दूर भगा दो; तुम्हारे विचार में गाइज़ किस उद्देश्य से नैन्सी में ठहरा हुआ है ?"

"सैन्य-संगठन के लिये।"

"अच्छा; और वह सेना का संगठन क्यों कर रहा है ?"

"ओह, चिको ! तुम इन प्रश्नों से मुझे थका रहे हो ?"

"इसके बाद तुम अच्छी तरह सो सकोगे। वह सेना का संगठन—"

"उत्तर में ह्यूगोनाट्स पर आक्रमण करने के लिये कर रहा है—"

"बल्कि तुम्हारे भाई ड्यूक-डी-अंजो को परास्त करने के लिये, जो अपने को ड्यूक-डी-बबैंण्ट कहने लगा है और फ़्लैण्डर्स में सिंहासनारूढ़ होने की इच्छा रखता है तथा इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये बराबर तुम्हारी सहायता की याचना करता है।"

"सहायता का वचन मैं सदा देता आया हूँ; किन्तु यह निश्चय है कि मैं कभी भी मदद नहीं भेजूंगा।"

"इससे तो ड्यूक-डी-गाइज़ अत्यन्त प्रसन्न होगा। अगर तुम मदद भेजने में बहानेबाज़ी से काम लोगे; और अगर वे आधा मार्ग तै कर चुके होंगे—।"

"हाँ! मैं समझता हूं; गाइज़ सीमा से नहीं हिलेगा।"

"और मैडम-डी-माण्टपेसियर की यह प्रतिज्ञा कि उसका भाई एक सप्ताह में यहाँ आ जायगा—"

"टूट जायगी।"

"तो फिर?"

"यह तो अच्छा ही होगा, पर दक्षिण में—"

"हाँ; बियर्नेई—"

"तुम जानते हो, वह क्या कर रहा है?"

"नहीं।"

"वह उन नगरों का दावा कर रहा है, जो उसकी स्त्री को दहेज में मिले थे ।" सम्राट् ने कहा ।

"कैसा धृष्ट है ! उसके लिये फ्रांस के राजघराने से सम्पर्क हो जाना ही पर्याप्त नहीं है, और अब वह अपनी अन्य चीज़ों की प्राप्ति का भी दावा करता है !"

"उदाहरण के लिये कैहोर को ही लो, एक शत्रु को ऐसा नगर दे देना क्या अच्छी नीति की बात है ?"

"नहीं, सचमुच यह तो अच्छी नीति नहीं होगी; किन्तु यह काम ईमानदारी का होगा ।"

"महाशय चिको !"

"अच्छा मान लो कि मैंने कुछ भी नहीं कहा; तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे पारिवारिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता ।"

"लेकिन फ़्लैण्डर्स की बात तो रही गयी । मैं किसी को अपने भाई के पास भेजूंगा । पर मैं किसे भेज सकता हूं ? ऐसे महत्वपूर्ण कार्य के लिये मैं किस पर विश्वास करूं ? ओह ! अब मैं समझ गया । तुम्हें जाना होगा, चिको ।"

"एक मृतक आदमी फ़्लैण्डर्स जायगा ? अच्छे रहे !"

"नहीं, तुम राबर्ट ब्रिकेट के रूप में जाओगे ।"

"अवश्य ! नागरिक संघवादी और गाइज का मित्र ड्यूक-डी-अंजो के पास दूत बनकर जायगा ?"

"यानी तुम इन्कार कर रहे हो ?"

"क्यों नहीं !"

"तुम मेरी अवज्ञा करते हो ?"

"मैं तुम्हारी अवज्ञा करता हूँ। क्या मुझ पर तुम्हारी आज्ञा-पालन का कोई कर है ? क्या कभी तुमने मुझे कुछ दिया है, जिसके लिये मैं तुम्हारे प्रति बाध्य होऊं ? मैं दीन-हीन और अप्रसिद्ध हूँ। मुझे ड्यूक और प्रधान बनाओ; मेरे लिये रईसी ठाट का महल बनवा दो; मुझे पाँच हज़ार क्राउन प्रदान करो; तब हम दूत-कर्य पर बातचीत करेंगे।"

हेनरी जवाब देनेवाला ही था कि दरवाज़ा खुला और ड्यूक-डी-जायस के आगमन की सूचना मिली।

"ओह! तुम्हारा आदमी आ गया है," चिको ने कहा—"इससे अच्छा राजदूत और कहाँ मिलेगा ?"

"अवश्य," हेनरी ने गुनगुनाकर कहा—"यह शैतान हमारे सारे मंत्रियों की अपेक्षा अच्छा परामर्श देता है।"

"ओह! तब तो तुम यह स्वीकार करते हो ?" चिको ने कहा—"इसके बाद वह उस बड़ी कुर्सी में सिकुड़कर इस प्रकार लेट गया, जिससे धुँधली रोशनी में वह बिल्कुल ही दिखाई न दे। महाशय-डी-जायस ने उसे नहीं देखा। सम्राट् ने अपने लाड़ले को देखकर प्रसन्नतासूचक आवाहन किया, और हाथ आगे बढ़ा दिया।"

"बैठ जाओ, मेरे बच्चे जायस" उसने कहा—"तुम्हें बहुत देरी हो गयी !"

"श्रीमान् की कृपा !" कहकर जायस पलँग के पास आया और बिछौने पर ही बैठ गया।

---

# पन्द्रहवाँ परिच्छेद

—※—

## राजदूत प्राप्त करने की कठिनाइयाँ

चिको अपनी बड़ी कुर्सी में छिपा रहा, और जायस उस बिछौने के पैताने की ओर आधा लेट रहा, जिस पर सम्राट् ने तकिये के सहारे बैठकर बातें करनी शुरू की थीं।

"जायस," हेनरी ने कहा—"क्या तुम शहर में चारों ओर अच्छी तरह चक्कर लगा आये ?"

"हाँ, हुजूर।" ड्यूक ने बेपर्वाही के साथ कहा।

"प्लेस-डी-ग्रेव से तुम कैसी जल्दी गायब हो गये !"

"हुज़ूर, सच पूछिये तो मैं मनुष्य की यंत्रणा नहीं देखना चाहता।"

"तुम्हारा हृदय कोमल है !"

"नहीं; बल्कि ममतापूर्ण है। किसी की वेदना देखकर मेरे स्नायु-तंतुओं पर भी उसका असर पड़ता है।"

"तुम्हें मालूम है, वहाँ क्या घटना हुई ?"

"नहीं।"

"सालसेड ने सब-कुछ इन्कार कर दिया।"

"ओह !"

"तुम इस बात को बड़ी बेपर्वाही से सुन रहे हो, जायस।"

"मैं मानता हूँ कि मैं इस बात को अधिक महत्व नहीं देता; इसके अतिरिक्त मुझे निश्चय था कि वह इन्कार कर देगा।"

"पर चूँकि उसने जजों के सामने स्वीकार किया था—"

"यह तो इस बात का और भी प्रमाण था कि वह बाद में इन्कार कर देगा। उसकी पहले की स्वीकृति से गाइज़ चौकन्ने हो गये थे और जब श्रीमान् चुपचाप बैठे थे, तो वे लोग काम कर रहे थे।"

"क्या ! तुम ऐसी दूरन्देशी कर लेते हो, और मुझे चेतावनी भी नहीं देते ?"

"मैं आपका सचिव नहीं हूँ, जो राजनीति की बातें करूँ।"

"अच्छा जायस, मैं तुम्हारे भाई को चाहता हूँ।"

"मेरी तरह वह भी हुज़ूर की सेवा में है।"

"तो मैं उस पर विश्वास कर सकता हूँ ?"

"निस्सन्देह।"

"मैं उसे एक छोटे-से काम पर भेजना चाहता हूं।"

"पेरिस के बाहर?"

"हाँ।"

"ऐसी अवस्था में तो यह असम्भव है।"

"क्यों?"

"बाचेग अभी बाहर नहीं जा सकता।"

सम्राट् ने आश्चर्यपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा। "तुम्हारा मतलब क्या है?" उन्होंने पूछा।

"हुजूर," जायस ने धीरे से कहा—"यह तो बहुत ही सीधी बात है। बाचेग प्रेम-पाश में फँस चुका है; उसने अपना काम बुरी तरह शुरू किया है और उसमें बहुत-सी खराबियाँ आ रही हैं। बेचारा दिन-पर-दिन दुबला होता जा रहा है।"

"सचमुच," सम्राट् ने कहा—"मैंने भी इस बात को देखा है।"

"और वह वैसा ही उदास हो रहा है, जैसा श्रीमान् के दरबार में रहता था।"

सहसा कमरे के कोने में से एक प्रकार की 'घों-घों' की आवाज़ आयी, जिससे जायस आश्चर्य-चकित होकर चारों ओर देखने लगा।

"कुछ नहीं है, जायस," सम्राट् ने हँसकर कहा—"तिपाई पर एक कुत्ता सो रहा है। तो तुम यह कहते हो कि बाचेग उदास हो रहा है?"

"मृतवत् उदास हो रहा है, हुज़ूर। ऐसा मालूम होता है कि उसने किसी अत्यन्त शोक-संतप्त स्त्री को देखा है। तो भी ऐसी स्त्री के साथ भी सफलता मिल सकती है; बशर्ते कि कोई उसके साथ व्यवहार करना जाने।"

"तुम तो न परेशान हुए होगे, मनमौजी ?"

"हुज़ूर, ज्यों-ही मुझे उसने अपनी गुप्त बातें बतायीं, मैंने तुरन्त उसे बचाने का कार्य अपने हाथ में ले लिया।"

"तो फिर—"

"तो फिर क्या ? अब उसे आराम होना शुरू हो गया है।"

"क्या ! अब वह प्रेम के मामलों में कम पड़ने लगा है ?"

"नहीं; बल्कि उसे अब उस स्त्री के प्रति अधिक आशा हो गयी है। भविष्य में हम उस स्त्री के साथ ठण्डी साँस लेने की जगह हर तरह से उसे प्रसन्न करने की चेष्टा करेंगे। आज रात को मैं तीस इटैलियन संगीतज्ञों को उसके झरोखे के नीचे नियुक्त कर आया हूँ।"

"छिः !" सम्राट् ने कहा—"यह तो मामूली बात है।"

"क्या ! यह मामूली बात है !—तीस ऐसे संगीतज्ञों की नियुक्ति, जो समस्त संसार में अद्वितीय हैं, मामूली बात है ?"

"ओह, क़सम से कहता हूँ, जिस समय मैडम-डी-काडी के साथ मेरा प्रेम हो गया था, उस समय संगीत से मेरा कुछ भी मनोरंजन न होता।"

"नहीं; पर क्या आप प्रेम करते थे, हुज़ूर ?"

"पागलों की तरह प्रेम करता था।" सम्राट् ने कहा।

फिर 'घों-घों' की आवाज़ आयी, जो ऐसी थी, जैसे कोई किसी के हँसने की नक़ल कर रहा हो।

"यह बिल्कुल भिन्न बात है, हुजूर," जायस ने चारों ओर नज़र दौड़ाकर उपरोक्त आवाज़ के उद्गम का पता लगाने का व्यर्थ प्रयत्न करते हुए कहा—"बल्कि इसके विपरीत वह महिला उसके प्रति मूर्तिवत् निरपेक्ष, और हिमशिला की भाँति शीतल है।"

"तो तुम्हारा ख़याल है कि संगीत से बरफ़ पिघल जायगी, और मूर्ति में चेतनता आ जायगी?"

"मैं यह नहीं कहता कि वह एकदम आकर बाचेग्र के गले से लिपट जायगी; किन्तु वह यह देखकर प्रसन्न होगी कि यह सारा कोलाहल उसी के लिये मचाया जा रहा है। अगर वह उसकी भी पर्वाह न करेगी, तो हम नाटक, जादूगरी, काव्य-पाठ आदि संसार के सभी आनन्द उपस्थित करेंगे, जिससे यदि हम उसे प्रसन्न न भी कर सके, तो मुझे आशा है, बाचेग्र तो ख़ुश हो ही जायगा।"

"मुझे ऐसी ही आशा है; पर चूँकि बाचेग्र के लिये पेरिस छोड़ना कठिन है, इसलिये उसे तो रहने दो। मुझे आशा है कि उसकी तरह तुम भी किसी इन्द्रियासक्ति के ग़ुलाम नहीं हो?"

"मैं कभी अधिक स्वतंत्र नहीं रहा हूँ, हुजूर।"

"ओह ! मैंने समझा था कि तुम एक सुन्दरी पर आसक्त थे ?"

"हाँ, महाशय डी-मेन की प्रेमिका पर,—वह एक ऐसी स्त्री है, जो मुझे चाहती है।"

"अच्छा ?"

"हाँ, सोचिए तो सही—आज शाम को बाचेग्रा को प्रेम-पाठ देने के बाद मैं उसकी प्रेम-गाथा को ध्यान में रखते हुए उस ( अपनी प्रेमिका ) से मिलने गया। मैंने भी उसी की भाँति अपने को प्रेमासक्त समझ लिया। वह काँपती हुई और भयातुर अवस्था में मिली। मेरे मन में पहला विचार यह उत्पन्न हुआ कि मैं उसे छेड़ूँ। मैंने उसे शान्त करना चाहा; पर सब व्यर्थ हुआ। मैंने उसे सम्बोधन किया; पर उसने जवाब नहीं दिया। मैंने उसका आलिंगन करने की चेष्टा की; पर उसने अपना सिर हटा लिया। मुझे क्रोध आ गया, और हम लड़ पड़े; और उसने मुझसे कहा कि वह अब मुझसे कभी राज़ी नहीं होगी।"

"अभागे जायस !" सम्राट् ने हँसकर कहा—"फिर तुमने क्या किया ?"

"हुज़ूर ! मैं अपनी टोपी और अँगरखा सँभालकर झुका, और बाहर निकल आया; एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा।"

"शाबाश, जायस ! बड़ी हिम्मत का काम किया।"

"और इसलिये और भी हुज़ूर कि मैंने समझा कि वह ठण्डी साँस ले रही है।"

"लेकिन तुम वापस जाओगे ?"

"नहीं, मुझे इस बात का गर्व है।"

"अच्छा दोस्त, यह बिगाड़ तुम्हारी भलाई के लिये ही हुआ है।"

"शायद ऐसा ही हो, हुज़ूर, पर सम्भवतः एक सप्ताह तक मैं परेशान रहूंगा, क्योंकि मुझे कोई काम नहीं रहेगा। तो भी शायद इससे मेरा मनोरंजन हो; यह नया काम है और शायद उच्च भी।"

"अवश्य है; मैंने इसे ऐसा ही बना दिया है," सम्राट् ने कहा—"तो भी मैं तुम्हें किसी काम में व्यस्त रक्खूँगा।"

"मैं आशा करता हूँ कि वह कोई सुस्ती के साथ किया जानेवाला काम होगा ?"

तीसरी बार फिर कुर्सी से आवाज़ आयी। उस समय यही समझा जा सकता था कि कुत्ता जायस की बातों पर हँस रहा है।

"यह बड़ा ही समझदार कुत्ता है," हेनरी ने कहा—"जो काम मैं तुम्हें सौंपना चाहता हूँ, यह उसकी भविष्यवाणी कर रहा है।"

"मुझे क्या करना होगा, हुज़ूर ?" जायस ने पूछा।

"अपने बूट पहन लो।"

"ओह, यह तो मेरे ख़याल के विरुद्ध है।"

"घोड़े पर सवार हो जाओ।"

"घोड़े पर! असम्भव।"

"क्यों?"

"क्योंकि मैं जल-सेना का नायक हूँ, और जल-सेनाध्यक्षों का घोड़ों से क्या सम्बन्ध?"

"अच्छा तो जल-सेनापति, यदि घोड़े की सवारी से तुम्हारा सम्बन्ध नहीं है, तो फिर सदा सब जगह तुम्हें नावों पर ही जाना होगा। अब तुम्हें तुरन्त रून के लिये रवाना हो जाना पड़ेगा। वहाँ तुम्हें जल-सेनाध्यक्ष का जहाज़ मिलेगा, जो तुम्हें एण्टवर्प ले जायगा।"

"एन्टवर्प!" जायस ने चिल्लाकर ऐसे स्वर में कहा, जैसे उसे कैण्टन या वालपारैसो जाने का हुक्म हुआ हो।

"हाँ, एण्टवर्प," सम्राट् ने ठण्डे और घृणा-पूर्ण स्वर में कहा—"अब इसे दुहराने की ज़रूरत नहीं है।"

जायस ने फिर कोई विरोध न करके अपना अँगरखा पहना और टोपी उठाई।

"मुझे अपनी आज्ञा मनवाने के लिये कितनी दिक्कत उठानी पड़ती है।" हेनरी ने फिर कहा—"यदि मैं कभी भूल जाऊँ कि मैं स्वामी हूँ, तो दूसरे तो याद रख सकते हैं।"

जायस कड़ाई के साथ झुककर बोला—"आपकी आज्ञा, क्या है, हुज़ूर?"

सम्राट् पिघलने लगे—"जाओ," उन्होंने कहा—"रून जाओ। वहाँ से, यदि तुम्हें खुश्की के रास्ते ब्रुसेल्स जाना न पसन्द हो, तो जहाज़ से जाना होगा।"

जायस बिना कोई उत्तर दिये झुका।

"तो तुम खुश्की का रास्ता पसन्द करते हो, ड्यूक?" हेनरी ने पूछा।

"जब मुझे आज्ञा-पालन करना है, तो फिर मेरी पसन्द कैसी, हुज़ूर।"

"अच्छा, अब तुम रुष्ट हो गये। ओह! सम्राटों का कोई मित्र नहीं होता।"

"जो हुक्म देते हैं, उन्हे केवल नौकर ही पाने की आशा करनी चाहिए।"

"महाशयजी" सम्राट् ने फिर क्रुद्ध होकर कहा—"अब तुम्हें रून जाना है; अपने जहाज़ के लिये रवाना हो जाओ, और काडबेक हार्फ्लेयर और डीप की गढ़-रक्षिणी सेनाएँ साथ ले जाओ। बाद में मैं इन्हे बदलने के लिये और सेनाएँ भेजूँगा। इन छहों टुकड़ियों को जहाज़ से ले जाकर मेरे भाई की सेवा में उपस्थित करना, जो सहायता की आशा लगाये वहाँ बैठा है।"

"मेरा कमीशन*, अगर आप चाहे, हुजूर!"

---

*सैनिक कमीशन केवल अधिकारारूढ़ अफ़सरों को दिया जाता था।

"और तुम अपनी योग्यता के लिहाज़ से जल-सेना-नायक के पद से कब से पृथक् हुए ?"

"मैं केवल आज्ञा-पालन करता हूँ, हुजूर, और जहाँ तक सम्भव होता है, उत्तरदायित्व से बचता हूँ।"

"अच्छा तो तुम्हें रवाना होने के पहले तुम्हारे होटल में कमीशन मिल जायगा।"

"किस समय ?"

"एक घण्टे में।"

जायस झुककर दरवाज़े की ओर मुड़ा। सम्राट् का हृदय सन्दिग्ध हो उठा। "क्या!" उसने उच्च स्वर से कहा—"विदा लेनेतक की शिष्टता नहीं दिखायी ? तुम में नम्रता नहीं है; जल-सेनावालों में यह खास शिकायत पायी जाती है!"

"माफ़ करें, हुज़ूर, पर मैं जल-सैनिक की अपेक्षा निकृष्टतर दरबारी अधिक हूँ।" कहकर ज़ोर से दरवाज़ा बन्द करते हुए जायस बाहर चला गया।

"देखो, जिनके लिये मैंने इतना किया, वह मुझे कैसा प्रेम करते हैं," सम्राट् ने उच्च स्वर से कहा—"कृतघ्न जायस!"

"क्या तुम उसे फिर बुलाने जा रहे हो ?" चिको ने आगे बढ़ते हुए कहा—"जीवन में एक ही बार तुमने दृढ़ता दिखायी है, और उसके लिये भी तुम पश्चात्ताप कर रहे हो।"

"ओह! तुम समझते हो अक्तूबर के महीने में समुद्र जाना अनुकूल होगा। मैं चाहता हूँ कि तुम यह काम करो।"

"तुम्हारा यह चाहना मेरे लिये स्वागत का विषय है; इस समय मेरी इच्छा यात्रा करने की है।

"तो अगर मैं तुम्हें कहीं भेजना चाहूँ, तो तुम उसमें आपत्ति तो न-करोगे ?"

"न-केवल यह कि मैं आपत्ति न करूँगा; बल्कि इसके लिये तो मैं प्रार्थना करूँगा।"

"एक सन्देश लेकर जाओगे ?"

"हाँ।"

"नवार जाओगे ?"

"मैं तो शैतान के पास भी जा सकता हूँ, महान् सम्राट्।"

"तुम दिल्लगी तो नहीं कर रहे हो, विदूषक ?"

"हुजूर, मैं अपने जीवन में बहुत प्रसन्न नहीं रहा हूँ, और मैं आपसे क़सम खाकर कहता हूँ कि जब से मैं मरा हूँ, तब से मैं और उदास रहता हूँ।"

"पर तुमने तो अभी-अभी पेरिस छोड़ने से इन्कार किया था।"

"मेरे कृपालु सम्राट्, मैं ग़लती पर था; बड़ी भारी ग़लती पर, और अब मैं उसका प्रायश्चित करता हूँ।"

"तो अब तुम पेरिस छोड़ना चाहते हो ?"

"फ़ौरन, शाहंशाह; इसी क्षण महाराज।"

"अब मैं तुम्हारी बात नहीं समझ रहा हूँ।" हेनरी ने कहा।

"तो फिर आपने वह बात नहीं सुनी, जो फ्रांस के जल-सेनापति ने कही है ?"

"वह क्या ?"

"यही कि उसका सम्पर्क महाशय-डी-मेन की प्रेमिका से हो गया है।"

"हाँ, तो इससे क्या ?"

"अगर वह स्त्री ड्यूक-जैसे सुन्दर युवक से प्रेम-बद्ध है—क्योंकि जायस सुन्दर है—"

"निस्सन्देह।"

"अगर उस स्त्री ने ठण्डी साँस लेकर उसे पृथक् किया है, तो इसका कोई कारण है।"

"सम्भव है; अन्यथा वह इसे पृथक् न होने देती।"

"वह कारण जानते हो क्या है ?"

"नहीं।"

"अनुमान नहीं लगा सकते ?

"नहीं।"

"इसका कारण यह है कि महाशय-डी-मेन शीघ्र वापस आनेवाला है।"

"ओह, हो !" सम्राट् ने कहा।

"आखिर तुम्हारी समझ में आ गया ? मैं तुम्हें इसके लिये बधाई देता हूँ।"

"मैं अब यह विश्वास कर रहा हूँ कि मेन आयेगा।"

"अच्छा, तो अगर तुम मुझे भेजना चाहो, तो मैं नवार जाऊँगा।"

"निश्चय ही मेरी यही इच्छा है।"

"मैं आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा हूं, दयालु सम्राट्।" चिको ने सम्राट् ही की तरह मुंह बनाकर कहा।

"पर तुम जानते नहीं कि यह कार्य तुम्हारे लिये उपयुक्त होगा या नहीं। मैं मार्गो और उसके पति में लड़ाई करवाने के कुछ उपाय काम में लाना चाहता हूँ।"

"'फूट डालकर शासन करना,' सौ वर्ष पहले राजनीति का श्रीगणेश समझा जाता था।"

"तो तुम इसके विरुद्ध नहीं हो न?"

"मुझे इससे क्या मतलब; जैसा चाहो करो। मैं तो राजदूत हूं—बस; और जब तक मैं इसमें खरा उतरता रहूँगा, मैं और बात की पर्वाह नहीं करूँगा।"

"पर तो भी तुम्हें यह जानना होगा कि मेरे बहनोई से क्या कहना है।"

"मैं कोई भी बात नहीं कहूँगा! कदापि नहीं।"

"नहीं?"

"जहाँ आप कह रहे हैं, मैं जाऊँगा; पर मैं कुछ कहूँगा नहीं।"

"तो तुम इन्कार करते हो?"

"हाँ, सन्देश कहने से इन्कार करता हूँ; पर पत्र ले जाऊँगा।"

"अच्छा, मैं तुम्हें पत्र दूँगा।"

"तो फिर दीजिए।"

"क्या! तुम नहीं समझते कि ऐसा पत्र एक दम नहीं लिखा जा सकता? अच्छी तरह विचार करके जाँच-पड़तालकर पत्र लिखा जायगा।"

"अच्छा तो सोच लो। मैं सुबह आऊँगा, या मँगवा लूँगा।"

"यहीं क्यों नहीं सो जाते?"

"यहीं?"

"हाँ, अपनी कुर्सी में।"

"वह तो हो चुका। मैं लावर में और नहीं सोऊँगा। एक भूत को आरामकुर्सी में सोया देखकर लोग क्या कहेंगे—यह तो बड़ी बेवक़ूफ़ी होगी!"

"किन्तु तुम्हें मार्गो और उसके पति के सम्बन्ध में मेरे विचार जान लेने होंगे। मेरे पत्र में काफ़ी हलचल होगी और वे तुमसे प्रश्न करेंगे; तुम्हें इतनी बात मालूम होनी चाहिए कि तुम उनके प्रश्नों का उत्तर दे सको। यह वाहियात बात होगी! तुम मेरे प्रतिनिधि बनकर जाओगे, इसलिये मैं नहीं चाहता कि तुम एक बेवक़ूफ़ के रूप में प्रकट होओ।"

"ख़ूब!" चिको ने कन्धे हिलाते हुए कहा—"आप कैसे जड़ हो रहे हैं महान् सम्राट्! क्या आपके कहने का यह मतलब है कि मैं ढाई सौ लीग* का लम्बा सफ़र करके जो पत्र ले जा रहा हूँ, मुझे यही नहीं मालूम होगा कि उसमें क्या

---

*लीग का फ़ासला लगभग तीन मील के बराबर होता है।

है ? आप निश्चिन्त रहिए, मैं यहाँ से रवाना होने के बाद पहले जिस जगह रुकूंगा, वहाँ आपका पत्र खोलकर पढ़ लूंगा। क्या दस वर्ष से तमाम संसार में अपना सन्देश-वाहक भेजते रहने पर भी आप इतना नहीं जानते ? अब आराम कीजिए—मैं अपने एकान्त स्थान को जाऊंगा।"

"कहाँ है वह स्थान ?"

"क़ब्रस्तान में, महान् सम्राट्।"

हेनरी उसकी ओर देखकर फिर आश्चर्य में पड़ गये।

"ओह! आप इसकी आशा नहीं रखते थे," चिको ने कहा—"अच्छा, कल तक के लिये विदा। कल मैं या मेरा सन्देश-वाहक आयेगा—"

"मैं तुम्हारे सन्देश-वाहक को कैसे जानूंगा ?"

"वह कहेगा कि वह छाया के पास से आया है।" कहकर चिको ऐसी शीघ्रता के साथ ग़ायब हो गया कि हेनरी का अन्ध-विश्वास-पूर्ण मस्तिष्क सन्देह में पड़ गया कि वास्तव में वह चिको का शरीर था, या छाया, जो चुपचाप दरवाज़े के पथ को हिलाये-डुलाये बिना बाहर निकल गयी।

# सोलहवाँ परिच्छेद

—:※:※:—

## चिको की मृत्यु

हमें अपने उन पाठकों को निराश करने का खेद है, जो चमत्कार में यहाँ तक विश्वास करते हैं कि इस कथानक में प्रेत को सम्मिलित करने की धृष्टता को प्रिय समझते हैं। चिको सम्राट् से अपनी रीति के अनुसार मज़ाक़ के पर्दे में बातें कर गया, और इस प्रकार वह वे सभी सच्ची बातें उनसे कह गया जिन्हें उसके सामने घोषित करना वह आवश्यक समझता था।

वास्तविक घटना यही है, जिसका वर्णन ऊपर किया गया है। सम्राट् के मित्रों की मृत्यु के बाद और गाइज़ों-द्वारा आयोजित षड्यंत्र और उत्पात का आरम्भ हो जाने पर चिको

ने विचार किया। वह साहसी तो था ही, साथ ही सदा बेपर्वाह भी रहता था, फिर भी वह अनुभव की समस्त घटनाओं का परिचालक था और उनमें अपने मनोरंजन की सामग्री प्राप्त कर लेता था जैसा कि सभी उच्च गुण-सम्पन्न व्यक्ति प्राप्त करते हैं, क्योंकि केवल मन्द-बुद्धि लोग ही इस संसार से उकता बैठते हैं और अन्यत्र विनोद खोजते फिरते हैं।

विचार करते-करते चिको इस परिणाम पर पहुँचा कि मेन की प्रतिहिंसा से सम्राट् की रक्षा की अपेक्षा अधिक लाभ होने की सम्भावना है; और अपने विलक्षण तत्व-ज्ञान के अनुसार उसने मन-ही-मन में कहा कि इस संसार में भौतिक तथ्य को कोई भी नही मेंट सकता; इसलिये सम्राट् के सभी अस्त्र-शस्त्र और न्यायालय इसके लिये कोई उपाय नहीं निकाल सकते—यद्यपि क़रीब-क़रीब अदृश्य रूप से—मेन की तलवार चिको के जाकेट में घुसकर ज़रूर इलाज कर सकती है। इसके अतिरिक्त वह विदूषक का कार्य करते-करते उकता गया था और उस राजकीय घनिष्ठता से भी उसका जी ऊब उठा था, जो उसे सीधे विनाश की ओर लिये जा रही थी।

ऐसी अवस्था में चिको ने पहले मेन की तलवार से अपने शरीर को अधिक-से-अधिक दूर रखने का प्रबन्ध किया। इसी विचार से वह तिगुनी कार्य-सिद्धि के उद्देश्य से ब्यून के लिये रवाना हुआ—पहला लाभ तो पेरिस छोड़ना था, दूसरा फ़ायदा यह था कि वह अपने मित्र गोरेनफ़्लोट से मिल सकेगा

और तीसरा हित यह होगा कि वह १५५० ई०-वाली उस मधुर मदिरा का पान कर सकेगा, जिसका वर्णन 'ला-डेम-डी-मान्सरेऊ' के अन्त में आये हुए पत्र में किया गया है। यह तो स्वीकार करना पड़ेगा कि इस प्रकार की तसल्ली उसके लिये काफ़ी थी। दो महीने के बाद उसने देखा कि वह काफ़ी मोटा हो गया है और इस प्रकार उसकी शक्ल में परिवर्तन हो गया है। किन्तु साथ ही उसने यह भी समझा कि चूँकि उसकी आकृति अधिक गोल हो गयी है, इसलिये अब उसकी शक्ल से यह नहीं मालूम होगा कि वह कोई बुद्धिमान आदमी है। उसका रूप अब गोरेनफ़्लोट से मिलता-जुलता था। किन्तु यह सब होने पर भी उसमें हर्षोत्फुल्लता का प्राधान्य पूर्ववत् था।

चिको ने १५५० ई० की शराब की कई-सौ बोतलें पचा जाने के बाद मठ के पुस्तकालय की बाईस पुस्तकें पढ़ डालीं, जिनमें महन्त को एक लैटिन लोकोक्ति मिली थी, जिसका अर्थ यह था कि 'बढ़िया शराब मनुष्य के हृदय को हुलसाती है।' वह अपनी पाकस्थली के भारीपन और मस्तिष्क की शून्यता का अनुभव कर रहा था।

"मैं सचमुच एक साधु बन सकता हूँ," उसने मन-ही-मन कहा—"पर गोरेनफ़्लोट के साथ तो मुझे स्वामी के रूप में ही रहना चाहिए; हाँ, अन्य किसी मठ में मुझे अधिक अहंकारी नहीं होना चाहिए। यह निश्चय है कि फ्राक* मुझे मेन की

* परिधान-विशेष।

नज़रों से छिपा लेगी, पर उपाय और भी होने चाहिएँ, जो साधारण उपायों से अधिक महत्वपूर्ण और उपयोगी हों। मैंने एक अन्य पुस्तक में, जो गोरेनफ़्लोट के पुस्तकालय की नहीं है, पढ़ा है कि 'जो खोजेगा, सो पावेगा'।"

इसलिये चिको ने ढूँढ़ा और उसे जो-कुछ मिला, वह यह है। परिस्थिति-विशेष में यह काफ़ी मौलिक चीज़ थी। उसने गोरेनफ़्लोट से सारा भेद कहा और उसीके हाथ से खुद बोल-कर सम्राट् को पत्र लिखवाया।

यह सच है कि गोरेनफ़्लोट बड़ी कठिनाई से लिख सका; किन्तु उसने यह भी लिख दिया कि चिको अब संसार-त्यागी होकर मठवासी हो गया है; और यह कि अपने मालिक से ऐसी अवस्था में पृथक् होने के लिये बाध्य होने के कारण, जबकि वह (सम्राट्) महाशय-डी-मेन से पुनः सन्धि कर चुका है, उसका स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया—उसे बड़ा-ही दुःख हुआ और उसने उस शोक को भुलाने की भरसक चेष्टा की; किन्तु अन्ततः दुःख ने उस पर विजय प्राप्त कर ली और उसका शरीरान्त हो गया।

चिको ने सम्राट् को भी एक पत्र लिखा। यह सन् १५८० ई० में लिखा गया, और पाँच खण्डों में विभाजित था। ये खण्ड कई दिनों में लिखे गये थे और इनसे बढ़ती हुई बीमारी का परिचय मिलता। पहला खण्ड मज़बूत हाथों से लिखा और हस्ताक्षर किया हुआ था, दूसरे खण्ड की लिखावट से

शक्ति-क्षय का पता लगता था और उसका हस्ताक्षर काँपते हाथों से किया गया था। तीसरे खण्ड के अन्त में हस्ताक्षर केवल "चिक्—" लिखा गया था और चौथे के अन्त में सिर्फ़ "चि—" तथा पाँचवें के आख़िर में केवल 'च' का घसीटा हुआ विकृत अक्षर लिखा हुआ था।

मरणासन्न व्यक्ति के हाथ का विकृत अक्षर देखकर हेनरी के हृदय पर बड़ा ही शोकपूर्ण प्रभाव पड़ा, और इसी से उन्होंने चिको को देखते ही प्रेत समझा।

यहाँ हम चिको का पत्र ज्यों-का-त्यों उद्धृत करते; किन्तु चिको, जैसा कि हम लोग आजकल कहते हैं, बड़ा ही मनमौजी आदमी था। शैली देखकर ही आदमी का अनुमान लगाया जाता है; और उसकी पत्र-लेखन-शैली भी ऐसी विलक्षण थी कि हम उसे उद्धृत करने का साहस नहीं कर सकते, चाहे पाठकों के लिये यह कैसी ही प्रभावोत्पादक क्यों न सिद्ध होती।

उस पत्र के अन्त में इस उद्देश्य से कि हेनरी की दिलचस्पी ठण्डी न पड़ जाय, गोरेनफ़्लोट ने इतना और लिख दिया कि उसके मित्र की मृत्यु के बाद ब्यून की मठ उसे काटने को दौड़ रही है और अब वह पेरिस में रहना अधिक पसन्द करेगा।

पत्र का यह अन्तिम अंश चिको ने बड़ी कठिनाई के साथ गोरेनफ़्लोट के हाथ से लिखवाया था, क्योंकि गोरेनफ़्लोट पानुर्ज की तरह ब्यून की अवस्था से अत्यन्त सन्तुष्ट था। उसने बड़े ही करुणोत्पादक ढंग से चिको से यह स्मरण रखने की प्रार्थना

की कि जब तक शराब ख़ास जगहों पर रहकर अपनी आँखों के सामने न ली जाय, तब तक उसमें हमेशा मिलावट का डर रहता है। किन्तु चिको ने महन्त-महोदय से प्रतिज्ञा की कि वह प्रति वर्ष स्वयं आकर बढ़िया शराब का प्रबन्ध कर जाया करेगा, और चूँकि अन्य बातों की तरह इसमें भी गोरेनफ़्लोट ने चिको की उच्चता स्वीकार कर ली थी, इसलिये अन्त में वह अपने मित्र की बातों में आ गया।

गोरेनफ़्लोट की चिट्ठी और चिको के अन्तिम पत्र के जवाब में सम्राट् ने स्वयं अपने हाथ से निम्नलिखित उत्तर दिया था:—

श्री महन्तजी महोदय,

आप चिको की अन्त्येष्टि-क्रिया बड़ी पवित्र और समुचित रीति से कीजियेगा। उसके शरीरान्त का मुझे हार्दिक दुःख है, क्योंकि वह न-केवल सच्चा मित्र था, बल्कि एक उच्च कोटि का सज्जन भी था, यद्यपि पाँच पुश्त के पहले उसकी वंशावली का पता नहीं लगाया जा सका।

आप उसके शरीर को फूलों से ढककर इस प्रकार दफ़न कीजियेगा कि उसका मुँह सूर्य की ओर हो, क्योंकि दक्खिनी होने के कारण वह सूर्य-दर्शन का बड़ा प्रेमी था। आपके शोक में हिस्सा बटाने की अपेक्षा मैं विशेष रूप में उसका आदर करता हूँ, और आपने जो ब्यून की मठ छोड़ देने की इच्छा प्रकट की है, सो वैसा ही कीजिए। मुझे पेरिस में ऐसे भक्त और बुद्धिमान आदमियों की बड़ी ज़रूरत है, जो मुझ से कुछ ही फ़ासले पर रहें। इसलिये

आपको जैकॉग्रिन्स मठ पर नियुक्त करके सेण्ट ऐण्टोनी के फाटक के निकट निवास-स्थान दिया जायगा, जिस ( स्थान ) से हमारे स्वर्गीय मित्र का विशेष रूप से सम्पर्क था।

आपका स्नेही,

हेनरी;

जो आप से प्रार्थना करता है कि आप उसे अपनी पवित्र प्रार्थना के समय न भूलें।*

यह सरलतापूर्वक समझा जा सकता है कि स्वयं सम्राट्-द्वारा लिखे हुए इस पत्र से महन्त की आँखें खुल गयीं और उसने चिको की विलक्षण बुद्धि की प्रशंसा की। उसने उस प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिये अत्यन्त शीघ्रता से काम लिया, जो उसके लिये प्रतीक्षा कर रही थी। क्योंकि अभिलाषा ने गोरेनफ़्लोट के हृदय में दृढ़ अंकुर जमा लिया था, और ब्यून की महन्ती मिलने के बाद से जो व्यक्ति बराबर 'लज्जालु' नाम से पुकारा जाने लगा था, वह अब उच्च पद की आकांक्षा से अधीर हो उठा।

सब काम सम्राट् की इच्छानुसार हुआ, साथ ही चिको की आकांक्षानुसार भी। लकड़ियों का एक गट्ठा मुर्दे की शक्ल में बनाकर फूलों से ढककर लहलहाती हुई अंगूर-लता के नीचे खुली धूप में दफ़न किया गया। अपनी लाश दफ़न करवाने के

---

*इस अन्तिम वाक्यांश का अभिप्राय यह है कि महन्त सम्राट् के लिये नित्य ईश्वर से प्रार्थना करे।

बाद चिको ने गोरेनफ़्लोट को स्थान-परिवर्तन के लिये सामान तैयार करने में मदद दी।

बड़ी धूमधाम के साथ माडेस्ट गोरेनफ़्लोट ने जैकोबिन्स मठ की महन्ती प्राप्त की।

रात के घने अन्धकार में चिको पेरिस में आ गया। बसी के फाटक के पास उसने एक छोटा मकान ख़रीद लिया, जिसके लिये उसे तीन सौ क्राउन देने पड़े। गोरेनफ़्लोट के पास जाने के लिये वहाँ से तीन रास्ते थे—एक तो शहर में होकर, जो सबसे छोटा मार्ग था, दूसरा नदी के किनारे-किनारे जो बड़ा ही विलक्षण रास्ता था। तीसरा पेरिस नगर की शहर-पनाहों के बराबर-बराबर, जो बड़ा ही सीधा और निश्चित मार्ग था। किन्तु चिको तो स्वभाव से ही स्वप्नदर्शी था; वह साधारणतः सीन-नदी के किनारेवाले रास्ते से जाया करता था; और चूँकि उस समय नदी पत्थर की चार-दीवारियों तक नहीं आयी थी, अतः कवि के कथनानुसार, जल टेढ़े-मेढ़े किनारों से मिलकर बहता था, जिसके किनारे नगर-निवासी प्रायः चाँदनी रात में चिको की छाया का जाते हुए देखा करते थे।

नये स्थान में बसने और नाम बदल लेने के बाद चिको अब अपनी आकृति बदलने की कोशिश करने लगा। जैसा कि हम पहले देख आये हैं, वह अब अपना नाम राबर्ट ब्रिकेट बतलाता है, और चलते समय अब वह ज़रा आगे को झुक-कर चलता है। इसके अतिरिक्त चिन्तित रहने और पाँच-छः

वर्ष का समय व्यतीत हो जाने के कारण उसके सिर के बाल लगभग झड़ गये थे और वह पूर्णतः गंजा नज़र आने लगा था; पहले के बचे-खुचे काले और घुंघराले बाल, भाटे के जल की तरह माथे की तरफ़ न बढ़कर पीछे की ओर मुड़ गये थे। वह प्राचीन अभिनेताओं की तरह कौशलपूर्वक मांस-पेशियों को सिकोड़कर साधारण मुखाकृति को बिल्कुल बदल लेने की कला में बड़ा ही प्रवीण था।

धुन के साथ बराबर अभ्यास करते रहने के कारण चिको दिन-दहाड़े भी वास्तविक राबर्ट ब्रिकेट बन जाता था,—उसका मुँह कानों तक फैल जाता था, ठुड्डी नाक के पास पहुँच जाती थी, और उसकी आँखें इस प्रकार नाचने लगती थीं कि देखनेवाला काँप जाता। यह सारी क्रिया वह इस प्रकार करता था कि देखनेवाला यह नहीं भाँप सकता था कि उसने बनावटी ढंग से मुँह बनाया हुआ है। किन्तु जानकार परि-वर्तन-प्रेमियों के लिये यह नवीनाकृति दिलचस्पी की चीज़ थी, क्योंकि चिको का कोमल, लम्बा और तिरछा मुँह चौड़ा, लालिमा-युक्त, सुस्त और तर-सा मालूम होता था। वह अपनी लम्बी बाहे और टाँगें किसी भी तरह छोटी करने की कोशिश नहीं कर सका, पर चेष्टापूर्ण अभ्यास करते रहने के कारण जैसा कि हम ऊपर कह आये हैं, उसने अपनी टाँगें कुछ मोड़-सी ली थीं, जिससे उसकी बाहे उतनी ही बड़ी दीखती थीं, जितनी कि टाँगें।

इस प्रकार का अभ्यास करते रहने की अवधि में चिको ने किसी से भी गहरा सम्बन्ध रखना छोड़ दिया। क्योंकि चाहे वह कैसा-ही अभ्यस्त क्यों न था, किन्तु वह अपना यह नक़ली रूप हमेशा नहीं क़ायम रख सकता था, और जब दस बजे उसे सीधे चलते देख लिया गया, तो फिर वह बारह बजे झुककर कुबड़े-कुबड़े क्योंकर चल सकता था ? जिस मित्र के साथ वह अभी टहलते समय और रूप में था, वह सहसा यदि उसे परिवर्तित रूप में देख लेता, तो वह उससे क्या बहाना कर सकता था और इस रूप में सन्देह का शिकार बने बिना कैसे रह सकता था।

ऐसी अवस्था में राबर्ट ब्रिकेट को एकान्त-वास का जीवन व्यतीत करना पड़ा। इसके अतिरिक्त यह बात भी थी कि उसे यह जीवन अप्रिय भी नहीं लगता था। उसका सारा मन-बहलाव गोरेनफ़्लोट से मिलने और उसके साथ सन् १५५० ई० की प्रसिद्ध शराब, जिसे सुयोग्य महन्त सावधानी के साथ ब्यून से लाया था, उड़ाने तक ही सीमित था।

किन्तु साधारण लोग भी बड़े आदमियों की तरह परिवर्तित होते हैं। गोरेनफ़्लोट में भी परिवर्तन हुआ। उसने देखा कि वह व्यक्ति जो अबतक अपने भाग्य का विधाता था, अब वैसा नहीं रहा। मठ पर आकर उसके साथ सहयोग करनेवाला चिको अब बन्धन में पड़ा हुआ मालूम होता था, और इस क्षण से गोरेनफ़्लोट अपने को बहुत-कुछ समझने लगा और चिको को तुच्छ।

चिको ने अपने मित्र में इस परिवर्तन को लक्ष्य किया, किन्तु उसने इस बात पर क्रोध नहीं किया। सम्राट् हेनरी के साथ रहकर उसने मनुष्य में जो-जो परिवर्तन देखे थे, उन्हें उसने तत्त्व-दर्शियों की भाँति सहन कर लेने की आदत डाल ली थी। वह अब अधिक सावधानी से रहने लगा—और कोई भी अन्य कार्य उसने इस परिवर्तन के फल-स्वरूप नहीं किया। अब वह प्रति दिन मठ न जाकर सप्ताह में केवल एक बार जाने लगा; फिर धीरे-धीरे उसने यह आवा-जाही पक्ष में एक बार कर दी, और अन्त में महीने में केवल एक बार। गोरेनफ़्लोट को इतना गर्व हो गया कि उसने इस आवा-जाही की कमी पर ध्यान भी नहीं दिया। चिको ने पूरी दार्शनिकता के साथ इस बात का अपने ऊपर असर नहीं होने दिया। वह गोरेनफ़्लोट की अकृतज्ञा पर बेहद हँसता और अपनी साधारण आदत के अनुसार अपनी नाक और ठुड्डी नोचने लगता।

"पानी और समय," वह कहता—"दो अत्यन्त शक्तिशाली चीज़ें हैं, जिन्हें मैं जानता हूँ—एक चट्टान को तोड़ देता है, तो दूसरा आत्म-दम्भ को। हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए।"

चिको ने प्रतीक्षा की, और उसकी प्रतीक्षा की अवधि में ही यह घटनाएँ हुईं, जिनका वर्णन ऊपर किया गया है और जिनमें से कुछ ऐसी परिस्थितियों का आविर्भाव हुआ, जिन से राजनीतिक आपत्ति की पूर्व-सूचना मिली; और चूँकि

उसका सम्राट्—जिसे वह अब मर चुकने पर भी प्रेम करता था—भावी घटनाओं से टकरानेवाला था और उसके उसी तरह के खतरे में पड़ने की सम्भावना थी, जिस तरह के खतरे में से चिको को छुटकारा मिल चुका है, अतः उसने सम्राट् से प्रेत के रूप में मिलने का निश्चिय किया, जिससे वह उस पर भावी संकट को अच्छी तरह प्रकट कर दे।

हम देख चुके कि मेन के आगमन की घोषणा—जो जायस की वापसी में ढँपा था, और जिसे चिको ने बुद्धिमता-पूर्वक प्रकट कर दिया—चिको को प्रेत से मनुष्य के रूप में परिणत कर दिया और वह भविष्य-वक्ता से एक राजदूत बन गया।

चूँकि कथानक का वह भाग जो पाठकों को अन्धकारमय प्रतीत हुआ होगा, अब स्पष्ट कर दिया गया, इसलिये अब हम पाठकों की आज्ञा से चिको के पीछे-पीछे चलकर उसे देखेंगे, क्योंकि वह लावर से अपने बसी-स्क्वायर-स्थित छोटे मकान की ओर जा रहा है।

---

# सत्रहवाँ परिच्छेद

—:※:—

## विरह-संगीत

लावर से चिको का घर बहुत दूर नहीं था। वह सीन नदी के किनारे जाकर अपनी उस छोटी डोंगी में बैठ गया, जिसे वह वहाँ छोड़ गया था।

"यह विलक्षण बात है," उसने डोंगी को खेते हुए सोचा—"कि इतने साल बीत जाने पर भी हेनरी अभी वैसा ही है। अन्य लोग उन्नत और अवनत हुए हैं; पर उसके चेहरे पर कुछ झुर्रियाँ पड़ जाने के अतिरिक्त कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। अब भी उसका मन वैसा ही कमज़ोर किन्तु प्रफुल्लित रहता है; अब भी वह वैसा ही मनमौजी और

अलङ्कारी है; अब भी उसमें वही दम्भ है, अब भी वह किसी व्यक्ति से उसके सामर्थ्य से अधिक पाने की आशा रखता है—उदासीन से मित्रता, मेल-जोलवाले से सहयोग और प्रेमी से भक्ति पाने की इच्छा रखता है, साथ ही वह अपने साम्राज्य-भर में सबसे अधिक दुःखी प्राणी है। वास्तव में मेरा यह विश्वास है कि केवल मैं ही एक ऐसा व्यक्ति हूँ, जिसने उसके असंयम, पश्चात्ताप, कुकर्म और अन्ध-विश्वास का थाह लगाया है, और केवल मैं ही ऐसा व्यक्ति हूँ, जो इस लावर से भली भाँति परिचित है, और जिसकी दहलीज़ पर से गुज़रकर कितने ही व्यक्ति क़ब्र में दफ़न हो गये, कितने ही निर्वासित हुए तथा कितने ही विलुप्त हो गये।" उसने एक ठण्डी साँस ली, जो शोक-सूचक होने की अपेक्षा विचार-सूचक अधिक थी, और तेजी के साथ डाँड़ चलाने लगा। "और हाँ," उसने सहसा कहा—"सम्राट् ने मुझे राह-ख़र्च देने की तो चर्चा ही नहीं की; कम-से-कम इससे तो प्रतीत होता है कि वह मुझे अपना मित्र समझता है।" और वह धीरे से हँसा।

वह शीघ्र ही नदी के दूसरे किनारे पर जा पहुँचा। वहाँ उसने अपनी डोंगी बाँध दी। रू-डी-आगस्टिन में प्रवेश करते ही वह वैसी निस्तब्ध रात्रि और उस शान्त मुहल्ले में गायन और वाद्य की ध्वनि सुनकर चकित रह गया। "क्या यहाँ कोई शादी है?" उसने मन-ही-मन सोचा—"मेरे पास केवल पाँच घण्टे सोने के लिये थे, सो इससे अब और भी नींद नहीं आयेगी।"

आगे बढ़ने पर उसने देखा कि नौकरों के हाथों में एक दर्जन मशालें हैं, और तीस संगीतज्ञ विभिन्न प्रकार के बाजे बजा रहे हैं। चिको को यह देखकर और भी आश्चर्य हुआ कि यह संगीत-मण्डली चिको ही के मकान के सामने डटी हुई है। इस मण्डली के परिचालक ने, जो दिखायी नहीं दे रहा था, संगीतज्ञों और नौकरों को इस प्रकार खड़ा किया था कि उनका मुँह राबर्ट ब्रिकेट के घर की ओर था, और वे अत्यन्त लवलीन होकर उसकी खिड़की की ओर देख रहे थे। यह देखकर क्षण-भर के लिये चिको जड़वत् खड़ा रह गया। फिर अपने सुडौल हाथों से जंघा ठोंककर उसने कहा—"लेकिन कुछ ग़लतफ़हमी हुई मालूम पड़ती है। यह सारा शोर मेरे लिये नहीं मच सकता।" पास आकर वह उन दर्शकों में मिल गया, जो उस दृश्य से आकर्षित होकर वहाँ एकत्रित हो गये थे, और चारों ओर ध्यान से यह देखकर सन्तुष्ट हुआ कि मशालों की रोशनी में उसका घर जगमगा रहा है और मधुर स्वर की झंकार से भर गया है। भीड़ में से एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था, जिसने ब्रिकेट के मकान के सामने या आसपास के मकान पर नजर भी डाली हो।

"वास्तव में," चिको ने मन-ही-मन सोचा—"यह मेरे लिये है! तो क्या कोई अज्ञात राजकुमारी मुझे प्रेम करने लगी है?" किन्तु इस मिथ्या आत्मश्लाघा-पूर्ण विचार से

उसे सन्तोष नहीं हुआ, और वह अपने सामनेवाले मकान की ओर मुड़ा; पर वह सुनसान नज़र आ रहा था।

"इस घरवाले बड़ी गम्भीर निद्रा में मग्न हैं," उसने कहा—"ऐसा शोर तो मुर्दों को जगाने के लिये काफ़ी है। माफ़ कीजिएगा, दोस्त," उसने एक मशालची को सम्बोधन करके कहा—"क्या आप मुझे बतला सकते हैं कि यह गाजा-बाजा किसके लिये हो रहा है?"

"यहाँ रहनेवाले नागरिक के लिये।" उसने चिक्को से उसके ही मकान की ओर इशारा करके कहा।

"तब तो निश्चित रूप से यह मेरे ही लिये है!" उसने सोचा—"आप किसके आदमी हैं?" उसने बाजे का अन्तरा बन्द होने पर उस बजानेवाले से पूछा—

"इस मकान में रहनेवाले नागरिक के।"

"ओह! ये तो मेरे लिये आये ही नही हैं, बल्कि मेरे ही आदमी भी हैं—अच्छा ही है। अच्छा, हम देख लेंगे।" कहकर वह भीड़ में कुहनी से रास्ता बनाते हुए अपने दरवाज़े पर जा पहुचा और उसे खोलकर जीने से ऊपर चढ़ गया। झरोखे पर जाकर एक कुर्सी रखकर वह वहीं बैठ गया। उसे देखकर जो हास्य और प्रसन्नता लोगों में फैल गयी, उसकी ओर ध्यान न देते हुए उसने कहा—"सज्जनो, क्या आपको निश्चय है कि आप ग़लती पर नहीं है? क्या यह सब मेरे ही लिये हो रहा है?"

"क्या आपका नाम महाशय रावर्ट ब्रिकेट है ?" संगीत-मण्डली के उस्ताद ने पूछा।

"जी हाँ।"

"तो हम आपकी ही सेवा कर रहे हैं, महाशय।" इटैलियन उस्ताद ने अपना संगीत-निदर्शक-दण्ड हिलाकर कहा, जिसके साथ ही एक नयी गत बजने लगी।

"निश्चय ही यह बात समझ में आने-योग्य नहीं है।" चिको ने सोचा। उसने चारों ओर देखा; गली के सारे निवासी अपनी-अपनी खिड़कियों पर बैठे यह दृश्य देख रहे थे; केवल सामनेवाले मकान में ही अँधेरा और सन्नाटा छाया हुआ था। नीचे की ओर नज़र डालने पर उसने देखा कि एक आदमी काला अँगरखा और काली ही टोपी पहने उसके दरवाज़े की डेवढ़ी से उठँगकर खड़ा है। मण्डली का उस्ताद समय-समय पर उठकर इस आदमी से धीरे-धीरे कुछ बातें करता था। चिको ने तुरन्त समझ लिया कि दृश्य का वास्तविक परिचालक वही आदमी है, और उस क्षण से उसने अपना ध्यान उसी आदमी पर लगा दिया। सहसा घोड़े पर सवार एक भलामानस, जिसके पीछे उसके दो नौकर भी थे, उस सड़क के किनारे दिखायी पड़ा और वह भीड़ को चीरते हुए गली में आ पहुँचा।

"यह तो जायस है!" चिको ने गुनगुनाकर कहा। उसने तुरन्त पहचान लिया कि उक्त अश्वारोही फ्रांस का प्रधान

जल-सेनाध्यक्ष है, और सम्राट् की आज्ञा से सवारी से लैस होकर तैयार है। भीड़ छँट गयी; संगीत बन्द हो गया। सवार झरोखे के नीचे खड़े हुए व्यक्ति के पास आया। "हेनरी," उसने कहा—"कहो, क्या ख़बर है?"

"कुछ भी नहीं, भाई; बिल्कुल कुछ नहीं।"

"कुछ नहीं?"

"नहीं, वह तो दिखायी भी नहीं पड़ी।"

"उन्होंने शोर काफ़ी नहीं किया।"

"तमाम पड़ोस के लोग तो जग पड़े।"

"ये चिल्लाये नहीं। मैंने उन्हें कहा था कि यह सब इस नागरिक की इज़्ज़त के लिये किया जा रहा है।"

"ये चिल्लाये तो ऐसी ईमानदारी के साथ हैं कि वह (नागरिक) झरोखे पर बैठा सब सुन रहा है।"

"और वह नहीं दिखायी पड़ी?"

"न तो वही, और न कोई अन्य व्यक्ति ही।"

"तो भी विचार तो बड़ी चतुरतापूर्ण था," जायस ने निराश होकर कहा—"क्योंकि पड़ोसियों की तरह वह भी अपने पड़ोसी के यहाँ होनेवाला संगीत सुन सकती थी।"

"ओह, तुम उसे नहीं जानते, भाई।"

"हाँ, मैं जानता हूँ; स्त्रियों को सदैव पहचानता हूँ, और वह चूँकि स्त्री है, इसलिये हम निराश न होंगे।"

"ओह ! तुम यह बात निराशा-सूचक स्वर में कह रहे हो, भाई !"

"बिल्कुल नहीं; सिर्फ़ हर रात नागरिक महोदय को विरह-संगीत सुनाते रहो।"

"पर वह यहाँ से भाग जायगी।"

"अगर तुम उससे बात नहीं करोगे, और यह सब उसके लिये नहीं करते मालूम होओगे तथा अपने आपको गुप्त रक्खोगे, तो वह कहीं नहीं भागेगी। क्या यह नागरिक कुछ बोला है ?"

"उसने संगीत-मण्डलीवालों से बातें की थीं, और अब फिर बोलनेवाला है।"

वास्तव में क्रिकेट ने मामले को अच्छी तरह समझने का निश्चय कर लिया था और इसीलिये उसने फिर मण्डली के उस्ताद को सम्बोधन किया था।

"ज़बान बन्द रखकर अन्दर चले जाइये।" जायस ने उससे दिल्लगी के तौर पर टोककर कहा—"कैसी बुरी बात है ! आपने अपना संगीत सुन लिया, इसलिये अब कुछ भी कहने की गुंजाइश नहीं रही—अब तो चुप रहिए !"

"मेरा संगीत !" चिको ने अत्यन्त नम्रतापूर्वक जवाब दिया—"पर मैं कम-से-कम यह जानना चाहूँगा कि मेरा संगीत किसे सुनाया जा रहा है ?"

"आपकी लड़की को !"

"क्षमा कीजिएगा, महाशय, पर मेरे तो कोई लड़की नहीं है।"

"तो आपकी स्त्री को।"

"ईश्वर को धन्यवाद है, मेरी शादी नहीं हुई है!"

"तो फिर आपको, और अगर आप अन्दर न जायँगे तो—" जायस ने अपना घोड़ा झरोखे की ओर बढ़ाते हुए कहा।

"लेकिन अगर संगीत मेरे लिये हो—"

"मूर्ख।" जायस ने घुड़ककर कहा—"अगर तुम अन्दर जाकर अपना मनहूस मुंह नहीं छिपाओगे, तो ये अपने वाद्य-यंत्र से तुम्हारी खोपड़ी चूर कर देंगे।"

"इस आदमी को जाने दो, भाई," हेनरी ने कहा—"बात असल यह है कि उसे बड़ा आश्चर्य हुआ होगा।"

"और उसे आश्चर्य करने का अधिकार क्या है? इसके अतिरिक्त अगर हम झगड़ा करने लगेंगे, तो शायद वह यह देखने के लिये आ जायगी कि मामला क्या है। इसलिये हमें इस नागरिक को घूंसे लगाना चाहिए, और अगर जरूरत पड़े, तो उसका घर तक जला देना चाहिए, पर हमें अब गोलमाल करना चाहिए।"

"नहीं, दया करो, भाई, हमें जबर्दस्ती उसका ध्यान नहीं आकर्षित करना चाहिए। हम लोग परास्त हो गये, अब हमें यह सब बन्द कर देना चाहिए।"

चिको ने इस वार्तालाप का अन्तिम अंश अच्छी तरह सुन लिया था, जिससे उसके व्याकुलतापूर्ण विचार पर काफ़ी प्रकाश पड़ा। ऐसी अवस्था में उसने मन-ही-मन आक्रमणकारी के

भाव को समझते हुए मन-ही-मन आत्मरक्षा का उपाय सोच लिया; किन्तु जायस ने अपने भाई की प्रार्थना स्वीकार कर ली और मशालचियां तथा गायकों को छुट्टी दे दी । फिर उसने अपने भाई से कहा—"मैं निराश हो रहा हूँ; हरेक बात हमारे विरुद्ध पड़ती जा रही है ।"

"तुम्हारा मतलब क्या है ?"

"मेरे पास अब तुम्हें मदद देने के लिये रुपए नहीं हैं ।"

"मैं देख रहा हूँ, तुम अब सफ़री पोशाक में हो; पहले मैंने इस ओर ध्यान नहीं दिया था ।"

"आज ही रात को मैं सम्राट् की इच्छानुसार एण्टवर्प के लिये रवाना हो रहा हूँ,"

"उन्हों ने हुक्म कब दिया ?"

"अभी शाम को ही ।"

"खूब !"

"मेरी प्रार्थना है कि मेरे साथ आओ ।"

"क्या मुझे हुक्म दे रहे हो, भाई ?" हेनरी ने पीला पड़ते हुए कहा ।

"नहीं मैं केवल प्रार्थना कर रहा हूँ ।"

"धन्यवाद, भाई । अगर मुझे इस खिड़की के नीचे रात न गुज़ारने देकर हटाया जाता, तो—"

"तो ?"

"मैं मर जाता ।"

"तुम पागल हो।"

"भाई, मेरा हृदय और जीवन यहीं है।"

जायस ने क्रोध और करुणा के मिश्रित भाव से भाई का हाथ पकड़ लिया। "अगर हमारे पिताजी," उसने कहा—"तुम से प्रार्थना करें कि तुम प्रसिद्ध दार्शनिक और डाक्टर मीरों से अपना इलाज कराओ—"

"मैं पिताजी को जवाब दे दूँगा कि मैं ठीक हूँ, मेरा मस्तिष्क दुरुस्त है, साथ ही यह भी कि मीरों प्रेम की बीमारी नहीं दूर कर सकता।"

"अच्छा, हेनरी, मैं सब काम बना लूँगा। वह आखिर एक स्त्री ही तो है, और अपनी वापसी पर मैं तुम्हें अपनी अपेक्षा अधिक प्रसन्न देखने की आशा करता हूँ।"

"हाँ, हाँ, मेरे प्यारे भाई, मैं स्वस्थ हो और सुखी हो जाऊँगा। तुम्हारी मित्रता के लिये धन्यवाद। मेरे लिये यह (मित्रता) अत्यन्त मूल्यवान वस्तु है।"

"प्रेम-प्राप्ति के बाद।"

"मेरा जीवन रहते-रहते।"

जायस ने प्रकटतया ओछापन दिखाते हुए भी हृदय में करुणा से आर्द्र होकर कहा।

"चलो भाई।"

"हाँ भाई, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आता हूँ।" बाचेरा ने ठंडी साँस लेकर कहा।

"हाँ, मैं समझता हूँ—खिड़की से अन्तिम बिदा है; पर मुझे भी तो विदा देनी है, भाई।"

हेनरी ने अपनी बाहें भाई के गले में डाल दीं, जो उसका आलिंगन करने के लिये नीचे झुका था।

"नहीं," उसने चिल्लाकर कहा—"मैं तुम्हें फाटक तक पहुँचाऊँगा।" और खिड़की की ओर एक बार फिर देखकर वह भाई के पीछे-पीछे हो लिया।

चिको यह घटना बराबर देखता रहा। धीरे-धीरे वहाँ से सब गायब हो गये और सड़क सुनसान हो गयी। इसी समय सामनेवाले मकान की एक खिड़की खुली और एक आदमी ने बाहर की ओर झाँककर देखा।

"अब कोई भी यहाँ नहीं है, श्रीमतीजी," उसने कहा—"इस छिपने की जगह से निकलकर अब आप अपने कमरे में जा सकती है।" और एक लैम्प जलाकर उसने उस हाथ में पकड़ा दिया, जो उसको पकड़ने के लिये फैला हुआ था।

चिको ने ध्यानपूर्वक देखा; किन्तु उसका पीला और उद्दीप्त मुख-मण्डल देखते ही काँपकर बैठ गया; वह सूने घर की उदासीनता के प्रभाव से बिल्कुल अभिभूत हो रहा था।

# अठारहवाँ परिच्छेद

—:o:—

## चिको की थैली

चिको ने बाक़ी रात आराम-कुर्सी में स्वप्न देखते हुए गुजारी। 'स्वप्न देखते हुए' ही कहना ठीक होगा, क्योंकि वह जिन विचारों में मग्न था, उन्हे 'स्वप्न' कहना ही अधिक उपयुक्त है। भूत काल की स्मृति को फिर से दुहराना—एक नज़र से ही उन सब स्मृतियों को देख लेना, जो स्मृति-पटल पर से मिट चुकी हैं—विचार करना नहीं कहलाता। उस रात चिको उस संसार में विचरण करने लगा, जिसे वह बहुत पीछे छोड़ चुका था और जिसकी उत्कृष्ट और सुन्दर छाया पर, विश्वास-पात्र दीपक की भाँति एक पीली स्त्री की दृष्टि क्रमशः सुखद

और भयावह स्मति श्रृङ्खला के साथ पड़ रही थी। परिणाम यह हुआ कि चिको, जो लावर से लौटकर अपनी कुछ घण्टों की नींद खो देने के लिये पछता रहा था, सोने के लिये लेटने की बात सोच भी नहीं सका। जब उसकी खिड़की के शीशों पर प्रभात की रुपहली आभा दिखायी देने लगी, तो उसने कहा कि "प्रेतों का समय व्यतीत होगया—अब जीवित-संसार की बातें सोचने का समय आ गया।" वह उठा, तलवार कमर में बाँधी, अँगरखा पहना और एक दार्शनिक की सी गम्भीरता दिखाते हुए अपनी थैली और जूते का निरीक्षण किया। जूते तो उसे मैदान के लिये उपयुक्त मालूम हुए; किन्तु थैली की ओर विशेप ध्यान देने की आवश्यकता है।

चिको एक अद्भुत विचार का आदमी था। उसने अपने मकान की प्रधान कड़ी में डेढ़ फ़ीट लम्बा और छः इञ्च चौड़ा गढ़ा खोद रक्खा था, जिसे वह सन्दूक़ के रूप में काम में लाता था, और जिसमें सौ सोने के क्राउन आ सकते थे। उसने निम्नलिखित हिसाब लगा रक्खा था—"इन क्राउनों में से, मैं एक क्राउन का बीसवाँ हिस्सा प्रतिदिन ख़र्च करता हूँ; इसलिये यह रक़म मेरे लिये बीस हज़ार दिन के लिये काफ़ी होगी। मैं इतने अधिक दिन तक जीवित नही रह सकता, किन्तु मैं इसके आधे समय तक जीवित रह सकता हूँ, और ज्यों-ज्यों मैं बुड्ढा होता जाऊँगा, मेरी आवश्यकताएँ और ख़र्च बढ़ते जायँगे। यह रक़म पचीस या तीस वर्ष तक अच्छी तरह चल जायगी, और

यही काफ़ी है।" इसीलिये वह आर्थिक दृष्टि से भविष्य के लिये निश्चिन्त था।

आज प्रातः जब उसने अपना वह कोश खोला, तो उच्च स्वर में बड़बड़ा उठा—"समय बड़ा कठिन आ गया है; मुझे हेनरी से नम्रता नहीं प्रदर्शित करनी चाहिए। यह रुपये उसके पास से नहीं वल्कि बुड्ढे चचा के पास से आये हैं। अगर अब भी कुछ रात बाक़ी होती, तो मैं जाकर सौ क्राउन सम्राट् से माँग लाता, पर अव तो दिन निकल आया, और अब मेरे पास अपने और गोरेनफ़्लोट के अतिरिक्त और कोई सहारा नहीं है।"

गोरेनफ़्लोट से रुपये प्राप्त करने के विचार पर चिको मुस्करा उठा। "यह एक अनोखी बात होगी," उसने सोचा— "अगर गोरेनफ़्लोट अपने मित्र को, जिसके द्वारा ही वह जैकोबिन्स का महन्त बना है, सौ क्राउन देने से इन्कार कर दे। ओह!" उसने सिर हिलाते हुए कहा—"अब गोरेनफ़्लोट गोरेनफ़्लोट नहीं रहा है। हाँ, पर राबर्ट ब्रिकेट तो हमेशा चिको ही रहेगा। किन्तु सम्राट् के उस प्रसिद्ध पत्र को, जो नवार में आग लगा देगा, लेने के लिये मैं दिन निकलने के पहले ही जानेवाला था, पर अब तो दिन निकल आया।"

चिको ने अपने उस गुप्त स्थान को फिर तख़्ते से ढककर उस पर चार कीलें गाड़ दीं और फिर चलने के लिये तैयार होकर उस कमरे को अन्तिम बार देखा, जिसमें उसने अपने

कितने ही सुखपूर्ण दिन गुप्त और सुरक्षित रूप में व्यतीत किये थे। इसके बाद उसने सामनेवाले मकान पर नज़र डाली। "शैतान जायस," उसने कहा—"कभी-न-कभी उस महिला के खिड़की पर लाने के लिये मेरे मकान को जलाकर स्वाहा कर देगा और फिर मेरे हज़ार क्राउनों का क्या होगा। वास्तव में मैं समझता हूँ, कि यदि मैं उन्हें ज़मीन में गाड़ दूँ, तो ज़्यादा अच्छा रहेगा। तो भी अगर ये मेरा मकान जला देंगे, तो सम्राट् मुझे इसकी रक़म दे देंगे।"

इस प्रकार निश्चिन्त होकर चिको घर से रवाना हुआ, और उसी समय उसने सामनेवाले मकान की खिड़की पर उस अज्ञात महिला के नौकर को देखा। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इस आदमी के मुँह पर बायीं ओर कनपटी से लेकर गाल के कुछ हिस्से तक एक बड़ा चकत्ता पड़ा था, जिससे वह बड़ा कुरूप मालूम होता था; किन्तु यद्यपि उसकी खोपड़ी गंजी थी और दाढ़ी सफ़ेद हो चुकी थी, तो भी उसकी मुखाकृति से स्फूर्ति और क्रियाशीलता टपकती थी और उसकी शक्ल से वह अपेक्षाकृत कम अवस्था का मालूम होता था। चिको को देखकर वह कंटोप सरकाते हुए अन्दर को जा रहा था; पर चिको ने उसे पुकारा—"पड़ोसी महाशय, कल का शोर सुनकर मैं अपने इस घर में रहने से ऊब गया हूँ और कुछ सप्ताह के लिये अपने खेतों पर जा रहा हूँ। क्या

आप इतनी कृपा करेंगे कि थोड़ा-बहुत मेरे घर की भी देख-भाल करते रहे।"

"ज़रूर, महाशय।"

"और अगर आप कोई चोर देखें, तो?"

"घबराइये नहीं, मेरे पास एक अच्छी बन्दूक़ है।"

"एक कृपा और कीजिएगा?"

"वह क्या?"

"मैं वह बात ज़ोर से नहीं कहना चाहूँगा।"

"मैं नीचे आ जाता हूँ।"

वह नीचे आ गया और कंटोप से अपना मुँह अच्छी तरह ढकते हुए उसने यह कहा कि "सुबह-सुबह आज बड़ी ठंड पड़ रही है।"

"हाँ," चिको ने कहा—"हवा बड़ी तेज़ चल रही है। अच्छा, महाशय, मैं अब बाहर जा रहा हूं।"

"यह तो आपने पहले ही कहा था!"

"हाँ, मैं जानता हूँ; पर मैं अपने पीछे बहुत बड़ी रक़म छोड़कर जा रहा हूँ।"

"यह तो और बुरी बात है। अपने साथ क्यों नहीं लेते जाते?"

"मैं ले नहीं जा सकता। जब किसी आदमी को अपने प्राणों के साथ रुपयों की भी रक्षा करनी पड़ती है, तो वह अधिक सुस्त और कम दृढ़ हो जाता है। इसीलिये मैं अपना रुपया यहीं छोड़े जा रहा हूँ; पर मैं ऐसी अच्छी तरह छिपाकर रख चला

हूँ कि सिवा आग के और किसी बात से उसकी छति की सम्भावना नहीं है। अगर अग्निकाण्ड की नौबत आये, तो मेरे पड़ोसी की हैसियत से क्या आप उस कड़ी के जलने पर निगाह रक्खेंगे, जो दाहिनी ओर दीख रही है? उसे देखियेगा, और अगर वह जल जाय, तो उसकी राख में खोजिएगा।"

"महाशय, आप तो मुझे बड़े झमेले में डाल रहे हैं। आपको यह बात अपने किसी मित्र से कहनी चाहिए थी; ऐसे अपरिचित से नहीं, जिसके सम्बन्ध में आप कुछ भी नहीं जानते।"

"यह सच है कि मैं आपको नहीं जानता; पर मैं शक्ल देखकर आदमी पर विश्वास करता हूँ, और मैं आपको ईमानदार समझता हूँ।"

"लेकिन, महाशय, यह सम्भव है कि गाने-बजाने से चिढ़-कर मेरी मालकिन भी आपकी तरह यह मकान छोड़ जायँ।"

"खैर, इसका तो कोई उपाय ही नहीं हैं। फिर जैसा होगा, मैं देख लूँगा।"

"धन्यवाद है, महाशय, जो आपने एक ग़रीब अपरिचित पर विश्वास किया! मैं अपने को इसके योग्य सिद्ध करने की चेष्टा करूँगा।" कहकर आदर-पूर्वक झुकने के बाद वह आदमी घर में चला गया।

चिको ने मन-ही-मन कहा—"अभागे युवक! कैसा सर्वनाश है! और मैंने उसे कैसा प्रसन्न और सुन्दर देखा है।"

---

# उन्नीसवाँ परिच्छेद

—:o*o:—

## जैकोबिन्स की मठ

सम्राट् ने गोरेनफ़्लोट को उसकी राजभक्ति-पूर्ण सेवाओं और विशेष रूप से उसकी सुन्दर वक्तृत्व-शक्ति के लिये जो मठ प्रदान की थी, वह सेण्ट ऐण्टोनी के फाटक के पास स्थित थी। उस ज़माने में उस जगह लोग बहुत आते-जाते थे, क्योंकि सम्राट् स्वयं चेत्यू-डी-विसेन्स और बड़े रईसों के यहाँ बहुधा जाया करते थे, जिन्होंने इस महल्ले के आस-पास सुन्दर निवास-स्थान बना रक्खे थे।

मठ के लिये विंसेन्स जानेवाली सड़क के किनारे ऊँचे धरातलवाला यह स्थान बहुत उपयुक्त था। यह मठ एक विस्तृत

और चौरस भू-खण्ड पर बनी थी, जिसमें काफ़ी वृक्ष लगे थे। इसके पीछे एक फुलवाड़ी थी तथा अनेक फुटकर इमारतें, जिससे यह स्थान छोटा गाँव-सा दीखता था। मैदान के किनारे शयनागार था, जिसमें दो सौ महन्त विश्राम करते थे और सामने की ओर चार बड़ी खिड़कियाँ थीं और उनके आगे एक झरोखा, जिससे मठ में हवा और रोशनी अच्छी तरह आती थी।

उस नगर की भाँति, जो घेरे के डर से आत्म-निर्भरता के सब साधन जुटा रखता है, मठ ने भी अपने लिये आवश्यक साधनों को एकत्रित कर रखने का प्रबन्ध कर रक्खा था। इसके चरागाह में पचास बैलों, निन्यानवे भेड़ों (क्योंकि किसी धार्मिक परम्परा के कारण पूरी सौ भेड़ें नहीं रक्खी जा सकती थीं) के चरने के लिये समुचित प्रबन्ध था। इसके अतिरिक्त एक बाहरी इमारत में एक ख़ास नस्ल के निन्यानवे सुअर भी रक्खे गये थे, जिनका पालन-पोषण बड़ी ही सावधानी के साथ होता था। मठ के बग़ीचे में खुली धूप पड़ने से आड़ू, खुबानी और अंगूर खूब फलते थे और इनकी रक्षा का भार ब्रदर यूसेब के ऊपर था, जिसने मिठाइयों से एक प्रसिद्ध चट्टान का निर्माण किया था और वह चट्टान पेरिस के होटल-डी-विले ने गत राजकीय-भोजन के अवसर पर सम्राज्ञी-द्वय को भेंट किया था।

पेटुओं और काहिलों की इस भोग-भूमि के भीतरी भाग की पहली मंज़िल के एक सुन्दर कमरे में, जिसके झरोखे से

चौड़ी सड़क दीखती थी, हमें गोरेनफ़्लोट के दर्शन होंगे, जो एक ख़ास तरह की सुसज्जित चिबुक, और श्रद्धा उपजानेवाली ऐसी गम्भीर मुख-मुद्रा-युक्त दीखेगा, जैसी बराबर सुख और विश्रामपूर्ण जीवन व्यतीत करने पर अपरिष्कृत लोगों की बन जाती है। अभी सुबह के साढ़े सात ही बजे थे। महन्त ने उस नियम से पूर्ण लाभ उठाया है, जिसके अनुसार उसे अन्य साधुओं से एक घण्टा अधिक नींद लेने का अधिकार है, और अब, यद्यपि वह सोकर उठ गया था, फिर भी वह एक बड़ी और सुखद आराम-कुर्सी में पड़े-पड़े ऊँघ रहा था। कमरे की सजावट का सामान धार्मिक होने की अपेक्षा सांसारिक अधिक था। एक नक्क़ाशीदार मेज बहुमूल्य वस्त्र से ढकी हुई थी; धार्मिक शूरता-सम्बन्धी पुस्तकें (जिसमें केवल उसी ज़माने की कला के अनुसार प्रेम और भक्ति के मिश्रित विलक्षण वर्णन का समावेश था), क़ीमती फूलदान और बढ़िया जामदानी के पर्दे आदि, माडेस्ट गोरेनफ़्लोट के सुख-निवास की कतिपय विलास-सामग्रियाँ थीं, जो परमात्मा, सम्राट् और और विशेष रूप से च्चिको की कृपा से उसे प्राप्त हुई थीं।

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं, गोरेनफ़्लोट अपनी कुर्सी में पड़ा-पड़ा सो रहा था। इसी समय दरवाज़ा धीरे से खुला और दो आदमी अन्दर आये। पहले की उम्र लगभग पैंतीस वर्ष थी—वह दुबला-पतला और ज़र्द रंग का था तथा उसकी नज़र बोलने के पहले ही आदेश-सा दे रही थी; उसकी

आँखों से बिजली-सी निकल रही थी, यद्यपि आँखें नीची रखने के कारण उनकी क्रिया मध्यम पड़ गयी थी। यह व्यक्ति ब्रदर बोरोमे था, जो गत तीन सप्ताह से मठ का खजाञ्ची नियुक्त हुआ था। दूसरा व्यक्ति एक सत्रह या अठारह वर्ष का नवयुवक था, जिसकी आँखें तीव्र और काली, चितवन साहसपूर्ण और क़द छोटा, पर सुगठित था। उसने अपनी आस्तीनें चढ़ा रक्खी थीं, और उसकी मज़बूत बाहें चेष्टावन्त प्रतीत हो रही थीं।

"महन्तजी अब भी सो रहे हैं, ब्रदर बोरोमे," उसने कहा—"क्या हम इन्हें जगा दें ?"

"कदापि नहीं, ब्रदर जैक्स।"

"सचमुच ऐसा महन्त रखना भी करुणा की बात है, जो इतनी देर तक सोता है। अबतक तो हम हथियारों की परीक्षा कर चुके होते। आपने देखा उसमें कैसे सुन्दर बख़्तर और बन्दूकें थीं ?"

"चुप रहो; ब्रदर ! वे आवाज़ सुन लेंगे।"

"कैसे दुर्भाग्य की बात है !" नवयुवक ने अधीर होकर फ़र्श पर पाँव पटकते हुए उच्च स्वर से कहा—"आज कैसा सुहावना समय है; मैदान भी खूब सूखा है।"

"हमें इन्तज़ार करना होगा, भई !" बोरोमे ने कृत्रिम आज्ञाकारिता के साथ कहा, यद्यपि उसकी आँखें उसकी बातों का विरोध करती दीखती थीं।

"लेकिन आप हथियार बाँटने का हुक्म क्यों नहीं देते ?"

"मैं' हुक्म नहीं देता !"

"हाँ, आप।"

"तुम जानते हो कि मैं यहाँ का मालिक नहीं हूँ; मालिक तो ये हैं।"

"हाँ; जब सब जाग रहे हैं, तो ये सो रहे हैं।" जैक्स ने अधीर होकर कहा।

"हमें इनके पद और इनकी निद्रा की इज़्ज़त करनी चाहिए।" कहते हुए बोरोमे ने एक कुर्सी सरकायी।

आवाज़ सुनकर गोरेनफ़्लोट की आँखें खुल गयीं और वह तन्द्रापूर्ण स्वर में बोला—"कौन है ?"

"क्षमा करें," बोरोमे ने कहा—"यदि हमने आपके धार्मिक चिन्तन में बाधा डाली हो तो; लेकिन मैं आपका हुक्म लेने के लिये आया हूँ।"

"ओह, गुड् मार्निंग,* ब्रदर बोरोमे, क्या हुक्म चाहते हैं आप ?"

"हथियारों के सम्बन्ध में।"

"कैसे हथियार ?"

"वही जिन्हें पूज्यपाद ने यहाँ लाने की आज्ञा दी थी।"

"मैंने ! कब ?"

"एक सप्ताह पहले।"

"मैंने हथियार लाने का हुक्म दिया था ?"

---

*प्रातःकालीन अभिवादन।

"निस्सन्देह !" बोरोमे ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"किसलिये ?"

"पूज्यपाद ने मुझ से कहा था कि ब्रदर बोरोमे, यह अच्छा होगा कि साधुओं के लिये हथियार मँगा दिये जायँ; क्योंकि जिस प्रकार धार्मिक उपदेशों से आत्मा उन्नत होती है, उसी प्रकार व्यायाम से शारीरिक विकास होता है।"

"मैंने यह कहा था ?"

"हाँ, पूज्यपाद महन्तजी; और मैंने—जो एक अयोग्य और आज्ञाकारी साधु हूँ—शीघ्र ही उस आज्ञा का पालन कर दिया।"

"बड़ी विलक्षण बात है, पर इसके बारे में मुझे कुछ भी याद नहीं रहा।"

"आपने यह लैटिन कहावत भी कही थी कि 'जैसा शरीर वैसी बुद्धि'।"

"क्या !" गोरेनफ़्लोट ने अत्यन्त आश्चर्यान्वित होकर उच्च स्वर से कहा—"मैंने कहावत कही थी ?"

"मेरी स्मरण शक्ति ख़राब नहीं है।" बोरोमे ने आँखें नीची करके कहा।

"अच्छा, अगर मैंने ऐसा कहा है," गोरेनफ़्लोट ने धीरे से सिर ऊपर-नीचे हिलाते हुए कहा—"तो ऐसा कहने का कोई कारण था, ब्रदर बोरोमे। वास्तव में मेरी सदा यह राय रही है कि शारीरिक व्यायाम आवश्यक है, और जब मैं केवल

एक साधु था, तो मैं शब्दों और तलवार दोनों ही से युद्ध किया करता था। बहुत अच्छा हुआ, ब्रदर बोरोमे, यह ईश्वर की प्रेरणा से हुआ है।"

"तो मैं आपकी आज्ञा पूरी करूँगा, पूज्यपाद महन्तजी।" बोरोमे ने जैक्स के साथ जाने का उपक्रम करते हुए कहा।

"अच्छा, जाइये।" गोरेनफ्लोट ने शान के साथ कहा।

"ओह!" बोरोमे ने कहा—"मैं भूल गया था; बैठक में एक मित्र पूज्यपाद से मिलने के लिये बैठे हैं।"

"उनका क्या नाम है?"

"महाशय राबर्ट ब्रिकेट।"

"ओह, वह मित्र नहीं; एक परिचित-मात्र है।"

"तो पूज्यपाद उनसे नहीं मिलेंगे?"

"आ जाने दो; वह मेरा मनोरंजन करता है।"

---

# बीसवाँ परिच्छेद

# दो मित्र

चिको के प्रवेश करने पर महन्त अपनी जगह से नहीं उठा, उसने बैठे-बैठे केवल सिर झुका दिया।

"गुड मार्निंग।" चिको ने कहा।

"ओहो, तुम आ गये! तुम तो फिर सजीव से दीखने लगे।"

"तो क्या तुमने मुझे मुर्दा समझ लिया था?"

"अवश्य; मैंने तुम्हें फिर देखा ही नहीं।"

"मैं कार्य-व्यस्त था।"

"ओहो!"

चिको जानता था कि जब तक गोरेनफ़्लोट दो या तीन बोतल पुरानी बर्गंडी की शराब न चढ़ा ले, तब तक वह बोलने में किफ़ायत से काम लेगा; और चूँकि सुबह का वक्त होने के कारण चिको ने सोचा कि अभी उसने कुछ खाया-पिया नहीं होगा, अतः वह बैठकर प्रतीक्षा करने लगा।

"क्या तुम मेरे साथ नाश्ता करोगे, ब्रिकेट ?" गोरेनफ़्लोट ने पूछा।

"शायद।"

"अगर मेरे लिये तुम्हे उतना समय देना असम्भव हो जाय, जितना मैं देना चाहता हूँ, तो तुम क्रुद्ध नहीं होओगे न!"

"पर किस शैतान ने तुमसे समय माँगा है ? मैंने नाश्ते के लिये भी नहीं कहा था; तुम्हीं ने प्रस्ताव किया है।"

"अवश्य, मैंने प्रस्ताव किया है; लेकिन—"

"लेकिन आपने समझा कि मैं स्वीकार नहीं करूँगा।"

"नहीं, नहीं ! क्या मेरी ऐसी आदत है ?"

"ओह ! तुम-जैसे बड़े आदमी कोई भी आदत ग्रहण कर सकते हैं, महन्त महाशय।" चिको ने अपनी विलक्षण हँसी के साथ कहा।"

गोरेनफ़्लोट ने चिको की ओर देखा; वह निश्चय नहीं कर सका कि चिको उसकी हंसी उड़ा रहा है, या गम्भीरता-पूर्वक कह रहा है। चिको उठ खड़ा हुआ।

"तुम उठते क्यों हो; ब्रिकेट ?" गोरेनफ़्लोट ने पूछा।

"इसलिये कि मैं जा रहा हूँ।"

"और तुम जा क्यों रहे हो, जब तुम कह चुके हो कि मेरे साथ नाश्ता करोगे।"

"मैंने यह नहीं कहा कि नाश्ता करूँगा; मैंने तो कहा है कि 'शायद'।"

"तुम क्रुद्ध हो गये?"

चिको हँस पड़ा। "मैं क्रुद्ध हो गया!" उसने कहा—"किस बात पर? इसलिये कि तुम धृष्ट, अज्ञ और उजड्ड हो? ओह, महाशय, मैं तुम्हें इतना अधिक जानता हूँ कि तुम्हारी तुच्छ त्रुटियों पर क्रुद्ध नहीं हो सकता!"

गोरेनफ़्लोट अपने मेहमान की इस सीधी झपट पर हक्का-बक्का-सा रह गया। उसका मुँह खुला हुआ था और बाहें फैली हुई।

"विदा!" चिको ने कहा।

"ओह, मत जाओ!"

"मेरी यात्रा टल नहीं सकती।"

"तुम सफ़र पर जा रहे हो?"

"हाँ, एक सन्देश लेकर।"

"किसका सन्देश?"

"सम्राट् का।"

"सम्राट् का सन्देश! तो तुम उनसे फिर मिले हो?"

"अवश्य।"

"वे तुमसे किस तरह मिले ?"

"बड़ी उत्सुकता के साथ; उनकी स्मरण-शक्ति अच्छी है; सम्राट् हैं न।"

"सम्राट् का सन्देश !" गोरेनफ़्लोट बड़बड़ाया।

"विदा !" चिको ने दुहराया।

गोरेनफ़्लोट ने उठकर उसका हाथ पकड़ लिया। "आओ, हम लोग अपने-अपने दिल की बातें कह डालें।" उसने कहा।

"किस विषय पर ?"

"तुम्हारे इस क्रोध पर।"

"मेरे ! मैं तो आज भी वैसा ही हूँ, जैसा और दिनों था।"

"नहीं।"

"मैं तो अपने साथ आईना लिये फिरता हूँ; तुम हँसते हो, तो मैं भी हँसता हूँ; तुम उजड्डता दिखाते हो, तो मैं भी वैसा ही करता हूँ।"

"अच्छा, मैं मानता हूँ कि मैं उदासीन था।"

"वास्तव में !"

"क्या तुम ऐसे आदमी से नम्रता का व्यवहार नहीं कर सकते, जिसके कन्धों पर काम का ऐसा भारी बोझ है ? इस मठ का शासन उतना ही कठिन है, जितना एक सूबे का। यह भी तो याद रक्खो कि मुझे दो सौ आदमियों पर हुक्म चलाना पड़ता है। साथ ही मैं प्रवन्धक, शिल्पी और निरीक्षक भी हूँ—इन सब कामों को करते हुए भी मैं आध्यात्मिक क्रियाएँ करता हूँ।"

"ओह ! सचमुच ईश्वर के अयोग्य सेवक के लिये यह बहुत बड़ा काम है।"

"ओह ! तुम तो व्यंग कर रहे हो, महाशय ब्रिकेट। क्या तुमने अपनी ईसाइयत की सारी दातव्यता खो दी ?"

"तो क्या मुझ में ईसाइयत की दातव्यता थी ?"

"मैं समझता हूँ, तुम ईर्ष्यालु हो गये हो। सावधान हो जाओ; ईर्ष्या मुख्य पाप है।"

"किस के प्रति ईर्ष्यालु हो गया हूँ ?"

"तुम मन-ही-मन कहते हो—माडेस्ट गोरेनफ़्लोट तरक़्क़ी कर रहा है; क्रमशः उन्नति कर रहा है।"

"और मैं अवनति कर रहा हूँ, मैं समझता हूँ ?"

"यह तुम्हारी मिथ्या स्थिति का दोष है, महाशय ब्रिकेट।"

"महाशय गोरेनफ़्लोट, तुम को यह नीति-वाक्य याद है कि 'जो अपने को नम्र बनाता है, वह उच्चतम पद पाता है' ?"

"वाहियात बात है !" गोरेनफ़्लोट ने उच्च स्वर में कहा।

"ओह ! अब तो पवित्र ग्रन्थों पर भी सन्देह करने लगे—धर्म-विरोधी !"

"धर्म-विरोधी ! धर्म-विरोधी तो ह्यूगोनाट्स हैं।"

"तो फिर धर्म-मतभेदी सही।"

"तुम क्या कहने की कोशिश कर रहे हो, महाशय ब्रिकेट ? दर-असल तुम तो मुझे विस्मय में डाल रहे हो।"

"मैं इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कह रहा हूँ कि मैं

अब सफ़र पर जा रहा हूँ, और तुम से विदा लेने आया हूँ। अब विदायी का प्रणाम करके जा रहा हूँ, महाशय डाम माडेस्ट।"

"तुम मुझे इस प्रकार मत छोड़ो।"

"क्यों ?"

"मित्र को इस प्रकार नहीं छोड़ा करते।"

"वैभव मिलने पर कोई मित्र नहीं रहता।"

"चिको !"

"मैं अब चिको नहीं हूँ, तुमने अभी-अभी मुझे मिथ्या स्थिति के लिये धिक्कारा है।"

"पर तुम्हें बिना खाना खाये नहीं जाना चाहिए; यह अच्छी बात नहीं होगी। तुमने बीसों बार मुझसे ऐसा कहा है। चलो, हम दोनों नाश्ता करें।"

"तुम यहाँ बहुत बुरी तरह रहते हो।"

"बुरी तरह !" महन्त ने आश्चर्य-पूर्वक कहा।

"मैं ऐसा ही समझता हूँ।"

"तुमने इससे पहले जो खाना खाया था, उसकी शिकायत है क्या ?"

"वह भयानक स्वाद अब भी मेरे मुँह में है, थू !"

"किस चीज़ का ?"

"सुअर का मांस जल गया था।"

"ओह !"

"तुम्हारे दाँत के नीचे उसके सख़्त कान कटे नहीं थे।"

"ओह !"

"मुर्ग़ी का मांस ज़रूर मुलायम था।"

"हे भगवान् !"

"झोल बड़ा लसलसा था।"

"दया करो !"

"शोरबा तेल से भरा हुआ था, जो अब भी मेरी पाक-स्थली में तैर रहा है।"

"चिक्रो ! चिक्रो !" डाम माडेस्ट ने ठंडी साँस लेकर उस स्वर में कहा, जिसमें कैसर ने मरते समय अपनी हत्या करने-वाले से कहा था—"निर्दयी ! निठुर !"

"और फिर तुम्हारे पास मेरे लिये समय नहीं है।"

"मेरे पास !"

"तुमने ही कहा था न ? अब तुम झूठ बोल सकते हो।"

"ओह, मैं अपने काम को टाल दूँगा; एक महिला को मुझ-से मिलना था।"

"तो उससे मिलिए।"

"नहीं, नहीं, प्यारे चिक्रो ! यद्यपि उसने मुझे सौ बोतल सिसिली की शराब भेजवायी है।"

"सौ बोतल सिसिली की शराब !"

"तो भी उससे नहीं मिलूँगा, यद्यपि वह सम्भवतः कोई बहुत बड़ी महिला है। मैं सिर्फ़ तुम्हारा स्वागत करूँगा। वह सिसिली की शराब भेजनेवाली बड़ी महिला मेरी शिष्या बनना चाहती

है। मैं उसे आध्यात्मिक उपदेश देने से इन्कार कर दूँगा; उससे कहला भेजूँगा कि वह कोई और गुरु चुने ?"

"तुम यह सब काम करोगे ?"

"तुम्हारे साथ नाश्ता करने के लिये प्यारे चिको; तुम्हारे प्रति की गयी अपनी भूलों का मार्जन करने के लिये ।"

"तुम्हारी भूलें तो तुम्हारे क्रूरता-पूर्ण घमण्ड से उत्पन्न हुई हैं, डाम माडेस्ट।

"मैं अपने को नम्र बना लूँगा, मेरे दोस्त।"

"अपने इसी आलस्य के द्वारा।"

"चिको ! चिको ! मैं कल ही से शुरू करूँगा, और अपने साधुओं के साथ व्यायाम में सम्मिलित होकर आत्म-निग्रह कर लूँगा।"

"अपने साधुओं के साथ व्यायाम में सम्मिलित होकर ?" चिको ने आँखें फैलाते हुए कहा—"कैसा व्यायाम—भोजन का ?"

"नहीं, हथियारों का !"

"हथियारों का !"

"हाँ, पर व्यायाम का परिचालन बड़ी ही थकावट का काम है।"

"यह विचार किसके मस्तिष्क की उपज है ?"

"ऐसा मालूम होता है कि मेरे ही मस्तिष्क की है।"

"तुम्हारे ! असम्भव !"

"हाँ; मैंने ही ब्रदर बोरोमे को हुक्म दिया था।"

"बोरोमे कौन है ?"

"नया खज़ाञ्ची।"

"और यह खज़ाञ्ची आया कहाँ से है ?"

"ली-कार्डिनल-डी-गाइज़ ने इसकी सिफ़ारिश की है।"

"व्यक्तिगत रूप में यहाँ आकर ?"

"नहीं, पत्र द्वारा।"

"वही आदमी है, जिसे मैंने नीचे देखा है ?"

"हाँ, वही।"

"जिसने मेरे आने की सूचना दी है ?"

"हाँ।"

"ओह !" चिको के मुँह से अनिच्छापूर्वक निकल पड़ा—"कैसा योग्य आदमी है वह खज़ाञ्ची—कार्डिनल-डी-गाइज़ ने बड़ी ही प्रशंसापूर्वक उसकी सिफ़ारिश की होगी।"

"वह गणित में पैथेगोरस की सी बुद्धि रखता है।"

"तो उसीके साथ तुमने हथियारों का अभ्यास करने का निश्चय किया है ?"

"हाँ, दोस्त।"

"यानी उसीने आपसे यह प्रस्ताव किया है कि आपके साधुओं को हथियारों का अभ्यास कराया जाय ?

"नहीं, दोस्त चिको; यह विचार तो पूर्णतः मेरा था।"

"किसलिये ?"

"उन्हें हथियारों से सुसज्जित करने के लिये।"

"गर्व मत करो, धृष्ट पापी; गर्व करना महान् पाप है। यह विचार तुम्हारे मस्तिष्क से नहीं निकला था।"

"ओह, मैं नहीं जानता। फिर भी यह विचार मेरा ही रहा होगा, क्योंकि ऐसा मालूम होता है कि मैंने एक बहुत सुन्दर लैटिन लोकोक्ति भी उसी मौक़े पर कही थी।"

"तुमने! लैटिन! तुम्हें याद है वह कहावत?"

"जैसा शरीर—"

"वैसी बुद्धि।"

"हाँ, हाँ; यही थी।"

"अच्छा तुमने अपने-आपको ऐसी अच्छी तरह से निर-पराध सिद्ध कर दिया कि मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ। तुम अब भी मेरे सच्चे मित्र हो।"

गोरेनफ़्लोट ने अपनी भीगी हुई आँखें पोंछ लीं।

"अब हमें नाश्ता करना चाहिए, मैं तुम्हारी बात मानते रहने की प्रतिज्ञा करता हूँ।"

"सुनो! मैं रसोइये से कह दूँगा कि अगर भोजन राज-कीय ढंग का न होगा, तो उसे क़ैद कर दिया जायगा, और हम लोग अपनी उस शिष्या की शराब की भी परीक्षा करेंगे।"

"मैं तुम्हें उसका निर्णय करने में मदद दूँगा?"

---

# इक्कीसवाँ परिच्छेद

—*०*—

## नाश्ता

गोरेनफ़्लोट ने शीघ्र ही हुक्म दिया। रसोइया बुलाया गया।

"ब्रदर यूसेब," गोरेनफ़्लोट ने कड़े स्वर में कहा—"मेरे दोस्त, महाशय त्रिकेट, तुमसे जो कुछ कहने जा रहे हैं, उसे सुनो। ऐसा मालूम होता है कि तुम बड़ी बेपर्वाही करते हो; और गत अवसर पर तुमने जो शोरबा बनाया था, उसकी बड़ी शिकायत सुनने में आयी है और तुम्हारे गोश्त बनाने में भी बड़ी ही भयानक असावधानी पायी गयी है। सावधान हो जाओ, नहीं तो ज़रा-सी भी ग़ल्ती करने पर फिर कोई उपाय नहीं रह जायगा।"

बेचारे साधु का चेहरा लाल हो गया और फिर उसके मुँह पर ज़र्दी छा गयी। तुतलाते हुए उसने क्षमा माँगी।

"बस" गोरेनफ़्लोट ने कहा—"इस वक्त हम लोगों को क्या नाश्ता मिल सकता है ?"

"मुर्गी के भेजे के साथ भुने हुए अण्डे।"

"और क्या ?"

"कुकुरमुत्ता।"*

"और ?"

"खमीर और केकड़े की कलिया।"

"यह तो तुच्छ चीज़ें हैं; कोई ठोस चीज़ बताओ।"

"पिश्ते के साथ उबाला हुआ सुअर का नमकीन पुट्ठा।"

चिको के मुँह पर घृणा के भाव दिखायी दिये।

"क्षमा करें !" यूसेब ने उच्च स्वर में कहा—"यह चीजें, स्पेनी शराब में पकायी गयी हैं।"

गोरेनफ़्लोट ने चिको की ओर स्वीकृति-सूचक दृष्टि डालने का साहस किया।

"यह चीज़ अच्छी होगी न, महाशय चिकेट ?" उसने कहा।

चिको ने अर्द्ध-सन्तुष्टि का भाव प्रकट किया।

"इनके अतिरिक्त और क्या-क्या है ?"

"आप सँपेली मछली भी खा सकते हैं ?"

---

*सफेद, पीले और लाल रंग के एक प्रकार के टोपीदार पौधे, जो बारिश के बाद उगते हैं। इन्हें गगनधूल भी कहते हैं।

"ओह, हम लोग मछली को तो अलग कर देंगे।" चिको ने कहा।"

"महाशय ब्रिकेट, मेरी समझ में आप मेरी मछलियाँ चखकर अफ़सोस नहीं करेंगे।"

"क्या वह कोई दुर्लभ मछलियाँ हैं?"

"हम उन्हें ख़ास तौर पर पालते हैं।"

"ओह, हो!"

"हाँ," गोरेनफ़्लोट ने कहा—"ऐसा मालूम होता है कि रोमन या ग्रीक—मुझे याद नहीं दोनों में से कौन—, मतलब यह कि इटली के लोग इस तरह की मछलियाँ इसी ढंग से पालते थे, जैसा यूसेब पालता है। इसने एक पुराने लेखक—सेटोनियस—की पुस्तक में यह विधि पढ़ी थी।"

"क्या! ब्रदर यूसेब," चिको ने उच्च स्वर से कहा—"तुम अपनी मछलियों को आदमी खिलाते हो?"

"नहीं, महाशय; मैं चिड़ियों और शिकार में मरे हुए पशुओं के मांस के छोटे-छोटे टुकड़े करके सुअर के मांस में मिलाकर एक तरह का सालन बनाता हूँ, जो मैं उन मछलियों के लिये डालता हूं। वे हल्के पानी में रक्खी जाती हैं, जो प्रायः बदल दिया जाया करता है। उसमें वे खूब बड़ी और मोटी हो जाती हैं। आज जो मछली आपके लिये बनाऊँगा, उसका वजन भी नौ पौण्ड* है!"

*पौण्ड का वज़न लगभग आध सेर के बराबर होता है।

"तब तो वह साँप होगी!" चिको ने कहा।

"उसने एक चिड़िया खा ली थी।"

"उसे बनाओगे किस तरह?"

"चमड़ा काटकर वह लप्सी के साथ भूनी जायगी और फिर चूरमा के साथ मिलायी जायगी। इसके साथ मैं लहसुन, मिर्च, नींबू और राई का सालन भी परोसूँगा।"

"बढ़िया चीज़ होगी!" चिको ने उच्च स्वर में कहा।

अदर यूसेब ने फिर गहरी साँस ली।

"तो फिर हमें मिठाइयाँ भी चाहिएँ।" गोरेनफ़्लोट ने कहा।

"मैं कोई ऐसी चीज़ निकालूँगा, जो आपको बहुत पसन्द आयेगी।"

"अच्छा, तो मैं तुम पर विश्वास करता हूँ, मेरे विश्वास के योग्य सिद्ध होना।"

यूसेब झुककर वहाँ से चलता बना। दस मिनट बाद दोनों बैठ गये और कार्यक्रम सुचारु रूप से पूरा हुआ। उन्होंने मरभुक्खों की तरह खाना शुरू किया—राइन, बर्गण्डी और हर्मिज की शराबें उड़ीं और इसके बाद उन्होंने शिष्या की भेजी हुई शराब पर भी हाथ मारा।

"तुम्हारी क्या राय है इसके बारे में?" गोरेनफ़्लोट ने पूछा।

"अच्छी है, पर है हल्की। तुम्हारी शिष्या का नाम क्या है?"

"मैं नहीं जानता; उसने आदमी भेजा था।"

जब तक वे खा सके, तब तक खाते गये, इसके बाद पीने और बातें करने लगे। इसी समय सहसा ज़ोर की आवाज़ सुनायी पड़ी।

"यह क्या है ?" चिको ने पूछा।

"व्यायाम शुरू हो रहा है।"

"बिना प्रधान के ही ? मुझे भय है कि तुम्हारे सिपाही नियमित रूप से कार्य करना नहीं जानते।"

"बिना मेरे ! कदापि नहीं !" गोरेनफ़्लोट ने शराब के नशे से उत्तेजित होकर कहा—"यह नहीं हो सकता, हुक्म और शिक्षा देनेवाला तो मैं हूँ। और ठहरो, ब्रदर बोरोमे मेरा हुक्म लेने आ रहे हैं।"

सचमुच उसके यह कहने के साथ ही ब्रदर बोरोमे ने अन्दर प्रवेश किया और चिको पर एक तीव्र एवं टेढ़ी दृष्टि डाली।

"पूजनीय महन्तजी," उसने कहा—"हम हथियारों और बख्तरों की परीक्षा करने के लिये आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"बख्तरों की !" चिको ने सोचा—"मैं इसे अवश्य देखूँगा।" और वह धीरे से उठा।

"तुम हमारे प्रदर्शन पर मौजूद रहोगे ?" गोरेनफ़्लोट ने पत्थर की शहतीर की तरह अकड़कर उठते हुए कहा—"हाथ इधर लाओ, दोस्त; तुम यहाँ अच्छी क़वायद देखोगे।"

---

# बाईसवाँ परिच्छेद

—○○○—

## ब्रदर बोरोमे

जब चिको 'पूजनीय' महन्तजी को सँभालते हुए आँगन में पहुँचा, तो उसने सौ-सौ आदमियों की दो क़तारें देखीं, जिनमें से प्रत्येक अपने नायक की प्रतीक्षा कर रहा था। उनमें सब से अधिक मज़बूत और साहसी आदमियों में से पचास के सिरों पर झिलिम-टोप थे और कमर से बँधी हुई लम्बी तलवारें लटक रही थीं। बाक़ी लोग गर्व-पूर्वक लपेटे हुए बख़्तरों का प्रदर्शन कर रहे थे, जिन पर वे लोहिया दस्तानों से पीट-पीटकर शोर मचाना चाहते थे। ब्रदर बोरोमे ने एक नव-सिखिये के हाथ से झिलिम-टोप ले लिया और उसके सिर पर रख दिया।

उसे ऐसा करते समय चिको ने झिल्लिम-टोप पर नज़र डाली और मुस्कराया। "बड़ा सुन्दर झिल्लिम-टोप है यह," उसने कहा—"कहाँ से खरीदा था इसे, दोस्त महन्त ?"

गोरेनफ़्लोट कोई जवाब नहीं दे सका। क्योंकि उसी समय वे लोग एक बड़ा बख्तर उसके शरीर में पहना रहे थे, जो बड़ाई में तो यद्यपि हरकुलिज़* फ्रांस की नाप का मालूम होता था, किन्तु वह सुयोग्य महन्त की मांस-पेशियों को इस भारीपन साथ दबा रहा था कि वह बर्दाश्त नहीं कर सका। "इतना मत कसो, इतना मत कसो!" उसने कहा—"मेरा दम घुट जायगा—ठहरो!"

"मैं समझता हूँ" बोरोमे ने कहा—"आपने पूजनीय महन्तजी से पूछा है कि उन्होंने झिल्लिम-टोप कहाँ से खरीदा है।"

"मैंने यह प्रश्न पूजनीय महन्तजी से पूछा था; आप से नहीं," चिको ने जवाब दिया—"क्योंकि मैं समझता हूँ कि और जगह की मठों की तरह इस मठ में भी प्रधान की आज्ञा के बिना कोई काम नहीं होता।"

"अवश्य," गोरेनफ़्लोट ने कहा—"यहाँ मेरी आज्ञा के बिना कुछ नहीं होता। तुम क्या पूछ रहे थे, महाशय त्रिकेट ?"

---

*उस देश का पौराणिक योद्धा, जिसकी उपमा भीम से दी जा सकती है।

"मैंने ब्रदर बोरोमे से पूछा था कि क्या वह जानते हैं कि वह झिलिम-टोप कहाँ से प्राप्त हुआ था।"

"कल पूजनीय महन्तजी ने मठ को सशस्त्र बनाने के लिये बहुत-सा अस्त्र-शस्त्र खरीदा था, उसीमें यह झिलिम-टोप भी था।"

"मैंने!" गोरेनफ़्लोट ने पूछा।

"हाँ; आपको याद नहीं है कि आपकी आज्ञा से वे अनेक बख्तर और झिलिम-टोप यहाँ लाये हैं?"

"यह सच है।" गोरेनफ़्लोट ने कहा।

"खूब" चिको ने सोचा—"अपने झिलिम-टोप से मैं अच्छी तरह परिचित हूं, क्योंकि मैं खुद उसे होटल-डी-गाइज़ तक लाया था। यह खोये हुए कुत्ते की तरह आकर मुझे जैको-बिन्स की मठ में फिर मिला।"

बोरोमे के एक इशारे पर साधु लोग क़तार बनाकर खड़े हो गये, और चिको एक बेंच पर बैठकर देखने लगा।

गोरेनफ़्लोट खड़ा रहा। "सावधान!"* बोरोमे ने उसके कान में कहा।

गोरेनफ़्लोट ने म्यान से एक बड़ी तलवार निकाली, और उसे हवा में हिलाते हुए उच्च स्वर में चिल्लाकर कहा—"सावधान!"

"पूजनीय महन्तजी, शायद इस प्रकार आर्डर देने पर

*वह आदेश जो सैनिकों को 'सावधान' होकर खडे होने के लिये दिया जाता है।

आप थक जायँगे," बोरोमे ने धीरे से कहा—"अगर आप अपने बहुमूल्य स्वास्थ्य की रक्षा चाहें, तो आज मैं ही आर्डर दे दूँगा।"

"मैं सचमुच यही चाहता हूँ," डाम माडेस्ट ने कहा—"वास्तव में मैं तो हाँफ उठा। आप ही बोलिए।"

बोरोमे झुका और फिर टुकड़ी के प्रधान के रूप में खड़ा हो गया।

"कैसा शिष्टाचार-सम्पन्न नौकर है," चिको ने कहा—"यह आदमी क्या है, हीरा है।"

"मैंने आपसे कहा था न कि यह बड़ा अच्छा आदमी है।"

"मुझे निश्चय है कि यह प्रति दिन आपका सारा काम बजा लाता होगा।"

"हाँ, प्रति दिन! यह तो गुलामों का सा आज्ञाकारी है।"

"इस प्रकार वास्तव में आपको यहाँ कुछ नहीं करना पड़ता—ब्रदर बोरोमे आपका सारा काम खुद कर देता है?"

"हाँ!"

बोरोमे के हाथ में हथियार खूब शोभा देते थे। उसकी आँखें प्रदीप्त हो रही थीं और तलवार उसके हाथ में ऐसी तेज़ी के साथ घूम रही थी कि देखनेवाला उसे एक सुशिक्षित सैनिक ही समझ सकता था। हर बार बोरोमे के आर्डर देने पर गोरेन-फ़्लोट उसे दुहराता था और साथ ही कहता था—"ब्रदर बोरेमे ठीक बोल रहे हैं; पर मैंने यह सब तो आपको कल ही बतला

दिया था। भाला एक हाथ से दूसरे हाथ में ले जाओ ! फिर उसे आँख की बराबरी तक ऊपर उठाओ! बायीं ओर आधा घूमना भी उसी प्रकार है, जैसा दाहिनी ओर घूमना; अन्तर केवल यही है कि दोनों की दिशाएँ विपरीत हैं।"

"तुम तो बड़े ही चतुर शिक्षक हो।"

"हाँ, मैं इसे अच्छी तरह समझता हूँ।"

"और बोरेसे तुम्हारा मुस्तैद शिष्य है।"

"यह मुझे समझता है; बड़ा बुद्धिमान है।"

साधुलोग जब व्यायाम में व्यस्त थे, तो गोरेनफ़्लोट ने कहा—"तुम मेरे छोटे जैक्स को देखोगे।"

"जैक्स कौन है ?"

"बड़ा अच्छा लड़का है, देखने में शान्त और दृढ़ है, पर है बिजली-सा स्फूर्तिवान। वह देखो। वह हाथ में बन्दूक़ लिये खड़ा है, और अब गोली चलाना ही चाहता है।"

"अच्छा निशाना लगाता है ?"

"हाँ, लगाता है।"

"पर ठहरो—"

"यह क्यों ?"

"लेकिन अगर—लेकिन नहीं !"

"तुम मेरे जैक्स को जानते हो ?"

"मैं ? बिल्कुल नहीं।"

"पर क्षण-भर तो तुमने यही सोचा है कि तुम जानते हो।"

"हाँ, मैंने सोचा कि मैंने इसे एक रात किसी गिर्जे में देखा था, जब मैं किसी पुरोहित के यहाँ ठहरा था। किन्तु नहीं, यह मेरी ग़लती थी; यह वह लड़का नहीं है।"

हम यह स्वीकार करेंगे कि चिको की यह बात बिल्कुल सच्ची नहीं थी। वह मुखाकृति-विज्ञान का ऐसा पक्का जानकार था कि जिसे एक बार देखता था, उसे कभी भूलता नहीं था। इधर जैक्स ने एक भारी बन्दूक़ भरी और निशान से सौ गज़ की दूरी पर खड़ा होकर गोली चलाई, तो गोली ठीक निशाने के बीच में जा लगी, जिससे समस्त साधुओं ने उच्च हर्ष-ध्वनि की।

"ख़ूब काम किया!" चिको ने उच्च स्वर में कहा।

"धन्यवाद है, महाशय!" जैक्स ने कहा। उसका चेहरा आनन्द से लाल हो रहा था।

"तुम अपने हथियार ठीक रखते हो।" चिको ने फिर कहा!

"मैं सीख रहा हूँ, महाशय!"

"पर तलवार में यह सर्वश्रेष्ठ है," गोरेनफ़्लोट ने कहा—"जानकार लोग ऐसा ही कहते हैं; और सुबह से शाम तक यह अभ्यास ही किया करता है।"

"ओह! हमें देखना चाहिए, तब तो।" चिको ने कहा।

"शायद यहाँ मेरे अतिरिक्त कोई इसके साथ पटेबाज़ी नहीं कर सकता; पर क्या आप ख़ुद परीक्षा करेंगे, महाशय?" बोरोमे ने कहा।

"मैं तो एक ग़रीब नागरिक हूँ," चिको ने कहा—"शुरू में मैं भी औरों की तरह तलवार वग़ैरह चलाने का शौक़ करता था, पर अब तो मेरे पैर काँपते हैं, और मेरी बाँहें भी कमज़ोर हैं।"

"पर आप अभ्यास अब भी करते हैं ?"

"बहुत कम," चिको ने मुस्कराकर जवाब दिया—"तोभी भ्रदर बोरोमे, आप, जो ऐसे हृष्ट-पुष्ट हैं, इसे अच्छी शस्त्र-शिक्षा देते हैं। मैं तो महन्तजी से आज्ञा चाहूँगा कि आप इसके साथ दो हाथ दिखायें।"

"मैं हुक्म देता हूँ," महन्त ने गर्व-पूर्वक कहा।

सारे साधुओं ने शिष्य और शिक्षक को घेर लिया। गोरेनफ़्लोट ने अपने दोस्त की ओर झुककर सरलता-पूर्वक कहा—"यह भी वैसी ही मनोरंजक बात मालूम होती है, जैसी सायंकाल की प्रार्थना ? क्यों यही बात है न ?"

"हाँ, कहते तो ऐसा ही हैं।" चिको ने जवाब दिया।

दोनों ही युद्धेच्छु परीक्षण के लिये तैयार हो गये। बोरोमे को दो सुविधाएं थीं—एक तो उसका क़द बड़ा था, दूसरे उसका अनुभव बढ़ा-चढ़ा था। जैक्स के कपोल आरक्त हो गये और उसमें उत्तेजना-सी भर गयी। क्रमशः बोरोमे के चेहरे से साधुतावाला भाव जाता रहा, और वह पूर्णतः एक योद्धा-सा दिखलायी देने लगा। हर झपट में वह या तो आवेश-सूचक आवाज़ लगाने लगा, या फटकार-पूर्ण; पर प्रायः जैक्स की

ताक़त और फुर्ती उसके शिक्षक की चतुरता पर विजय पा जाती थी, और उसके प्रहार कई बार उसके उस्ताद के शरीर पर लगे। जब दोनों रुके तो चिको ने कहा—"जैक्स का प्रहार छः बार लगा है और बोरोमे का नौ बार; शिष्य के लिये इतना बहुत है, पर उस्ताद के लिये यह उतना अच्छा नहीं है।"

बोरोमे की आँखों से एक प्रकार की चमक-सी निकली। उसके चरित्र में चिको को एक और लक्षण का पता लगा।

"ठीक!" उसने समझा—"यह घमण्डी आदमी है।"

"महाशय," बोरोमे ने शान्त स्वर में बोलने की चेष्टा करते हुए कहा—"हथियारों का अभ्यास कठिन चीज़ है; ख़ासकर बेचारे साधुओं के लिये तो और भी।"

"तो भी," चिको ने कहा—"उस्ताद को अपने शिष्य से कम-से-कम दुगनी शक्ति तो रखनी ही चाहिए, और अगर जैक्स शान्त रहकर शुरू करता, तो मुझे निश्चय है कि उसकी मार की संख्या भी आपकी मार की संख्या के बराबर ही होती।"

"मैं ऐसा नहीं समझता," बोरोमे ने क्रोध-पूर्वक ओठ चबाते हुए कहा।

"मुझे तो निश्चय है।"

"महाशय ब्रिकेट, ऐसे चतुर हैं, तो खुद जैक्स के साथ दो-दो हाथ चला देखें।" बोरोमे ने कटु स्वर में जवाब दिया।

"ओह! मैं तो बुड्ढा हूँ।"

"हाँ, पर आप सुदक्ष तो हैं।"

"तुम चिढ़ा रहे हो," चिको ने सोचा—"पर ठहरो ।" फिर उसने प्रकटतः कहा—"तो भी मुझे निश्चय है कि ब्रदर वोरोमे ने बुद्धिमान उस्तादों की तरह, प्रायः जैक्स को सुशीलता-वश अपने शरीर पर प्रहार करने दिया है ।

"ओह !" जैक्स ने भवें चढ़ाकर जोर से कहा ।

"नहीं," वोरोमे ने जवाब दिया—"निश्चय ही मैं जैक्स को प्रेम करता हूँ; पर इस तरह उसे बिगाड़ता नहीं। आप खुद परीक्षा कर देखिए, महाशय ब्रिकेट ।"

"नहीं ।"

"सिर्फ़ एक ही हाथ !"

"परीक्षा कर देखिए ।" गोरेनफ़्लोट ने कहा ।

"मैं आपको नहीं मारूँगा, महाशय," जैक्स ने कहा—"मेरा हाथ बहुत हल्का है ।"

"प्यारे बच्चे !" चिको ने गुनगुनाकर विलक्षण हँसी के साथ कहा । "अच्छा !" उसने कहा—"चूँकि सब की इच्छा है, इसलिये मैं परीक्षा कर देखूँगा ।" और धीरे-से उठकर मक्खियाँ पकड़नेवाले कछुए की सी स्फूर्ति के साथ तैयार हुआ ।

———

# तेईसवाँ परिच्छेद

——::०::——

## पाठ

उस ज़माने में पटेबाज़ी की कला आजकल के दर्जे पर नहीं पहुँची थी। पटेबाज़ी में ऐसी तलवारें प्रायः काम में लायी जाती थीं, जिनके दोनों ओर धारें होती थीं। इन दोनों धारों से मारने के अतिरिक्त नोक चुभोने का भी रिवाज था। इसके अतिरिक्त बायें हाथों में रोकने और मारने के लिये कटारें भी होती थीं, इसलिये इस प्रकार के परीक्षणों में प्रायः हल्के घाव भी हो जाया करते थे, जिनसे असली लड़ाइयों में उत्तेजना बढ़ जाया करती थी। उस समय पटेबाज़ी शैशवावस्था में थी और उसके लिये बहुत-से नियम होते थे, जिनके

अनुसार प्रतिद्वन्द्वियों को बराबर एक-स्थान से दूसरे स्थान को हटते रहना होता था और एक ऐसा मैदान चिट्ठी-गुण्टी डालकर नियत किया जाता था, जहाँ दोनों व्यक्तियों को खास जगह से पीछे हटना पड़ता था।

प्रतिद्वंदियों के आगे कूदने, फिर पीछे हटने, या बायें-दाहिने उछलने का दृश्य बहुत साधारण था, इसलिये इस कार्य में न-केवल हाथों की स्फूर्ति ही सापेक्ष थी, वरन् पाँवों तथा समस्त शरीर को उसी चंचलता से काम करने की आवश्यकता होती थी—और इस कला की यही सबसे पहली शर्त थी। चिको इन कलाओं से अवगत नहीं मालूम होता था, और वह अधिकतर आधुनिक प्रणाली की ओर झुकता प्रतीत होता था, जिसके अनुसार हाथों की स्फूर्ति और शरीर की स्थिरता मुख्य चीज़ थी। वह सीधे तनकर दृढ़ता-पूर्वक खड़ा हो गया और अपनी दृढ़ तथा लचीली कलाई में ऐसी तलवार पकड़ ली, जो धार से लेकर फल के आधे हिस्से तक लचकदार थी और जिसके ऊपरी हिस्से में मोटा और दृढ़ फ़ौलाद लगा था।

पहले पैंतरे के बाद जैक्स ने अपने सामने खड़े हुए चिको की ओर देखा, जिसके सारे शरीर में केवल कलाई ही सजीव मालूम होती थी, और अधीरतापूर्वक कुछ वार किये, जिस पर चिको ने केवल अपनी बाँह फैला दी, और प्रत्येक छूट पर नवयुवक के सीने पर पूरा हाथ मारता गया। प्रत्येक वार पर

जैक्स क्रोध और उत्सुकता के साथ कूदकर पीछे हटता था। दस मिनट तक उसने बड़ी ही स्फूर्ति के साथ अपनी सारी शक्ति का प्रदर्शन किया; वह शेर की तरह झपटकर साँप की तरह ऐंठा। फिर उसने दाहिने से बायें को दाँव बदला। किन्तु चिको ने स्थिरतापूर्वक लम्बी बाँह आगे बढ़ाकर समय का सदुपयोग किया और विरोधी की तलवार* हटाते हुए, अपनी तलवार उसी जगह जमा दी। बोरोमे यह दृश्य देखकर क्रोध के मारे पीला पड़ गया। आखिर जैक्स ने चिको पर अन्तिम वार किया, और चिको ने अपनी पूरी ताक़त लगाकर ऐसा झटका दिया कि बेचारा लौंडा धड़ाम से जमीन पर जा गिरा, और चिको चट्टान की तरह अपनी जगह खड़ा रहा।

"आपने हम लोगों को नहीं बतलाया कि आप पटेबाज़ी के ऐसे उस्ताद हैं।" बोरोमे ने घबराहट के साथ अपने नाखून चबाते हुए कहा।

"मैं, एक मामूली नागरिक!" चिको ने कहा—"मैं, राबर्ट ब्रिकेट, पटेबाज़ी का उस्ताद हूँ! वाह महाशय!"

"लेकिन महाशय, जिस चतुरता के साथ आपने तलवार का हाथ दिखाया है, उससे मालूम होता है कि आपने अभ्यास खूब कर रक्खा है।"

---

*जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है, यह तलवार वास्तविक युद्ध की तलवार-जैसी न होकर ऐसे ढंग की बनी होती थी कि पूरा वार हो जाने पर भी अधिक चोट नहीं आती थी।

"हाँ, महाशय, मैंने कभी-कभी तलवार पकड़ी है, और हमेशा एक बात पाता हूँ।"

"वह क्या ?"

"यह कि जो कोई तलवार पकड़ता है, उसके लिये गर्व बुरी चीज़ है, और क्रोध गर्व का सहायक है। अब सुनो, जैक्स !" उसने लड़के को सम्बोधन करके कहा—"तुम्हारी कलाई अच्छी है; पर तुम्हारे पाँव और मस्तक अच्छे नहीं हैं। तुम फुर्तीले हो, पर सिद्धान्त नहीं जानते। हथियार के लिये तीन चीज़ें आवश्यक हैं—पहली मस्तक, दूसरा हाथ, और तीसरा पाँव। पहली से तुम अपनी रक्षा कर सकते हो, पहली और दूसरी से तुम जीत सकते हो; और तीनों के सामंजस्य से तुम्हारी हमेशा विजय होगी।"

"महाशय," जैक्स ने कहा—"ब्रदर बोरोमे के साथ भी दो हाथ चलाइए—मैं देखना चाहता हूँ।"

"नहीं," ख़ज़ाञ्ची ने कहा—"ये मुझे मार लेंगे, और मैं इसे प्रमाणित करने की बजाय मान लेना ज़्यादा अच्छा समझता हूँ।"

"कैसे नम्र और सुशील हैं यह !" गोरेनफ़्लोट ने कहा।

"इसके विपरीत," चिको ने धीरे से कहा—"यह गर्व का पुतला है। इस उम्र में ऐसे पाठ के लिये मैं सब-कुछ दे देता।" और फिर अपने स्थान पर बैठ गया।

जैक्स उसके पास आया, और पराजय की लज्जा को

जगह अब उसके हृदय में प्रशंसा के भाव उदय हो गये। "क्या आप मुझे कुछ पाठ सिखा देंगे, महाशय त्रिकेट?" उसने कहा—"महन्तजी इसकी आज्ञा दे देंगे। दे देंगे न पूज्यपाद?"

"बड़ी खुशी से, मेरे बच्चे।"

"मैं तुम्हारे उस्ताद के काम में बाधा नहीं डालना चाहता।" चिको ने बोरोमे की ओर झुककर कहा।

"इसका उस्ताद अकेला मैं ही नहीं हूं," उसने कहा—"न तो इसकी विजय का ही सारा श्रेय मुझे मिल सकता है, न पराजय का ही।"

"तो फिर दूसरे उस्ताद कौन हैं?"

"ओह, कोई नहीं!" बोरोमे ने इस ख़याल से कहा कि उसने बेवक़ूफ़ी की है।

"कौन है वह, जेक्स?" चिको ने पूछा।

"मुझे याद है," गोरेनफ़्लोट ने कहा—"वह एक नाटे क़द का मोटा आदमी है, जो कभी-कभी यहाँ आया करता है—सूरत-शक्ल अच्छी है; पीता खूब है।"

"मैं उसका नाम भूल गया।" बोरोमे ने कहा।

"मैं जानता हूँ," पास खड़े हुए एक साधु ने कहा—"उसका नाम है बसी लेक्लर्क।"

"ओह, अच्छी तलवार है उसकी!" चिको ने कहा।

जेक्स ने अपनी प्रार्थना फिर दुहरायी।

"मैं तुम्हें नहीं सिखा सकता," चिको ने कहा—"मैं खुद

विचार और अभ्यास के अधार पर लड़ा हूँ, और तुम्हें भी ऐसा ही करने का आदेश देता हूँ ।"

गोरेनफ़्लोट और चिको अब मकान की तरफ़ लौटे ।

"मुझे आशा है," गोरेनफ़्लोट ने गर्व-पूर्वक कहा—"कि हमारा यह स्थान सम्राट् की सेवा के लिये है, और कुछ उपयोगी भी है ?"

"मुझे ऐसा ही समझना चाहिए !" चिको ने कहा—"तुमसे मिलकर, पूज्यपाद महन्तजी, यहाँ बहुत-सी अच्छी चीज़ें देखने को मिलती हैं ।"

"और यह सब एक ही मास में हुआ है—इससे भी कम में।"

"और सब-कुछ तुमने किया है ?"

"केवल मैंने ही, जैसा कि तुम खुद देख रहे हो ।" गोरेनफ़्लोट ने अकड़ते हुए कहा ।

"यह तो मेरी आशा से भी अधिक काम हुआ है, दोस्त; और जब मैं अपने दूत-कार्य से वापस आऊँगा—"

"ओह, ठीक, प्यारे चिको, मैं तुम्हारे दूत-कार्य के सम्बन्ध में बात करना चाहता हूँ ।"

"बड़ी ख़ुशी से कीजिए, क्योंकि जाने के पहले मुझे अभी सम्राट् के पास एक सन्देश भेजना है ।"

"सम्राट् के पास, प्यारे दोस्त ! तुम सम्राट् के साथ पत्र-व्यवहार करते हो ?"

"सीधे ।"

"और तुम्हें सन्देश-वाहक की ज़रूरत है ?"

"हाँ।"

"क्या हमारे साधुओं में से किसी को लोगे ? मठ के लिये यह एक इज़्ज़त की बात होगी ?"

"ख़ुशी से।"

"तब तो तुम पर फिर सम्राट् की कृपा हो गयी ?"

"इतनी अधिक जितनी पहले कभी नहीं थी।"

"तो," गोरेनफ़्लोट ने कहा—"तुम सम्राट् को बतला सकते हो कि इनके लिये हम लोग यहाँ क्या कर रहे हैं !"

"मैं ऐसा करने से नहीं चूक सकता।"

"ओह, मेरे प्यारे चिको।" गोरेनफ्लोट ने कहा। वह अब अपने को विशष समझने लगा।

"पर पहले मेरे दो निवेदन हैं।"

"कहो।"

"पहला, रुपये के लिये, जो सम्राट् तुम्हें वापस कर देंगे।"

"रुपये ! मेरे कोश तो भरे पड़े हैं।"

"सचमुच ! तुम बड़े भाग्यशाली हो।"

"तो क्या एक हज़ार क्राउन लोगे ?"

"नहीं, यह तो बहुत ही अधिक है; मेरी रुचि मध्यम, और इच्छाएँ सीमित हैं, और मैं अपनी राजदूत की पदवी पर गर्व नहीं करता; मैं इसकी डींग न हाँककर इसे छिपाता फिरता हूँ; इसलिये सौ क्राउन ही काफ़ी होंगे।"

"अच्छा, तो यह लो; और दूसरी चीज ?"

"एक नौकर।"

"एक नौकर ?"

"हाँ, मेरे साथ जाने के लिये; मैं एकाकी जीवन नहीं पसन्द करता।"

"ओह, मेरे दोस्त, अगर मैं पहले की तरह स्वतन्त्र होता।"

"पर अब तो नहीं हो।"

"बड़प्पन ने मुझे गुलाम बना दिया है।" गोरेनफ़्लोट ने गुनगुनाकर कहा।

"अफ़सोस !" चिको ने कहा—"कोई सब काम एक साथ ही नहीं कर सकता। पर तुम्हारा प्रतिष्ठाजनक साहचर्य न प्राप्त कर सकने के कारण, प्रिय महन्तजी, मैं छोटे जैक्स के साथ से ही सन्तुष्ट हो जाऊंगा। मैं उसे देखकर खुश होता हूँ।"

"तुम ठीक कहते हो, चिको; वह अद्भुत लड़का है, और तुम्हे जाना कितनी दूर है ?"

"आरम्भ में मैं उसे ढाई सौ मील का सफ़र कराऊँगा, तुम आज्ञा दोगे तो ?"

"वह तुम्हारा ही है, प्यारे दोस्त।"

महन्त ने घण्टी बजायी। नौकर के उपस्थित होने पर उसने कहा—"ब्रदर जैक्स को यहाँ लिवा लाओ; और हमारे सन्देश-वाहक को भी।"

दस मिनट के बाद दोनों ही दरवाज़े पर आ हाज़िर हुए।

"जैक्स," गोरेनफ़्लोट ने कहा—"मैं तुम्हें एक विशेष दूत-कार्य सौंपता हूँ।"

"मुझे ?" नवयुवक ने आश्चर्यान्वित होकर पूछा।

"तुम्हे रावर्ट ब्रिकेट के साथ एक लम्बे सफ़र पर जाना होगा।"

"ओह !" जैक्स ने उत्साहपूर्वक कहा—"यह तो बहुत अच्छा होगा ! हम लोग रोज़ लड़ेंगे न, महाशय ?"

"हाँ, प्यारे बच्चे।"

"मैं अपनी बन्दूक ले जा सकता हूं ?"

"अवश्य।"

जैक्स प्रसन्नता-पूर्वक कमरे के बाहर गया।

"रहा सन्देश-वाहक, उसके बारे में आप हुक्म दीजिए। आगे आओ, ब्रदर पानुर्जे।"

"पानुर्जे !" चिको ने कहा। उसके मन में इस नाम के साथ कुछ ख़ास मधुर स्मृतियाँ आ गयीं—"पानुर्जे !"

"अफ़सोस ! हाँ" गोरेनफ़्लोट ने कहा,—"मैंने इस ब्रदर* को पहले आदमी की जगह पर सफ़र के काम के लिये चुना है, इसका नाम भी पहले आदमी की तरह पानुर्जे रक्खा गया है।"

"तो हमारा पुराना दोस्त नौकरी से पृथक् हो गया ?"

"वह मर गया।"

---

*मठ के नियमानुसार महन्त को फ़ादर (पिता) और और साधुओं को ब्रदर (भाई) कहते हैं।

"ओह !" चिको ने सहानुभूति के स्वर में कहा—"पर वह तो बिल्कुल बुड्ढा होकर मरा होगा।"

"उन्नीस वर्ष का, दोस्त; उन्नीस वर्ष का हुआ था।"

"बहुत बड़ी उम्र बतायी तुमने," चिको ने कहा—"मठों में ही ऐसे दीर्घ जीनव के उदाहरण मिल सकते हैं!"

———

# चौबीसवाँ परिच्छेद

—✻—

## शिक्षा

पानुर्ज आगे बढ़ा। न तो उसमें सदाचार ही था, न शारीरिक लक्षण ही ऐसे थे, जिससे उसे गधे के अतिरिक्त और कुछ कहा जा सके; उसकी आकृति लोमड़ी से अधिक मिलती-जुलती थी—उसकी आँखें छोटी थीं, नाक नुकीली और जबड़े आगे को निकले हुए। चिको ने क्षण-भर उसकी ओर देखा और उसी दम अनुमान लगा लिया कि मठ के सन्देश-वाहक के रूप में उसकी उपयोगिता कितनी है। पानुर्ज नम्रता-पूर्वक दरवाज़े के पास खड़ा रहा।

"यहाँ आओ, सन्देश-वाहक महाशय," चिको ने कहा—"तुम लावर जानते हो?"

"हाँ, महाशय।"

"और लावर में एक हेनरी-डी-वैलोई रहते हैं ?"

"सम्राट् ?"

"इसका मुझे निश्चय नहीं हैं; पर लोग साधारणतः उन्हें यही कहते हैं।"

"क्या उन्हीं के पास मुझे जाना होगा ?"

"ठीक उन्हीं के पास; कहना कि उनसे बातें करनी हैं।"

"क्या वे लोग मुझे उनके पास जाने देंगे ?"

"हाँ, तुम ड्योढ़ीदार के पास तक जा सकोगे। तुम्हारी इस रंग की फ्राक ही तुम्हारा पासपोर्ट है, क्योंकि सम्राट् बड़े धार्मिक हैं।"

"और मैं ड्योढ़ीदार से क्या कहूँगा ?"

"कहना कि तुम्हें छाया ने भेजा है।"

"कैसी छाया ?"

"उत्सुकता अपराध है, भाई।"

"माफ़ करें !"

"तो, कह देना कि तुम्हें छाया ने भेजा है।"

"हाँ।"

"और यह कि तुम पत्र चाहते हो।"

"कैसा पत्र ?"

"फिर !"

"ओह ! सच है।"

"पूजनीय," चिको ने गोरेनफ़्लोट की ओर मुड़कर कहा—"निश्चय ही मैं उस पानुर्जे को अधिक पसन्द करता।"

"मुझे यही काम करना है ?" सन्देश-वाहक ने पूछा।

"तुम यह और कहना कि छाया उसकी प्रतीक्षा करेगी, और शारेण्टन जानेवाली सड़क पर धीरे-धीरे जायगी।"

"तो मुझे उसी सड़क पर आकर आपसे मिलना होगा ?"

"बिल्कुल ठीक।"

पानुर्जे दरवाज़े की ओर गया और पर्दे को उठाकर बाहर जाने के लिये तैयार हुआ। ब्रदर पानुर्जे के पर्दा उठाने पर चिको ने देखा कि कोई बाहर खड़ा अन्दर की बात-चीत सुन रहा है। चिको की चपल बुद्धि से यह बात छिपी नहीं रही कि वह ( ब्रदर बोरोमे ) इस बात को जानकर सन्तुष्ट हुआ है।

"अच्छा, तुम सुन रहे हो," उसने सोचा—"अच्छा ही हुआ, मैं कुछ तुम्हारे फ़ायदे की बात भी करता हूँ।"

"अच्छा," गोरेनफ़्लोट ने कहा—"तो तुम सम्राट् का सन्देश लेकर जा रहे हो, दोस्त ?"

"हाँ, गुप्त सन्देश।"

"मैं समझता हूँ, इसका सम्बन्ध राजनीति से होगा।"

"मेरा भी यही ख़याल है।"

"क्या ! तुम यह नहीं जानते कि तुम्हें कैसा सन्देश लेकर भेजा जा रहा है ?"

"मैं इतना ही जनता हूं कि मुझे एक पत्र ले जाना है—बस।"

"राजकीय रहस्य की बात होगी, सम्भवतः ?"

"मैं भी यही समझता हूँ।"

"और तुम्हें सन्देह नहीं है ?"

"हम लोग गोपनीय बातें करने के लिये काफ़ी एकान्त में हैं न ?"

"कहो; मैं तो गुप्त बातों के लिये क़ब्र के सदृश हूँ।"

"अच्छा, तो बात यह है कि सम्राट् ने अन्ततः निश्चय कर लिया कि ड्यूक-डी-अंजो को मदद भेजी जाय।"

"सचमुच ?"

"हाँ, कल रात को एम-डी-जायस इस काम के लिये रवाना होनेवाले थे।"

"और दोस्त, तुम ?"

"मैं स्पेन की ओर जा रहा हूँ।"

"तुम सफ़र कैसे करते हो ?"

"ओह, किसी तरह; पैदल, घोड़े पर, और गाड़ी में भी—जैसा मौक़ा होता है।"

"जैक्स तुम्हारे लिये अच्छा साथी होगा।"

"धन्यवाद है, दोस्त। अब मैं समझता हूँ, मुझे केवल विदा ही लेनी है।"

"विदा; मैं तुम्हे आशीर्वाद दूँगा।"

"वाह; हमारे-तुम्हारे लिये तो यह फ़ज़ूल है।"

"ठीक है; पर अपरिचितों के लिये इसका कुछ मूल्य है।"

दोनों ने परस्पर आलिंगन किया।

"जैक्स!" महन्त ने पुकारा—"जैक्स!!"

बोरोमे अन्दर आया।

"ब्रदर जैक्स!" महन्त ने फिर दुहराया।

"जैक्स चला गया।"

"क्या! चला गया?" चिको ने उच्च स्वर से कहा।

"क्या आप किसी को लावर नहीं भेजना चाहते थे?"

"हाँ; पर वह तो पानुर्जे था।" गोरेनफ़्लोट ने कहा।

"ओह! मैं कैसा बेवकूफ़ हूँ," बोरोमे ने कहा—"मैंने जैक्स को समझा था।"

चिको ने भवें चढ़ा लीं; पर ब्रदर बोरोमे ऐसा दुखी नज़र आता था कि उसके लिये कुछ अधिक कहना असम्भव था—"तो मैं प्रतीक्षा करूँगा," उसने कहा—"जब तक कि जैक्स वापस नहीं आ जाता।"

बोरोमे झुका, और बदले में उसने भी भवें चढ़ायीं। "हाँ," उसने कहा—"मैं पूज्यपाद से यह प्रार्थना करना भूल गया, और मैं इसीलिये आया हूँ कि एक अपरिचित महिला यहाँ आयी हुई है और आपसे बातें करना चाहती है।"

"क्या वह अकेली है?" गोरेनफ़्लोट ने पूछा।

"नहीं; उसके साथ एक चपरासी भी है।"

"वह तरुणी है?"

बोरोमे ने आँखें नीची कर लीं।

"अच्छा! यह पाखण्डी भी है।" चिको ने मन-ही-मन कहा।

"वह अब भी तरुणी-सी मालूम पड़ती है।" बोरोमे ने कहा।

"दोस्त," गोरेनफ़्लोट ने चिको की ओर रुख करके कहा—"तुम समझ गये?"

"मैं अब तुम्हारे पास से हटकर" चिको ने कहा—"पास के किसी कमरे या आँगन में प्रतीक्षा करूँगा।"

"यहाँ से लावर काफ़ी दूर है, महाशय," बोरोमे ने कहा—"और जैक्स को देरी हो जा सकती है, या वे लोग महत्वपूर्ण पत्र एक लड़के को देते हुए विश्वास करने में हिचकिचा भी सकते हैं।"

"आप यह विचार कितने विलम्ब से प्रकट कर रहे हैं," चिको ने जवाब दिया—"तो भी मैं शैरेण्टनवाली सड़क पर जाऊँगा, और आप उसे मेरे पीछे भेज सकते हैं।" और वह ज़ीने की ओर मुड़ा।

"इस रास्ते से नहीं," बोरोमे ने कहा—"वह महिला ऊपर आ रही है और वह किसी से भी मिलना नहीं चाहती।"

"आप ठीक कह रहे हैं," चिको ने मुस्कराकर कहा—"मैं छोटे ज़ीने से चला जाऊँगा।"

"आप रास्ता जानते हैं?"

"अच्छी तरह," और चिको एक गुप्त स्थान में गया, जहाँ से दूसरे कमरे को प्राइवेट ज़ीना गया था। उस कमरे में हथियार—तलवार, बन्दूक़ और पिस्तौल—रक्खे हुए थे।

"ये लोग जैक्स को मुझसे छिपा रहे हैं," चिको ने सोचा—"और इस महिला को भी; ऐसी अवस्था में ये लोग मुझसे जो करवाना चाहते हैं, मुझे इसके बिल्कुल विपरीत करना चाहिए। मैं जैक्स की वापसी का इन्तज़ार करूँगा, और इस रहस्यमयी महिला को भी देखूँगा। ओह, यहाँ कोने में किसी की झिलमी क़मीज़ पड़ी हुई है; महन्त की नाप से तो यह बहुत छोटी है, और मेरे बदन में ठीक आयेगी। मैं इसे गोरेनफ़्लोट से मँगनी लेलूँगा, और लौटने पर वापस दे दूँगा।" उसे मोड़कर उसने अपनी जाकेट के नीचे दबा ली। इसके बाद बोरोमे वहाँ आ पहुँचा।

चिको ने हथियारों की प्रशंसा करने का बहाना किया।

"महाशयजी, क्या अपने लिये आप कोई ठीक हथियार खोज रहे हैं?" बोरोमे ने पूछा।

"मैं! खूब! मैं हथियार लेकर क्या करूँगा?"

"आप इनका इस्तेमाल अच्छाई के साथ करना जानते हैं।"

"सिद्धान्त-रूप में, केवल सिद्धान्त-रूप में; मैं हथियार इस्तेमाल कर सकता हूँ, पर नागरिकों में सैनिक गुण कहाँ से आ सकता है। मेरी साँस उखड़ जाती है और पाँव भी बेकार हैं; यह मेरी खास त्रुटियाँ हैं।"

"मुझे यह कहने की आज्ञा दीजिए कि यह त्रुटियाँ तो हथियार बाँधने की अपेक्षा सफ़र के लिये और भी हानिकारक हैं।"

"ओह! आप जानते हैं कि मैं सफ़र के लिये जा रहा हूँ?" चिको ने लापर्वाही के साथ कहा।

"पानुर्जे ने मुझे बताया है।" बोरोमे ने बनते हुए कहा।

"यह अद्भुत बात है; मैं समझता था कि मैंने पानुर्जे से यह बात नहीं कही है। पर कोई हर्ज नहीं; मुझे अपने को छिपा रखने का कोई कारण नहीं है। हाँ, भाई, मैं एक छोटे सफ़र पर जा रहा हूँ। अपनी मातृभूमि को जा रहा हूँ, जहाँ मेरी कुछ जायदाद है।"

"आप जानते हैं, महाशय ब्रिकेट, कि आपने जैक्स को बड़ी इज़्ज़त दी है?"

"मेरे साथ जाने की?"

"हाँ, पर ख़ास तौर पर सम्राट् से मिलने की।"

"या सम्राट् के ड्योढ़ीदार से मिलने की, क्योंकि इस बात की पूर्ण सम्भावना है कि वह अन्दर नहीं जा सकेगा।"

"तब तो आप लावर से घनिष्ट सम्बन्ध रखते हैं?"

"अत्यन्त घनिष्ठ, महाशय! मैं सम्राट् और युवक रईसों को वस्त्रों की सप्लाई करता हूँ।"

"सम्राट् को?"

"जब वे ड्यूक-डी-अंजो थे, तभी मैंने उनको पोशाक

सप्लाई की थी। पोलैण्ड से वापस आने पर उन्होंने मुझे याद किया, और फिर अपने दरबार का ठेकेदार नियुक्त कर दिया।"

"तब तो वहाँ आपका अच्छा परिचय है, महाशय ब्रिकेट।"

"सम्राट् से न ?"

"हाँ।"

"हरेक आदमी ऐसा नहीं कहेगा, ब्रदर बोरोमे।"

"ओह ! संघवादी न ?"

"अब तो हरेक आदमी थोड़ा-बहुत संघवादी ही है।"

"पर आप तो अवश्य ही अधिक संघवादी नही हैं ?"

"मैं ? आप ऐसा क्यों कहते हैं ?"

"जब कोई सम्राट् को व्यक्तिगत रूप से जानता हो।"

"सब लोगों की तरह, मेरी भी कुछ राजनीति है।"

"हाँ, पर आपकी राजनीति सम्राट् की राजनीति के अनुकूल है।"

"इसका पक्का निश्चय न करें; हममें प्रातः मतभेद हो जाता है।"

"अगर आप उनसे सहमत नहीं है, तो वे आपके हाथ सन्देश क्योंकर भेजते हैं ?"

"आपका मतलब राजाज्ञा से है ?"

"सन्देश या राजाज्ञा एक ही बात है; दोनों ही विश्वास-पात्रता के द्योतक हैं।"

"उंह ! मैं ठीक-ठीक नाप लेना जानूं, सम्राट् मुझसे यही आशा रखते हैं।"

"नाप ?"

"राजनीतिक नाप या आर्थिक ?"

"नहीं, कपड़ों की नाप।"

"क्या !" बोरमे ने स्तम्भित होकर पूछा।

"वही; आप आसानी से समझ सकते हैं।"

"मैं समझ नहीं रहा हूँ।"

"आप जानते हैं कि सम्राट् ने नोतर-देम-शार्टर की यात्रा की थी।।"

"हाँ, उत्तराधिकारी प्राप्त करने के लिये।"

"ठीक है। आप जाते हैं कि सम्राट् की अभिलाषा की पूर्ति के लिये एक निश्चित उपाय है।"

"कुछ भी हो; पर यह मालूम होता है कि सम्राट् वह उपाय काम में नहीं लाते।"

"अदर बोरोमे !"

"कहिए ?"

"आप जानते हैं कि राज-पद के लिये उत्तराधिकारी केवल चमत्कार-द्वारा प्राप्त करना है; किसी और तरह से नहीं।"

"तो वे वही उपाय ढूँढ़ रहे हैं—"

"हाँ, नोतर-देम-डी-शार्टर में।"

"वह शेमीज़* ?"

"सम्राट् ने नोतर-देम से शेमीज़ लेकर उसे सम्राज्ञी को दे दिया है; और उसके बदले में वह चाहते हैं कि नोतर-देम-डी-तोलेदो का सा एक बहुमूल्य वस्त्र प्रदान करें, जो संसार में सर्वोत्कृष्ट वस्त्र कहा जाता है।"

"इसीलिये आप जा रहे हैं—"

"मैं तोलेदो जा रहा हूँ, ब्रदर वोरोमे; वहाँसे उस वस्त्र की नाप लाकर वैसी ही चीज़ बनवाने के लिये।"

वोरोमे एक ऐसी अवस्था में पड़ गया, जिससे वह चिको की बात पर विश्वास करने या न करने में हिचकिचाता-सा मालूम होता था। खूब सोच-विचार करने के बाद हम इसी परिणाम पर पहुँचे हैं कि उसने चिको की बातों पर विश्वास नहीं किया।

"तो आप विचार कर सकते हैं," चिको ने इस प्रकार कहना जारी रक्खा, मानो वह खज़ाञ्ची के मन की बात भाँप नहीं रहा है—"ऐसी स्थिति में धार्मिक संस्था के आदमी का साथ मेरे लिये बड़ा सुखद हो सकता है। पर समय गुज़र रहा है, और जैक्स इतनी देर तक नहीं रोका जा सकता; मैं जाकर उसके लिये क्राई फ़ाबिन में प्रतीक्षा करूँगा।"

"मैं समझता हूँ, यही अच्छा होगा।"

"तो वह ज्यों ही आयेगा, आप उससे कह देंगे।"

"हाँ।"

---

*महिलाओं का परिधान विशेष।

"और उसे मेरे पीछे भेज देंगे ?"

"भूल नहीं होगी।"

"धन्यवाद, ब्रदर बोरोमे; मैं आपका परिचय पाकर मुग्ध हो गया।"

वह छोटे ज़ीने से चला गया और बोरोमे ने उसके पीछे से ताला बन्द कर दिया।

"मैं महिला को अवश्य देखूँगा।" चिको ने सोचा।

वह मठ से निकलकर उस सड़क पर गया, जिसका नाम उसने बोरोमे को बतलाया था; फिर जब नजर से ओझल हो गया, तो लौट पड़ा और धीरे से एक खाई में उतर पड़ा, जहाँ से अदृश्य रूप में चलते हुए वह दूर तक फैली हुई उस झाड़ी में जा पहुँचा जो मठ के सामने थी। यहीं ठहरकर वह जैक्स के लौटने या महिला के बाहर निकलने का इन्तजार करने लगा।

---

## पच्चीसवाँ परिच्छेद

—:*:*:—

### दाँव-घात

चिको ने झाड़ी में छोटा-सा सूराख़ करके इतनी जगह बना ली कि वह अन्दर आने या बाहर जानेवालों को देख सके। जहाँ तक उसे दीखता था, सड़क क़रीब-क़रीब सुन-सान नज़र आती थी; रद्दी से कपड़े पहने हुए केवल एक आदमी दिखायी दिया, जो एक लम्बी नोकदार लाठी से ज़मीन नाप रहा था। चिको को और काम नहीं था, इसलिये वह इस आदमी ही को देखने की तैयारी कर रहा था। सहसा एक अधिक महत्वपूर्ण दृश्य ने उसका ध्यान आकर्षित कर लिया।

गोरेनफ़्लोट के कमरे की खिड़की, जिसमें लपेटे जाने-वाले पर्दे लगे थे, एक झरोखे की ओर खुलती था। चिको ने देखा कि गोरेनफ़्लोट खुली हुई खिड़की और झरोखे से शूरतापूर्ण ढंग से मुस्कराते हुए बाहर निकला। उसके पीछे-पीछे मुलायम ऊन की मख़मली ओढ़नी से लगभग सारा बदन ढके एक महिला भी थी।

"ओह!" चिको ने सोचा—"वह महिला यही है। यह तो तरुणी मालूम होती है; बात तो विलक्षण है, पर मैं जिसे ही देखता हूँ, उसी में सादृश्य नज़र आता है! यह अर्दली आ रहा है। इस—अर्दली—के सम्बन्ध में तो कोई भूल हो ही नहीं सकती; मैं इसे जानता हूँ, और अगर यह मेनीविले हुआ तो—फिर यह महिला मैडम-डी-माण्ट-पेंसियर क्यों नहीं होगी? और, हाँ, ख़ूब! यह तो अवश्य ही डचेज़ है!"

क्षण-भर बाद उसने डचेज़ के पीछे बोरोमे का पीला सिर देखा।

"ये क्या करने जा रहे हैं," चिको ने सोचा—"क्या डचेज़ गोरेनफ़्लोट के साथ खाना-पीना चाहती है?"

इसी समय चिको ने देखा कि महाशय-डी-विले ने बाहर किसी की ओर संकेत किया। चिको ने चारों ओर देखा; पर ज़मीन नापनेवाले के अतिरिक्त और कोई दिखायी नहीं पड़ा। यह संकेत उसीको दिया गया था, क्योंकि उसने ज़मीन का

नापना बन्द करके झरोखे की ओर देखना शुरू कर दिया। गोरेनफ़्लोट ने महिला के प्रति ख़ूब नम्रता का प्रदर्शन किया। महाशय-डी-मेनीविले ने बोरोमे के कान में कुछ कहा, और बोरेमे ने महन्त के पीछे ऐसे ढंग से मुँह और हाथ बनाया, जिसका मतलब चिको की समझ में नहीं आया; पर वह आदमी प्रकटतया उसे समझता मालूम होता था, क्योंकि वह दूसरी जगह चला गया, जहाँ बोरोमे और मेनीविले से एक नया संकेत पाने पर वह पूर्तिवत् खड़ा हो गया। क्षण ही भर बाद ब्रदर बोरोमे ने एक और संकेत किया। इस पर वह एक तरह का व्यायाम करने लगा, जिसकी ओर चिको का ध्यान विशेष रूप से इसलिये आकर्षित हो गया कि वह उसका मतलब नहीं समझ पाया। वह ( आदमी ) मठ के दरवाज़े की ओर तेज़ी से दौड़ने लगा और मेनीविले अपनी घड़ी हाथ में लिये देखता रहा।

"ख़ूब!" चिको ने कहा—"यह सब सन्दिग्ध बातें मालूम होती हैं। पहेली अच्छी है, पर शायद मैं इसे सुलझा लूँगा, शर्त यही है कि मैं ज़मीन नापनेवाले आदमी का चेहरा देख लूँ।"

इसी समय उस आदमी ने चारों ओर देखा; और चिको ने निकोला पोलेन को पहचान लिया—यह वही आदमी था, जिसके हाथ उसने पहले अपने हथियार बेचे थे। थोड़ी देर बाद वे सब कमरे में फिर घुसे, और उन्होंने खिड़की बन्द कर

ली। इसके पश्चात् डचेज़ अपने अर्दली को साथ लेकर बाहर आयी और दोनों अपनी गाड़ी के पास आये, जो उनकी प्रतीक्षा में खड़ी थी। गोरेनफ़्लोट दरवाज़े तक उनके साथ आया और बार-बार झुक-झुककर शिष्टाचार दिखाने में थक गया। गाड़ी के पर्दे अभी खुले थे कि सेण्ट ऐण्टोनी के दरवाज़े की तरफ़ से एक साधू, जिसे चिको ने पहचाना कि वह जैक्स ही है, आगे बढ़ता दिखायी दिया। वह (जैक्स) गाड़ी की ओर ध्यानपूर्वक देख रहा था। डचेज़ चली गयी, तो निकोला पोलेन भी उसके पीछे बढ़ा, किन्तु चिको ने उसी समय अपने छिपने के स्थान से पुकारकर कहा—"अगर आप चाहे, तो यहाँ आ जाइये!"

पोलेन चौंक पड़ा और सिर घुमाकर देखने लगा।

"मालूम होता है, आप देख नहीं रहे हैं, महाशय निकोला पोलेन।" चिको ने कहा।

लेफ़्टिनेण्ट फिर चौंका—"आप कौन हैं, और क्या चाहते हैं?" उसने पूछा।

"मैं हूँ आपका दोस्त; नया हूँ, पर घनिष्ट ज़रूर हूं। मैं जो-कुछ चाहता हूँ, उसे समझाने में समय लगेगा; मेरे पास आ जाइए।"

"आपके पास?"

"हाँ, यहाँ खाई में।"

"किसलिये?"

"आने पर मालूम हो जायगा।"

"लेकिन—"

"यहाँ आकर बैठ जाइये, पर यह न मालूम हो कि आपने मुझे देख लिया है।"

"महाशय!"

"ओह! रावर्ट क्रिकेट को इतना अधिकार तो है।"

"रावर्ट क्रिकेट!" पोलेन ने खाई में प्रविष्ट होते हुए कहा।

"हाँ; मालूम होता है, सड़क आप ही नाप रहे थे।"

"मैं?"

"अगर आप पैमाइश का काम करें, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, खासकर उस अवस्था में जबकि आपने ऐसे बड़े आदमियों की अध्यक्षता में काम किया है।"

"बड़े आदमियों की! मैंने नहीं समझा।"

"क्या आप जानते नहीं थे?"

"आपका मतलब क्या है?"

"आप नहीं जानते थे कि झरोखे पर खड़ी होनेवाली वह महिला, और वह सज्जन कौन थे?"

"मैं—"

"मैं आपको समझाने में अपना बड़ा भाग्य समझता हूँ! सोचिए तो सही, महाशय पोलेन, आपके प्रशंसक मैडम-डी-माण्टपेंसियर और मेनीविले हैं। खिसकिए नहीं। अगर कोई और भी बड़ा आदमी—सम्राट्—आपको देखे—"

"सम्राट् ?"

"हाँ, सम्राट्, महाशय पोलेन; मैं आपको निश्चय दिलाता हूं कि वह बहुत जल्दी प्रशंसा और प्यार करते हैं, और परि-श्रम का फल भी देते हैं।"

"ओह, महाशय ब्रिकेट, दया कीजिए।"

"अगर आप यहाँ से हिले, महाशय पोलेन, तो जान से हाथ धो बैठेंगे, इसलिये यहाँ से खिसकिये नहीं, और कलंक से पीछा छुड़ाइये।"

"पर परमात्मा के लिये यह तो बताइये कि आप चाहते क्या हैं ?"

"आपकी भलाई—और कुछ नहीं; मैंने कहा नहीं कि मैं आपका मित्र हूँ ?"

"महाशय," निकोला पोलेन ने हताश होकर कहा—"मैं नहीं जानता कि मैंने सम्राट् का, आपका या किसी अन्य व्यक्ति का कभी अपकार किया है !"

"प्यारे पोलेन महाशय, मेरा विचार ग़लत हो सकता है, पर मुझे ऐसा मालूम होता है कि सम्राट् अपनी कोतवाली के लेफ़्टिनेण्ट से मेनीविले के अमीन का कार्य लेना नहीं पसन्द करेंगे, और न यही चाहेंगे कि आप अपनी दैनिक रिपोर्ट में मैडम-डी-माण्टपेंसियर और एम-डी-मेनीविले का नाम भी न दर्ज करें, जो कल ही सम्राट् के पेरिस नगर में घुसे हैं।"

"महाशय ब्रिकेट, नाम दर्ज न करना अपराध नहीं है; और सम्राट् ऐसे अच्छे—"

"महाशय पोलेन, मैं आपसे अधिक स्पष्ट देखता हूँ; और मैं देखता हूँ—"

"क्या ?"

"फाँसी का तख्ता।"

"महाशय ब्रिकेट !"

"और—नयी रस्सी, चारों दिशाओं में चार सैनिक, और चहुँओर पेरिस के नागरिकों का घेरा, और रस्सी के छोर पर मेरा परिचित एक लेफ़्टिनेण्ट।"

निकोला पोलेन ऐसे ज़ोर से काँप उठा कि झाड़ी हिल उठी—"महाशय !" उसने हाथ जोड़कर कहा।

"पर मैं तो आपका मित्र हूँ, प्यारे पोलेन, और मैं आपको एक परामर्श दूँगा।"

"परामर्श ?"

"हाँ; और ऐसा परामर्श, जिसके अनुसार आप सरलतापूर्वक कार्य कर सकते हैं। फ़ौरन जाइये—फ़ौरन यहाँ से—"

"किसके पास जाऊँ ?"

"मुझे सोचने दो। डी-एपर्नों के।"

"डी-एपर्नों—सम्राट् के मित्र—के पास ?"

"हाँ; उन्हें एकान्त में ले जाकर बात कीजिएगा—"

"डी-एपर्नों को ?"

"हाँ, और उनसे सड़क नापने का तमाम हाल कह दीजिएगा।"

"यह तो पागलपन होगा, महाशय ?"

"नहीं, इसके विपरीत यह बुद्धिमानी होगी।"

"मैंने नहीं समझा।"

"तो भी यह स्पष्ट है। अगर मैं आपको बख़्तर और पैमाइश का आदमी कहकर कलङ्कित करूँ, तो वे आपको फाँसी पर लटका देंगे; लेकिन अगर इसके विपरीत आप अच्छी तरह सब रहस्य खोल दें, तो आपको इनाम मिलेगा। तो भी आपको विश्वास नहीं हुआ प्रतीत होता है। इससे मुझे लावर तक लौटने का कष्ट उठाना पड़ेगा, पर आपके लिये मैं यह भी कर दूंगा।" और वह उठने लगा।

"नहीं, नहीं; ठहरिये ! मैं जाऊंगा।"

"अच्छा ! पर आप समझते हैं—अगर टाल-मटोल की, तो कल ही मैं सम्राट् के पास एक छोटा-सा पुर्ज़ा लिख भेजूंगा, जिसके साथ, जैसा कि आप मुझे देख रहे हैं ( बल्कि नहीं देख रहे है, कहना अधिक उपयुक्त होगा), घनिष्ट मित्रता रखने का सौभाग्य मुझे प्राप्त है कि परसों तक आपको फाँसी देनी हो, तो आज ही आप ज़रूर लटका दिये जायँ।

"मैं जाऊँगा," लेफ़्टिनेण्ट ने भयान्वित होकर कहा—"पर आप विलक्षण ढंग से—"

"महाशय पोलेन, मुझे धन्यवाद दीजिए—पाँच मिनट

पहले आप देश-द्रोही थे, अब मैंने आपको देश-रक्षक बना दिया। अब फ़ौरन चले जाइये, क्योंकि मुझे जल्दी है! होटल-डी-एपर्नों भूल मत जाइएगा।"

निकोला पोलेन हताश-भाव से वहाँ से दौड़ा।

"ओह, समय हो गया!" चिकोने कहा—"कोई मठ से रवाना हो रहा है। पर यह तो जैक्स नहीं है; यह तो वही लम्बा आदमी है।"

चिको अब क्रोई फ़ाविन की ओर लपका, जिसे उसने मिलने का स्थान निश्चित किया था। जो साधु उसे वहाँ मिलनेवाला था, वह ऊँचाई में पूरा देव था। उसने जल्दी में जो साधु की पोशाक पहनी थी, उससे उसका सुगठित शरीर छिपता नहीं था, और उसके चेहरे से धार्मिकता नाममात्र को भी नहीं टपकती थी। उसकी बातों की लम्बाई चिको की बातों की लम्बाई से कम नहीं थी। कमरपेटी में उसने एक छुरा लगा रक्खा था।

चिको के पास आने पर उसने मुड़कर उसकी ओर देखा और बोला—"क्या आप राबर्ट ब्रिकेट हैं?"

"हाँ, मैं ही हूँ।"

"तो आपके लिये पूजनीय महन्तजी ने एक चिट्ठी दी है।"

चिको ने चिट्ठी लेकर पढ़ी। उसमें निम्नलिखित मज़मून था।

मेरे प्यारे मित्र,

जब से हम दोनों पृथक् हुए हैं, मैने खूब विचार किया है; मेरे लिये यह असम्भव बात है कि मैं उस भेड़ के बच्चे को

संसार के फाड़ खानेवाले भेड़ियों मे भेज दूँ। मेरा मतलब यह है कि तुम हमारे छोटे जेम्स क्लेमेण्ट को समझते हो, जो तुम्हारा सन्देश सम्राट् तक अच्छी तरह पहुँचा आया है। उसकी जगह, जो अभी बहुत अल्पवयस्क है, मैं तुमको अपने यहाँ का एक योग्य और अच्छा साधु भेज रहा हूँ; इसका चाल-चलन अच्छा है और इसकी हँसी निष्कलङ्क है। मुझे निश्चय है कि तुम इसे पसन्द करोगे। मै तुम्हे अपने आशीर्वाद भेज रहा हूँ। विदा, प्रिय मित्र।

"कैसी अच्छी लिखावट है," चिको ने सोचा—"मैं शर्त बद सकता हूँ कि यह खजाञ्ची की हस्तलिपि है।"

"भ्रदर बोरोमे ने इसे लिखा है।" गोलियथ ने कहा।

"तब तो, दोस्त," चिको ने साधु से अत्यन्त नम्रता-पूर्वक मुस्कराकर कहा—"तुम्हे मठ को लौट जाना पड़ेगा।"

"मुझे ?"

"हाँ, और पूजनीय महन्तजी से कहना कि मैंने विचार बदल दिया है, और अब सफ़र अकेले करना चाहता हूँ।"

"क्या ! आप मुझे साथ नहीं ले चलेंगे, महाशय ?" उस आदमी ने आश्चर्य और घुड़की के मिश्रित भाव से कहा।

"नहीं, दोस्त; नहीं।"

"क्यों भला ? आप बता सकते हैं ?"

"इसलिये कि मैं खर्च कम करना चाहता हूं, और तुम बहुत खाओगे।"

"जैक्स भी मेरी बराबर ही खाता है।"

"हाँ, पर जैक्स साधु है।"

"और मैं क्या हूँ ?"

"तुम तो दोस्त, सिपाही या अर्दली हो।"

"आपका मतलब क्या है ? आप मेरी पोशाक नहीं देख रहे हैं ?"

"पोशाक से साधु नहीं बना करते, दोस्त; छुरा सिपाहियों के लिये होता है। अगर तुम चाहो, तो यह बात ब्रदर बोरोमे से कह देना।"

लम्बा देव बड़बड़ाता हुआ वहाँ से इस तरह भागा, जैसे शिकारी की मार खाकर शिकार भागता है। हमारे यात्री ने जब देखा कि वह मठ के बड़े फाटक के अन्दर घुस गया, तो वह झाड़ी के अन्दर घुस गया और अपना जाकेट निकालकर उसने वह झिलिमवाली क़मीज़ पहन ली, जिसकी चर्चा पहले की जा चुकी है। इसके बाद वह गंवई-गाँवों में होता हुआ शारेण्टन की सड़क पकड़ने के लिये लपका।

# छब्बीसवाँ परिच्छेद

—:※:※:—

## गाइज़

जिस दिन चिको नवार के लिये रवाना हुआ, उसी दिन शाम को होटल-गाइज़ के एक बड़े कमरे में हम उस व्यक्ति को देखते हैं, जिसने खवास का वेश धारण करके कामँजस के पीछे घोड़े पर बैठकर पेरिस-नगर में प्रवेश किया था, और जो पीछे (जैसा कि हम जानते है) गोरेनफ़्लोट के पास शिष्या बनकर आयी थी। इस मौक़े पर उसने अपना शरीर या. स्त्री-रूप छिपाने की दूरन्देशी नहीं की थी। मैडम-डी-माण्टपेंसियर ने सुन्दरता के साथ वस्त्र पहन रक्खा था और उसके बालों में गुँथे हुए बहुमूल्य रत्न चमक रहे थे। वह अधीरता-पूर्वक किसी की प्रतीक्षा कर रही थी।

अन्ततः घोड़े की टाप सुनायी पड़ी, और द्वारपाल ने तुरन्त आकर ली-ड्यूक-डी-मेन के आगमन की सूचना दी। मैडम-डी-माण्टपॅसियर इस शीघ्रता के साथ अपने भाई के पास दौड़ गयी कि जल्दी में वह अपने दाहिने पैर की लॅंगड़ाहट छिपाने के लिये उसका केवल अगला हिस्सा ज़मीन पर न रखकर ( जैसी कि उसकी आदत थी ) पूरा पैर ज़मीन पर रखकर चली। "अकेले ही आये, भाई ?" उसने कहा—"तुम अकेले ही आये हो ?"

"हाँ, वहन।" ड्यूक ने डचेज़ का हाथ चूमकर वैठते हुए कहा।

"पर हेनरी; हेनरी कहाँ है ? तुम जानते हो कि यहाँ सव उसके आने की आशा कर रहे हैं ?"

"हेनरी के लिए यहाँ कोई काम नहीं है, और फ्लैण्डर्स तथा त्रिकर्डी में वहुत (काम) हैं। हमें वहाँ काम करना है, और हमें वह काम छोड़कर यहाँ आने की क्या ज़रूरत है, जहाँ हमारा काम समाप्त हो चुका है ?"

"लेकिन अगर तुम जल्दी न करोगे, तो यहाँ का किया-कराया सारा काम चौपट हो जायगा।"

"छिः ?"

"छिः करो, या कुछ कहो, भाई; मैं कहती हूँ कि नागरिकों को अव और नहीं टाला जा सकता; वे ड्यूक हेनरी को देखने के लिय हठ कर रहे हैं ?"

"वे उसे ठीक समय पर देख लेंगे। और सालसेड ?"

"मार डाला गया।"

"कुछ बोल नहीं सका था ?"

"एक शब्द भी मुँह से नहीं निकाल सका।"

"ठीक हुआ ! और सशस्त्रीकरण ?"

"समाप्त हो चुका।"

"और पेरिस ?"

"सोलह हल्कों में विभाजित कर दिया गया।"

"और प्रत्येक हल्के का प्रधान हमारा ही नियुक्त किया हुआ आदमी होगा ?"

"हाँ।"

"तब तो हमें शान्ति है; और हम अपने अच्छे नागरिकों से भी यही कहेंगे।"

"वे तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे।"

"वाह !"

"मैं कहती हूँ, वे लोग क्रुद्ध हैं।"

"बहन, तुम अपनी अधीरता से दूसरों की मनोवृत्ति का अनुमान लगाती हो। हेनरी जो-कुछ कहता है, वही होना चाहिए, और उसने कहा है कि हमें यहाँ शान्त रहना चाहिए।"

"तो फिर क्या किया जायगा ?" डचेज़ ने अधीरता-पूर्वक पूछा।

"तुम क्या करना चाहती हो?"

"पहले तो सम्राट् को लेना है।"

"यह तो तुम्हारा निश्चित विचार है; अगर यह किया जा सके, तो मैं नहीं कहता कि यह बुरा है; किन्तु सोचो तो सही, कई बार हम लोग असफल हो चुके हैं।"

"समय बदल चुका है; सम्राट् के पास अब रक्षक नहीं रहे हैं।"

"स्विस,* स्काच,† और फ्राँसीसी गारदों के अतिरिक्त और रक्षक नहीं हैं?"

"भाई, अगर तुम चाहोगे, तो मैं सम्राट् को केवल दो अर्दलियों के साथ सड़क पर दिखा दूँगी।"

"यह तो मैं ने सैकड़ों बार सुना है, पर देखा कभी नहीं।"

"अगर तुम यहाँ तीन दिन ठहरो, तो देख सकोगे।"

"अब कोई और युक्ति?"

"अगर आप चाहें तो उपाय बतला सकती हूँ।"

"अच्छा तो बताओ।"

"ओह! यह तो केवल एक स्त्री का विचार है; तुम इस पर हँसोगे।"

"ईश्वर करे कि मैं तुम्हारी कर्तृत्व-शक्ति को चोट न पहुँचाऊँ! पर मुझे अपनी युक्ति सुनाओ तो।"

---

* स्विट्ज़रलैण्ड-निवासी।

† स्काटलैण्ड-निवासी।

"तुम मुझ पर हस रहे हो, मेन।"

"नहीं, मैं सुन रहा हूँ।"

"बहुत अच्छा; चार शब्दों में यह—"

इसी समय महाशय-डी-मेनीविले के आगमन की सूचना मिली।"

"मेरा सहापराधी?" डचेज़ ने कहा—"अन्दर आने दो उसे।"

मेनीविले अन्दर आया, और ड्यूक-डी मेन के पास आकर उसने उसका हाथ चूमा। "एक शब्द, महाशय," उसने कहा—"लावर में आपके आगमन का शक हो रहा है।"

"यह कैसे?"

"मैं सेण्ट जर्मेन-ली-आग्ज़ेरो में गारद के कप्तान से बातें कर रहा था, उसी समय दो गैस्कन पास होकर गुजरे थे।"

"आप उन्हें जानते हैं।"

"नहीं; वे बिलकुल नये कपड़े पहने हुए थे। एक ने कहा—'तुम्हारी जाकेट बड़ी बढ़िया है; पर इससे वह काम नहीं निकलेगा, जो कल के बख़्तरों से निकलेगा।' 'वाह!' दूसरे ने कहा—'महाशय-डी-मेन की तलवार चाहे कैसी ही भारी क्यों न हो, इस अतलस को वह बख़्तर की अपेक्षा अधिक हानि नहीं पहुँचा सकेगी।' इसके बाद उन्होंने बहुत-सी डींगें हाँकीं, जिनसे मालूम होता था कि वे जानते है कि आप क़रीब है।"

"और वे आदमी थे किसके ?"

"मैं नहीं जानता; वे इतने ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे कि एक राही उनसे पूछ बैठा कि क्या आप ( मेन ) वास्तव में आ रहे हैं। वे जवाब देने ही वाले थे कि एक आदमी आ पहुँचा, जो मेरी समझ में लाइना था, और उसने उनके कन्धों का स्पर्श किया। उसने धीरे से कुछ शब्द कहे, और वे दोनों आज्ञाकारिता का भाव प्रदर्शित करके उसके साथ हो लिये, इसीलिये मैं और कुछ नहीं जान सका; पर सावधान रहिए !"

"आपने उनका पीछा नहीं किया ?"

"किया; पर दूर से ही। वे लावर की ओर गये और होटल-डी-स्यूबिल के पीछे ग़ायब हो गये।"

"मेरे पास जवाब देने का बड़ा आसान तरीक़ा है।" ड्यूक ने कहा।

"वह क्या ?" उसकी बहन ने पूछा।

"आज रात को सम्राट् के पास जाकर उनसे प्रणाम करना।"

"सम्राट् के पास ?"

"अवश्य। मैं पेरिस आया हूँ; और पिकार्डी से उनके लिये समाचार लाया हूँ—इसके विरुद्ध वह कुछ नहीं कह सकता।"

"विचार अच्छा है।" मेनीविले ने कहा।

"बेवक़ूफ़ी है।" डचेज़ ने कहा।

"यदि वे सचमुच मेरे आने का शक कर रहे हैं, तो यह अनिवार्य है, बहन। इसके अतिरिक्त हेनरी ने भी यही परामर्श दिया था कि मैं फ़ौरन् सम्राट् के पास जाकर परिवार का कुशल-मंगल और आदर-अभिवादन कहूँ; एक बार यह करने के बाद मैं स्वतंत्र हो जाऊँगा और जिस-जिस से चाहूँगा, मिल-जुल सकूँगा।"

"उदाहरणार्थ, समिति के सदस्यों से, जो आपके आने की आशा देख रहे हैं।"

"मैं उनसे लावर से लौटकर होटल सेण्ट-डेनिस में मिलूँगा। तुम चाहो, तो हम लोगों की प्रतीक्षा कर सकती हो, बहन।"

"यहाँ ?"

"नहीं; होटल सेण्ट डेनिस में, जहाँ मैं ने अपना सामान छोड़ रक्खा है। दो घण्टे में मैं वहाँ पहुँचूँगा।

# सत्ताईसवाँ परिच्छेद

## लावर

उसी दिन लगभग दोपहर के समय सम्राट् ने अपने दीवान-खास से बाहर निकलकर डी-एपर्नों को बुलवाया। ड्यूक ने आकर देखा कि सम्राट् एक जैकोबिन-नवयुवक को ध्यान-पूर्वक देख रहे हैं, जिसका चेहरा लाल हो रहा था और आँखें सम्राट् के निरीक्षण से घबराकर नीचे झुकी हुई थीं।

सम्राट्-डी-एपर्नों को एक तरफ़ ले गये। "देखिए, कैसा विलक्षण साधु है!" उसने कहा।

"हुज़ूर का ऐसा खयाल है? मैं तो इसे बिलकुल साधारण समझता हूँ!"

"सचमुच !" कहकर सम्राट् ने साधु से पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"ब्रदर जैक्स, हुजूर !"

"तुम्हारी अल्ल क्या है ?"

"क्लेमेण्ट !"

"अच्छा ! तुमने अपना दूत-कार्य भली भांति पूरा किया !"

"कैसा दूत-कार्य, हुजूर ?" ड्यूक ने अभ्यस्त घनिष्ठता के साथ कहा ।

"कुछ नहीं !" हेनरी ने कहा—"यह हमारे और एक ऐसे व्यक्ति के बीच की थोड़ी गुप्त बात है, जिसे आप नहीं जानते !"

"हुजूर, इस लड़के को कैसी अद्भुत दृष्टि से देख रहे हैं ! यह घबरा गया है !"

"सच है; मैं नहीं जानता क्यों, पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मैंने इसे पहले देखा है; शायद स्वप्न में देखा हो । जाओ, बच्चे; जिसने जवाब माँगा है, उसे मैं पत्र भेज दूँगा । घबराओ नहीं । डी-एपर्नों इसे दस क्राउन दीजिए !"

"धन्यवाद, श्रीमान् !" साधु ने कहा ।

"तुमने यह इस प्रकार नहीं कहा कि जैसे तुम यह हृदय से कह रहे हो !" डी-एपर्नों ने (जो यह नहीं समझ सका कि साधु दस क्राउनों को तुच्छ समझ रहा है) कहा ।

"मैं तो दीवार पर लटकते हुए इन सुन्दर स्पेनी छुरों

में से एक प्राप्त करना अधिक अच्छा समझता।" जैक्स ने कहा।

"क्या! तुम्हे रुपये नहीं पसन्द हैं?"

"मैं तो दरिद्रता की शपथ ले चुका हूँ।"

"तो इसे एक छुरा देकर चलता करो, लावालेट!" सम्राट् ने कहा।

ड्यूक ने सब से कम मूल्यवाला चाकू छाँटकर उसे दिया। जैक्स ने बड़ी प्रसन्नता से इस सुन्दर हथियार को हाथ में लिया। जब वह चला गया, तो सम्राट् ने डी-एपर्नों से कहा—"ड्यूक, क्या आपके पैतालीसों में से दो या तीन ऐसे जवान भी हैं, जो सवार हों?"

"कम-से-कम बारह ऐसे हैं, हुजूर, और एक महीने में सब-के-सब पक्के घुड़-सवार बन जायँगे।"

"तो फिर दो को चुनकर तुरन्त मेरे पास लाइये।"

ड्यूक बाहर गया और उसने लाइना को बुलाकर उससे कहा—"दो अच्छे घुड़सवार चुनकर लाओ, जो सम्राट् के सन्देश-वाहन का कार्य कर सकें।"

लाइना उस जगह गया, जहाँ पैतालीसो रक्षक ठहराये गये थे, और उसने एम-डी-कार्मेंजस तथा सेण्ट-मालिन को बुलाया। वे शीघ्र ही आ उपस्थित हुए और शीघ्र ही ड्यूक के सामने लाये गये, जिसने उन्हें लेकर सम्राट् के पास हाज़िर किया। इसके बाद ड्यूक वहाँ से चला गया, और दोनों युवक वहीं खड़े रह गये।

"तुम हमारे पैंतालीसो आदमियों में से हो?" सम्राट् ने पूछा।

"मुझे यह प्रतिष्ठा प्राप्त है, हुजूर।" सेण्ट-मालिन ने कहा।

"और तुम, महाशय ?"

"मैं भी हूँ, हुजूर," कामेंजस ने कहा—"और मैं श्रीमान् का ऐसा सच्चा सेवक हूँ, जैसा संसार में कोई भी व्यक्ति हो सकता है।"

"अच्छा तो अपने-अपने घोड़ों पर चढ़ो और तूर्स की सड़क पकड़ो; मालूम है तुम्हे ?"

"हम लोग पूछ लेंगे।"

"शारेण्टन के रास्ते से जाना।"

"बहुत अच्छा, हुजूर।"

"और तब तक आगे बढ़ते चले जाओ, जब तक कि तुम्हे सड़क पर कोई अकेला मुसाफ़िर न मिल जाय।"

"श्रीमान् उसका हुलिया बताने का कष्ट करेंगे ?" सेण्ट-मालिन ने कहा।"

"उसकी बाँहें और टाँगें लम्बी हैं, और उसके बगल में एक लम्बी तलवार होगी।"

"क्या हम उसका नाम जान सकते हैं, हुजूर ?" कामेंजस ने पूछा।

"उसे छाया कहते हैं।"

"हम लोग हरेक यात्री से उसका नाम पूछेंगे, सरकार।"

"और हम लोग होटलों में भी खोजेंगे।"

"जब वह मिल जाय, तो उसे यह पत्र देना।"

दोनों ने अपने-अपने हाथ बढ़ा दिये।

क्षण-भर के लिये सम्राट् घबरा-से गये। "तुम्हारा नाम क्या है?" उन्होंने दोनों में से एक से पूछा।

"एर्नाटन-डी-कर्मेजस, हुज़ूर।"

"और तुम्हारा?"

"रेनी-डी-सेण्ट-मालिन।"

"महाशय-डी-कर्मेंजस, तुम पत्र ले जाना, और महाशय-डी-सेण्ट-मालिन, तुम इसे यात्री के हाथ में देना।"

एर्नाटन ने वह बहुमूल्य पत्र लिया और उसे अपने जाकेट की जेब में रखने जा रहा था कि उसी समय सेण्ट-मालिन ने उसे रोका और पत्र चूमने के बाद पुनः एर्नाटन के हाथ में वापस दे दिया। इससे हेनरी मुस्करा उठा। "अच्छा, महाशयो," उसने कहा—"मैं देखता हूँ कि मेरी ख़िदमत अच्छी तरह होगी।"

"बस यही काम है, हुज़ूर?"

"हाँ, महाशयो; केवल यह अन्तिम बात और है कि यह पत्र मनुष्य के जीवन से अधिक मूल्यवान है। जान रहते इसे खोना नहीं। इसे गुप्त रूप से छाया को देना, जो तुम्हें इसकी रसीद देगा। रसीद यहाँ वापस लाना; और सब से बड़ी बात यह है कि यात्रा इस प्रकार करना, जैसे तुम अपने ही काम से जा रहे हो। जाओ।"

दोनों युवक बाहर निकले—एर्नाटन खुशी के मारे फूला नहीं समाता था, और सेण्ट-मालिन ईर्ष्या से जला जा रहा था। डी-एपर्नों बाहर उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, और उनसे प्रश्न करना चाहता था कि एर्नाटन ने जवाब दिया—"ड्यूक महाशय, सम्राट् ने हमें बोलने का अधिकार नहीं दिया है।"

दोनों अस्तबल में गये, और सम्राट् के शिकारियों ने उनके लिये दो मज़बूत घोड़े कस दिये। महाशय-डी-एपर्नों उनका पीछा करते, किन्तु उसी समय किसी दूसरे व्यक्ति ने उनसे तुरन्त मिलने के लिये सूचना भेजवायी।

"कौन है वह?" उन्होंने पूछा।

"पेरिस की कोतवाली के लेफ़्टिनेण्ट।"

"मैं क्या ज़िला-हाकिम या कोतवाल हूँ?"

"नहीं, महाशय, पर आप सम्राट् के मित्र हैं, इसलिये मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मेरी बात सुनें।" उसके बग़ल में आकर एक व्यक्ति ने नम्र स्वर में कहा।

ड्यूक ने मुड़कर देखा। उसके पास एक आदमी लगातार झुक रहा था।

"आप कौन हैं?" ड्यूक ने पूछा।

"निकोला पोलेन, अपनी ख़िदमत में हाज़िर है, महाशय।"

"और आप मुझसे बातें करना चाहते हैं?"

"हाँ, मेरे ऊपर कृपा करके मेरी बात सुन लें।"

"मुझे समय नहीं है।"

"भेद की बात सुनने के लिये भी ?"

"मैं तो रोज़ सैकड़ों भेद की बातें सुनता रहा हूँ। आपको मिलाकर एक-सौ-एक हो जायँगी; एक और बढ़ जायगी।"

"पर इसका सम्बन्ध सम्राट् के जीवन से है।" पोलेन ने धीमे स्वर में कहा।

"ओहो ! तब तो मेरी गुप्त बैठक में आइए।"

---

# अट्ठाईसवाँ परिच्छेद

—:卐:—

## रहस्योद्घाटन

एम-डी-एपनों दहलीज़ पार करके आगे बढ़ा, तो वहाँ खड़े हुए दो आदमियों में से उसने एक को सम्बोधन किया। "तुम्हारा नाम क्या है, महाशय ?" उसने पूछा।

"पर्टिना-डी-माण्टक्रेबा, महाशय।"

"अच्छा, महाशय-डी-माण्टक्रेबा, दरवाज़े पर रहो, और किसी को अन्दर मत जाने दो।"

"अच्छा, ड्यूक महाशय," पर्टिना ने, जो ठाट के साथ अतलस की जाकेट और नारंगी रंगके मोजे पहने हुए था, आज्ञा-पालन करते हुए कहा। निकोला पोलेन ड्यूक के

पीछे-पीछे उसकी गुप्त बैठक में गया। उसने दरवाज़ा खुलते और बन्द होते और फिर दरवाज़ों पर पर्दे पड़ते देखा। वह काँपने लगा।

"अब सुनाइये अपना षड्यंत्र।" ड्यूक ने कहा।

"ड्यूक महोदय, इसमें अत्यन्त भयानक अपराध की बात भी सम्मिलित है।"

"वे लोग मुझे मार डालना चाहते हैं, मैं समझता हूं।"

"नहीं, इसका सम्बन्ध आपसे नहीं है, महाशय; सम्राट् से है। वे उन्हें उठा ले जाना चाहते हैं।"

"ओह, फिर वही पुराना क़िस्सा।" ड्यूक ने बात को तुच्छ समझने का भाव प्रदर्शित करते हुए कहा।

"इस बार मामला गम्भीर है, ड्यूक महाशय।"

"वे किस दिन ऐसा करने का विचार रखते हैं?"

"पहले-पहल जब सम्राट् अपनी गाड़ी में विंसेन्स जायँगे।"

"ऐसा कैसे करेंगे वे?"

"दोनों शाही अर्दलियों को जान से मारकर।"

"और यह काम करेगा कौन?"

"मैडम-डी-माण्टपेंसियर।"

डी-एपर्नो हँसने लगा। "बेचारी डचेज़ का सम्बन्ध किस-किस काम के साथ जोड़ा जा रहा है!"

"जितनी युक्ति वह कर रही है, उससे काम का ही सम्बन्ध उससे जोड़ा गया है।"

"और यह सब युक्ति वह सीज़न में बैठी-बैठी कर रही है?"

"नहीं; वह पेरिस में है।"

"पेरिस में!"

"मैं इसका प्रमाण दे सकता हूँ।"

"आपने देखा है?"

"हाँ।"

"अर्थात् आपका ख़याल है कि आपने उसे देखा है?"

"मैं उसके साथ बातें करने का सौभाग्य प्राप्त कर चुका हूँ।"

"सौभाग्य!"

"नहीं; ग़लती हुई, दुर्भाग्य।"

"पर प्यारे लेफ़्टिनेण्ट, डचेज़ सम्राट् को नहीं उठा ले जा सकती।"

"निस्सन्देह वह अपने साथियों की मदद से ले जायगी।"

"और जब यह काम होगा, तो वह कहाँ पर होगी?"

"जैकोबिन्स की मठ की एक खिड़की पर, जो, आप जानते हैं, विसेन्ट जानेवाली सड़क पर है।"

"आप क्या वाहियात बात मुझसे कह रहे हैं?"

"वाहियात नहीं, सच बात है, महाशय; मठ के फाटक पर गाड़ी रोक लेने का सब प्रबन्ध हो चुका है।"

"और प्रबन्ध किया किसने है?"

"अफ़सोस !"

"जल्दी कहिए !"

"मैंने महाशय।"

डी-एपर्नों चौंककर उचक उठा। "आप! उन पर दोषा-रोपण करनेवाले ?" उसने कहा।

"महाशय, सम्राट् की सेवा में अच्छे नौकर को सब तरह की जोखों उठानी चाहिए।"

"आप फाँसी पर चढ़ने की जोखों उठाते हैं ?"

"मैं बदनामी या सम्राट् की मृत्यु से अपनी मृत्यु को अधिक पसन्द करता हूँ, इसीलिये मैं आया हूँ। और मैंने सोचा, ड्यूक महोदय, कि आप सम्राट् के मित्र हैं, मुझे धोखा नहीं देंगे, और मेरी इस ख़बर का सदुपयोग करेंगे।"

ड्यूक ने स्थिर दृष्टि से पोलेन की ओर देखा। "इसमें कुछ बात और है," उसने कहा—"डचेज़ में साहस और दृढ़ता है, पर वह अकेली इस प्रकार के कठिन कार्य में हाथ डालने का विचार नहीं कर सकती।"

"वह अपने भाई के आने की बाट देख रही है।"

"ड्यूक हेनरी के आने की ?" एपर्नों ने इस तरह चिल्ला-कर कहा, जैसे उसके पास शेर आ गया हो।

"नहीं महाशय; सिर्फ़ ड्यूक-डी-सेन आ रहे हैं।"

"अच्छा !" डी-एपर्नों ने कहा—"अब मुझे इन युक्तियों के विरोध में कार्य शुरू कर देना चाहिए।"

"निस्सन्देह, महाशय; इसीलिये मैं दौड़कर यहाँ आया हूँ।"

"अगर आपने सच बात कही है, तो आपको इनाम मिलेगा।"

"मैं झूठ क्यों बोलूँ, महाशय। मैं सम्राट्‌की दी हुई रोटी खाता हूँ? अगर आप मेरा विश्वास नहीं करेंगे, तो मैं स्वयं सम्राट् के पास जाऊँगा, और अपनी बात सत्य प्रमाणित करने के लिये जान तक दे दूंगा।"

"नहीं, आपको सम्राट् के पास नहीं जाना होगा। आपको केवल मेरे ही साथ बातें करनी होंगी।"

"यही सही, महाशय; मैंने यह इसलिये कहा कि आप हिचकिचाते मालूम होते हैं।"

"नहीं, मैं हिचकिचाता नहीं; और शुरू में मैं आपको हजार क्राउन दूंगा, पर यह भेद केवल आपके और मेरे अन्दर रहेगा।"

"मैं बाल-बच्चोंवाला आदमी हूँ, महाशय।"

"अच्छा! हज़ार क्राउन दूँगा!"

"अगर लोरेन में उन्हें मालूम हो गया कि मैंने यह बातें बतला दीं, तो प्रत्येक शब्द के लिये मेरा एक-एक बूँद रक्त बहाया जायगा; और कोई दुर्भाग्य की बात हुई, तो मेरे परिवार की आजीविका का प्रबन्ध हो जाना चाहिए, इसीलिये मैं हज़ार क्राउन स्वीकार करता हूँ।"

"आपकी यह व्याख्या फ़ज़ूल है ! मुझे इस बात से कोई सरोकार नहीं है कि आप किसलिये यह स्वीकार करते हैं, जबतक कि आप अस्वीकार न कर दें ? हज़ार क्राउन अब आपके हो चुके।"

"धन्यवाद, महाशय।"

ड्यूक एक सन्दूक की ओर बढ़ा। पोलेन ने समझा कि वह रुपये देने जा रहा है और हाथ बढ़ा दिया, किन्तु ड्यूक ने एक छोटी-सी किताब निकालकर उस पर लिखा—'निकोला पोलेन को तीन हज़ार क्राउन'—"अब समझ लीजिए कि आपको मिल गया।" उसने कहा।

निकोला झुका। वह घबराया सा मालूम होता था।

"तो यह निश्चय रहा ?" ड्यूक ने पूछा।

"क्या निश्चय रहा, महाशय ?"

"यही कि आप बराबर मुझे समाचार देते रहेंगे ?"

निकोला हिचकिचाया; उसे गुप्तचर का काम करने को कहा गया था।

"क्या आपकी उच्च राजभक्ति अभी से रफ़ू-चक्कर हो गयी ?"

"नहीं, महाशय।"

"तो मैं आप पर विश्वास कर सकता हूँ ?"

"हाँ, आप कर सकते हैं।"

"और केवल मैं ही यह बात जानता हूँ ?"

"केवल आप ही।"

"आप जा सकते हैं, दोस्त; और महाशय-डी-मेन को अपनी रक्षा करने दीजिए!"

जब डी-एपर्नों सम्राट् के पास लौटा, तो उसने विचारपूर्ण मुख-मुद्रा बना ली; पर सम्राट् का ध्यान उधर नहीं गया। तो भी, चूँकि ड्यूक बराबर चुप ही रहा, इसलिये सम्राट् ने उसकी ओर देखकर कहा—"कहिये लावालेट, क्या बात है? कैसे निर्जीव-से हो रहे हैं?"

"मैं चाहता तो यही हूँ कि निर्जीव हो जाता," डी-एपर्नों ने जवाब दिया—"मैं जो-कुछ देख रहा हूं, वह नहीं देखना चाहिए।"

"क्या, मेरा यह गेंद का खेल?"

"हुज़ूर, महान् संकट के समय प्रजा राजा की रक्षा के लिये ही चिन्तित हो सकती है।"

"क्या! फिर संकट? आपको शैतान ले जाय, ड्यूक!"

"तो जो-कुछ हो रहा है, आप उसे उपेक्षा की दृष्टि से देख रहे हैं!"

"शायद, हाँ।"

"इस समय आपके कट्टर शत्रुओं ने आपको घेर लिया है।"

"ओहो! कौन हैं वह?"

"पहला—डचेज-डी-माण्टपेंसियर।"

"हाँ, यह सच है, वह सालसेड को देखने आयी थी; पर उससे मुझे क्या?"

"तो आप यह जानते हैं ?"

"जानता हूँ, जभी तो आपसे कह रहा हूँ।"

"लेकिन मेन भी आ गया है, क्या आप यह भी जानते हैं ?"

"हाँ, कल शाम ही से।"

"क्या ! यह भेद की बात भी ?" डी-एनों ने अप्रिय आश्चर्य के साथ उच्च स्वर में कहा।

"तो क्या सम्राट् से भी कोई बात छिपी रहती है ? आप-को ईर्ष्या हो रही होगी, लंवालेट; पर आप सुस्त हैं। यह खबर कल चार बजे अच्छी हो सकती थी, पर आज—"

"आज क्या, हुजूर ?"

"यह कुछ विलम्ब से आयी, यह तो आप मानेंगे ही ?"

"तो भी बहुत जल्द आयी है, हुजूर; क्योंकि आप मेरी बात सुन नहीं रहे हैं।"

"मैं तो आधे घण्टे से सुन रहा हूँ।"

"आपके लिये भीषण विभीषिका तैयार की गयी है; वे आपकी घात में हैं।"

"अच्छा, कल ही तो आपने मुझे गारद दिया है और निश्चय दिलाया है कि मुझे अमरता प्राप्त हो गयी ! क्या अब आपके पैंतालीसो किसी काम के नहीं रहे ?"

"श्रीमान् देखेंगे कि वे क्या हैं।"

"मैं तो देखकर अफ़सोस नहीं करूंगा, पर कब देखूंगा भला, ड्यूक ?"

"आप जब के लिये सोचते हैं, उससे भी और जल्दी।"

"ओह, आप मुझे डराना चाहते हैं।"

"आप देखेंगे, हुजूर। अच्छा, आप विंसेन्स कब जायंगे?"

"शनिवार को।"

"इतना ही काफ़ी है, हुजूर!" कहकर डी-एपर्नां झुका और बाहर चला गया।

# उन्तीसवाँ परिच्छेद

—::o::—

## दो मित्र

अब हम सम्राट् के भेजे हुए उन दो नवयुवकों का पीछा करेंगे, जो चिको को पत्र देने गये हैं। एर्नाटन और सेण्ट-मालिन मुश्किल से घोड़े पर सवार हुए थे कि उनके मन में यह विचार पैदा हुआ कि एक-दूसरे से पहले न निकल जाय, और फाटक से निकलते हुए दोनों इस झोंके के साथ बाहर को झपटे कि एक दूसरे को कुचलते-कुचलते रह गया। सेण्ट-मालिन का चेहरा लाल हो गया, और एर्नाटन का पीला।

"आपने मुझे मार दिया, महाशय," आगे निकल जाने पर पहले ने दूसरे से कहा—"क्या आप मुझे कुचल डालना चाहते हैं?"

"आपने भी तो मुझे चोट पहुँचायी है; फ़र्क़ इतना ही है कि मैंने शिकायत नहीं की।"

"मैं समझता हूँ, आप मुझे सबक देना चाहते हैं?"

"मैं आपको कुछ नहीं देना चाहता।"

"ओह!" सेण्ट-मालिन ने अपना घोड़ा साथी के पास ले जाते हुए कहा—"फिर कहो, क्या कह रहे थे?"

"आप झगड़ा करने का बहाना ढूँढ़ रहे हैं न?" एर्नाटन ने धीमे स्वर में कहा—"आपके लिये यह अच्छी बात नहीं होगी।"

"मैं झगड़ा क्यों करना चाहता हूँ? मैं तो आपको जानता तक नहीं।" सेण्ट-मालिन ने घृणा-पूर्वक जवाब दिया।

"आप मुझे अच्छी तरह जानते हैं, महाशय, क्योंकि जिस गाँव के आप रहनेवाले हैं, वहाँ से मेरा घर केवल दो ही लीग* के फ़ासले पर है, और मुझे वहाँ सभी जानते हैं, क्योंकि मेरा घराना बहुत पुराना है। पर पेरिस में आपने मुझे देखकर इसलिये क्रोध किया कि आपने समझा था कि अकेले आप ही बुलाये गये हैं, और इसलिये भी कि सम्राट् ने पत्र ले जाने के लिये मेरे हाथ में दिया है।"

"अच्छा," सेण्ट-मालिन ने क्रोध-पूर्वक कहा—"आप जो कुछ कहते हैं, मैं उसे मानता हूँ; पर इसका एक परिणाम होगा।"

---

*लीग का फ़ासला लगभग डेढ़ मील के बराबर होता है।

"वह क्या ?"

"मैं आपके पास-पास नहीं चलना चाहता।"

"तो फिर दूर चले जाइए; मैं आपको पास नहीं रखना चाहता।"

"मालूम होता है, आप मुझे समझते नहीं हैं।"

"इसके विपरीत मैं आपको अच्छी तरह समझता हूँ। आप पत्र मेरे पास से लेकर स्वयं ले जाना चाहते हैं; पर दुर्भाग्य-वश इसके पहले आपको मुझे जान से मारना पड़ेगा।"

"कौन कहता है कि मैं यह नहीं कहना चाहता ?"

"चाहना और करना दोनों भिन्न बातें है।"

"मेरे साथ नदी के किनारे चलिए, तो देख लीजिएगा कि मेरे लिये कहना और करना एक ही बात है।"

"प्रिय महाशय, जब सम्राट् ने मुझे पत्र ले जाने के लिये दिया है, तो मैं ले जाऊँगा।"

"मैं ज़बर्दस्ती छीन लूँगा।"

"मैं आशा करता हूँ कि मुझसे छीनने की चेष्टा करके आप कुत्ते की मौत मरना नहीं पसन्द करेंगे।"

"आप मुझे मार देंगे ?"

"हाँ, मेरे पास पिस्तौल है, और तुम खाली हाथ हो।"

"इसका फल आपको भुगतना पड़ेगा।"

"मुझे भी ऐसा ही विश्वास है, पर मेरा सन्देश-वाहन का कार्य समाप्त हो जाने के बाद ही ऐसा होगा, परन्तु जब तक

यह कार्य पूरा न हो जाय, तब तक मेरी प्रार्थना है कि आप इस बात को देखें कि हम दोनों सम्राट् के आदमी हैं, और झगड़ा करके हम कोई अच्छा उदाहरण नहीं पेश करेंगे।"

सेण्ट-मालिन क्रोध के मारे अपनी उँगलियां काट रहा था।

"सुनिए, महाशय!" एर्नाटन ने कहा—"जब हमें ऐसी अवस्था पर आना है, तो अपना हाथ तलवार के क़ब्जे पर रखिए।"

"मैं झपट पड़ूँगा।" सेण्ट-मालिन ने कहा।

"मेरे लिये यह काम और भी आसान है।" एर्नाटन ने कहा।

यह कहना असम्भव है कि सेण्ट-मालिन का वर्द्धित क्रोध उसे कहाँ तक ले जाता, पर सहसा एर्नाटन ने रू-सेण्ट-ऐण्टोनी को पार करते हुए एक गाड़ी देखी, और उसके मुंह से आश्चर्यपूर्ण आवाज़ निकल पड़ी। उसने देखा कि एक आधी ढकी हुई स्त्री गाड़ी में बैठी है। "यह तो मेरा कल का खवास है।" उसने गुनगुनाकर कहा। महिला ने कोई ऐसा भाव नहीं प्रकट किया, जिससे मालूम हो कि उसने सवार को पहचाना है, बल्कि उसे देखकर वह गाड़ी में पीछे की ओर झुक गयी।

"आप मुझसे प्रतीक्षा कराते हैं," सेण्ट-मालिन ने कहा—"और स्त्री की ओर ताकते हैं!"

"मैं माफ़ी चाहता हूँ, महाशय।" एर्नाटन ने आगे बढ़ते हुए कहा।

अब दोनों युवक चुपचाप आगे बढ़े। सेण्ट-मालिन शीघ्र ही यह मालूम करके और भी झुँझलाया कि उसका घोड़ा वैसा अच्छा नहीं है, जैसा एर्नाटन का है, और वह चाल में उसकी बराबरी नहीं कर सकता। इससे वह ऐसा क्रुद्ध हो गया कि अपने घोड़े से ही लड़ने पर उतारू हो गया, और उसने अपने चाबुक और जूते में लगे हुए काँटे से जानवर को ऐसा प्रताड़ित किया कि अन्ततः घोड़ा बिगड़कर, उसे बीवर-नदी की ओर ले भागा, और वहाँ उसने सवार को पानी में फेंककर उससे पीछा छुड़ाया। यद्यपि पानी में भीगकर सेण्ट-मालिन का दम आधा हो रहा था; पर उसकी गालियाँ आध मील की दूरी तक सुनायी दे सकती थीं। जबतक वह हाथ-पैर मारकर पानी के बाहर आया, उसका घोड़ा कुछ दूर निकल गया था। उसका शरीर भीगकर कीचड़ से सन गया था, और उसके चेहरे से कई जगह खरोंच लग जाने के कारण रक्त बह रहा था। उसे निश्चय हो गया कि अब घोड़े को पकड़ने की चेष्टा फ़जूल है; और यह देखकर वह और भी घबरा उठा कि एर्नाटन सड़क के मोड़ की ओर जा रहा है, जो उसकी समझ में सीधा रास्ता था।

वह नदी के करार पर चढ़ गया, पर वहाँ से न तो एर्नाटन ही दिखायी पड़ा, न उसका अपना घोड़ा ही। पर जब वह वहाँ खड़ा हुआ एर्नाटन के प्रति कुटिल विचार करने में मग्न था, उसी समय उसने उसे चौराहे की ओर से उसके

भागते हुए घोड़े की ओर घोड़ा बढ़ाते देखा, जिसे उसने मुख्य रास्ता छोड़कर पकड़ लिया। यह देखकर सेण्ट-मालिन प्रसन्न ही नहीं हुआ, प्रत्युत् उसमें कुछ कृतज्ञता का भाव भी उदय हो गया; किन्तु जब उसे अपनी अपेक्षा एर्नाटन की उच्चता का खयाल आया, तो उसका मुख-मण्डल फिर विकृत हो उठा, क्योंकि वह जानता था कि यदि वह स्वयं उसकी अवस्था में होता, तो ऐसा कार्य न करता, जैसा एर्नाटन ने किया है।

उसने अस्फुट शब्दों में धन्यवाद के दो-चार शब्द मुँह से निकाले, किन्तु एर्नाटन ने उन पर ध्यान नहीं दिया। इसके बाद वह क्रोध-पूर्वक अपने घोड़े की लगाम पकड़कर फिर उस पर सवार हुआ। लगभग ढाई बजे तक दोनों चुपचाप चलते रहे। फिर उन्होंने ऐसे एक आदमी को रास्ते में जाते देखा, जिसके साथ एक कुत्ता भी था। एर्नाटन उससे आगे बढ़ गया; पर सेण्ट-मालिन ने अपने को अधिक बुद्धिमान समझने की आशा से उसके पास जाकर पूछा—"मुसाफ़िर, क्या आप किसी की प्रतीक्षा में हैं?"

उस आदमी ने सेण्ट-मालिन की ओर देखा। निश्चय ही उसका रूप प्रिय नहीं मालूम होता था। उसके चेहरे से अब भी क्रोध टपक रहा था, और उसके वस्त्रों पर सूखी हुई कीचड़ और गालों पर खून के धब्बे लगे हुए थे। उसका हाथ सम्बोधन के ढंग पर उठने की जगह घुड़की के रूप में उठा

मालूम होता था। यात्री को उसका यह ढंग बड़ा ही कुटिलता-पूर्ण मालूम हुआ।

"अगर मैं किसी की प्रतीक्षा में हूँ," उसने कहा—"तो वह कोई आदमी नहीं है; और अगर मैं किसी आदमी की प्रतीक्षा भी करूं, तो वह आप नहीं हैं।"

"आप तो बड़े रूखे आदमी हैं!" सेण्ट-मालिन ने अन्त में अपना क्रोध उतारने का एक मौक़ा देखकर प्रसन्नता-पूर्वक और साथ ही अपने विरोधी की भूल का लाभ उठाने पर भी अपने विजयी न बनने के कारण क्षुब्ध होकर कहा। उक्त बात कहने के साथ ही उसने मुसाफ़िर को मारने के लिये अपनी चाबुक उठायी; लेकिन यात्री ने अपनी छड़ी से सेण्ट-मालिन के कन्धे पर एक दुहत्थी जमायी और उसके कुत्ते ने दौड़कर उसके कपड़े और उसके घोड़े के पैर नोच-डाले।

घोड़ा दर्द से छटपटाकर ज़ोर से भागा। कुछ देर तक तो सेण्ट-मालिन उसे रोक भी नहीं सका; पर वह काठी से नहीं हिला। इस प्रकार उसका घोड़ा एर्नाटन से भी आगे बढ़ गया। एर्नाटन उसकी दुर्दशा देखकर मुस्कराया भी नहीं। जब सेण्ट-मालिन ने अपने घोड़े को कुछ शान्त किया, और महाशय-डी-कार्मेंजस उसके पास आ गया, तो भी उसका गर्व दूर नहीं हुआ था, किन्तु उसे वाध्य होकर उसके साथ सुलह करने की चेष्टा करनी पड़ी। "सुनिए!" उसने अपने भीषण

मुँह पर मुस्कराहट का भाव लाते हुए कहा—"मालूम होता है, मेरे दुर्भाग्य के दिन हैं। इस आदमी का हुलिया भी सम्राट् के बताये हुए हुलिये से मिलता है।"

एर्नाटन चुप रहा।

"मैं आप ही से बात कर रहा हूँ, महाशय;" सेण्ट-मालिन ने अपने साथी की चुप्पी पर कुढ़कर कहा। उसने एर्नाटन की इस चुप्पी का यह उचित ही अर्थ लगाया कि वह उससे घृणा करता है, और उसे वह किसी रूप में प्रकट कराना चाहता था, चाहे उसके लिये उसे अपने प्राण ही क्यों न गँवाने पड़ें। "मैं आप ही से बात कर रहा हूँ; मेरी बात सुन रहे हैं आप?" उसने फिर कहा।

"जिसका हुलिया सम्राट् ने हमें बताया था, उसके पास छड़ी या कुत्ता नहीं था।"

"यह सच है," सेण्ट-मालिन ने कहा—"और अगर मैं यह विचार पहले कर लेता, तो मेरे कन्धे पर एक चोट और जाँघ पर कपड़े ने दो छेद न होते। मैं देखता हूँ कि बुद्धिमता-पूर्वक शान्त रहना अच्छी बात है।'

एर्नाटन ने फिर कोई जवाब नहीं दिया, पर रिकाब के सहारे ऊपर उठकर आखों पर हाथ फेरते हुए उसने कहा—"आगे वह आदमी हम लोगों की प्रतीक्षा कर रहा है, जिसे हम खोज रहे हैं।"

"महाशय," सेण्ट-मालिन अपने साथी की इस नवीन

सुअवसर-प्राप्ति पर ईर्ष्या करके बड़बड़ाते हुए बोला—"आपकी आँखें बड़ी अच्छी हैं; मैं तो मुश्किल से सिर्फ़ एक काला निशान देख रहा हूँ।"

एर्नाटन कोई जवाब दिये बिना ही आगे बढ़ता चला गया। शीघ्र ही सेण्ट-मालिन ने भी उस आदमी को देखा और सम्राट् के बताये हुए हुलिये के अनुसार पाया। उसके मन में ऐसी कुप्रवृत्ति उत्पन्न हुई कि उसने घोड़ा बढ़ाकर उससे पहले ही मिलने की इच्छा की। एर्नाटन ने उसे ऐसी दृष्टि से देखा कि उसे कोई और बात याद आ गयी और वह धीमी गति से चलने लगा।

---

# तीसवाँ परिच्छेद

## सेण्ट-मालिन

एर्नाटन ने भूल नहीं की थी; जिस आदमी को उसने देखा था, वह सचमुच चिको था। चिको ने देख लिया था कि उसकी ओर सवार आ रहे हैं, और यह समझकर कि वे उसी के पास आ रहे हैं, उसने उनकी प्रतीक्षा की। एर्नाटन और सेण्ट-मालिन ने एक-दूसरे की ओर देखा।

"अगर आप चाहते हैं, तो इनसे बात कीजिए, महाशय।" एर्नाटन ने अपने विरोधी से कहा।

सेण्ट-मालिन उसके सौजन्य से दवा जा रहा था। वह मुँह भी नहीं खोल सका, उसने केवल अपना सिर झुका लिया।

इसके बाद एर्नाटन ने आगे बढ़कर चिको से कहा—"आपका नाम पूछना धृष्टता तो न होगी ?"

"मुझे छाया कहते हैं।"

"क्या आप किसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं ?"

"हाँ, महाशय।"

"क्या आप कृपा करके हमें बतला सकते है कि किस चीज़ की ?"

"एक पत्र की।"

"कहाँ से ?"

"लावर से।"

"किस मुहर के पत्र की ?"

"राजकीय मुहर के !"

एर्नाटन ने अपने सीने की जेब में हाथ डालकर पत्र निकाला।

"यही है," चिको ने कहा—"और यह निश्चित बात है कि मुझे इसके बदले में भी कुछ देना है; क्यों है न ?"

"हाँ, एक रसीद।"

"हाँ।"

"महाशय," एर्नाटन ने बात का सिलसिला जारी रखते हुए कहा—"मुझे ले आने का हुक्म हुआ था; आपको देने का काम इन महाशय को सौंपा गया था।" और उसने पत्र सेण्ट-मालिन के हाथ में दे दिया, और उसने उसे चिको को पकड़ा दिया।

"आप देख लें," एर्नोटन ने कहा—"कि हमने सचाई के साथ सन्देश-वाहन का कार्य सम्पन्न किया है। यहाँ कोई और नहीं है तथा किसी ने आपको पत्र देते नहीं देखा है।"

"यह सच है, महाशयो; पर मैं रसीद किसको दूँ ?"

"सम्राट् ने यह नहीं कहा है।" सेण्ट-मालिन ने अपने साथी को भर्त्सनापूर्ण-भाव से देखकर कहा।

"दो रसीदें लिखिए, महाशय, और हममें से प्रत्येक को एक-एक दे दीजिए। लावर यहाँ से दूर है; और सड़क पर हममें से कोई दुर्भाग्य का शिकार हो सकता है।" एर्नोटन ने कहा। उसकी आँखें प्रदीप्त हो रही थीं।

"आप बुद्धिमान हैं," चिको ने जेब से किताब निकालते हुए कहा। किताब निकालकर उसने उसमें से दो पन्ने फाड़ लिये और प्रत्येक पर यह लिखा—

महाशय-डी-सेण्ट-मालिन के हाथ से, महाशय एर्नोटन-डी-कार्सेंजल का लाया हुआ पत्र प्राप्त हुआ।

—छाया

"विदा महाशय।" सेण्ट-मालिन ने अपनी रसीद लेते हुए कहा।"

"विदा, महाशय, आपकी यात्रा सुखद हो," एर्नोटन ने कहा—"क्या आपको कोई और चीज़ लावर भेजनी है ?"

"कुछ नहीं, धन्यवाद।"

इसके बाद दोनों युवक पेरिस की ओर रवाना हुए, और

चिको उसकी विपरीत दिशा को। जब वह नज़रों से ओझल हो गया, तो एर्नाटन ने सेण्ट-मालिन से कहा—"महाशय, अब अगर आप चाहें, तो घोड़े से उतर पड़िये।"

"किसलिये, महाशय?" सेण्ट-मालिन ने आश्चर्यपूर्वक कहा।

"हमारा काम समाप्त हो गया; अब हम लोग बातें करेंगे। यह स्थान हमारी बातचीत के लिये उपयुक्त मालूम होता है।"

"जैसा आप चाहें, महाशय।" कहकर दोनों घोड़ों से उतर पड़े।

इसके पश्चात् एर्नाटन बोला—"आप जानते हैं, महाशय, कि रास्ते भर आपने बिना किसी कारण के मेरा घोर अपमान किया है। आप मुझसे अनुपयुक्त समय पर लड़ना चाहते थे, और मैंने इनकार कर दिया; पर अब समय अच्छा है, और मैं आप ही का आदमी हूँ।"

पर सेण्ट-मालिन का क्रोध अब काफ़ूर हो चुका था, और उसे लड़ने की इच्छा भी नहीं थी। "महाशय," उसने जवाब दिया—"जब मैंने आपकी बेइज़्ज़ती की, तो आपने मेरी सेवा करके उसका जवाब दिया था। मैं अब आपके प्रति वे बातें नहीं कह सकता, जो मैंने उस समय कही थीं।"

एर्नाटन ने भवें चढ़ा लीं। "नहीं, महाशय," उसने कहा—"पर अब आप समझते हैं कि उस समय आपने ऐसी बातें कही थीं।"

"आपको यह कैसे मालूम हुआ?"

"इस तरह कि आपके शब्दों में घृणा और ईर्ष्या भरी थी, और वह इतनी जल्दी तुम्हारे हृदय से दूर नहीं हो सकती।"

सेण्ट-मालिन को आवेश आ गया, किन्तु वह बोला नहीं।

एर्नाटन ने बोलना जारी रक्खा—"अगर सम्राट् ने तुम्हारी अपेक्षा मुझे अधिक पसन्द किया, तो इसका कारण यह था कि वे मुझसे अधिक प्रसन्न थे; मैं तुम्हारी तरह बीवर नदी में इसलिये नहीं फेका गया कि मैं तुमसे अच्छा चढ़ना जानता हूँ। मैंने तुम्हारी चुनौती पहले इसलिये नही स्वीकार की कि मैं तुमसे अधिक बुद्धिमान था, मुझे कुत्ते ने इसलिये नहीं काटा कि मुझमें अधिक विचार-शक्ति थी; अब मैं तुम्हें तलवार खींचने के लिये इसलिये कह रहा हूँ कि मेरी इज्ज़त तुमसे अधिक मूल्यवान है; और अगर तुम हिचकिचाओगे, तो मैं अधिक साहस दिलाऊँगा।"

सेण्ट-मालिन की शक्ल दैत्य की सी हो गयी, और उसने क्रोध-पूर्वक अपनी तलवार खींच ली। एर्नाटन ने पहले ही से अपनी तलवार खींच रक्खी थी।

"ठहरिए, महाशय," सेण्ट-मालिन ने कहा—"अपने अन्तिम शब्द वापस लीजिए। आपको मानना पड़ेगा कि ये बड़े कटु हैं। आप मुझे अच्छी तरह जानते हैं—क्योंकि, जैसा कि आपने कहा है, हमारे-आपके घरों में केवल दो लीग का फ़ासला है। वापस लीजिए; मेरी लज्जालुता से सन्तुष्ट हो जाइए, और मेरी बेइज़्ज़ती मत कीजिए।"

"महाशय," एर्नाटन ने कहा—"चूँकि मैं कभी क्रोध नहीं करता, इसलिये मैं अपने मतलब से अधिक बात भी नही करता; फलतः मैं कुछ भी वापस नहीं लूँगा। मैं भी लज्जालु हूँ, और दरबार में नये-नये होने के कारण, मैं प्रत्येक बार आपसे मिलकर लज्जित नहीं होना चाहता। अगर आपकी इच्छा हो, तो एक बार दो-दो हाथ हो जायँ, महाशय; इससे मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगा, और आप भी।"

"महाशय, मैं ग्यारह बार लड़ चुका हूं," सेण्ट-मालिन ने कहा—"और मेरे दो विरोधियों का स्वर्गवास हो चुका है। आपको इसकी भी ख़बर है, महाशय?"

"और महाशय, मैं तो कभी लड़ा नहीं हूँ, क्योंकि मुझे कभी मौक़ा ही नहीं मिला; और अब भी मैंने अपनी ओर से खोजकर लड़ाई नहीं मोल ली। मैं तो आपकी इच्छा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"ठहरिए!" सेण्ट-मालिन ने कहा—"हम लोग देश-भाई हैं, और हम दोनों ही सम्राट् के सेवक हैं; हमें लड़ना नहीं चाहिए। आप बहादुर आदमी हैं, और अगर मैं दे सकता, तो आपको अपना हाथ देता।* आप मुझसे लड़कर क्या लेंगे? मैं ईर्ष्यालु हूँ; यह मेरा स्वभाव है। महाशय-डी-शालार या महाशय-डी-माण्टक्रेबा मुझे क्रुद्ध नहीं कर सकते थे; आपके उत्तम गुणों ने मेरे अन्दर ईर्ष्याग्नि भड़का दी। इसलिये अब

---

*हाथ देने का आशय युद्ध करने से है।

अपने आपको आश्वासन दीजिए, मेरी ईर्ष्या आपको कोई क्षति नहीं पहुँचा सकेगी; और दुर्भाग्य-वश मेरे लिये आपके सद्गुण पूर्ववत् रहेंगे। मैं यह नही चाहूँगा कि कोई हमारे झगड़े का कारण जाने।"

"कोई नहीं जानेगा, महाशय।"

"कोई नहीं ?"

"नहीं; क्योंकि अगर हम लोग लड़े, तो या तो मैं आपको मार डालूँगा, या आप मुझे मार डालेंगे। "मैं जीवन को तुच्छ नहीं समझता; इसके विपरीत मैं उससे मोह करता हूँ, क्योंकि मेरी अवस्था केवल तेईस वर्ष की है, मेरा नाम भी अविख्यात नहीं है, और न मैं ग़रीब ही हूँ। मैं अपनी रक्षा सिंह की तरह करूँगा।"

"इसके विपरीत मेरी अवस्था तीस वर्ष की है, और मैं जीवन से ऊब चुका हूँ; पर फिर भी मैं आपसे नहीं लड़ना चाहूँगा।"

"तो फिर आप माफ़ी माँगेंगे ?"

"नहीं, मैं काफ़ी कह चुका। अगर आप सन्तुष्ट नहीं हुए, तो अच्छा ही है, क्योंकि तब आप मुझसे ऊब नहीं रहेंगे।"

"लेकिन महाशय, इस प्रकार बिना अपनी हँसी उड़वाये कोई झगड़ा नहीं समाप्त कर सकता।"

"मैं यह जानता हूँ।"

"तो आप लड़ने से इन्कार करते हैं ?"

"हाँ, आपके साथ।"

"मुझे ललकारने के बाद भी?"

"मैं इसे मानता हूँ।"

"लेकिन अगर मैं अधीर होकर आप पर आक्रमण कर बैठूँ?"

"तो मैं अपनी तलवार फेंक दूँगा; किन्तु तब मुझे आपके प्रति घृणा करने का कारण मिल जायगा, और उसके बाद आपकी पहली गलती पर ही मैं आपको जान से मार दूँगा!"

एर्नाटन ने अपनी तलवार म्यान में डाल ली। "आप अद्भुत आदमी हैं," उसने कहा—"मैं हृदय से आप पर दया करता हूँ।"

"मुझ पर दया करते हैं?"

"हाँ, क्योंकि आपको कठिन दण्ड मिलेगा।"

"कठिन!"

"हाँ, क्या आप कभी प्रेम नहीं करते?"

"कभी नहीं।"

"क्या तुम्हारे अन्दर कोई मनोविकार नहीं है?"

"केवल एक है—ईर्ष्या; किन्तु उसी में अन्य प्रवृतियाँ भी अत्यधिक मात्रा में हैं। मैं स्त्री को प्रेम तभी करता हूँ, जब दूसरे किसी को प्रेम करते देखता हूँ—मैं धन की लालसा तभी करता हूँ, जब दूसरे को वैसा करता देखता हूँ। हाँ, आप ठीक समझ रहे हैं; मैं दुखी हूँ।"

"क्या तुमने कभी अच्छा बनने की कोशिश नहीं की ?"

"मैं कभी इसमें सफल नहीं हुआ।"

"आपकी आशा क्या है ? आप क्या करने की आशा रखते हैं ?"

"जो ज़हरीला पौदा किया करता है—उसमें भी अन्य पौदों की तरह फूल होते हैं, और ऐसे भी लोग हैं, जो उनका उपयोग करना जानते हैं। जो रीछ और शिकारी पक्षी करते हैं—वे नाश का कार्य करते हैं; पर वहुत-से पालनेवाले जानते हैं कि उन्हें शिकार के लिये कैसे शिक्षित किया जाता है। इसलिये मैं तबतक डी-एपर्नो और डी-लाइना के हाथ में रहूंगा, जबतक कि यह नहीं कह देंगे कि 'यह पौदा हानिकारक है; लाओ इसे हम उखाड़ डालें। यह जानवर भयानक है, लाओ इसे मार डालें'।"

एर्नाटन शान्त हो गया; सेण्ट-मालिन अब क्रोध की चीज़ न रहकर करुणा का पात्र बना हुआ था।

"सौभाग्य आपको स्वस्थ करे," उसने कहा—"जब आप सफल हो जायेंगे, तो घृणा कम करने लगेंगे।"

"मैं चाहे जितना ऊंचा उठूँ, दूसरे लोग मेरी अपेक्षा ऊँचे ही रहेंगे।"

कुछ समय दोनों अपने-अपने घोड़ों पर चुपचाप आगे बढ़ते रहे। अन्ततः एर्नाटन ने अपना हाथ सेण्ट-मालिन की ओर बढ़ाकर कहा—"मैं आपको स्वस्थ करने की चेष्टा करूं ?"

"नहीं, इसकी कोशिश न कीजिए; आप असफल होंगे। इसके विपरीत मुझसे घृणा कीजिए, तो मैं आपकी प्रशंसा करूँगा।"

घण्टे-भर बाद दोनों ने लावर में प्रवेश किया; सम्राट् बाहर गये थे, और शामतक वापस नहीं आनेवाले थे।

---

# इकतीसवाँ परिच्छेद

—○○—

## लाइना का भाषण

दोनों युवक खिड़की पर बैठकर सम्राट् के लौटने की बाट देखने लगे। एर्नाटन शीघ्र ही इस विचार से आश्चर्य-मग्न हो गया कि वह स्त्री कौन हो सकती है, जो उसका ख़वास बन-कर पेरिस में घुसी है, और जिसे उसने ऐसी शानदार गाड़ी में देखा है। उसका हृदय स्पृहा-पूर्ण अनुमान लगाने की अपेक्षा प्रेम-पूर्ण साहसिकता की ओर अधिक झुक रहा था और इस विचार में वह ऐसा तल्लीन हुआ कि उसे खबर भी नहीं रही कि सेण्ट-मालिन वहाँ से कब चला गया। वह तुरन्त समझ गया कि सेण्ट-मालिन ने सम्राट् को आते देखा होगा, और बिना

उसे बताये चुपचाप उनके पास चला गया होगा, वह तुरन्त उठा और दहलीज़ पार करके सम्राट् के कमरे में जाने लगा कि उसी समय उसे सेण्ट-मालिन बाहर आता दिखायी दिया।

"देखो!" उसने प्रसन्नता-पूर्वक चिल्लाकर कहा—"मुझे सम्राट् ने कैसी बढ़िया चीज दी है!" ओर सोने की ज़ंजीर अपने साथी को दिखायी।

"बधायी है, महाशय।" एर्नाटन ने धीरे से कहा, और वह कमरे में घुस गया।

सेण्ट-मालिन उसकी वापसी की प्रतीक्षा करने लगा। यद्यपि एर्नाटन दस ही मिनट में लौट आया, पर सेण्ट-मालिन को वह समय एक घण्टे से कम नहीं मालूम हुआ। जब एर्नाटन वापस आया, तो उसने सिर से पैर तक उसकी ओर देखा और उसके पास कुछ भी न देखकर प्रसन्नता से उछल पड़ा—"और महाशय, आपको क्या दिया उन्होंने?"

"चूमने के लिये अपना हाथ।" एर्नाटन ने जवाब दिया।

सेण्ट-मालिन ने अधीरता-पूर्वक अपनी जंजीर मुट्ठी में दबा ली और दोनों चुपचाप वहाँ से वापस आये। ज्यों ही वे हाल में घुसे कि तुरही की आवाज़ सुनायी पड़ी; और इस आवाज के सुनते ही पैंतालीसो व्यक्ति कमरे में से निकलकर आश्चर्यपूर्वक देखने लगे कि बात क्या है, और इस प्रकार उन्हें एक दूसरे के निरीक्षण करने का सुअवसर मिल गया। अधिकांश रक्षक अच्छी पोशाक पहने हुए थे, यद्यपि उनका पहनावा

साधारणतः कुरुचि का सूचक था। उन्हें देखकर मालूम होता था कि वह सिविलियनों की सेना है, क्योंकि उनमें थोड़े ही ऐसे लोग थे, जो फ़ौजी रंग-ढंग से परिचित थे।

सब से अधिक अच्छी चीज थी उनकी वर्दी, जो अतलस को सफ़ेद तथा गुलाबी रंग में रँगकर बनायी गयी थी, और जो आर्थिक दृष्टि से बड़ी किफ़ायत की द्योतक थी। पर्डुका-डी-पिंकार्ने ने किसी यहूदी से रस्सी-जैसी मोटी एक सोने की जंजीर ख़रीदी थी। पटिना-डी-माण्टक्रेबा रंग-बिरंगे और बेल-बूटेदार वस्त्रों से आच्छादित था; उसने यह पोशाक एक ऐसे व्यापारी से ख़रीदी थी, जिसने इसे ऐसे मुसाफ़िर से सस्ते दामों में मोल ले ली थी, जिसे चोरों ने लूटकर घायल कर दिया था। यह सच है कि इसमें ख़ून और धूल के दाग़ लगे हुए थे; किन्तु उसने इसे यथा-सम्भव अच्छी तरह साफ़ कर लिया था। फिर भी चोरों की कटारों से किये हुए दो घावों के छेद रह गये थे, पर पटिना ने उन पर सुनहले तारों के बूटे कढ़वा लिये थे।

यूस्टाश-डी-मिराडो की पोशाक शानदार नहीं थी। उसे लार्डी, मिलिटर तथा दो बच्चों के पोशाक का भी प्रबन्ध करना था। प्रत्येक आदमी वहाँ एक दूसरे की प्रशंसा कर रहा था। इसी समय महाशय-डी-लाइना ने भवें चढ़ाये हुए प्रवेश किया और वह बड़े ही अप्रिय ढंग से मुँह बनाकर उन लोगों के सामने खड़ा हो गया।

"महाशयो," उसने कहा—"क्या सब लोग हाज़िर हैं ?"

"सब !" उन्होंने जवाब दिया।

"महाशयो, आप लोगों को सम्राट् का विशेष रक्षक नियुक्त करने के लिये पेरिस बुलाया गया है; यह पद बड़ी ही इज़्ज़त का है, पर इसमें आपको काम बहुत अधिक करना पड़ेगा। आप में से कुछ ने अपना कर्त्तव्य नहीं समझा मालूम होता, इसलिये मैं आपको उसकी याद दिलाऊँगा। यदि आप कौंसिल की कार्यवाही में मदद नहीं देंगे, तो आपसे वहाँ के पास किये हुए प्रस्तावों को कार्यान्वित करने के लिये बराबर बुलाया जायगा। मान लीजिए कि जिस अफ़सर पर राज्य की रक्षा और राजमुकुट की शान्ति का भार सौंपा गया है, वह कौंसिल की रहस्यपूर्ण बातें खोल देता है, या कोई ऐसा सिपाही जिस के द्वारा सन्देश भेजा जाता है, उसकी पूर्ति नहीं करता, तो उसका जीवन समाप्त कर दिया जायगा; आप यह जानते हैं ?"

"निस्सन्देह।" बहुत-सी आवाज़ों ने एक साथ जवाब दिया।

"अच्छा, महाशयो, आज ही श्रीमान् सम्राट् के एक रहस्य-पूर्ण कार्यक्रम का भेद खुल गया है, और हुजूर जो उपाय काम में लानेवाले थे, उसे शायद असम्भव बना दिया गया है।"

"पैतालीसों रक्षकों के मन में गर्व का स्थान भय ने ले लिया, और वे एक दूसरे की ओर सन्देह और व्याकुलता-भरी निगाह से देखने लगे।

"महाशयो," लाइना ने बात का सिलसिला जारी रखते हुए कहा—"आपमें से दो आदमी खुली सड़क पर किसी गम्भीर विषय पर इस तरह ज़ोर-ज़ोर से बातें करते सुने गये हैं, जैसे बूढ़ी स्त्रियाँ किया करती हैं।"

सेण्ट-मालिन आगे बढ़ा—"महाशय," उसने कहा—"कृपया इस बात को स्पष्ट कर दें, जिससे हम सभी पर सन्देह न रहे।"

"यह तो आसान बात है। सम्राट् ने आज सुना है कि उनके शत्रुओं में से एक—खासकर जिस पर नज़र रखने के लिये हम लोगों की नियुक्ति हुई है—पेरिस में आकर सम्राट् के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहा है। यह नाम गुप्त रूप से कहा गया था, पर रक्षा के लिये नियुक्त एक सिपाही ने उसे सुन लिया, अर्थात् यह नाम उस व्यक्ति ने सुन लिया, जिसे दीवार की तरह बहरा गूँगा और निश्चल होना चाहिए। तो भी उसने यह नाम सड़क पर इतने जोर से और गर्व के साथ लिया कि राहियों तक का ध्यान उधर आकर्षित हो गया और पूरी खलबली मच गयी। मैं उसे जानता हूँ, क्योंकि मैं वहाँ था, और मैंने सब-कुछ स्वयं देखा और सुना है, और अगर मैं उसके कन्धे पर हाथ रखकर उसे रोकता नहीं, तो वह ऐसे गम्भीर स्वार्थ की बातें भी प्रकट कर देता कि यदि मैं उसे स्पर्श न कर सकता, तो उसके कलेजे में छुरी भोंक देता।"

पर्टिना-डी-माण्टक्रेबा और पर्डुका-डी-पिंकार्ने बिल्कुल

पीले पड़ गये; और माण्टक्रेश्रा ने कुछ वहाने सुनाने की कोशिश की। सब की आँखें इन्हीं दोनों की ओर लग गयीं।

"कोई भी वहानेवाज़ी नहीं चल सकती," लाइना ने कहा—"अगर तुम शराब के नशे का बहाना करो, तो उसके लिये भी तुम्हें सज़ा मिलेगी।"

भयानक स्तब्धता छा गयी। इसके बाद पर्टिना ने कहा—"क्षमा करें, महाशय! हम लोग देहाती हैं; दरबार के लिये बिल्कुल नये हैं और राजनीति से बिल्कुल अनभ्यस्त।"

"बिना उत्तरदायित्त्व समझे तुम्हे सम्राट् की सेवा नहीं स्वीकार करनी चाहिए थी।"

"भविष्य में हम क़ब्र की तरह मौन रहेंगे; हम आपसे शपथ करते हैं!"

"ठीक है; पर आज जो बुराई तुमने कर दी, उसका इलाज कर सकते हो?"

"हम कोशिश करेंगे।"

"मैं कहता हूँ कि वह असम्भव है।"

"तो, इस बार हमें माफ़ कर दे।"

"आप लोग!" लाइना ने कहा—"एक प्रकार के कुसंयम के साथ रहते हैं, अतः आपको अब एक प्रकार की शर्त का बन्धन स्वीकार करना होगा, जिसका पालन अत्यन्त कठोरता-पूर्वक करना पड़ेगा। जिन्हें यह शर्त बहुत कठिन मालूम हो, वे अपने-अपने घर लौट जायं; मैं आसानी से

उनकी जगह दूसरे आदमी नियुक्त कर लूँगा। किन्तु मैं सबको समझा देता हूँ कि हममें गुप्त रूप से और तत्काल न्याय किया जायगा; धोखा देनेवालों को तुरन्त मृत्यु-दण्ड दिया जायगा।”

माण्टक्रेबा क़रीब-क़रीब मूर्छित हो गया, और पर्टिना का चेहरा पहले से भी और पीला पड़ गया।

“मैं,” लाइना ने फिर कहा—“छोटे अपराधों के लिये हल्की सज़ा दूँगा; उदाहरण के लिये क़ैद की ही सज़ा दे दूँगा। इस बार मैं महाशय-डी-माण्टक्रेबा और महाशय-डी-पिकार्ने का जीवन इसलिये छोड़ देता हूँ कि इन्होंने अनजाने यह काम किया है। मैं इन्हें क़ैद की सज़ा इसलिये नहीं देता कि आज ही शाम को या कल उनकी ज़रूरत पड़ेगी। फलतः मैं इन्हें कर्त्तव्यशील होने के लिये तीसरी सजा—अर्थात् ज़ुर्माना करता हूँ। तुम में से प्रत्येक को एक-एक हज़ार लिवर मिले हैं, उनमें से तुम दोनों को सौ-सौ लिवर लौटा देने होंगे। यह रक़म मैं उन लोगों को इनाम में दूँगा, जिनका व्यवहार मुझे पसन्द होगा।”

“एक सौ लिवर,” पिकार्ने ने कहा—“मेरे पास तो नहीं हैं। मैंने तो सब खर्च करके अपने लिये सामान खरीद लिया।”

“तो अपनी ज़ंजीर बेच डालो। लेकिन मुझे एक बात और करनी है। मैंने इस टोली के कई सदस्यों में परस्पर क्रुद्ध होने के लक्षण देखे हैं; जब कभी ऐसा मतभेद उत्पन्न हो, तो उसकी सूचना मुझे करनी चाहिए, और केवल मुझे ही यह

अधिकार होगा कि मैं दो युद्धेच्छुओं का द्वन्द्व-युद्ध स्वीकार करूँ। आजकल द्वन्द्व-युद्ध बहुत प्रचलित हो रहा है, किन्तु मैं नहीं चाहता कि इस प्रचलन के पीछे पड़कर हमारी टोली सदा अपूर्ण बनी रहे। ऐसी अवस्था में बिना मेरी आज्ञा के जो पहला द्वन्द्व-युद्ध होगा, उसके दोनों ही प्रतिद्वन्दियों को सख्त सज़ा और जुर्माना होगा। आपमें से जिन-जिन के लिये यह बात लागू हो, वे इस बात को स्मरण रक्खें। अब, महाशयो, आप लोग जा सकते हैं। हाँ, एक बात और भी कह दूँ—आप में से पन्द्रह आदमी आज शाम को, जब श्रीमान् सम्राट् स्वीकार करेंगे, ज़ीने के नीचे रक्खे जायंगे और पहले संकेत पर आवश्यकता पड़ने पर डेवढ़ी में प्रवेश करेंगे। पन्द्रह बाहर रक्खे जायँगे और वे लावर मे आनेवाले लोगों में मिल-जुल जायँगे; और शेष पन्द्रह घर पर ही रहेंगे। चूँकि आपको किसी प्रधान की आवश्यकता होगी, और मैं हर जगह मौजूद नहीं रह सकता, इसलिये मैं प्रतिदिन पन्द्रह-पन्द्रह की टुकड़ी के लिये एक-एक प्रधान नियुक्त करूँगा, जिससे सब आज्ञा-पालन और शासन करना सीख ले। अभी मैं प्रत्येक व्यक्ति की योग्यता से परिचित नहीं हूँ, पर मैं निरीक्षण करके जान लूँगा। अब, महाशयो, आप लोग जायँ; और महाशय-डी-माण्टक्रेबा तथा पिकार्ने याद रक्खें कि इन दोनों के जुर्माने मैं कल जमा करवा लेने की आशा रखता हूँ।"

सब लोग चले गये, केवल एर्नाटन पीछे रुका रहा।

"क्या आप कुछ चाहते हैं ?" लाइना ने पूछा।

"हाँ, महाशय," एर्नाटन ने झुककर कहा—"मुझे मालूम होता है कि आप हम लोगों को हमारा कर्त्तव्य बताना भूल गये। सम्राट् की सेवा में रहना निस्सन्देह बड़ी ही गौरवपूर्ण बात है; पर मैं यह जानने की इच्छा रखता हूँ कि इस (शाम की) सेवा में क्या-क्या कार्य सम्मिलित हैं ?"

"यह ऐसा प्रश्न है, महाशय, जिसका जवाब मैं नहीं दे सकता।"

"महाशय, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि क्यों ?"

"इसलिये कि प्रायः मैं सुबह को खुद नहीं जानता कि मुझे शाम को क्या करना है।"

"महाशय, आप ऐसे उच्च पद पर नियुक्त हैं कि आपको ऐसी बहुत-सी बातें मालूम होनी चाहिएँ, जिनसे हम लोग अनभिज्ञ हैं।"

"जैसा मैं करता हूँ, वैसा ही कार्य कीजिए, महाशय-डी-कार्मैंजस। ये बातें बिना कहे ही समझिए; मैं आपको रोकता नहीं।"

"मैं आपसे इसलिये पूछता हूँ, महाशय," एर्नाटन ने फिर कहा—"कि किसी भी मनोवृत्ति के वशीभूत न होकर इच्छा या अनिच्छा से दरबार में आने के कारण मैं अधिक शूर न होने पर भी आपके लिये दूसरे की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता हूँ।"

"आपको इच्छा या अनिच्छा कुछ भी नहीं है ?"

"नहीं, महाशय।"

"मैं समझता हूँ, आप सम्राट् को प्रेम करते हैं ?"

"मुझे करना चाहिए, और एक प्रजा और सज्जन होने के नाते मैं ऐसी ही इच्छा रखता हूँ।"

"अच्छा, यह तो मुख्य बात है, जिससे आपका व्यवहार नियंत्रित होगा।"

"बहुत अच्छा, महाशय; पर एक बात ऐसी है जो मुझे चैन नहीं लेने देती।"

"वह क्या है ?"

"सहिष्णुता-पूर्ण आज्ञाकारिता।"

"यह तो एक आवश्यक शर्त है।"

"मैं भी ऐसा ही समझता हूँ; किन्तु कभी-कभी यह ऐसे व्यक्तियों के लिये कठिन हो उठती है, जो प्रतिष्ठा के बारे में कोमल भावना रखते हैं।"

"इसका सम्बन्ध मुझसे नहीं है, एम-डी-कामेंजस।"

"लेकिन, महाशय, जब किसी हुक्म से आप अप्रसन्न हो जाते हैं—"

"मैं तो डी-एपर्नों का दस्तखत देख लेता हूँ, और इसी-से मुझे दिलजमई हो जाती है।"

"और डी-एपर्नों ?"

"वह श्रीमान् सम्राट् के दस्तखत पढ़ लेते हैं, और मेरी तरह वे भी अपने दिलको तसल्ली कर लेते हैं।"

"आप ठीक कह रहे हैं, महाशय, और मैं आपका नम्र सेवक हूँ।" कहकर एर्नाटिन जाने ही वाला था कि लाइना ने उसे रोक लिया।

"मैं तुम्हे वह बात बताऊँगा," उसने कहा—"जो मैंने औरों को नहीं बतायी, क्योंकि और किसीमें मुझसे इस प्रकार बात करने का साहस नहीं हुआ।"

एर्नाटिन प्रतिष्ठा-सूचक ढंग से झुका।

"शायद," लाइना ने कहा—"आज शाम को लावर में कोई बड़ा आदमी आयेगा; अगर ऐसा हो, तो उस पर नज़र रखियेगा, और जब वह जाने लगे, तो उसके पीछे लग जाइयेगा।"

"मुझे क्षमा करें, महाशय; पर यह तो जासूस का काम मालूम होता है।"

"आप ऐसा समझते हैं? यह सम्भव है; पर इधर देखिए।" कहकर उसने एक कागज़ निकालकर एर्नाटिन के हाथ में दिया, और उसने उसमें निम्नलिखित मज़मून पढ़ाः—

अगर आज शाम को महाशय-डी-मेन लावर में आये, तो उनके पीछे लग जाइए।

—डी-एपर्नो

"तो फिर, महाशय?"

"मैं मेन का पीछा करूँगा।" एर्नाटिन ने झुककर कहा।

# बत्तीसवाँ परिच्छेद

—:o:—

## पेरिस के नागरिक

जिस महाशय-डी-मेन के लिये लावर में ऐसी उलझन पैदा हो रही थी, वह बूट पहनकर घोड़े पर सवार हो होटल-डी-गाइज़ से इस तरह रवाना हुआ, मानो वह इसी समय बाहर से पेरिस में आया है। सम्राट् ने उसका प्रेमपूर्वक स्वागत किया।

"अच्छा, भाई," उसने कहा—"आप पेरिस देखने आये हैं?"

"हाँ, हुज़ूर; मैं अपने भाई की तथा अपनी ओर से श्रीमान् को स्मरण दिलाने आया हूँ कि हमसे अधिक विश्वासपात्र आपकी और प्रजा नहीं है।"

"खूब!" सम्राट् ने कहा—"यह तो ऐसी प्रकट बात है कि

मेरे आनन्दित होने पर भी आप यहाँ आने का कष्ट न करते। आपका उद्देश्य कुछ और ही है?"

"हुज़ूर, मुझे डर था कि हमारे शत्रुओं ने जो झूठी ख़बरें फैला रक्खी हैं, उससे हम लोगों के प्रति श्रीमान् का स्नेह कम हो गया होगा।"

"कैसी ख़बरें?" हेनरी ने ऐसी भयानक सादगी से पूछा, जिसे देखकर उससे घनिष्ठ सम्पर्क रखनेवाले भी काँप उठते।

"कैसी!" मेन ने विकल होकर कहा—"क्या श्रीमान् ने हम लोगों के प्रतिकूल कोई अफ़वाह नहीं सुनी?"

"भाई, यह बात हमेशा के लिये जान लीजिए कि मेरी मौजूदगी में कोई गाइज़ों की बुराई नहीं कर सकता।"

"अच्छा, हुजूर मैं अपने पेरिस आने का अफसोस नहीं करता, क्योंकि मैंने श्रीमान् का हम लोगों के प्रति ऐसा सौहार्द्र-पूर्ण विचार पाया है; किन्तु मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरा उतावली के साथ यहाँ आना निरुद्देश्य था।"

"ओह, पेरिस में तो हमेशा कोई-न-कोई काम रहता ही है।"

"हाँ, हुजूर; पर हमारा काम तो सीजन मे है।"

"क्या काम, ड्यूक?"

"यही, हुजूर का काम।"

"ओह, सच है, जैसा आपने पहले किया है, वैसे ही करते चलिये। मैं अपनी प्रजा के व्यवहार की क़द्र करना जानता हूँ।"

ड्यूक मुस्कराता हुआ वहाँ से चला। सम्राट् ने उससे

हाथ मिलाया, और लाइना ने एर्नाटन की ओर संकेत किया, जो उसके नौकर से बात करने के बाद महाशय-डी-मेन के पीछे लग गया। उसके अदृश्य होने का डर नहीं था, क्योंकि पिकार्न की बेवकूफ़ी से गाइज़ घराने के राजकुमार के पेरिस आने का समाचार फैल चुका था, और संघवादी लोग अपने-अपने घरों से निकलकर उससे मिलने आ रहे थे। मेनीविले उत्साहित लोगों को—"इतना उत्साह न दिखाओ, दोस्त; ईश्वर चाहेगा तो हमारा समझौता हो जायगा!" कहकर रोकने की व्यर्थ चेष्टा करने लगा।

होटल-सेण्ड-डेनिस पहुंचने पर ड्यूक के पास दो-तीन सौ रक्षक एकत्रित हो गये, जिससे एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गयी कि एर्नाटन के लिये गुप्त रूप से ड्यूक के पीछे लगना असम्भव हो गया।

जिस समय ड्यूक अपने होटल में घुसा, तो एर्नाटन का ध्यान एक गाड़ी की ओर गया, जो भीड़ को चीरती हुई आ रही थी। मेनीविले उसके पास पहुँचा। पर्दे खुले थे; और एर्नाटन ने समझा कि उसने अपने पूर्ववर्ती खवास को पहचान लिया। फाटक के अन्दर जाकर वह गाड़ी अदृश्य हो गयी और मेनीविले उसके पीछे-पीछे बढ़ा। क्षण-भर बाद, मेनीविले झरोखे के पास खड़ा हुआ दिखायी दिया, और उसने ड्यूक के नाम पर पेरिस-निवासियों को धन्यवाद दिया, साथ ही सबसे प्रार्थना की कि वे वहाँ से अपने-अपने घर जायँ।

इसके अनुसार दस आदमियों को छोड़कर शेष सभी लोग वहाँ से तितर-बितर होकर अपने-अपने घर गये। ये दस व्यक्ति संघ के कार्यकर्त्ता थे, जो महाशय-डी-मेन को उनके आगमन पर धन्यवाद देने के लिये भेजे गये थे और साथ ही यह प्रार्थना करने के लिये भी कि वह अपने भाई को भी पेरिस आने का परामर्श दे। वास्तव में इन भावना-प्रवण और योग्य नागरिकों ने, अपनी पूर्व बैठक में अनेक कार्यक्रम तैयार किये थे, और ये ऐसे प्रधान की स्वीकृति और सहायता लेना चाहते थे, जिन पर ये पूर्णतः विश्वास कर सकें।

बसी-लेकलर्क यह घोषणा करने के लिये आया कि उसने तीन मठों के साधुओं को शस्त्र-दीक्षा दी है, और पाँच सौ नागरिकों की एक सेना तैयार कर ली है—अर्थात् एक हज़ार ऐसे आदमियों की भर्ती कर ली है, जो समय पड़ने पर लड़ सकते हैं।

लाशापेले-मार्त्यू ने मैजिस्ट्रेटों, क्लर्कों और वकीलों में काम किया था। वह परामर्श और क्रियात्मक-कार्य—दोनों ही के लिये तैयार था। पहले काम के लिये उसके पास दो सौ की संख्या में सभा की पोशाक तैयार थी और दूसरे काम के लिये दो सौ तीरन्दाज़।

विगार्डने-रू-लोम्बार्ड्स और रू-सेण्ट-डेनिस के व्यापारियों को अपने अधिकार में कर रक्खा था।

क्रूस ने लाशापेले के साथ वकीलों में काम करने के अतिरिक्त पेरिस के विश्व-विद्यालय को भी तैयार किया था।

देलवार ने बन्दरगाह के उन सभी मल्लाहों की ओर से सहायता देने की प्रतिज्ञा की, जिनकी पाँच सौ की भयानक टोली थी।

शेष लोगों में से भी प्रत्येक कुछ-न-कुछ सहायता देने के लिये प्रस्तुत था। चिको का मित्र निकोला पोलेन भी उनमें से एक था।

मेन ने जब उन सब की बातें सुन लीं, तो बोला—"मैं आपकी ताक़त की प्रशंसा करता हूँ, पर आप जिस उद्देश्य को अपने सामने रखते हैं, उसे मैं नहीं देख रहा हूँ।"

बसी लेक्लर्क ने जवाब दिया—"हम लोग परिवर्तन चाहते हैं, और चूँकि हम दृढ़तम है—"

"पर आप उस परिवर्तन को कैसे प्राप्त कर सकेंगे?"

"मुझे ऐसा मालूम होता है," बसी ने साहस-पूर्वक जवाब दिया—"कि चूँकि संघ का विचार हमारे प्रधानों से प्राप्त हुआ है, इसलिये इसका उद्देश्य बतलाना उन्हीं का काम है।"

"आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं," मेन ने कहा—"किन्तु कार्य के लिये समुचित समय का निश्चय करना भी उन्हीं का काम है। महाशय-डी-गाइज़ की फ़ौजें तैयार हो सकती हैं, पर जब तक वे उचित नहीं समझते, तबतक संकेत नहीं करते।"

"पर महाशय, हमलोग अधीर हो रहे हैं।"

"किसलिये?"

"अपने उद्देश्य तक पहुँच ने के लिये। हमने भी अपनी योजना तैयार कर ली है।"

"ओह, यह तो और बात है; अगर आपकी योजना अपनी है, तब तो मैं और कुछ नहीं कहूँगा।"

"हाँ, महाशय; पर क्या हम आपकी सहायता पर विश्वास कर सकते हैं ?"

"निस्सन्देह, अगर यह योजना भाई साहब को तथा मुझे पसन्द आ गयी।"

"हमे विश्वास है कि पसन्द आयेगी।"

"तो फिर मुझे सुनाइये।"

संघवादियों ने एक दूसरे की ओर देखा, फिर मार्त्यू आगे बढ़ा। "महाशय," उसने कहा—"हम अपनी योजना की सफलता मे विश्वास रखते हैं। कुछ ख़ास जगहे ऐसी हैं, जिन पर नगर की ताक़त निर्भर करती है—बड़ा और छोटा शाटेलेट, होटल-डी-विले, आर्सेनल और लावर।"

"यह सच है।"

"इन सभी जगहों पर रक्षक तैनात हैं, किन्तु फिर भी यहाँ लोगों को आश्चर्य में डाला जा सकता है।"

"मैं यह भी मानता हूँ।"

"तो भी नगर बाहर से पहरेदार-सवार द्वारा—जिसके साथ तीरन्दाज़ भी हैं—रक्षित है। हम लोग उसे नहीं पकड़ने-वाले थे, जो बहुत आसानी से हो सकता था, क्योंकि वह एकान्त स्थान है।"

मेन ने सिर हिलाया। "चाहे कैसा ही एकान्त क्यों न हो,"

उसने कहा—"आप दरवाज़ा खोलकर बिना किसी का ध्यान आकर्षित किये बीस फ़ायर नहीं कर सकते।"

"हमने इस आपत्ति का अनुमान पहले ही से लगा लिया है; पर पहरेदारों में से एक तीरन्दाज़ हमारे पक्ष में है। आधी रात को हम में से दो या तीन आदमी जाकर दरवाज़ा खटखटायेंगे; तीरन्दाज उसे खोल देगा, और अपने प्रधान से जाकर कहेगा कि सम्राट् उससे बातें करना चाहते हैं, जो उसे साधारण बात नहीं जँचेगी, क्योंकि वह प्रायः इस प्रकार बुलाया जाता है। दरवाज़ा खुल जाने पर हम दस आदमी घुसा देंगे। ये लोग यहाँ क़रीब के ही रहनेवाले मल्लाह होंगे, जो शीघ्र ही उन्हें समाप्त कर देंगे।"

"उन्हें मार डालेंगे ?"

"हाँ, महाशय। साथ ही हम उन अन्य कार्यकर्त्ताओं का भी दरवाज़ा खोल देंगे, जो उनका स्थान ले सकते हैं,—जैसे महाशय-डी-ओ, महाशय-डी-शिवर्नी, और महाशय-ली-प्रक्योरर लेगासिल। सेण्ट बार्थोलोमे ने हमें बतलाया है कि किस प्रकार कार्य करना होगा।"

"यह तो ठीक है, महाशय; पर आपने मुझे यह नहीं बतलाया कि क्या साथ ही आपका उद्देश्य लावर पर भी धावा बोल देना है—क्या आप उस मज़बूत और सुरक्षित गढ़ी में भी घुस-जायँगे ? यह तो विश्वास रखिए कि सम्राट् वैसी आसानी से नहीं लिये जा सकेंगे, जिस सरलता से पहर का सवार लिया

जा सकता है। वह तलवार खींच लेंगे और इस बात को याद रखिये कि सम्राट् सम्राट् हैं। उनकी उपस्थिति का नागरिकों पर गहरा प्रभाव पड़ेगा; और आप मारे जायंगे।"

"हमने इस कार्य के लिये चार हज़ार ऐसे आदमी चुने हैं, जो वैलोई को इतना प्रेम नहीं करते कि उनकी उपस्थिति का वैसा प्रभाव पड़े, जैसा आप कह रहे हैं।"

"और आप इतना ही काफ़ी समझते हैं ?"

"निस्सन्देह; हम एक-एक के लिये दस-दस होंगे।"

"क्यों, स्विस रक्षकों की संख्या चार हज़ार है।"

"हाँ, पर वे तो लानी में हैं, जो पेरिस से आठ लीग के फ़ासले पर है; और मान लिया कि वे बुलाये गये, तो भी घोड़े पर सन्देश-वाहक के जाने में दो घण्टे लग जायँगे, और उन्हें पैदल यहाँ आने में आठ घण्टे लगेंगे। इस प्रकार दस घण्टे का समय लग जायगा, और तब तो वे नगर के दरवाज़ों पर ही रोक लिये जायंगे, क्योंकि दस घण्टे में तो पेरिस पर हमारा अधिकार हो जायगा।"

"बहुत अच्छा; पर मान लें कि यह सब काम हो गया— पहरेदार निःशस्त्र हो जायंगे, अधिकारी लोग अदृश्य हो जायँगे और सभी बाधाएं दूर हो जायँगी, पर इसके बाद आप क्या करना चाहते हैं ?"

"सच्चे आदमियों को संगठित करके नयी सरकार स्थापित करेंगे। रहे हमलोग, सो जबतक हमारा व्यापार

सफलता-पूर्वक चलता रहेगा, और हमें अपने बाल-बच्चों की आजीविका-भर को धन मिलता रहेगा, हम दूसरी बात की बहुत कम चिन्ता करते है। हम में से कुछ लोग शासन-कार्य में भाग लेने की इच्छा रख सकते हैं, उन्हे वह कार्य मिल जाने चाहिएं। हमें सन्तुष्ट करना कठिन नहीं है।"

"मैं जानता हूं कि आप सब ईमानदार है, और अपने पदों पर बेईमानी का शासन नहीं बर्दाश्त करेंगे।"

"नहीं, नहीं!" कई उच्च आवाज़ें एक साथ आयीं।

"अब, महाशय पोलेन," ड्यूक ने कहा—"क्या पेरिस में बहुत-से आलसी और बदमाश आदमी हैं?"

निकोला पोलेन, जो अभीतक पीछे खड़ा था, अब बाध्य होकर आगे बढ़ा। "निश्चय ही, महाशय, ऐसे बहुत-से लोग हैं।" उसने जवाब दिया।

"क्या ऐसे आदमियों की आनुमानिक संख्या आप हमें बता सकते है?"

"लगभग चार हजार चोर, तीन हजार या इससे कुछ अधिक भिखमंगे, और चार या पाँच सौ हत्यारे होंगे।"

"अच्छा, कम-से-कम कुल आठ हज़ार निकम्मे आदमी हैं, और ये हैं किस धर्म के माननेवाले?"

पोलेन हँस पड़ा। "सब धर्मों के, महाशय, या किसी भी धर्म के न कहना अधिक उपयुक्त होगा; धन उनका परमात्मा है, और रक्त उनका पैग़म्बर।"

"हाँ; पर उनकी राजनीति क्या है ? वे वेंलोई हैं या संघ-वादी; नवारी हैं, या क्या है ?"

"सिर्फ़ डाकू हैं ?,,

"महाशय," क्रूस ने कहा—"यह न समझिए कि हम इन लोगों की मदद लेना चाहते है !"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं समझता; और यही बात मुझे अधिक बेचैन कर रही है।"

"यह क्यों, महाशय ?" उन्होंने आश्चर्य पूर्वक पूछा।

"क्योंकि ज्यों ही पेरिस से मजिस्ट्रेटों का प्रभुत्त्व मिट जायगा, और ज्यों हीं यहाँ से राज्याधिकार, सार्वजनिक शक्ति या जन-साधारण पर क़ाबू रखने-वाली संस्थाएं मिट जायंगी, ये लोग आपकी दुकानें लूट-पाट लेंगे और जब आप लावर की ओर धावा बोलेंगे, तो आपके घरों में घुस जायँगे। कभी वह आपके विरुद्ध स्विसों से मिल जायँगे, और कभी स्विसों के विरुद्ध आपसे। इस प्रकार वे हमेशा शक्तिशाली बने रहेंगे।"

"यह तो बड़ी ही बुरी बात होगी !" कार्यकर्त्ताओं ने एक-दूसरे की ओर देखते हुए कहा।

"मैं समझता हूं कि इस प्रश्न पर गम्भीरता-पूर्वक विचार करना चाहिए, महाशयो," ड्यूक ने कहा—"मैं इस पर विचार करूँगा, और इस कठिनाई पर विजय प्राप्त करने का उपाय निकालूँगा। अपने पहले आपके हितों का ख़याल रखना हमारी नीति रही है।"

कार्यकर्त्ताओं के मुँह से हर्ष-ध्वनि निकल पड़ी।

"महाशयो, अब उस आदमी को, जिसने चौबीस मील का सफ़र अड़तालीस घण्टे में घोड़े की पीठ पर तै किया है, सोने की आज्ञा दीजिए।

"हम नम्रता-पूर्वक विदा होते हैं," ब्रिगार्ड ने कहा—"हमारी दूसरी बैठक के लिए आप कौन-सी तारीख़ नियत करेंगे?"

"जितनी जल्दी हो सकेगा—कल या परसों।" कह-कर ड्यूक चला गया, और कार्यकर्त्ता-गण उसकी इस ख़तरे की दूरन्देशी पर आश्चर्य-स्तब्ध रह गये, जिस पर उन्होंने स्वप्न में भी विचार नहीं किया था।"

ज्योंही वह वहां से गये कि दरवाज़ा खुला और एक स्त्री शीघ्रतापूर्वक अन्दर आयी।

"डचेज़ आ गयीं।" उन्होंने चिल्लाकर कहा।

"हाँ, महाशयो; मैं आप लोगों की घबराहट दूर करने के लिए आयी हूँ। जो काम हिब्रू लोग नहीं पूरा कर सके, उन्हें जुडिथ ने परिपूर्ण किया था। आशा रखिए, महाशयो, क्योंकि मैंने भी एक योजना तैयार की है।" कहकर वह भी उसी दरवाज़े से अन्दर चली गयी, जिससे उसका भाई गया था।

"अच्छा" वसी-लेकलर्क ने कहा—"मैं समझता हूं, वह पारिवारिक आदमी हैं।"

"ओह," निकोला पोलेन बड़बड़ाया—"मैं चाहता हूं, मैं इन झंझटों से बाहर ही रहता, तो अच्छा था।"

## तैंतीसवाँ परिच्छेद

——::o::——

### ब्रदर बोरोमे

रात के लगभग दस बजे कार्यकर्तागण अपने-अपने घर गये। निकोला पोलेन सबके पीछे रहकर अपनी विषम स्थिति पर विचार करने लगा, और इस बात पर तर्क-वितर्क करता रहा कि वह यह सारी बातें डी-एपर्नों को जा सुनाये, या नहीं। इस प्रकार विचार-ग्रस्त होकर वह धीरे-धीरे जा रहा था कि रू-डी-पीर-आ-रील के बीचोबीच पहुँचकर वह एक जैको-बिन-साधु के पीछे दौड़ पड़ा। दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा और पहचान गये।

"ब्रदर बोरोमे!" पोलेन ने उच्च स्वर से कहा।

"निकोला पोलेन !" साधु ने चिल्लाकर उत्तर दिया।

"बात क्या है ?" निकोला ने सावधान होकर पूछा—"इतनी रात को इतनी तेज़ी से आप कहाँ भागे जा रहे हैं ? क्या मठ में आग लग गयी है ?"

"नहीं, मैं डचेज़-डी-माण्टपॅसियर के होटल में जाकर मनीविले से मिलने जा रहा हूं।"

"किसलिये ?"

"ओह ! मामूली काम था," बोरोमे ने बनावटी जवाब सोचते हुए कहा—"हमारे महन्तजी को डचेज़ गुरु बनाने के लिये प्रार्थना करने गयी थीं; उस समय तो उन्हों ने स्वीकार कर लिया था, पर बाद में वे द्विविधा में पड़ गये, और अब मेरे द्वारा उनसे यह कहला भेजा है कि वह उन पर निर्भर न करें।"

"बहुत अच्छा; पर आप तो होटल-डी-गाइज़ की विपरीत दिशा में जा रहे हैं ?"

"जी हाँ, ठीक यही बात है, क्योंकि मैंने सुना है कि वह अपने भाई के पास होटल-सेण्ट-डेनिस गयी हैं।"

"बिल्कुल ठीक; पर आप मुझे धोखा क्यों दे रहे हैं ? ऐसा सन्देश ले जाने के लिये खज़ाञ्ची की ज़रूरत नहीं होती।"

"लेकिन सन्देश डचेज़ के पास ले जाना है न ! अब मुझे मत रोकिए, नहीं तो मैं उनसे मिल नहीं पाऊँगा।"

"वह तो लौटेंगी ही, आप उनके लिये प्रतीक्षा कर सकते थे।"

"सच है; पर मैं वहीं महाशय ड्यूक से भी मिल लूँगा।"

"यह बात अधिक सच मालूम पड़ती है। अब चूँकि मैं जान गया कि आपको किससे काम है, इसलिये रोकूँगा नहीं। विदा, आपकी तक़दीर चेते।"

बोरोमे रास्ता साफ़ देखकर दौड़ पड़ा।

"ख़ूब" पोलेन ने उसके पीछे देखते हुए मन-ही-मन कहा—"कोई बात नयी अवश्य है; पर मुझे इन बातों के जानने के लिये क्यों विकल होना चाहिए कि कहाँ क्या हो रहा है? क्या यह सम्भव है कि मैं जिस पेशे में ठूंसा गया हूँ, उसे अब पसन्द करने लगूँ? छिः!"

इधर भाई-बहन दोनों ने परस्पर बातें करके यह निश्चय किया कि सम्राट् को सन्देह नहीं है, इसलिये आक्रमण करना आसान है। वे इस बात से भी सहमत हुए कि जब तक सम्राट् ने अपने भाई का त्याग कर रक्खा है, तब तक पहला काम प्रान्तों में संघ संगठित करना है, क्योंकि जब तक हेनरी-डी-नवार केवल प्रेम के पचड़ों में पड़े हुए हैं, तब तक उन (सम्राट्) के अतिरिक्त उन्हें किसी से डरने की ज़रूरत नहीं है।

"पेरिस पूर्णतः तैयार है; पर इन्तज़ार करना होगा।" मेन ने कहा।

इसी समय महाशय-डी-मेनीविले ने प्रवेश करके बोरोमे के आने की सूचना दी।

"बोरोमे! यह कौन आदमी है?" ड्यूक ने पूछा।

"वही आदमी है, जिसे आपने मेरे एक कार्यकर्ता और

एक बुद्धिमान आदमी भेज देने के लिये कहने पर मेरे पास नैन्सी से भेजा था।"

"मुझे याद है, मैंने कहा था कि एक आदमी में ये दोनों गुण हैं, और कप्तान बोरोविले को भेजा था। क्या उसने अपना नाम बदलकर बोरोमे रख लिया है?"

"हाँ, महाशय, नाम और वर्दी दोनों ही चीज़ें बदल ली हैं। वह अब बोरोमे कहलाता है और जैकोबिन-साधु बन गया है।"

"बोरोविले जैकोबिन बन गया है?"

"हाँ, महाशय।"

"तो फिर यह जैकोबिन क्यों बना? शैतान उसे साधु के वेश में देखकर खूब खुश होगा।"

"वह जैकोबिन क्यों है," डचेज़ ने मेनीविले की ओर एक संकेत किया। "यह बात आपको बादमें मालूम हो जायगी," मेनीविले ने कहा—"यह हमारी गुप्त बात है, महाशय। तब तक अच्छा हो, हम कप्तान बोरोविले या फ़ादर बोरोमे की बात सुनें।"

"हाँ, उसके आने से मैं व्यग्र हो उठी हूँ।" मैडम-डी-माण्टपेंसियर ने कहा।

"और मैं भी शान्त नहीं हूँ।" मेनीविले ने कहा।

"तो फिर उसे जल्दी लिवा लाओ।" डचेज़ ने कहा।

रहा ड्यूक, सो वह असमंजस में पड़ गया कि वह सन्देश-वाहक की बात सुने, या अपनी प्रेमिका—जिससे मिलने का वह वादा कर आया है—के पास जाय। उसने दरवाज़े

की ओर नजर डालकर फिर घड़ी की ओर देखा। दरवाज़ा खुला और घड़ी ने ग्यारह बजाये।

"अच्छा, बोरोविले," ड्यूक ने प्रसन्न होने पर भी अपनी हँसी रोकने में अक्षम होकर कहा—"तुम भेस बदले हुए हो, दोस्त!"

"हाँ, महाशय, मैं मानता हूँ कि इस वाहियात पोशाक को पहनकर मैं बेचैन हू, लेकिन चूँकि यह श्रीमती की सेवा के लिए पहना गया है, इसलिए मैं शिकायत नहीं करता।"

"ठीक! ईश्वर को धन्यवाद है। अच्छा, अब वह बात सुनाओ, जिसके लिए इतने विलम्ब से यहाँ आये हो।"

"मैं जल्दी नहीं आ सका; मठ का सारा प्रबन्ध मैंने अपने हाथ में ले रक्खा है।"

"अच्छा, सुनाओ!"

"सम्राट् ड्यूक-डी-अंजो को मदद भेज रहे हैं, ड्यूक महाशय।"

"वाह! यह तो हम गत तीन वर्षों से सुन रहे हैं।"

"हाँ, पर इस बार यह निश्चित है। आज सुबह दो बजे महाशय-डी-जायस रून के लिए रवाना हो गये है। वह डीप में जहाज़ पकड़ेंगे और अपने साथ तीन हजार आदमी एंटवर्प ले जायगे।"

"ओहो। किसने तुमसे ऐसा कहा है, बोरोविले?"

"मैंने नवार जानेवाले एक आदमी से सुना है।"

"नवार जानेवाले आदमी से ! हेनरी के पास जानेवाले ?"

"हाँ, महाशय।"

"कौन भेज रहा है उस आदमी को ?"

"सम्राट्, एक पत्र देकर।"

"उसका नाम क्या है ?"

"राबर्ट ब्रिकेट; वह गोरेनफ़्लोट का पक्का दोस्त है।"

"और वह सम्राट् का सन्देश-वाहक है ?"

"हाँ, मुझे इसका निश्चय है, क्योंकि उसने हमारे साधुओं में से एक को भेजकर सम्राट् की चिट्ठी मँगायी थी।"

"और उसने आपको पत्र दिखाया नहीं ?"

"सम्राट् ने उसे वह पत्र नहीं दिया; उन्होंने अपने ही सन्देश-वाहक के हाथ उसके पास भेजा है।"

"हमें वह पत्र प्राप्त करना होगा।"

"अवश्य।" डचेज़ ने कहा।

"यह बात तुम्हे क्यों नहीं सूझी ?" मेनीविले ने कहा।

"मैंने यह बात सोची थी, और अपना एक ऐसा आदमी ब्रिकेट के साथ भेजना चाहता था, जो पूरा भीमकाय है; पर उसने सन्देह करके उसे वापस कर दिया।"

"तुम्हें खुद जाना होगा।"

"यह तो असम्भव है !"

"क्यों ?"

"इसलिये कि वह मुझे जानता है।"

"साधु के रूप में जानता होगा, कप्तान के रूप में नहीं।"

"क़सम खाकर कहता हूँ, मैं नहीं जानता; रावर्ट ब्रिकेट की आँखें ऐसी हैं कि उन्हे देखकर घबरा जाना पड़ता है।"

"और उसका हुलिया क्या है?"

"वह लम्बा-सा आदमी है—सारे शरीर में नसें, मांस-पेशियाँ और हड्डियाँ ही हैं—बड़ा चालाक, नक़लची और अल्पभाषी है।"

"ओह, हो! और तलवार चलाने में भी पटु है?"

"अद्भुत रूप से।"

"लम्बे मुँह का आदमी है?"

"महाशय, उसका मुँह सब तरह का है।"

"महन्त का पुराना दोस्त है?"

"वह तभी से उसका दोस्त है, जब वह केवल एक साधु थे।"

"ओह, मुझे एक सन्देह हो गया है, और इसे दूर करना होगा। बोरोविले, आपको सीज़न—भाई साहब के पास—जाना होगा—"

"लेकिन मठ का क्या होगा?"

"आप गोरेनफ़्लोट से कोई बहाना कर दीजिए; वह आपकी बात का विश्वास करता है।" मेनीविले ने कहा—"और आप भाई साहब से महाशय-डी-जायस की यात्रा के सम्बन्ध में जो-कुछ भी जानते हैं, कहिएगा।"

"अच्छ, महाशय।"

"और नवार?" डचेज़ ने कहा।

"ओह, उसके लिये मैं स्वयं तैयार हूँ।" मेन ने कहा— "मेरे लिये बढ़िया घोड़ा कसवाओ, मेनीविले।" इसके बाद उसने मन-ही-मन में सोचा—"क्या वह अभी तक जीता होगा? हाँ, वही होगा।"

---

# चौंतीसवाँ परिच्छेद

—:⁂:—

## लैटिन-विद् चिको

दोनों युवकों के चले जाने पर चिको बड़ी शीघ्रता से आगे बढ़ा, किन्तु ज्यों ही वे घाटी की आड़ में चले गये, वह पहाड़ी की कगर पर रुक गया, और लगा चारों ओर नजर दौड़ाकर देखने। फिर किसी को न देखकर वह गर्त के किनारे बैठ गया और एक पेड के सहारे उठंगकर अपने ही शब्दों में अपने 'अन्त करण की परीक्षा' करने लगा। उसके पास इस समय दो थैलियाँ थीं, क्योंकि उसने देखा कि जो पैकेट उसे मिला है, उसमें पत्र के अतिरिक्त रुपये भी हैं। वह राजकीय थैली थी, जिसके कोनों पर 'हेनरी' के प्रथमाक्षर के बेलबूटे कढ़े हुए थे।

"बहुत अच्छी चीज़ है!" चिको ने थैली को ध्यान से देखते हुए कहा—"सम्राट् के हक़ में तो यह शोभा की चीज़ है। उनका नाम और शस्त्र-चिह्न इस पर अङ्कित हैं। उनसे बढ़ कर दयालु या मूर्ख कोई हो ही नहीं सकता। यह निश्चय है कि मैं उन्हें कुछ भी नहीं बना सकूंगा। मुझे आश्चर्य तो इस बात पर अधिक होता है कि उसी थैली पर उन्होंने इस पत्र की भी बेल क्यों नहीं कढ़वा दी, जो मैं उनके बहनोई के पास ले जा रहा हूँ। अब मैं देखूँ तो कि उन्होंने कितना खर्च कर दिया है। एक सौ क्राउन!—इतनी ही रक़म मैंने गोरेनफ़्लोट से उधार ली है। ओह, हमें निन्दा नहीं करनी चाहिए कि यह छोटी-सी गठरी है। इसमें पाँच गड्डी सोने के स्पेनी सिक्के बंधे हैं। अच्छा, यह तो बड़ी नाज़ुक बात है। बड़ी नम्रता दिखायी हेनरीकट ने। पर थैली देखकर मुझे क्रोध आ रहा है; अगर मैं इसे पास में रक्खूँ, तब तो मेरे सिर पर उड़नेवाली चिड़िया भी मुझे पहचान लेगी कि मैं राजदूत हूँ।

यह कहकर उसने जेब से गोरेनफ़्लोट की थैली निकाली और सम्राट् के भेजे हुए रुपये उसमें रख लिये। फिर थैली में एक पत्थर लपेटकर उसे उस नदी में फेंक दिया, जो उसके पाँवों के नीचे ही बह रही थी।

"यह तो मेरे लिये हुआ; अब हेनरी के लिये कुछ करना है।" चिको ने पत्र हाथ में लिया और बड़ी शान्ति से मुहर खोलकर लिफ़ाफ़े को भी गठरी के बाद जलाशय में फेंक

दिया। "अब पढ़ना चाहिए।" कहकर चिको ने निम्नलिखित पत्र पढ़ा—

प्यारे भाई,

आपने जो हमारे स्वर्गीय बन्धु, सम्राट् चार्ल्स नवम के प्रति प्रगाढ़ प्रेम का अनुभव किया है, वह अब भी लावर में, और विशेषतः मेरे हृदय में, विद्यमान है, इसलिए मुझे आपको दुःखद बातों के सम्बन्ध में लिखते हुए हिचकिचाहट हो रही है। तो भी आप दुर्भाग्य के विरुद्ध काफ़ी दृढ़ता रखते हैं, इसलिए ऐसी बातें आपको लिखते हुए विकल्प नहीं कर रहा हूँ, जो केवल मित्र से ही कही जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त सावधान कर देने में मेरा स्वार्थ है—इसमें मेरी और साथ ही आपकी इज़्ज़त का सवाल है, मेरे भाई। एक बात मे हम दोनों परस्पर मिलते-जुलते हैं, वह बात यह है कि हम दोनों ही शत्रुओं के द्वारा घिर गये हैं। चिको आपको समझायेगा।

"चिको समझायेगा," चिको ने कहा—"या स्पष्ट कर देगा, जो एक अनोखा सौन्दर्य है।"

"आपका नौकर महाशय-डी-तूरेन आपके दरबार में प्रति दिन अपमान-जनक कार्य करता है। ईश्वर करे, मै आपके मामलों में, सिवा उसके कि जब आपकी इज़्ज़त का सवाल हो, कोई दख़ल न दूँ; किन्तु आपकी स्त्री को, जिन्हें अफ़सोस है कि मैं बहन कहता हूँ, आपकी जगह उसी सावधानी से कार्य करना चाहिए, जैसे मैं करता हूँ। मेरे ख़याल में वे ऐसा नहीं कर रही हैं।

"ओह, हो!" चिको ने लैटिन-भाषा में कहना जारी रक्खा—"यह तो मुश्किल है।"

इसलिए मैं आपको परामर्श देता हूँ कि मार्गो और तूरेन के बीच जो पत्र-व्यवहार हो, उस पर दृष्टि रक्खें, ताकि वह बोर्बन के घराने को लज्जित न करें। ज्योंही आपको इस तथ्य का निश्चय हो जाय; ज्योंही चिको मेरे पत्र का आशय आपको समझा दे, त्योंही तथ्यों की जाँच शुरू कर दीजिए।

"मैं घ्या समझ सकता हूँ।" चिको ने कहा—"अच्छा, अब आगे बढ़ें।"

अगर भाई, आपके उत्तराधिकारी की यथार्थता में तनिक भी सन्देह उत्पन्न हुआ, तो यह बड़ी ही दारुण विपत्ति की बात होगी—यह एक ऐतिहासिक विचार है, जिसका विचार करने से ईश्वर ने मुझे रोक दिया है; क्योंकि अफ़सोस, मैं पुनः अपने वंश में न रहने के लिये विवश हूँ।

दो सहकारी अपराधी ऐसे हैं, जिनसे मैं भाई और सम्राट् के रूपमें आपको सावधान करता हूँ, और जो साधारणतः लाइना-नामक किसी सुदूरस्थ देहाती मकान में शिकार का बहाना करके मिलते हैं। यह मकान षड्यंत्रों का केन्द्र है, जिससे गाइज़ अपरिचित नहीं हैं, और आप उस अद्भुत प्रेम की बात जानते हैं जिसमें पड़कर मेरी बहन ने हेनरी-डी-गाइज़ का पीछा किया था। मैं आपको आलिङ्गन करता हूँ, और आपको सदा, सब मामलों में सहायता देने को तैयार हूँ; तब तक आप चिको के परामर्श से काम करे, जिसे मैं आपकी सेवा मे भेज रहा हूँ।

"चिको की ही आफ़त है," चिको ने कहा—"मैं नवार-सम्राट् का मंत्री नियुक्त किया गया हूँ! यह तो मुझे बुरा व्यापार प्रतीत होता है, और एक बुराई से भागकर मैं दूसरी और भी निकृष्ट बुराई में पड़ने जा रहा हूँ। वास्तव में मुझे मेन को अधिक पसन्द करना चाहिए। पर पत्र बड़ी चतुरता के साथ लिखा गया है और यदि हेनरीवट और पतियों की तरह होगा, तो इस पत्र को पढ़कर वह अपनी स्त्री से लड़ बैठेगा। साथ ही तूरेन, गाइज़ और स्पेन से भी वह बिगाड़ कर बैठेगा। वास्तव में यदि हेनरी-डी-वैलोई नवार की स्थितियों से पूर्णतः अभिज्ञ है, तो वहाँ उसका कोई गुप्तचर अवश्य होगा, और वही गुप्तचर हेनरीवट को क्रुद्ध बनाने जा रहा है। फिर," वह कहता गया—"इस पत्र के साथ अगर मैं किसी स्पेनी, लोरेन, बियर्नाई या फ़्लेमिंग से मिला, तो मेरी शामत आ जायगी, और वह उत्सुक हो उठेगा कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ; और मैं यदि यह बात भूल जाऊँ कि इसका मौक़ा है, तो मैं बड़ी ही मूर्खता करूँगा। सब से अधिक मैं बोरोमे पर सन्देह करता हूं। वह कोई-न-कोई चाल चल सकता है। इसके अतिरिक्त, मैंने सम्राट् से यह कार्य करने के लिये कहते समय क्या चाहा था?—शान्ति। और अब मैं नवार-सम्राट् को उसकी स्त्री से लड़ाने के लिये जा रहा हू। कुछ भी हो, मेरा काम यह नहीं है कि मैं ऐसे घातक शत्रु पैदा कर लूँ, जो मुझे सुख-पूर्वक अस्सी वर्ष की

अवस्था भोगने में बाधा पहुँचाएँ। चलो, अच्छा ही हुआ; जवानी का ही जीवन सुखद होता है। पर यह भी तो सम्भव है कि महाशय-डी-मेन की कटार मेरी प्रतीक्षा कर रही हो। नहीं, सभी बातों के उभय पक्ष होते हैं। मैं अपनी यात्रा जारी रक्खूँगा; पर ऐसी सावधानी रक्खूँगा कि यदि कोई मुझे मार डाले, तो मेरे पास उसे केवल रुपये ही मिलें। जो-कुछ मैंने शुरू किया है, उसे समाप्त करके छोड़ूँगा; मैं इस सुन्दर पत्र का अनुवाद लैटिन-भाषा में कर लूँगा, और इसी रूप में इसे याद कर लूँगा। फिर मैं एक घोड़ा ख़रीदूँगा, क्योंकि जुविसी से पा तक के सफ़र में मुझे बायें के पहले दाहिना पाँव रखना पड़ेगा; पर पहले मैं इस पत्र को नष्ट कर दूँगा।"

उसने यह काम शुरू भी कर दिया और पत्र के अत्यन्त छोटे-छोटे टुकड़े करके कुछ तो नदी में फेंक दिये, कुछ हवा में उड़ा दिये, और शेष को ज़मीन के एक गड्ढे में गाड़ दिया।

"अब मैं लैटिन के विषय में विचार करूँगा," उसने कहा; और कार्बील पहुँचने तक वह इसी में लगा रहा। वहाँ पहुँचकर उसका ध्यान गिरजों और रेस्टोरेंटों की ओर कुछ आकर्षित हुआ, क्योंकि वहाँ के व्यंजनों की सुगन्धि ने उसकी क्षुधा को और भी वर्द्धित कर दिया। यहाँ हम उस खाने या घोड़ा ख़रीदने का ज़िक्र नहीं करेंगे। इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि भोजन काफ़ी अच्छा रहा, और घोड़ा ख़राब।

---

# पैंतीसवाँ परिच्छेद

## झंझावात

चिको अपने टाँघन के साथ—जो उसे ले जाने के लिये काफ़ी बढ़ा था—फ़ाउण्टेनब्लो में सोने के बाद, दाहिनी ओर चला और आर्जीवल के छोटे गाँव की तरफ़ बढ़ा। उस दिन वह कुछ और सफर प्रसन्नता-पूर्वक कर सकता था, क्योंकि वह पेरिस से अधिकाधिक फ़ासले पर शीघ्रातिशीघ्र पहुँच जाना चाहता था; पर उसका टट्टू ऐसा अड़ियल सिद्ध हुआ कि उसने रुक जाने में ही बुद्धिमानी समझी। इसके अतिरिक्त अब उसने सड़क पर ऐसी कोई बात नहीं देखी थी, जिससे उसके मनमें सन्देह उत्पन्न होता। किन्तु चिको कभी

केवल वाह्य-दृष्टि पर विश्वास करनेवाला आदमी नहीं था। नींद लेने के पूर्व उसने बड़ी सावधानी के साथ उस शयन-गृह का निरीक्षण किया, जिसमें उसे सोना था। उसे कई सुन्दर कमरे दिखलाये गये, जिनमें तीन-चार दरवाज़े थे, किन्तु उसके विचार से उन कमरों में दरवाज़े बहुत अधिक थे, और वे काफ़ी रूप में सुरक्षित नहीं थे। होटलवाले ने हाल ही में एक बड़े कमरे की मरम्मत समाप्त की थी, जिसमें केवल एक ही दरवाज़ा था, जो ज़ीने की तरफ़ खुलता था और जिसके अन्दर की ओर ज़बर्दस्त चटखनियाँ लगी हुई थीं। चिको को उस कमरे में एक पलँग बिछी हुई मिली, जिसे आरम्भ ही में उसने अन्य शानदार कमरों की अपेक्षा अधिक पसन्द किया था।

यद्यपि होटल देखकर यही मालूम होता था कि वह लगभग ख़ाली-सा ही रहता है, तो भी उसने दरवाज़े में अन्दर से ताला लगा दिया, किवाड़ के बग़ल में एक भारी मेज़ लगा दी और उसके दराज़ निकालकर ऊपर रख दिये। इसके बाद उसने अपनी थैली तकिये के नीचे रक्खी, और तीन बार सम्राट् के पत्र का लैटिन अनुवाद दुहराया। हवा के झोंके अत्यन्त वेग के साथ चल रहे थे, जो पार्श्ववर्ती वृक्षों से टकराकर भयानक आवाज़ पैदा कर रहे थे। पलंग के पास ही लैम्प जल रहा था। सोने के पहले—और अंशतः सोने के लिये भी—उसने एक अद्भुत-सी पुस्तक पढ़ी, जो बार्डिऊ के किसी मानटेन या मानटेनी नामक कोतवाल की लिखी हुई थी। यह पुस्तक सन् १५८१ ई०

में बार्डिऊ में छपी थी। इसके आरम्भिक दो अध्यायों में तत्कालीन प्रख्यात 'निबन्ध' थे। दिन में इसका पढ़ना काफ़ी दिलचस्पी का कारण हो सकता था; किन्तु, पन्द्रह मील तक घोड़े पर सफ़र किये हुए आदमी के लिये भी उसे जाग्रत रखने में काफ़ी उचाट पैदा करनेवाला था। चिको इस पुस्तक को बहुत पसन्द करता था, और पेरिस से चलते समय उसने इसे अपनी जेब में डाल ली थी। इसके लेखक से चिको का व्यक्तिगत परिचय था। कार्डिनल-डू-पेरों इसे ईमानदारों का धर्म-ग्रन्थ कहा करता था, और चिको ने भी इसे अपना धर्म-ग्रन्थ ही बना रक्खा था। तो भी, आठवाँ अध्याय पढ़ते-पढ़ते वह गम्भीर-निद्रा में मग्न हो गया।

वायु का तीव्र प्रवाह घर के बाहर बच्चों के रोदन की हुंकार की भाँति और कभी-कभी स्त्री को फटकारनेवाले पुरुष की डाँट की तरह चल रहा था। चिको ने सोते-सोते यह स्वप्न देखा कि यह झंझावात धीरे-धीरे उसके निकट आ रहा है। सहसा हवा के एक प्रबल झोंकेने अपनी दृढ़ ताक़त से कमरे की चटखनियाँ और ताले तोड़ दिये, और मेज़ के फिसल उठने के कारण दराज़ लैम्प पर जा गिरी, जिससे वह बुझ गयी और मेज़ के पड़ने पर चकनाचूर हो गयी।

चिको में जरा-से खटके पर जाग उठने का गुण था, और वह तुरन्त सजग होकर यह समझ गया कि वहाँ से हटकर दरवाज़े के सामने आने के बजाय कमरे के पीछे कोने में छिप

रहना अधिक उत्तम होगा। पीछे खिसकते समय उसने बायें हाथ से क्राउनों की थैली सँभाली और दाहिने हाथ में तलवार की मूठ पकड़ी। उसने आँखें फाड़-फाड़कर देखा; चारों ओर भयानक अन्धकार छा रहा था। उसने ध्यान से सुना, तो मालूम हुआ कि चतुर्दिक-पवन-प्रवाह से कमरे की प्रत्येक चीज़ टुकड़े-टुकड़े हो रही है; कुर्सियाँ गिर रही हैं, मेज़ दराज़ों के बोझ से टूटी जा रही है। चूँकि वह इस बात को समझ गया कि वह ओलिम्पस* के देवताओं के विरुद्ध कुछ भी करने में समर्थ नहीं हो सकता, इसलिये वह चुपचाप अपनी नंगी तलवार आगे को बढ़ाये हुए कोने में खड़े रहकर ही सन्तुष्ट था, जिससे अगर कोई पौराणिक देवता आ भी जाय, तो उसके दो टुकड़े हो जायँ। अन्ततः उस प्रबल झंझावात का शोर क्षण भर के लिये रुका, और चिको ने इस अवसर से लाभ उठाकर "दौड़ो; मदद करो!" की आवाज़ लगायी।

चिको इतने ज़ोर से चिल्लाया कि मालूम हुआ कि तूफ़ान उसकी आवाज़ सुनकर ठिठक गया; जैसे वरुण देवता† ने हुक्म देकर प्रवाह रोक दिया हो। छः-सात मिनट में चारों

---

*पर्वत-विशेष जिसपर ग्रीक गाथाओं के अनुसार उनके देवता निवास करते हैं।

†ग्रीक पौराणिक गाथाओं के अनुसार पवन (तूफ़ान) का देवता भी वरुण माना जाता है, क्योंकि तूफ़ान समुद्र के कारण आता है और समुद्र (जल) के देवता वरुण हैं।

ओर की हवा थम गयी, और हाथ में लालटेन लिये हुए होटल का मालिक आ उपस्थित हुआ। प्रकाश में देखने पर वह स्थान युद्ध-स्थल-सा प्रतीत होता था। दराज़ उलटे-पुलटे पड़े थे—मेज़ टूट गयी थी। किवाड़ केवल एक क़ब्ज़े के आधार पर टिका हुआ था, चटखनियाँ टूट गयी थीं, तीन-चार कुर्सियाँ फ़र्श पर इस प्रकार पड़ी थी कि उनके पाँव ऊपर की तरफ़ उठे हुए थे, और मेज़ पर रक्खा हुआ मर्तबान टुकड़े-टुकड़े होकर फ़र्श की शोभा बढ़ा रहा था!

"ओह, यहाँ तो नरक का दृश्य उपस्थित हो रहा है?" चिको ने होटलवाले को रोशनी में पहचानकर उच्च स्वर से कहा।

"महाशय," होटलवाले ने विनाश का भयानक दृश्य देखकर कहा—"हुआ क्या?"

"यह तो बतलाइये, दोस्त, आपके इस मकान में कितने राक्षस रहते हैं?" चिको ने पूछा।

"ओह, ईशू, कैसा बुरा मौसम है!" होटलवाले ने करुण स्वर में कहा।

"पर चटखनियाँ ज़रा भी नहीं रुकीं; यह मकान कार्ड-बोर्ड का बना मालूम होता है। मैं तो यहाँ से चला जाऊँगा—इससे तो सड़क के किनारे पड़ रहना ज़्यादा अच्छा है।"

"ओह, मेरा दुर्भाग्य!" होटलवाले ने ठण्डी साँस लेकर कहा।

"पर मेरे कपड़े क्या हुए ? वे तो इसी कुर्सी पर थे।"

"आपके कपड़े, महाशय ?" होटलवाले ने निर्दोष-भाव से कहा—"अगर वे यहाँ थे, तो अब भी यहीं होने चाहिएँ।"

"क्या ! 'अगर वे यहाँ थे !' क्या आप समझते हैं कि कल मैं यहाँ इसी पोशाक में आया था, जो पहने हुए हूँ ?"

"महाशय," होटलवाला ऐसे तर्क का कोई उत्तर न पा सकने के कारण रिक्त-भाव से बोला—"मैं जानता हूँ कि आप कपड़े पहने हुऐ थे।"

"यह सौभाग्य की बात है कि आप इसे स्वीकार करते हैं।"

"लेकिन—"

"लेकिन क्या ?"

"हवा ने सब चीज़ों को तितर-बितर कर दिया है।"

"ओह ! यह सफ़ाई दी जा रही है !"

"देखिए।"

"लेकिन दोस्त, जब हवा अन्दर आती है, तो वह बाहर से आती है, और अगर हवा ने यह सर्वनाश किया है, तो वह यहाँ ( अन्दर ) आयी होगी।"

"अवश्य, महाशय।"

"अच्छा, तो हवा को यहाँ अन्दर आते समय मेरे कपड़े बाहर ले जाने की बजाय दूसरों के कपड़े यहाँ लाने चाहिए थे।"

"चाहिए तो यही था; पर हुआ इसके विपरीत मालूम होता है।"

"पर यह क्या ? हवा कीचड़ में टहलती हुई आयी होगी, क्योंकि फ़र्श पर यह पैरों के निशान मौजूद है।" कहकर चिको ने होटलवाले को कीचड़ से सने बूटों का फ़र्श पर निशान दिखलाया, जिसे देखकर होटलवाले का दम खुश्क हो गया। "अब, दोस्त," चिको ने कहना जारी रक्खा—"मैं आपको यह सलाह देता हूँ कि आप इन हवाओं की चौकसी रक्खें, जो होटल में इस तरह घुस आती हैं, और दरवाज़ा तोड़कर कमरों में प्रविष्ट हो आगन्तुकों के कपड़े लेकर लम्बी बनती हैं।"

होटलवाला पीछे दरवाजे की ओर हट गया। "आप मुझे चोर कहते हैं!" उसने कहा।

"मेरे कपड़ों की जवाबदेही आप पर है, और वे चोरी गये हैं, इससे तो आप इन्कार नहीं करेंगे ?"

"आप मेरी बेइज़्ज़ती करते हैं।"

चिको ने घुड़कने-का सा मुँह बनाया।

"दौड़ो!" होटलवाले ने चिल्लाकर कहा—"दौड़ो, मदद करो!"

चार आदमी लाठी लिये हुए तुरन्त आ पहुँचे।

"ओह, पुरवा, पछवा और उत्तरी, दक्खिनी हवाएँ यही हैं," चिको ने कहा—"चूँकि अवसर ऐसा ही आ गया है, इसलिये मैं पहले दुनियाँ से उत्तरी हवा का नाम मिटा देना चाहता हूँ; यह मनुष्य-जाति की एक बड़ी सेवा होगी—फिर

संसार में सदा वसन्त ऋतु का ही साम्राज्य छाया रहेगा।" और उसने अपनी लम्बी तलवार लपकाकर सबसे पास खड़े हुए आक्रमणकारी को एक ऐसा हाथ मारा कि यदि वह हवा के झोंके की सहायता से तुरन्त पीछे न हट गया होता, तो तलवार उसके सीने से पार हो जाती। दुर्भाग्य-वश पीछे हटते समय उसकी नज़र चिको की ओर ही लगी रही, जिससे उसने यह नहीं देखा कि पीछे ज़ीना है और पीछे हटते ही वह धड़ाम से सीढ़ियों पर गिरकर लुढ़कता हुआ नीचे चला गया। यह पराजय शेष तीनों के लिए एक चेतावनी थी। वे तुरन्त उस रास्ते से इस तरह भाग निकले, जैसे प्रेत जाल से भागते हैं। पर अन्तिम भगोड़ा अपने साथियों के पीछे रह गया था, और वह होटलवाले से कुछ फुसफुसाकर कहने के बाद भागा।

"आपके कपड़े मिल जायँगे।" होटलवाले ने गुनगुनाकर कहा।

"मैं तो बस यही चाहता हूँ।"

"वे आपके पास आ जायँगे।"

"बहुत अच्छा। मैं यहाँ से नंगा नहीं जाना चाहता; इसलिये मुझे यही उचित प्रतीत होता है।"

कपड़े शीघ्र ही प्रकट हो गये, पर वे खराब-से हो गये दीखते थे।

"ओह! आपके ज़ीने में कीलें लगी हैं; कैसी शैतान यह हवा थी।" चिको ने कहा—"पर कोई हर्ज नहीं; यह ई। ६।-

जनक पुनर्प्राप्ति है । मैं आप पर कैसे सन्देह कर सकता था ?—आप तो चेहरे से ही बड़े ईमानदार मालूम होते हैं ।"

होटलवाला बड़े प्रिय ढंग से मुस्कराया। "अब," उसने कहा—"मैं समझता हूँ, आप सोयेंगे।"

"नहीं, धन्यवाद; मैं काफ़ी सो चुका। अपनी लालटेन छोड़ जाइये, मैं पुस्तक पढ़ूँगा।"

चिको ने फिर भारी दराज़ें किवाड़ों के पीछे लगा दीं, और पलँग पर लेटे-लेटे सूर्योदय तक पढ़ता रहा। इसके बाद उसने अपना घोड़ा मँगवाया और होटलवाले का किराया चुकाकर मन-ही-मन यह कहते हुए आगे चला कि "आज रात को देखेंगे!"

---

## छत्तीसवाँ परिच्छेद

——:o:——

### चिको की यात्रा का विवरण

चिको मन-ही-मन अपने आपको इस बात पर बधाई देते हुए आगे बढ़ता जा रहा था कि 'उसने रात को ठण्डे मिज़ाज और धैर्य से काम लेकर बहुत अच्छा कार्य किया।

"लेकिन," उसने सोचा—"वे ज़ोर से गुर्रानेवाले भेड़िये को कभी नहीं पकड़ते, इसलिये यह बात क़रीब-क़रीब निश्चित है कि आज वे मेरे लिये किसी और शैतानियत का आविष्कार करेंगे, मुझे सतर्क रहना चाहिए।"

इस विचार का परिणाम यह हुआ कि उस दिन चिको ने अद्भुत यात्रा की। प्रत्येक वृक्ष, प्रत्येक टीला और प्रत्येक

दीवार उसके निरीक्षण की चीज़ बन गयी। उसने राहियों के साथ अगर कोपपूर्ण नहीं, तो कम-से-कम आत्म-रक्षा-पूर्ण व्यवहार अवश्य किया। पेरिस से जानेवाले चार पंसारी शराब की घान और सूखे फलों का आर्डर देने आलियन्स जा रहे थे। उन्होंने चिको को—जिसने अपने को बार्डिआ का एक वस्त्र-व्यवसायी बतलाया था—अपने साथ यात्रा करने के लिये कहा। इस टोली में चूँकि चार क्लर्क और आ मिले, जो अपने मालिकों के पीछे जा रहे थे, इसलिये यह अधिक भयानक बन गयी। यह एक छोटी-मोटी फ़ौज-सी बन गयी थी, और यह विशालता की अपेक्षा जोश में भी कम भयानक नहीं मालूम होती थी, क्योंकि पेरिस के दूकानदारों में संघ ने ऐसा युद्धात्मक जोश भर दिय था कि वे शान्त मालूम नहीं होते थे। यह लोकोक्ति सदा सत्य सिद्ध होती है, जिसमें कहा गया है कि तीन झुण्ड मिलकर एक अकेले बहादुर की अपेक्षा अधिक निर्भीक होते हैं। अन्ततः वे उस नगर में जा पहुँचे, जहाँ उन्होंने शाम को खाने और सोने का निश्चय कर रक्खा था। उन्होंने खाना खाया और प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने कमरे में गया।

चिको, जिसने अब तक अपने साथियों को हँसी-मजाक से प्रसन्न रखने और मस्केट तथा बर्गण्डी की शराब पिलाने में कुछ कसर नहीं रक्खी थी, प्रातःकाल पंसारियों के साथ यात्रा करने का प्रबन्ध करके सो रहा। उन चार सह-यात्रियों के

द्वारा वह अपने को पूर्णतः सुरक्षित समझता था, जिनके कमरे उसीके कमरे के पास एक ही बरामदे से मिले थे। वास्तव में उन दिनों सड़कों की यात्रा सुरक्षित नहीं समझी जाती थी, और यात्री-लोग परस्पर एक-दूसरे को ज़रूरत पड़ने पर मदद देने का वचन देते थे। चिको दरवाज़ों की चटखनियाँ लगाकर और दीवार को चारों ओर से ठोककर—जिस से सन्तोष-जनक आवाज़ निकली—सोने के लिये बिछौने पर लेट गया। लेकिन आँख लगते ही एक ऐसी घटना हो गयी, जिसका पूर्व-ज्ञान स्वयं भविष्यविद् स्फिक्स* को भी नहीं हो सकता था; चिको के मामले में शैतान का हाथ था, जो संसार-भर के स्फिक्सों से अधिक चालाक होता है।

साढ़े नौ बजे के लगभग उस कमरे के दरवाज़े में एक धक्का लगा, जिसमें सब क्लर्क सोये हुए थे। उनमें से एक ने बड़ी ही विकृत मुख-मुद्रा बनाकर दरवाज़ा खोला और सामने होटलवाले को खड़ा पाया। "महाशयो," सरायवाले ने कहा—"मैं बड़ी ख़ुशी से यह बात देख रहा हूँ कि आप लोग कपड़े पहने हुए सो रहे हैं, क्योंकि मैं आपको आश्चर्यान्वित कर देना चाहता हूँ। आपके मालिक-लोग भोजन के समय राज-नीतिक चर्चा छिड़ जाने के कारण बहुत क्रुद्ध हो गये थे, और ऐसा मालूम होता है कि शहर-कोतवाल ने उनकी वे बातें सुनकर रिपोर्ट कर दी है। अब, चूँकि हम लोग बड़े ही राज-

*ग्रीक देवता।

श्यक्त हैं, इसलिये मेयर ने ख़ुफ़िया पुलिस भेज दी, जो आपके मालिकों को गिरफ़्तार करके ले गयी है। जेलख़ाना होटल-डी-विले के पास है। आप लोग फ़ौरन रवाना हो जाइये! आपके ख़च्चर तैयार हैं; आपके मालिक यहाँ से रवाना होकर आपको रास्ते में मिल जायँगे।"

चारों क्लर्क खरगोश की तरह काँप उठे; और दौड़ते हुए नीचे जाकर ख़च्चरों पर सवार हो वापस पेरिस की ओर लपके। जाते-जाते वे सरायेवाले से यह कह गये कि वह उनके मालिकों को, अगर वह हौटल को लौटें, सूचित कर दे कि वे पेरिस को रवाना हो गये हैं।

चारों के चले जाने के बाद सरायवाले ने बरामदेवाले कमरों में से एक में धीरे से धक्का दिया। व्यापारियों में से एक ने उच्च स्वर से पूछा—"कौन है?"

"चुप रहिए!" सरायवाले ने कहा—"और चुपचाप दरवाज़े पर आ जाइए।"

व्यापारी दरवाज़े के पास आ गया; पर खोलने के पहले उसने फिर पूछा—"आप कौन हैं?"

"मैं सराय का मालिक हूँ; आप मेरी आवाज भी नहीं पहचानते?"

"क्यों, मामला क्या है?"

"मालूम होता है, खाते समय आपने आज़ादी से बातें की थीं, और किसी गुप्तचर ने मेयर को इसकी सूचना दे दी।

उन्होंने आपकी गिरफ़्तारी के लिये पुलिस भेजी है। सौभाग्य से, मैंने आपकी बजाय उन्हें आपके साथी क्लर्कों का कमरा दिखला दिया, इसलिये वे ऊपर उन्हें गिरफ़्तार करने में लगे हैं।"

"ओह, हो! आप कह क्या रहे हैं?"

"सच कह रहा हूँ। जल्दी कीजिए, और जैसे हो सके, निकल भागिए!"

"लेकिन मेरे साथी?"

"ओह, मैं उनसे भी कह दूँगा।"

जब व्यापारी कपड़े पहनने लगा, तो सरायवाले ने दूसरों को भी जा जगाया, और शीघ्र ही वे सब पाँव दबाकर इस तरह भागे कि उनके दौड़ने की आवाज़ किसी को सुनायी नहीं पड़ी।

"बेचारा पोशाकवाला!" उन्होंने कहा—"सारी बला उसीके सिर पड़ेगी; पर सच बात तो यही है कि सबसे अधिक राजनीतिक चर्चा उसीने की थी।"

निस्सन्देह चिको को कोई चेतावनी नहीं मिली थी, और जब सब व्यापारी भाग रहे थे, तो वह गम्भीर निद्रा में मग्न था।

सरायवाला अब एक हाल में उतरा, जहाँ छः सशस्त्र आदमी—जिनमें से एक शेष पाँचों का मुखिया मालूम होता था—खड़े थे। "कहिए?" मुखिया ने पूछा।

"मैंने आपकी आज्ञा का पालन कर दिया, महाशय।"

"सराय ख़ाली हो गयी?"

"पूर्णतः।"

"वह आदमी जगा तो नहीं।"

"नहीं।"

"तुम जानते हो कि हम किसके नाम पर यह काम कर रहे हैं, और किस उद्देश्य की पूर्ति करते हैं, क्योंकि आप भी वही कार्य करते हैं।"

"निश्चय ही। इसीलिए तो मैंने अपनी शपथ पूरी करने के लिये यह क़ुर्बानी की और उस रुपये से हाथ धोया, जो यहाँ ठहरकर ये आदमी मुझे देते, क्योंकि शपथ में यह बात आती है कि 'पवित्र कैथोलिक धर्म के लिये अपना सब समान निछावर कर दूंगा'।"

"'और अपना प्राण भी,' तुम यह भूलते हो।" अफ़सर ने कहा।

"क्यों!" सरायवाले ने हाथ जोड़कर कहा—"क्या वे मेरा प्राण लेना चाहते हैं? मैं बाल-बच्चेदार आदमी हूँ।"

"तुम्हारे प्राण तो तभी लिये जायँगे, यदि तुम अन्ध-विश्वास-पूर्वक वह काम नहीं करोगे, जिसका हुक्म दिया जाता है।"

"मैं हुक्म मानूंगा।"

"तो फिर जाकर लेट रहो और किवाड़ बन्द कर लो;

तुम चाहे जो देखो या सुनो, कमरे से बाहर न निकलना, चाहे तुम्हारे मकान में आग ही क्यों न लग जाय।"

"ओह, मेरा सर्वनाश हो गया!"

"मुझे तुम्हारा नुक़सान भर देने का हुक्म हुआ है; यह लो तीस क्राउन।"

"मेरे मकान का तखमीना तीस क्राउन लगाया गया है?" सरायवाले ने करुण स्वर से कहा।

"हम तेरी एक खिड़की भी नहीं तोड़ेंगे, कायर! वाह! इस पवित्र संघ में कैसे-कैसे सूरमा मौजूद हैं?"

सरायवाला चुपचाप वहाँ से चला गया, और कमरा बन्द करके लेट रहा। इसके बाद अफ़सर ने दो आदमियों को चिको की खिड़की पर तैनात किया, और तीन साथियों को लेकर खुद उसके कमरे के दरवाज़े पर गया।

"तुम हुक्म जानते हो," अफ़सरों ने कहा—"अगर वह दरवाज़ा खोलकर हमें तलाशी लेने देता है और हमें वह चीज़ मिल जाती है, जो हम चाहते हैं, तो हम उसे ज़रा भी नुक़सान नहीं पहुँचायेंगे; लेकिन अगर मामला विपरीत हुआ, तो कटार की एक वार काफ़ी होगी। पिस्तौल चलाने की ज़रूरत नहीं, समझे; इसके अतिरिक्त पिस्तौल चलाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी, क्योंकि उस एक के विरुद्ध हम चार हैं।"

अफ़सर ने दरवाज़े में धक्का मारा।

"कौन है?" चिको ने पुकारा।

"तुम्हारा पंसारी मित्र; सुनिये, एक जरूरी बात कहनी है।"

"ओह!" चिको ने कहा—"रात की शराब से तुम्हारी आवाज़ में ताक़त आ गयी मालूम पड़ती है!"

अफ़सर ने अपनी आवाज़ धीमी कर दी और स्निग्ध स्वर में बोला—"जल्दी खोलिए, दोस्त।"

"तुम्हारे किराने से पुराने लोहे की बू क्यों आती है!"

"ओह! तुम खोलोगे नहीं?" अफ़सर ने अधीर होकर कहा—"अच्छा, तो यह दरवाज़ा तोड़कर गिरा दो।"

चिको खिड़की की ओर दौड़ा, पर नीचे उसने दो चमकती हुई तलवारें देखीं।

"मैं पकड़ लिया गया।" उसने कहा।

"ओह, हो," अफ़सर ने खिड़की खोलने की आवाज़ सुनकर कहा—"खिड़की से कूदने में डरते हो, ठीक ही है। अब खोल दो।"

"सचमुच! नहीं; दरवाजा पुख्ता है, और तुम तोड़ने की आवाज़ करोगे, तो मुझे मदद मिलेगी।" कहकर चिको व्यापारियों को बुलाने लगा।

अफ़सर हँस पड़ा। "बेवकूफ़!" उसने कहा—"तुम समझते हो, हमने तुम्हारी मदद के लिये उन्हें छोड़ ही रक्खा है? अपने आपको धोखा मत दो; तुम अकेले हो, इसलिये सुस्थिर हो जाओ। सिपाहियो, शुरू करो!"

चिको ने दरवाज़े पर तीन ज़ोर-जोर के धक्कों की आवाज़ सुनी।

"तीन बन्दूक़-धारी हैं, और एक अफ़सर," उसने कहा; नीचे सिर्फ़ दो तलवारें हैं। कुदाई पन्द्रह फ़ीट की है; है तो यह मुश्किल; पर मैं बन्दूक़वालों से तलवारवालों को ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

अपनी थैली को कमर-पेटी में बाँध तलवार खींचकर वह खिड़की के पास गया। नीचेवाले दोनों आदमी अपनी-अपनी तलवारें लिये तैयार खड़े थे; किन्तु जैसा कि चिको ने सोच रक्खा था, तलवार लेकर कूदते देखकर वे दोनों व्यक्ति यह समझकर पीछे हट गये कि नीचे गिरते ही वे उस पर वार करेंगे। चिको का पैर ज्योंही ज़मीन पर पड़ा कि दोनों में से एक सिपाही ने तुरन्त अपनी तलवार उसके सीने पर चला दी। किन्तु गोरेनफ़्लोट महाशय के बख़्तर को धन्यवाद है कि तलवार उस पर लगकर शीशे की तरह टूट गयी।

"इसने बख़्तर पहन रक्खी है!" सिपाही ने कहा।

"ख़ूब," कहकर चिको ने एक पूरा हाथ चलाकर उसका सिर काट दिया।

दूसरा सिपाही अब केवल आत्म-रक्षा के विचार से चिल्ला उठा; किन्तु दूसरे ही हाथ में चिको ने उसे भी उसके साथी के पास गिरा दिया, और इस प्रकार जब अफ़सर दरवाज़ा तोड़कर अन्दर घुसा, तो उसने खिड़की के रास्ते अपने दोनों सिपाहियों को ख़ून में लथपथ और चिको को चुपचाप भागते देखा।

"इस राक्षस पर तलवार ने असर नहीं किया।" उसने कहा।

"हाँ, पर गोली तो असर करेगी!" सिपाही ने निशाना ठीक करते हुए कहा।

"नहीं; चलाओ मत; आवाज़ नहीं होनी चाहिये! इस तरह तो सारा शहर जग जायगा। हम इसे कल पकड़ेंगे।"

"ओह!" सिपाहियों में से एक ने दार्शनिकता-पूर्वक कहा—"यहाँ चार आदमी रक्खे जाने चाहिए थे; ऊपर तो दो ही आदमी बहुत थे।"

"तुम बेवक़ूफ़ हो!" अफ़सर ने कहा।

"देखें ड्यूक इसे क्या कहते हैं।" सिपाही ने अपने दिल को तसल्ली देते हुए गुनगुनाकर कहा।

---

# सैंतीसवाँ परिच्छेद

—:o*o:—

## यात्रा का तीसरा दिन

चिको चुपचाप बेखटके इसलिये चला गया कि इटैम्पे की बस्ती में मजिस्ट्रेट मौजूद था, जिससे कहकर वह अफ़सर को गिरफ़्तार करवा सकता था। इस बात के ज्ञान ने ही अफ़सर को गोली न चलवाने और चिको का पीछा न करने के लिये बाध्य किया। वह अफ़सर अपने सिपाहियों को साथ ले, दोनों मृत सिपाहियों की लाशें, उनकी तलवारों-समेत वहीं छोड़कर भाग खड़ा हुआ, जिससे देखनेवाले यही समझें कि दोनों परस्पर लड़कर मरे हैं।

चिको ने अपने पहले साथियों की व्यर्थ खोज की, और

फिर यह सोचा कि चूँकि उसके शत्रु अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुए हैं, इसलिये वह शहर में रह नहीं सकते, और इस युद्ध-कौशल के विचार से वह स्वयं शहर ही में रह गया। यही नहीं; उसने मुड़कर पास की सड़क के चौराहे से जानेवाले घोड़ों की टाप को आवाज़ सुनी और सराय को लौट आने का साहस दिखलाया। वहाँ उसने सरायवाले को अब भी उसी भयातुरतापूर्ण अवस्था में पाया, जो मूर्च्छावस्था में चिको को उसका घोड़ा कसते इस प्रकार देखता रहा, जैसे वह किसी प्रेत को देख रहा हो। चिको ने उसकी इस अवस्था का लाभ उठाया और बिना हिसाब चुकाये ही वहाँ से चलता बना; साथ ही होटलवाले को भी माँगने की हिम्मत नहीं हुई।

चिको ने दूसरी सराय में जाकर रात काटी। वहाँ ऐसे पियक्कड़ों का जमघट था, जो यह बात स्वप्न में भी नहीं सोच सकते थे कि यह लम्बा, मुस्कराता हुआ और दयालु आदमी अभी-अभी दो खून करके आया है। दिन निकलते ही वह फिर रवाना हो गया। उसके मन में क्षण-क्षण पर चिन्ता बढ़ती जा रही थी। दो आक्रमण तो विफल हुए—अब तीसरा ऐसा न हो, जो उसकी जान लेकर ही छोड़े। वृक्षों का एक सघन कुञ्ज देखकर उसके मन में ऐसी भावनाएं उत्पन्न हुईं, जो अवर्णनीय हैं; एक गहरी खाई देखकर उसे रोमाञ्च हो आया। एक ऊँची दीवार देखकर भी वह ठिठक गया। बार-बार उसके मन में यही विचार उठते थे कि आर्लियंस पहुँचकर वह सम्राट्

के पास एक सन्देश-वाहक भेजकर एक शहर से दूसरे शहर तक पहुँचाने के लिये प्रबन्ध करायेगा। किन्तु चूँकि आर्लियंस-वाली सड़क तै करने में कोई दुर्घटना नहीं हुई, इसलिये चिको फिर सोचने लगा कि ऐसा करना व्यर्थ होगा और सम्राट् उसके प्रति जो विचार रखते हैं, वह जाता रहेगा, और रक्षक साथ लेकर चलने में व्यर्थ का झगड़ा साथ लग जायगा। इसलिये वह आगे बढ़ता गया, किन्तु सन्ध्या का समय निकट आते ही उसका भय बढ़ने लगा। सहसा उसने अपने पीछे घोड़ों के दौड़ने की आवाज़ सुनी, और पीछे मुड़कर उसने सात घुड़सवारों की ओर देखा, जिनमें से चार के कन्धों पर बन्दूकें थी। वे शीघ्र ही चिको के पास आ पहुँचे, जो यह देखकर कि भागना व्यर्थ होगा, अपने घोड़े को टेढ़े-मेढ़े घुमाने लगा, जिससे यदि गोली चले—जिसकी वह प्रतिक्षण आशा कर रहा था—तो वह बच जाय। उसका विचार ठीक था, क्योंकि वे जब चिको से पचास क़दम के फ़ासले पर पहुँचे, तो उन्होंने गोली चलायी; पर चिको के बायें-दाहिने हटने ने उसे बचा लिया, और उसे एक भी गोली नहीं लगी। उसने तुरन्त लगाम छोड़ दी और वह घोड़े से फिसलकर नीचे आ गया, जिससे उसने एक हाथ में तलवार और दूसरे में कटार सुविधापूर्वक पकड़ ली। वह घोड़े से इस प्रकार फिसला, जिससे उसका सिर घोड़े के सीने की आड़ में सुरक्षित रहा।

आगन्तुक दल से प्रसन्नता की खिलखिलाहट सुनायी पड़ी,

क्योंकि उसने उसे फिसलकर गिरते देखकर समझा कि वह मर गया।

"मैंने तुमसे कहा था," मुंह पर नक़ाब डाले हुए एक सवार ने आगे बढ़ते हुए कहा—"तुम इसलिये असफल हुए कि तुमने मेरी आज्ञा नहीं मानी। इस बार मार लिया न; इसकी तलाशी लो। मुर्दा हो या ज़िन्दा, अगर यह हिले तो यहीं समाप्त कर दो।"

चिको वास्तव में धार्मिक आदमी नहीं था; किन्तु उस क्षण उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि ईश्वर कोई चीज़ है और वह उसे अपनी गोद में लेने के लिये हाथ फैला रहा है तथा अभी पाँच मिनट के अन्दर वह अपने न्यायाधीश के सम्मुख उपस्थित किया जायगा। उसने गम्भीर और तल्लीनता-पूर्ण प्रार्थना की, जो वास्तव में सुन ली गयी।

दो आदमी हाथ में तलवार लिये चिको के पास पहुंचे। उसके कराहने की आवाज से सरलतापूर्वक पता चल सकता था कि वह मरा नहीं है। किन्तु चूँकि वह आत्मरक्षा के लिये हिला-डुला तक नहीं, इसलिये उन दोनों में से जो अधिक बेवक़ूफ़ और उत्साही था, वह उसके बायें हाथ के पास आ गया; चिको की कटार इस तरह उछलकर उस आदमी के गले पर जा लगी, जैसे किसी पेच से चलायी गयी हो, साथ ही चिको के दाहिने हाथ की तलवार दूसरे सवार की छाती मे (जो भागने का प्रयत्न कर रहा था) घुस गयी।

"ओह, धोका हुआ !" मुखिया ने चिल्लाकर कहा—"यह मरा नहीं है; चलाओ अपनी-अपनी बन्दूकें !"

"नहीं, मैं अभी नहीं मरा हूँ," चिको ने, जिसकी आँखें बिजली की तरह कौंद रही थीं, चिल्लाकर कहा, और विचार की तरह द्रुतवेग से मुखिया पर टूट पड़ा।

पर दो सिपाही उसे बचाने को आगे बढ़े। चिको ने घूमकर एक को जाँघ में कटार भोंक दी।

"बन्दूक़ चलाओ !" मुखिया ने कहा।

"उसकी तैयारी के पहले," चिको ने उच्च स्वर से कहा—"मैं तेरी अँतड़ियाँ निकाल लूँगा, लुटेरे, और तेरे नक़ाब की रस्सियाँ भी काट डालूँगा, जिससे जान लूँ कि तू कौन है !"

"जमे रहो, जमे रहो, महाशय; मैं तुम्हारी मदद करूँगा !" एक आवाज़ ने कहा, जो चिको के लिये आकाशवाणी-सी प्रतीत हुई।

यह आवाज़ एक सुन्दर युवक की थी, जो काले घोड़े पर सवार उधर आ रहा था। उसके दोनों हाथों में पिस्तौलें थीं। उसने फिर चिल्लाकर चिको से कहा—"झुक जाओ, झुक जाओ !"

चिको झुक गया। एक पिस्तौल चली और एक आदमी चिको के पैरों के पास आ गिरा, दूसरी के चलने पर दूसरा आदमी लुढ़क पड़ा।

"अब दो के मुक़ाबले में हम दो हैं," चिको ने उच्च स्वर

से कहा—"दयालु युवक, एक को आप लें, एक को मैं ले रहा हूँ।" और वह नक़ाबपोश पर टूट पड़ा, जिसने क्रोध या भय से कराहकर शस्त्रकला-विद् की तरह आत्मरक्षा की।

युवक ने अपने विरोधी का शरीर पकड़कर उसे ज़मीन पर पटक दिया और पेटी से उसे बाँध दिया। चिको ने शीघ्र ही अपने शत्रु को, जो काफ़ी स्थूलकाय था, घायल कर दिया। उसके गिरते ही चिको ने उसकी तलवार पर अपना पैर रख दिया, जिससे वह वार न कर सके और उसके नक़ाब की रस्सियाँ काट दीं। "महाशय डी-मेन! कुत्ते का बच्चा! मैंने भी यही समझ रक्खा था।" उसने कहा।

ड्यूक ने कोई जवाब नहीं दिया। अधिक रक्त-स्राव होने और भूमि पर धड़ाम से गिर पड़ने के कारण उसे मूर्च्छा आ गयी। क्षण-भर सोचने के बाद चिको ने अपनी आस्तीनें चढ़ायीं, और लम्बी कटार लेकर ड्यूक का सिर काटने लिये आगे बढ़ रहा था कि इतने में उसका हाथ किसी फ़ौलादी पंजे ने जकड़ लिया और एक आवाज ने उससे कहा—"ठहरिये, महाशय; गिरे हुए शत्रु को नहीं मारा करते।"

"युवक," चिको ने जवाब दिया—"आपने मेरी जान बचायी है, और मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं, पर आज-कल के जिस सदाचार-शून्य ज़माने में हम लोग रहते हैं, उसके लिये कुछ परम उपयोगी सबक़ सुन लीजिए। जब एक व्यक्ति पर तीन दिन में तीन बार आक्रमण किया जाता है, और

जब प्रत्येक बार उसे मौत के खतरे का सामना करना पड़ता है तथा जब उसके चार-चार शत्रु बिना किसी ललकार के उस पर पीछे से इस प्रकार चार फ़ायर करते हैं, जैसे कोई पागल कुत्ते पर करता है, ऐसी दशा में युवक, वह व्यक्ति यही काम कर सकता है, जो मैं करने जा रहा हूँ।" और वह अपने कार्य के लिये उद्यत हुआ।

किन्तु युवक ने उसे फिर रोक दिया। "आपको ऐसा नहीं करना चाहिए, महाशय," उसने कहा—"कम-से-कम जब तक मैं यहाँ हूँ। न इस रूप में रक्त ही बहाना चाहिए था, जैसे आपने इस व्यक्ति को घायल करके बहाया है।

"वाह!" चिको ने आश्चर्य-पूर्वक कहा—"आप इस दुष्ट को जानते हैं?"

"यह महाशय ली-ड्यूक-डी-मेन हैं, जो कितने ही राजाओं के जोड़ के राजकुमार हैं।"

"खूब! और आप कौन हैं?"

"मैं वही हूँ, जिसने आपकी जान बचायी है, महाशय।"

"और अगर मैं अपने आपको धोका नहीं देता, तो आप ही वह व्यक्ति भी हैं, जिसने तीन दिन पहले सम्राट् के पास से मुझे पत्र लाकर दिया था।"

"ठीक है।"

"तो आप सम्राट् की सेवा में हैं?"

"हाँ, मुझे यह प्रतिष्ठा प्राप्त है।"

"और फिर भी आप महाशय-डी-मेन को बचा रहे हैं? मुझे यह कहने की आज्ञा दीजिए कि यह एक अच्छे सेवक का काम नहीं है।"

"मैं तो इसके विपरीत समझता हूँ, और मेरा यह खयाल है कि इस समय तो सम्राट् का अच्छा सेवक मैं ही हूँ।"

"शायद," चिको ने खेद-पूर्वक कहा—"शायद; पर यह समय दार्शनिकता झाड़ने का नहीं है। आपका नाम क्या है?"

"एर्नाटन-डी-कार्मेंजस।"

"एर्नाटन महाशय, हमें अब इस बड़ी लोथ के साथ क्या सलूक करना है, जिसका प्रताप संसार के किसी भी सम्राट् से कम नहीं है?"

"मैं महाशय-डी-मेन की रखवाली करूँगा, महाशय।"

"और इसके अनुचर की, जो यहाँ पड़ा सब बातें सुन रहा है?"

"यह शैतान कुछ नहीं सुन रहा है; मैंने उसे खूब मजबूती से बाँध दिया है, और उसे मूर्च्छा आ गयी है।"

"महाशय-डी-कार्मेंजस, आज आपने मेरी जान बचायी है; पर आप मेरे भावी जीवन को खतरे से भर रहे हैं।"

"मैं आज अपना कर्त्तव्य-पालन कर रहा हूँ; भविष्य का प्रबन्ध परमात्मा करेगा।"

"तो फिर जैसी आपकी इच्छा, पर इतना तो मैं भी स्वीकार करता हूँ कि निहत्थे को मारने में मुझे भी घृणा

होती है। अब विदा, महाशय। पर पहले मैं इन घोड़ों में से एक अपने लिए चुनूँगा।"

"मेरा ले लीजिए। मैं जानता हूँ कि यह आपके काम का होगा।"

"ओह, यह तो बड़ी ही कृपा है।"

"जैसी शीघ्रता के साथ आपको जाने की ज़रूरत है, वैसी जल्दी मुझे नहीं है।"

चिको और कुछ न कहकर एर्नाटन के घोड़े के पास गया और तुरन्त उसपर चढ़कर ग़ायब हो गया।

---

## अड़तीसवाँ परिच्छेद

—:*:*:—

## एर्नाटन-डी-कार्मेंजस

एर्नाटन उस युद्ध-क्षेत्र में इस घबराहट के साथ खड़ा रहा कि अब वह उन दो आदमियों को क्या करे, जो शीघ्र ही मूर्च्छा से चैतन्य होनेवाले हैं। वह खड़ा सोच ही रहा था कि उसे दो बैलों की गाड़ी उधर से गुजरती दिखलायी पड़ी। एर्नाटन ने उसके पास जाकर हाँकनेवाले से कहा कि ह्यूगोनाटों और कैथोलिकों में एक लड़ाई हुई है, जिसके फल-स्वरूप चार आदमी तो जान से मर गये, किन्तु दो अब भी जीवित हैं। किसान यद्यपि डर गया, पर उसने पहले महाशय-डी-मेन को, और फिर उसके सिपाही को गाड़ी में लादने में एर्नाटन को सहायता दी।

"महाशय," किसान ने कहा—"ये कैथोलिक थे, या ह्यूगोनाट ?"

"ह्यूगोनाट," एर्नाटन ने, जो किसान के प्रश्न करने पर पहले डर गया था, कहा।

"तब तो इन कैथोलिक-विरोधियों की तलाशी लेने में कोई हानि नहीं है न ?"

"कोई नहीं।" एर्नाटन ने जवाब दिया। उसने सोचा कि पहले राही की हैसियत से किसान ऐसा करने का अधिकारी है। उस आदमी ने फिर इन्तज़ार नहीं किया, और फ़ौरन उनकी जेबें टटोलने लगा। ऐसा मालूम होता था कि उसे निराश नहीं होना पड़ा, क्योंकि यह काम करने के बाद उसके चेहरे पर मुस्कराहट दिखायी दी, और वह अपने बैलों को इसलिये तेज़ी से हाँकने लगा कि जो माल हाथ लगा है, उसे लेकर शीघ्र घर पहुँच जाय।

इसी कैथोलिक-किसान के अस्तबल में भूसे के बिछौने पर महाशय-डी-मेन की मूर्च्छा भंग हुई। उसने आँखें खोलकर उस आदमी और उस स्थान को अवर्णनीय आश्चर्य के साथ देखा। एर्नाटन ने फ़ौरन किसान को वहाँ से विदा कर दिया।

"आप कौन हैं, महाशय ?" मेन ने पूछा।

एर्नाटन मुस्कराया।

"क्या आप मुझे पहचान नहीं रहे हैं ?" उसने कहा।

"हाँ, अब पहचान रहा हूँ; आप वही हैं, जो मेरे शत्रु की मदद के लिये आये थे।"

"हाँ; पर मैं ने ही आपके शत्रु से आपकी प्राण-रक्षा भी की है।"

"यह तो सच हो सकता है, क्योंकि मैं जीवित हूँ, यदि यह बात न हो कि उसने मुझे मरा समझकर छोड़ दिया हो।"

"नहीं; वह आपको जीवित जानकर भी चला गया।"

"तो उसने मेरे इस ज़ख़्म को घातक समझ लिया होगा।"

"मैं नहीं जानता; पर यदि मैं उसे न रोकता, तो वह एक और ऐसा हाथ मारता कि वह अवश्य घातक हो जाता।"

"पर महाशय, आपने मेरे आदमियों को मारने में उसकी मदद क्यों की?"

"यह तो सीधी-सी बात है, महाशय; और मुझे आश्चर्य है कि आप जैसा सज्जन-सा दीखनेवाला मनुष्य मेरे इस व्यवहार को नहीं समझता। संयोग-वश मैं उस सड़क पर आ गया था, और मैंने एक आदमी पर अनेक लोगों को आक्रमण करते देखा। मैं ने अकेले व्यक्ति का पक्ष लिया; पर जब वह वीर पुरुष (वह चाहे जो कोई हो, पर है वीर आदमी) आपके साथ अकेला रह गया और उस आदमी ने एक जबर्दस्त वार करके आपको गिरा दिया, तो यह देखकर कि वह अपनी विजय की पूर्ति आपकी जान लेकर करना चाहता है, मैं ने आपके बचाने के लिये उसके कार्य में बाधा डाली।

"तो आप मुझे जानते हैं ?" मेन ने ध्यान-पूर्वक देखते हुए कहा।

"मुझे आपको जानने की ज़रूरत नहीं थी, महाशय; आप तो घायल आदमी थे—इतना ही काफ़ी था ?"

"स्पष्ट कहिए; आप मुझे जानते हैं।"

"महाशय, यह विलक्षण बात है कि आप मुझे नहीं समझ सकते। मैं सात आदमियों को एक पर आक्रमण करने को उतनी ही नीचता समझता हूं, जितनी एक निहत्थे आदमी पर सशस्त्र के प्रहार को।"

"सब बातों का कोई-न-कोई कारण होता है।"

एर्नाटन झुका; पर बोला कुछ नहीं।

"आपने देखा था न," मेन ने कहा—"मैंने उस आदमी को तलवार के पूरे हाथ से जवाब दिया था ?"

"यह तो सच है।"

"इसके अतिरिक्त वह मेरा पक्का शत्रु है।"

"मैं भी ऐसा ही विश्वास करता हूं, क्योंकि उसने भी आपके प्रति यही बात कही थी।"

"और अगर मैं इस ज़ख़्म से जीवित बचा—"

"तो उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं होगा, आप जो चाहेंगे, करेंगे।

"क्या आपके ख़याल में मेरी चोट ख़तरनाक है ?"

"मैंने आपका घाव देखा है, महाशय, और मेरा यह

ख़याल है कि यद्यपि घाव काफ़ी गहरा है, पर इससे आपकी मृत्यु का भय नहीं है। मैं समझता हूँ, तलवार पसली पर से फिसल पड़ी है, इसलिये छाती के अन्दर नहीं घुसी। ज़ोर से साँस लेकर देखिए, मेरे ख़याल में आपके फेफड़ों में दर्द नहीं होगा।"

"यह तो सच है; पर मेरे आदमी ?"

"सब मर गये, एक जीवित है।"

"तो क्या उनकी लाशें सड़क पर ही पड़ी हैं ?"

"हाँ।"

"क्या उनकी तलाशी ली गयी है ?"

"जिस किसान को आपने आँख खोलने पर देखा होगा, और जो इस समय आपका मेजबान है, उसीने तलाशी ली थी।"

"उसे क्या मिला ?"

"कुछ रुपये।"

"और काग़ज़ात ?"

"मैं समझता हूँ कि काग़ज़ात नहीं मिले।"

"ओह !" मेन ने प्रकट सन्तोष के साथ कहा—"पर मेरा वह जीवित आदमी कहाँ है ?"

"पास ही खलियान में।"

"उसे मेरे पास लाइये, महाशय; और अगर आप प्रतिष्ठित आदमी हैं, तो मुझसे प्रतिज्ञा कीजिए कि आप उससे कोई प्रश्न नहीं करेंगे।"

"मैं उत्सुक नहीं हूँ, महाशय; और इस मामले की जितनी जानकारी रखता हूँ, उससे अधिक जानना भी नहीं चाहता।"

ड्यूक ने उसकी ओर बेचैनी की निगाह से देखा।

"महाशय," एर्नाटन ने कहा—"जो काम करने को आप मुझसे कह रहे थे, वह किसी और को दीजिए।"

"नहीं, मेरी गलती थी, महाशय; मैं इसे मानता हूँ। कृपा करके इतना कष्ट उठाइये।"

पाँच मिनट बाद सिपाही अस्तबल में आ उपस्थित हुआ। वह ड्यूक को देखकर चिल्ला उठा; पर ड्यूक ने शक्ति-पूर्वक अपने ओठों पर उँगली रक्खी, और वह आदमी चुप हो गया।

"महाशय," मेन ने एर्नाटन से कहा—"मैं आपका सदा कृतज्ञ रहूँगा; और निस्सन्देह हम लोग कभी अच्छी परिस्थिति में मिलेंगे। क्या मैं यह जान सकता हूँ कि मैं किससे बातें कर रहा हूँ?"

"मैं एर्नाटन-डी-कार्मेंजस हूँ, महाशय।"

ड्यूक कुछ और विवरण जानने की इच्छा रखता था; पर इस बार युवक चुप रहा।

"आप त्रिजेंसी जा रहे थे?"

"हाँ, महाशय।"

"तो मैंने आपके काम में विलम्ब कर दिया, और आप आज रात को नहीं जा सकेंगे?"

"इसके विपरीत मैं तो एकदम अभी रवाना हो जाना चाहता हूँ, महाशय।"

"बीजेंसी के लिये ?"

एर्नाटन ने मेन की ओर इस प्रकार देखा, मानो इस प्रश्न से वह क्रुद्ध हो गया है। "पेरिस के लिये।" उसने कहा।

ड्यूक को आश्चर्य हुआ। "क्षमा कीजिए," उसने कहा—"पर यह विलक्षण बात है कि बीजेंसी जाते समय अनिश्चित परिस्थिति में पड़कर रुक जाने के कारण अब आप बिना अपनी यात्रा का उद्देश्य पूरा किये ही लौट जायँगे।"

"यह तो बिल्कुल सीधी-सी बात है, महाशय। मैं किसी निश्चित स्थान और निश्चित समय पर किसी से मिलने के लिये जा रहा था, जो (समय) आपके साथ यहाँ आ जाने के कारण गुज़र गया, इसलिये अब मैं लौट रहा हूँ।"

"महाशय, क्या आप मेरे साथ यहाँ दो-तीन दिन नहीं ठहर सकते ? मैं इस सिपाही को पेरिस भेजकर किसी डाक्टर को बुलवाऊंगा; और मैं यहाँ अपरिचित किसानों में अकेला नहीं रह सकता।"

"तो सिपाही को अपने साथ ही रखिए, मैं आपके लिये डाक्टर भेज दूंगा।"

मेन हिचकिचाया। "क्या आप मेरे शत्रु का नाम जानते हैं ?" उसने कहा।

"नहीं, महाशय।"

"क्या ! आपने उसकी जान बचायी और उसने आपको अपना नाम तक नहीं बतलाया ?"

"मैंने उससे पूछा ही नहीं।"

"आपने पूछा ही नहीं?"

"मैंने आपकी भी तो जान बचायी है, महाशय; क्या मैंने आपका नाम पूछा है? पर आप दोनों ही मेरा नाम जानते हैं।"

"अच्छा, महाशय, आपसे कुछ भी मालूम नहीं किया जा सकता; आप जैसे वीर हैं, वैसे ही विवेकी भी हैं।"

"मैं देखता हूँ कि आप यह बात भर्त्सना के ढंग पर कह रहे हैं, पर इसके विरुद्ध आपको निश्चिन्त हो जाना चाहिए, क्योंकि जो व्यक्ति एक आदमी के साथ विवेकपूर्ण व्यवहार करता है, वह दूसरे के साथ भी वैसा ही करेगा।"

"आठ ठीक कहते हैं। अपना हाथ इधर दीजिए, महाशय-डी-कार्मेंजस।"

एर्नाटन ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया; पर ऐसा करते समय उसने अपना व्यवहार ऐसा नहीं प्रकट होने दिया कि वह अपना हाथ एक राजकुमार को दे रहा है।"

"आपने मेरे व्यवहार की निन्दा की है, महाशय," मेन ने कहा—"पर मैं महत्त्व-पूर्ण रहस्य प्रकट किये बिना नहीं रहूँगा। मैं समझता हूँ, यह अच्छा होगा कि हम अपनी गुप्त बातें प्रकट कर दें।"

"आप आत्म-रक्षा कर रहे हैं, महाशय, मैं आपको कोई दोष नहीं दे रहा हूँ। आप बोलने या चुप रहने के लिये पूर्णतः स्वतंत्र हैं।"

"धन्यवाद, महाशय; मैं चुप रहूँगा। मैं केवल इतना ही कहूँगा कि मैं एक उच्च श्रेणी का आदमी हूं, और आपके काम आ सकता हूँ।"

"और कुछ मत कहिए, महाशय; अपने मालिक की कृपा से मुझे किसी और की सहायता की आवश्यकता नहीं है।"

"आपका मालिक!" मेन ने चिन्तित-भाव से पूछा--"आपका मालिक कौन है?"

"अब भेद खोलने की आवश्यकता नहीं है, आप खुद कह चुके हैं।"

"यह सच है।"

"इसके अतिरिक्त आपका ज़ख्म तमतमा रहा है; मैं आपको कम बात करने की सलाह देता हूं।"

"आप ठीक कह रहे हैं; पर मैं अपने डाक्टर को बुलवाना चाहता हूँ।"

"जैसा कि मैंने कहा है, मैं पेरिस लौट रहा हूँ; आप अपने डाक्टर का पता दीजिए।"

"महाशय डी-कार्मेंजस, मुझे वचन दीजिए कि यदि मैं आपको एक पत्र दूँ, तो आप उस व्यक्तितक पहुँचा देंगे, जिसके नाम मैं भेजूँगा।"

"मैं वचन देता हूँ, महाशय।"

"मैं आपका विश्वास करता हूं; मुझे निश्चय है कि मैं आपका विश्वास कर सकता हूँ। मैं अपने भेद का एक अंश

आपको बता सकता हूँ। मैं मैडम-डी-माण्टपेंसियर के रक्षकों में से हूं।"

"ओह, मैं नहीं जानता था कि उनके पास रक्षक भी रहते हैं।"

"महाशय, ऐसे सङ्कट के समय में प्रत्येक व्यक्ति, जहांतक सम्भव होता है, अपनी रक्षा करता है, और गाइज़-घराना राजकीय होने के कारण—"

"मैं कोई विवरण नहीं पूछ रहा हूँ।"

"मैं अम्बाई के लिये एक समाचार लिये जा रहा था, सड़क पर मैंने अपने दुश्मन को देख लिया। बाक़ी घटना आप जानते ही हैं।"

"हां।"

"इस ज़ख्म के कारण रुक जाने का समाचार मुझे डचेज़ के पास भेजना है।"

"अच्छा।"

"तो जो पत्र मैं लिखनेवाला हूं, वह आप डचेज़ के हाथ में दे दें।"

"अगर यहां क़लम-दवात और काग़ज़ होगा, तब न।" कहकर एर्नोटन इन चीज़ों को खोजने के लिये उठा।

"खोजना व्यर्थ है; मेरे सिपाही के पास छोटी तख्ती होगी।"

सिपाही ने जेब से एक बन्द तख्ती निकाली, जिसे दीवार की ओर करके मेन ने उसकी पेच खोली और पेंसिल से

कुछ पंक्तियाँ लिखने के बाद उसे फिर बन्द कर दिया। जो व्यक्ति उस तख़्ती के खोलने का रहस्य न जानता, वह उसे तोड़े बिना खोल नहीं सकता था।

"महाशय," एर्नाटन ने कहा—"तीन दिन में तख़्ती यथा-स्थान पहुँच जायगी।"

"डचेज़-डी-माण्टपेंसियर के हाथ में ?"

"हाँ, महाशय।"

ड्यूक बातें करता-करता थक गया, और चिट्ठी लिखने के बाद भूसे के बिछौने पर फिर लेट गया।

"महाशय," सिपाही ने ऐसे स्वर में कहा, जो उसके कपड़े पर फबता नहीं था—"आपने मुझे बछड़े की तरह जकड़कर बाँध दिया था, यह सच है; पर आप चाहें या नहीं, उस बन्धन को मैं मित्रता का बन्धन समझता हूँ, और कभी यह सिद्ध करके रहूँगा।" और अपना सफ़ेद हाथ आगे बढ़ा दिया, जिस पर एर्नाटन की नजर पहले ही पड़ चुकी थी।

"अच्छी बात है," उसने मुस्कराकर कहा—"ऐसा मालूम होता है कि मैंने दो मित्र प्राप्त किये हैं।"

"दो को तुच्छ न समझिएगा," सिपाही ने कहा—"मित्र अधिक संख्या में नहीं मिला करते।"

"यह सच है, भाई।" कहकर एर्नाटन वहाँ से चलता बना।

# उन्तालीसवाँ परिच्छेद

—○○○—

## अस्तबल का आँगन

एर्नाटन तीसरे दिन पेरिस पहुँच गया। तीन बजे दिन को उसने लावर-स्थित पैंतालीस-रक्षकों के निवास-स्थान में प्रवेश किया। गैस्कन उसे देखकर आश्चर्य-पूर्वक बातें करने लगे। लाइना उनकी आवाज़ सुनकर अन्दर आया और वहाँ एर्नाटन को देखकर उसने भवें चढ़ा लीं। एर्नाटन सीधे उसके पास पहुँचा। महाशय-डी-लाइना ने उसे छोटे कमरे में चलने का इशारा किया, जो उसके गुप्त वार्तालाप का स्थान था। "यह तो बड़ा ही सुन्दर व्यवहार है, महाशय," उसने कहा—"पाँच दिन और पाँच रात की ग़ैर-हाज़िरी! मैं तो आप ही को सबसे अधिक

समझदार समझता था, और आपने ही नियम-भंग करने का यह आदर्श सामने रक्खा है ?"

"महाशय, मुझे जो हुक्म मिला था, मैंने वही किया है।"

"आपसे क्या कहा गया था ?"

"महाशय-डी-मेन का पीछा करने को, और मैंने वही किया।"

"पाँच दिन और पाँच रात ?"

"पाँच दिन और पाँच रात, महाशय।"

"तो वह पेरिस से चले गये ?"

"वे उसी शाम को पेरिस से चले गये थे; और यही बात मुझे सन्दिग्ध मालूम हुई।"

"आपने ठीक किया, महाशय। फिर क्या हुआ ?"

एर्नाटन ने स्पष्ट और जोरदार शब्दों में सारी घटना कह सुनायी। जब उसने पत्र की चर्चा की, तो लाइना ने पूछा—"क्या वह (पत्र) आपके पास है ?"

"हाँ, महाशय।"

"खूब! इस पर तो ध्यान देने की ज़रूरत है, कृपया मेरे साथ आइये!"

एर्नाटन लाइना के साथ लावर के आँगन तक गया। सम्राट् के बाहर जाने की सब तैयारी हो चुकी थी, और महाशय-डी-एपर्नों दो नये घोड़ों की देख-भाल कर रहे थे, जो इंग्लैण्ड से एलिज़ाबेथ ने हेनरी को भेंट के रूप में भेजे थे, और जिन्हें

उस दिन पहले-पहल सम्राट् की गाड़ी में जोता जानेवाला था।

लाइना एपनों के पास पहुँचा। "एक ज़बरदस्त ख़बर है, ड्यूक महोदय!" उसने कहा।

"कैसी ख़बर?" एपनों ने उसे एक तरफ़ ले जाकर पूछा।

"महाशय-डी-कार्मेंजस महाशय-डी-मेन से मिला है, जो आर्लियंस से परे एक गाँव में घायल होकर पड़े हैं।"

"घायल होकर?"

"हाँ, और उन्होंने मैडम-डी-माण्टपेंसियर को एक पत्र लिखा है, जो कार्मेंजस की जेब में मौजूद है।"

"ओ हो! कार्मेंजस को मेरे पास भेजिए।"

"वह यहीं है।" लाइना ने एर्नाटन को पास आ जाने का इशारा करते हुए कहा।

"महाशय, मालूम होता है, आप महाशय-डी-मेन के पास से पत्र लाये हैं।"

"हाँ, महाशय।"

"मैडम माण्टपेंसियर के नाम?"

"हाँ, महाशय।"

"कृपया उसे मुझको दे दीजिए।" कहकर ड्यूक ने हाथ आगे बढ़ाया।

"क्षमा कीजिए, महाशय; पर क्या आपने मुझसे ड्यूक का पत्र लाने के लिये कहा था?"

"अवश्य।"

"आप यह नहीं जानते कि यह पत्र मुझ पर विश्वास कर-के दिया गया है?"

"इससे क्या होता है?"

"इससे बहुत-कुछ होता है, महाशय; मैंने उन्हें वचन दिया है कि पत्र मैं स्वयं डचेज़ के हाथ में दूँगा।"

"आप सम्राट् का नमक खाते हैं, या महाशय-डी-मेन का?"

"सम्राट् का।"

"अच्छा, तो सम्राट् वह पत्र देखना चाहते हैं।"

"महाशय, आप सम्राट् नहीं हैं।"

"मैं समझता हूँ, आप भूल रहे हैं कि आप किससे बातें कर रहे हैं, महाशय-डी कार्मेंजस।" डी-एपर्नों ने क्रोध से पीला होकर कहा।

"मैं अच्छी तरह जानता हूँ, महाशय, और इसीलिये मैं इन्कार करता हूं।"

"आप इन्कार करते हैं?"

"हाँ, महाशय।"

"महाशय डी-कार्मेंजस, आप अपनी राजभक्ति की शपथ भूल रहे हैं।"

"महाशय, मैंने केवल एक व्यक्ति की शपथ ली है, और वह है सम्राट्। अगर वह मुझसे पत्र माँगेंगे, तो मैं दे दूँगा; पर वे यहाँ नहीं हैं।"

"महाशय-डी-कार्मेंजस," ड्यूक ने अत्यन्त क्रोध-पूर्वक

कहा—"आप और सब गैस्कनों की तरह ही वैभवान्ध हैं; आपका सौभाग्य आपको चकाचौंध में डाले हुए है। एक राजकीय रहस्य आपके पास होने के कारण वह आपके दिल पर हथौड़े की चोट-सा लग रहा है।"

"मुझे जिस चीज़ की चोट लग रही है, वह है बेइज़्ज़ती। मुझे इसीमें पड़ने की सम्भावना है—मेरा सौभाग्य भी मेरी समझ में आपके आज्ञोल्लङ्घन से बड़ा ही अनिश्चित हो उठा है। पर कोई हर्ज नहीं! मैं वही करूँगा, जो मुझे करना चाहिए, केवल वही; और जिसके नाम यह पत्र लिखा गया है, उसके अतिरिक्त केवल सम्राट् ही इस पत्र को देख सकेंगे।"

"लाइना," डी-एपर्नों ने उच्च स्वर से कहा—"महाशय डी-कार्मेंजस को ले जाकर जेलखाने में बन्द कर दीजिए।"

"यह बात तो जरूर है कि इससे मैं जब तक जेल में रहूँगा, पत्र नहीं पहुँचा सकूँगा—पर ज्यों ही मैं बाहर-निकलूँगा—"

"अगर आप कभी न निकल सकें, तो?"

"मैं बाहर निकलूँगा, महाशय—हाँ, यदि आप मेरा क़त्ल कर दें, तो और बात है। मैं अवश्य ही बाहर आ जाऊँगा; दीवार मेरी इच्छा से कम मज़बूत है, और फिर—"

"फिर क्या?"

"मैं सम्राट् से बातें करूँगा।"

"इसे जेल को ले जाइये, और पत्र ले लीजिए!" डी-एपर्नों ने क्रोध के मारे आपेसे बाहर होकर चिल्लाते हुए कहा।

"कोई इस (पत्र) को छू नहीं सकेगा!" एर्नाटन ने पीछे हटकर जेब से महाशय-डी-मेन की तख्ती निकालते हुए कहा—"मैं इसके टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा, क्योंकि इसके अतिरिक्त मैं इसे और किसी तरह नहीं बचा सकता; महाशय डी-मेन मेरे इस काम को पसन्द करेंगे, और सम्राट् भी मुझे माफ़ कर देंगे।"

युवक अपनी धमकी को कार्यान्वित करने ही वाला था कि उसकी भुजा को किसी ने स्पर्श किया। उसने घूमकर देखा, तो सम्राट् सामने खड़े मिले, जो ज़ीने से नीचे आकर उन लोगों के पीछे से बातचीत का अन्तिम भाग सुन चुके थे।

"बात क्या है, महाशयो?" सम्राट् ने कहा।

"हुजूर," डी-एपर्नो ने क्रुद्ध भाव से कहा—"यह आदमी, जो आपके पैंतालीस रक्षकों में से एक है, और जो शीघ्र ही उनमें से पृथक् कर दिया जायगा, पेरिस में महाशय-डी-मेन पर नजर रखने के लिये भेजा गया था, आर्लियंस तक उनके पीछे-पीछे चला गया और उनके पास से मैडम-डी-माण्ट-पेंसियर के लिये पत्र लाया है।"

"तुम महाशय-डी-मेन के पास से मैडम-डी-माण्टपेंसियर के लिये पत्र लाये हो?" सम्राट् ने एर्नाटन से पूछा।

"हाँ, हुजूर; पर महाशय डी-एपर्नो ने यह नहीं बतलाया कि किन परिस्थितियों के अन्दर मैंने ऐसा किया है।"

"अच्छा, वह पत्र कहाँ है?"

"यही झगड़े का मूल है, हुज़ूर। कार्मेंजस मुझे वह पत्र देने से बिल्कुल इन्कार करते है, और इसे मैडम माण्टपेंसियर के पास पहुँचाना चाहते है।"

कार्मेंजस ने सम्राट् के सामने घुटने टेक दिये। "हुज़ूर," उसने कहा—"मैं ग़रीब हूँ, पर हूँ इज़्ज़तदार आदमी। मैंने आपके सन्देश-वाहक की जान बचायी है, जिसे महाशय-डी-मेन और उसके छः साथी जान से मार देनेवाले थे, क्योंकि मैंने ठीक समय पर पहुँचकर लड़ाईका पासा पलट दिया।"

"और महाशय-डी-मेन ?"

"उन्हें गहरा ज़ख़्म लगा है।"

"अच्छा, फिर क्या हुआ ?"

"हुज़ूर, आपका सन्देश-वाहक, जो महाशय-डी-मेन से ख़ास घृणा करता प्रतीत होता था—"

सम्राट् मुस्कराये।

"वह अपने शत्रु को मार डालना चाहता था। शायद उसे उसका अधिकार था, पर मैंने सोचा कि मेरी उपस्थिति में, जिसकी तलवार वास्तव में हुज़ूर की दी हुई है, यह बदला एक राजनीतिक बदला होगा, और—"

"हाँ, कहते चलो।"

"मैंने महाशय-डी-मेन का जीवन भी उसी प्रकार बचा दिया, जैसे आपके सन्देश-वाहक का बचाया था।"

डी-एपर्नों ने मुँह फेर लिया, लाइना अपनी लम्बी मूँछें चबाने लगा, सम्राट् पूर्ववत् शान्त रहे।

"कहते चलो।" सम्राट् ने फिर कहा।

"महाशय-डी-मेन का केवल एक साथी रह गया, क्योंकि शेष चार मार डाले गये थे, और वह उसे अलग नहीं करना चाहते थे। इस बात का ज्ञान न रखते हुए कि मैं हुज़ूर-का सेवक हूँ; उन्होंने मेरे ऊपर विश्वास करके मुझे अपनी बहन के नाम पत्र दिया। मेरे पास वह मौजूद है, हुज़ूर, और मैं उसे श्रीमान् की सेवा में पेश कर रहा हूँ। श्रीमान् को इस पत्र के और मेरे साथ यथेच्छ व्यवहार करने का अधिकार है। मेरी इज़्ज़त मुझे प्यारी है, हुज़ूर; पर मैं निर्भीक होकर इसे आपके हाथों में सौंप रहा हूं।"

यह कहकर एर्नाटन ने तख़्ती सम्राट् की ओर बढ़ा दी और सम्राट् ने नम्रता-पूर्वक उसे हाथ में लेने से रोक दिया।

"आपने क्या कहा, डी-एपर्नों?" उसने कहा—"महाशय-डी-कार्मेंजस ईमानदार और विश्वासपात्र सेवक है।"

"मैंने क्या कहा, हुज़ूर?"

"हाँ; मैंने आपके मुह से 'जेल' का शब्द सुना है। इसके विपरीत कार्मेंजस-जैसा आदमी मिलने पर हमें उसके पुरस्कार-की चर्चा करनी चाहिए। ड्यूक, पत्र हमेशा पत्र-वाहक की और जिसके नाम पत्र होता है, उसकी सम्पत्ति होती है। तुम अपना पत्र प्राप्तकर्त्ता को दे सकते हो, महाशय-डी-कर्मेंजस।"

"लेकिन, हुजूर," डी-एपर्नो ने कहा—"इस पर भी तो विचार करें कि इस पत्र में क्या हो सकता है। ऐसे नाज़ुक मामले को खेल न समझें, जिसका सम्बन्ध शायद हुजूर की जान से है।"

"तुम यह पत्र प्राप्तकर्त्ता को दे सकते हो, कर्मेंजस।" सम्राट् ने फिर कहा।

"धन्यवाद है, हुजूर" कार्मेंजस ने जाने का उपक्रम करते हुए कहा।

"तुम इसे कहाँ ले जाओगे ?"

"मैडम-ला-डचेज़-डी-माण्टपेंसियर के पास। मैं समझता हूँ, यह बात मैं हुजूर से अर्ज़ कर चुका हूँ।"

"मेरा मतलब यह है कि होटल-डी-गाइज़ ले जाओगे या सेण्ट-डेनिस, अथवा कहीं और ?"

"इस विषय में मुझे कोई आदेश नहीं दिया गया था, हुजूर। मैं पत्र होटल-डी-गाइज़ ले जाऊँगा, और वहीं मालूम करूँगा कि मैडम-डी-माण्टपेंसियर कहाँ हैं।"

"और जब वह तुम्हें मिल जायगी, तो ?"

"तो मैं पत्र उन्हें दे दूँगा।"

"बहुत अच्छा। महाशय-डी-कार्मेंजस, क्या महाशय-डी-मेन से तुम उनका पत्र उनकी बहन के हाथ में पहुँचा देने के अतिरिक्त और कुछ करने की प्रतिज्ञा कर आये हो ?"

"नहीं, हुजूर।"

"उससे गोपनीय स्थान में मिलने की बात नहीं है ?"

"नहीं, हुज़ूर ।"

"तो मैं तुम्हारे ऊपर केवल एक शर्त लगाऊँगा ।"

"मैं श्रीमान् का सेवक हूँ ।"

"पत्र उन्हें देकर तुम मेरे पास विंसेन्स आ जाना । आज शाम को मैं वहाँ पहुँचा रहूँगा ।"

"बहुत अच्छा, हुज़ूर ।"

"और वहाँ मुझे बतलाना कि उचेज़ तुम्हें कहाँ मिली थी ।"

"ऐसा ही करूँगा, हुज़ूर ।"

"मैं और कोई भेद नहीं जानना चाहता, यह स्मरण रक्खो ।"

"हुज़ूर, मैं इतना बतलाने की प्रतिज्ञा करता हूँ ।"

"कैसी अदूरदर्शिता है, हुज़ूर !" डी-एपर्नो ने कहा ।

"ऐसे आदमी भी हैं, जिन्हें आप समझ नहीं सकते, ड्यूक । यह व्यक्ति मेन के प्रति सच्चा है, और मेरे प्रति भी सच्चा रहेगा ।"

"हुज़ूर, मैं आपके प्रति सच्चा ही नहीं, वरन इससे अधिक—आपका भक्त बना रहूँगा ।" एर्नाटन ने उच्च स्वर में कहा ।

"अब, डी-एपर्नो, कोई झगड़ा नहीं रहा," सम्राट् ने कहा—"और आपको इस वीर युवक को क्षमा कर देना पड़ेगा, क्योंकि जिस चीज़ को आप इसके अन्दर अभक्ति समझ रहे थे, उसे मैं भक्ति का प्रमाण मानता हूँ ।"

"हुज़ूर," एर्नाटन ने कहा—"ड्यूक महोदय इतने ऊँचे

आदमी हैं कि उन्होंने मेरी अवज्ञा में, जिसके लिये मैं अफ़सोस करता हूँ, आपके प्रति आदर का भाव नहीं देखा; सब से पहले मैं वही करूँगा, जिसे मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।"

"सचमुच!" ड्यूक ने अपना चेहरा नक़ाब की तरह से बदलते हुए कहा—"इस परीक्षा से आपकी इज़्ज़त बढ़ गयी है, प्रिय कार्मेंजस महाशय, और आप सचमुच एक अच्छे आदमी हैं। तो भी हम लोगों ने इन्हें खूब धमकाया।" और इसके बाद ठठाकर हँसने लगा।

लाइना ने कोई जवाब नहीं दिया; वह अपने शानदार अफ़सर की तरह झूठ नहीं बोल सका।

"अगर यह परीक्षा थी, तो अच्छा ही हुआ;" सम्राट् ने सन्दिग्ध-भाव से कहा—"पर मैं आपको यही सलाह देता हूँ कि इस प्रकार का परीक्षण बहुधा मत किया कीजिए। बहुत-से तो इस ( परीक्षण ) से विचलित हो जायँगे। अब चलना चाहिए, ड्यूक; आप मेरे साथ चलेंगे?"

"सरकार का हुक्म यही था; मुझे गाड़ी की खिड़की के पास बैठना चाहिए न?"

"हाँ; और दूसरी तरफ़ कौन बैठेगा?"

"श्रीमान् का एक भक्त-सेवक—महाशय-डी-मालिन।" डी-एपर्नों ने अपनी बात का उस पर असर देखने के लिये एर्नाटन की ओर देखा; किन्तु वह अपरिवर्तित रूप में शान्त खड़ा रहा।

---

# चालीसवाँ परिच्छेद

—:※:—

## मैगडालेन के सात पाप

सम्राट् ने अपने घोड़ों की चपलता देखकर गाड़ी में अकेले न बैठकर डी-एपर्नो को अपने पास बिठाना चाहा। गाड़ी के दोनों बगल लाइना और सेण्ट-मालिन घोड़ों पर सवार होकर चले और एक सवार गाड़ी के आगे-आगे चला। सदा की भाँति सम्राट् के चारों ओर अनेक कुत्ते मौजूद थे और गाड़ी के अन्दर ही एक मेज लगी थी, जिस पर सुन्दर तस्वीरें सजी रक्खी हुई थीं, जिन्हे गाड़ी के हिलते रहने पर भी सम्राट् ने आश्चर्य-पूर्ण कौशल से काटकर सजा रक्खा था। वह इस समय पापिनी मैगडालेन के जीवन पर विचार कर

रहे थे। उसके कई तरह के चित्र थे—उनपर लिखा था—"मैंगडालेन क्रोध-रूपी पाप के वशीभूत हो रही है," "मैंगडालेन पेटूपन-रूपी पाप के वशीभूत हो रही है;" इसी प्रकार मैंगडालेन को सात मुख्य पापों का शिकार बनता दिखाया गया था। जिस-समय गाड़ी सेण्ट ऐण्टोनी के फाटक से होकर गुज़र रही थी, सम्राट् मैंगडालेन की 'क्रोध'-वाली तस्वीर देखने में संलग्न थे।

वह सुन्दरी पापिनी सोफ़े पर आधी लेटी हुई थी, और उसकी विपुल केश-राशि के अतिरिक्त उसके शरीर पर और कोई आवरण नहीं था, जिन (केशों) से उसे बाद में ईसू मसीह के चरण पोंछने पड़े थे। उसने एक गुलाम को तालाब में भरी हुई ऐसी दंशक मछलियों के सामने, जो पानी से ऊपर उत्सुकता-पूर्वक मुँह निकाले हुए थीं, इसलिये डलवा दिया था कि उससे एक क़ीमती बर्तन टूट गया था; जबकि दूसरी ओर एक स्त्री को, जो अपनी मालकिन से भी अधिक नग्न दीखती थी (क्योंकि उसके बाल बँधे हुए थे), इसलिये कोड़े लगाये जा रहे थे कि उसने अपनी मालकिन का बाल सँवारते हुए कुछ ऐसे बड़े बाल निकाल लिये थे, जिनका अस्तित्त्व उसे अधिक अपराध के लिये उत्तेजित करता। इससे पिछले दृश्य में कुछ कुत्तों को इसलिये पिटते दिखाया गया था कि उन्होंने भिखमंगों को चुपचाप (बिना काटे) गुज़र जाने दिया था, और कुछ मुर्गों का बध इसलिये किया जा रहा था कि उन्होंने सुबह बड़े ज़ोर से बाँग दिया था।

क्राई-फ़ाबिन पहुँचने तक सम्राट् इस चित्र को ठीक रूप में समाप्त करके 'पेटूपन' के चित्र को देखने लगे।

इस चित्र में पापिनी सुन्दरी उस ढंग के सुनहले और बैंजनी रंग की शय्या पर दिखायी गयी थी, जिस पर प्राचीन काल में लोग भोजन किया करते थे; जिस पर रोमनों के खाद्य— मांस, मछली, फल, शहद, लाल लपची, स्ट्राम्बोली के झींगे, और सिसली के अनार—भोजन की शोभा बढ़ाते थे। नीचे भूमि पर कुछ कुत्ते एक खरगोश पर झपटते दिखाये गये थे, और वायु-मण्डल में पक्षियों का झुण्ड दिखायी दे रहा था, जो भोजन की मेज़ पर से अंजीर, झरबेरी और मकोय चोंच में ले-लेकर उड़ रहे थे और उन (फलों) को चुहियों की बस्ती में गिराते थे, जो अपनी-अपनी नाक ऊपर उठाये इस आकाश-वृत्ति रूपी भोजन की प्रतीक्षा में थी। मेगडालेन ने अपने हाथ मे श्वेत मदिरा से भरा हुआ वह विलक्षण गिलास ले रक्खा था, जिसका वर्णन पिट्रोनियस ने किया है।

इस महत्व-पूर्ण कार्य में पूर्णतः व्यस्त रहने के कारण जब गाड़ी जेकोबिन्स मठ के पास पहुँची, तो सम्राट् ने केवल एक नज़र उधर डाली, जिधर से प्रत्येक घण्टे की ध्वनि पर आराधना की आवाज़ आ रही थी और जिस (मठ) की खिड़कियाँ और द्वार पूर्णतः बन्द थे। किन्तु कोई सौ क़दम आगे चलकर उत्सुक पर्यवेक्षक इस बात को देख सकता था कि उस (सम्राट्) ने बायीं ओर स्थित एक ऐसे मकान की

और अधिक औत्सुक्यपूर्ण दृष्टि डाली, जो एक सुन्दर वाटिका के अन्दर, जिसका फाटक सड़क की ओर खुलता था, बना था। इस मकान को वेल-इस्वत कहते थे, और मठ के विपरीत इसके प्रत्येक द्वार—केवल एक को छोड़कर जिसके सामने एक चिक पड़ी थी—खुले थे। जिस समय सम्राट् की सवारी सामने से गुज़री, उपरोक्त चिक प्रकटतया हिली, हेनरी डी-एपनों उसकी ओर देखकर मुस्कराया, और इसके बाद दूसरे चित्र के निरीक्षण में लग गया। यह चित्र 'विलासिता-रूपी पाप' का द्योतक था। चित्रकार ने इसका चित्रण ऐसे चमकदार रंग में किया था, और पाप को इस रूप में व्यक्त करने की ऐसी हिम्मत और बारीकी दिखायी थी कि हम केवल उसके एक पहलू की ही चर्चा कर सकते हैं, जो बिल्कुल ही उपाख्यान-पूर्ण मालूम होता था—मैगडालेन का रक्षक देव डरकर मुँह हाथों से ढके हुए स्वर्ग की ओर उड़ता दिखाया गया था। इस चित्र के बारीक विश्लेषण में सम्राट् ऐसे तन्मय हो उठे कि उन्होंने गाड़ी के साथ-साथ घोड़े पर चलनेवाले गर्व के पुतले की ओर ध्यान भी नहीं दिया। अवस्था दयनीय थी, क्योंकि सेण्ट-मालिन को अपने घोड़े पर बड़ा घमण्ड था और वह उसे गाड़ी के इतने निकट चला रहा था कि उसने सम्राट् को अपने कुत्ते से यह कहते सुना—"धीरे से लव्ह,* तुम तो मेरे काम में बाधा डाल रहे

*कुत्ते का नाम ही लव्ह (प्रेम) था।

हो !" और ड्यूक-डी-एपर्नों से यह कहते भी सुना—"ड्यूक, मैं समझता हूँ, ये घोड़े तो मेरी गर्दन ही तोड़ डालेंगे।" रह-रह-कर सेण्ट-मालिन लाइना की ओर देख रहा था, जो ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त करने का अभ्यस्त कम होने के कारण निर्लिप्त नहीं था और उसे अपनी शान्त और नम्रतापूर्ण ढंग की उत्कृष्टता का ही गौरव था, और वह क्षण-भर यह भी सोच-लेता था कि—"जो लोग मुझे देख रहे हैं, वे सोच रहे है कि सम्राट् के साथ यह कौन भाग्यवान सवार जा रहा है ?" सेण्ट-मालिन की प्रसन्नता चिरस्थायी मालूम होती थी, क्योंकि सुनहले शाही साज से सामान और पच्चीकारी के भारी बोझ से ढके हुए गाड़ी के घोड़े क़ैद-से थे, इसलिये वे शीघ्रता-पूर्वक आगे नहीं बढ़ रहे थे। किन्तु वह चूँकि अत्यन्त गर्वीला होता जा रहा था, इसलिये उसे कुढ़ानेवाली कोई विलक्षण बात भी आ गयी। उसने सम्राट् को एर्नाटन का नाम लेते सुना, सो भी केवल एक ही बार नहीं; दो या तीन बार। सेण्ट-मालिन ने अपना सारा ध्यान लगाकर कुछ और सुनने की चेष्टा की, किन्तु किसी शोर या आन्दोलन के कारण कुछ और नहीं सुन सका—या तो सम्राट् के मुँह से कोई शोक-सूचक आह निकल पड़ी, या चित्रों को काटनेवाली कैंची अवाञ्छनीय जगह पर पहुँच गयी, अथवा कुत्तों में एक भौंक उठा, और इस प्रकार वह सारी बातें सुन सकने से वंचित रहा। पेरिस और विंसेन्स के बीच में सम्राट् ने कम-से-कम छः बार एर्नाटन का नाम लिया और कम-से-कम

चार वार डी-एपर्नों के मुँह से भी उसका नाम निकला, जिसका कारण सेण्ट-मालिन कुछ भी नहीं जान सका। उसने अपने मन को यही समझकर तसल्ली दी कि सम्राट् एर्नाटन के ग़ायब हो जाने का कारण मालूम करने के लिये उसका नाम ले रहे होंगे, और डी-एपर्नों कारण बतला रहा होगा। अन्ततः वे विंसेन्स पहुँचे और चूँकि सम्राट् को अभी तीन पाप-निदर्शक चित्र और काटने थे, इसलिये वह तत्काल महल में जाकर पहले उन्हे समाप्त करने में लग गये। उस दिन बड़े कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था, इसलिये सेण्ट-मालिन एक कोने में अँगीठी के सामने बैठकर अपना शरीर सेंकने लगा। वह ऊघने लगा था कि उसी समय लाइला ने आकर उसके कन्धे पर हाथ रक्खा।

"आज आपको काम करना होगा," उसने कहा—"सोइएगा किसी और दिन; महाशय सेण्ट-मालिन।"

"ज़रूरत पड़ने पर मैं एक पखवारा जागता रह सकता हूँ, महाशय ?"

"अपने घोड़े पर सवार होकर अभी पेरिस लौट जाइये।"

"मैं तैयार हूं; मेरा घोड़ा भी कसा-कसाया खड़ा है।"

"बहुत अच्छा; तो फिर सीधे पैंतालीस रक्षकोंवाले दालान में जाकर उन सबको जगा दीजिएगा। किन्तु उन तीन नायकों को न जगाइएगा, जिनका नाम मैं आपको बतलाऊंगा। किसी को यह न मालूम हो सके कि वह कहाँ जा रहा है, या उसे करना क्या है।"

"मैं इन आदेशों का पालन पूर्णतः करूँगा।"

"अच्छा, कुछ आदेश और हैं। उनमें से चौदह आदमियों को तो सेण्ट ऐण्टोनी के फाटक पर छोड़ दीजिएगा, पन्द्रह को बीच रास्ते में, और शेष को साथ लाइएगा।"

"अच्छा, महाशय, पर हम पेरिस से किस समय चलें ?"

"रात हो जाने पर।"

"घोड़ों पर या पैदल ?"

"घोड़ों पर।"

"सशस्त्र ?"

"पूर्णतः; कटार, पिस्तौल और तलवारों के साथ।"

"बख्तर पहनकर ?"

"हाँ।"

"और क्या हुक्म है ?"

"ये तीन पत्र लीजिए—एक शालार के लिये, दूसरा वीरां के लिये और तीसरा स्वयं अपने लिये। महाशय-डी-शालार पहली टुकड़ी के नायक होंगे, महाशय डी-वीरां दूसरी के, और आप तीसरी के।"

"बहुत अच्छा, महाशय।"

"ये पत्र छः बजे तक नहीं खोले जाने चाहिएँ। महाशय-डी-शालार अपना पत्र सेण्ट-ऐण्टोनी के फाटक पर खोलेंगे, महाशय डी-वीरां क्राई-फ़ाविन पर, और आप वापस आ जाने पर।"

"तो हमें जल्दी आना चाहिए ?"

"जितनी जल्दी सम्भव हो, और किसी को सन्देह भी न उत्पन्न होने पाये। प्रत्येक टोली पेरिस से अलग-अलग दरवाज़ों से निकले—महाशय डी-शालार बार्डेल के फाटक से, महाशय डी-बीरों टैम्पिल के फाटक से, और आप सेण्ट ऐण्टोनी के फाटक से। बाक़ी आदेश पत्रों में लिखे हुए हैं। यहाँ से क्राई-फ़ाबिन तक शीघ्रता-पूर्वक जाइएगा, फिर वहाँ से धीरे-धीरे आगे बढ़िएगा—अभी दो घण्टे बाद अँधेरा होगा, इतना समय आवश्यकता से अधिक है। अब आपने यह हुक्म अच्छी तरह समझ लिया न ?"

"अच्छी तरह, महाशय।"

"पहली टोली में चौदह, दूसरी में पन्द्रह और तीसरी में पन्द्रह रक्षक होंगे; यह प्रकट है कि ये एर्नाटन को नहीं गिन रहे हैं, और अब वह पैंतालीसों में नहीं रहा है।" लाइना के चले जाने पर सेण्ट-मालिन ने सोचा।

सेण्ट-मालिन ने घमण्ड में फूलते हुए सब आदेशों का पूर्णतः पालन किया। जब वह पैंतालीसो रक्षकों के पास पहुँचा, तो उनमें से अधिकांश शाम का खाना खाने की तैयारी कर रहे थे। इस प्रकार उस समय लार्डिल-डी-शावन्ट्रे गाजर डाल-कर गैस्कनी ढंग से मसालेदार मांस तैयार कर रहा था, जिस में मिलिटर भी कांटे से गोश्त और शाक के टुकड़े अलग-अलग करके उसकी मदद कर रहा था।

पर्टिना-डी-माण्टक्रेब्रा और उसका वह विलक्षण नौकर, जो उससे अत्यन्त घनिष्ठता-पूर्वक बातें करता था, अपने और अपने छः साथियों के लिये खाना तैयार कर रहे थे, जिनमें से प्रत्येक ने छः साऊ* का हिस्सा दिया था; प्रत्येक व्यक्ति अपनी समझ के अनुसार हेनरी तृतीय के रुपयों का उपयोग कर रहा था। प्रत्येक व्यक्ति के छोटे निवास-स्थानों को देखकर ही कोई इनके निवासियों का चरित्र समझ सकता था। कुछ फूलों के प्रेमी थे, जिन्हों ने अपनी खिड़कियों पर मुरझाते हुए फूल या पौदे लगा रक्खे थे; कुछ लोग सम्राट् की तरह चित्रों के ही प्रेमी थे, कुछ ने अपनी भतीजी या गृह-प्रबन्धिका के रूप में एक लड़की रख छोड़ी थी। महाशय-डी-एपर्नो ने महाशय-डी-लाइना से व्यक्तिगत रूप में इन बातों के सम्बन्ध में चश्मपोशी करने के लिये कह दिया था। जाड़े में आठ बजे और गर्मी में दस बजे वे लोग सोते थे; पर पन्द्रह आदमी तो सदा तैयार रहते थे। चूंकि इस समय जब सेण्ट-मालिन ने उक्त निवास-स्थान में प्रवेश किया, अभी कुल साढ़े पाँच बजे थे, अतः उसने देखा कि प्रत्येक व्यक्ति को वहाँ अपने-अपने चटोरपन की सूझ रही है। किन्तु उसने केवल एक शब्द कहकर सबका काम जहाँ का तहाँ रोक दिया। "अपने-अपने घोड़े सँभालो, सज्जनो!" वह बोला, और कुछ कहे बिना ही महाशय-डी-बीराँ और महाशय-डी-शालार को अपना हुक्म समझाने आगे बढ़ा। कुछ लोगों ने तो पेटी

*फ्रांसीसी सिक्का

कसते और वल्तर पहनते-पहनते बड़े-बड़े निवाले उठाकर खाने को ठूँसना शुरू कर दिया और वे खाना गले में अटकने पर शराब चढ़ाकर उतारने लगे। जिनका भोजन अभी आधा पका और कच्चा था, उन्होंने त्याग-भाव से अपने-अपने हथियार सँभाल लिये। इसके बाद हाज़िरी लेने पर सेण्ट-मालिन-समेत कुल चवालीस आदमी उपस्थित पाये गये।

"एर्नाटन-डी-कर्मेंजस गायब है।" महाशय-डी-शालार ने, जो इस समय नायक का काम कर रहा था, कहा। सेण्ट-मालिन का हृदय हर्ष से उछल उठा, और उसके ओठों पर मुस्कराहट खेलने लगी, जो उस उदास और ईर्ष्यालु आदमी में कभी-कभी ही देखी जाती थी। उसकी समझ में एर्नाटन का सर्वनाश हो गया, क्योंकि वह बिना कोई सफ़ाई दिये ही ऐसे महत्व-पूर्ण धावे के मौक़े पर अनुपस्थित पाया गया।

चवालीसो जवान अपने विभिन्न मार्गों से रवाना हुए।

---

# इकतालीसवाँ परिच्छेद

---

## बेल—इस्बत

यहाँ यह बताना व्यर्थ होगा कि जिस एर्नाटन के सर्वनाश का ख़याल करके सेण्ट-मालिन प्रसन्न हो रहा था, वह इसके विपरीत एक उन्नति-जनक अप्रत्याशित मार्ग का अनुसरण कर रहा था। वह पहले होटल-डी-गाइज गया। बड़ा दरवाजा खटखटाने पर वह उसके लिये बड़ी सावधानी के साथ खुला मिला; किन्तु जब उसने डचेज से मिलने की बात कही, तो उसकी हँसी उड़ायी गयी। फिर उसके बहुत हठ करने पर उसे बतलाया गया कि उसे मालूम होना चाहिए कि श्रीमती डचेज़ साहिबा पेरिस में नहीं, सीजन में है। एर्नाटन चूँकि

ऐसे स्वागत के लिये तैयार होकर गया था, इसलिये इससे वह हताश नहीं हुआ।

"श्रीमतीजी की अनुपस्थिति का मुझे बड़ा दुःख है," उसने कहा—"क्योंकि मैं उन्हे देने के लिये ड्यूक-डी-मेन के पास से एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सन्देश लाया हूँ।"

"ड्यूक-डी-मेन के पास से! आपको सन्देश देकर भेजा किसने है?"

"स्वयं ड्यूक ने।"

"ड्यूक ने!" ड्योढ़ीवान ने प्रशंसनीय आश्चर्य प्रदर्शित करते हुए कहा—"कहाँ से भेजा है उन्होंने आपको? वे खुद भी तो पेरिस में नहीं हैं।।"

"यह मैं जानता हूँ, क्योंकि मैं उनसे ब्लाई की सड़क पर मिला हूँ।"

"ब्लाई की सड़क पर?" ड्योढ़ीवान ने और अधिक उत्सुकता-पूर्वक कहा।

"हाँ, और वहीं उन्होंने मुझे मैडम-डी-माण्टपेंसियर के लिये सन्देश दिया है।"

"सन्देश?"

"हाँ, एक पत्र।"

"कहाँ है वह?"

"यहाँ।" एर्नाटन ने अपनी जेब पर हाथ रखते हुए कहा।

"क्या आप मुझे दिखा सकेंगे?"

"खुशी से।" कहकर एर्नाटन ने तख्ती जेब से निकाली।

"अद्भुत स्याही से लिखा है!" उस आदमी ने कहा।

"खून से लिखा है।" एर्नाटन ने शान्त-भाव से कहा।

ड्योढ़ीवान यह शब्द सुनकर इस विचार से पीला पड़ गया, कि कहीं महाशय-डी-मेन के ही खून से यह पत्र न लिखा गया हो। उस समय स्याही के अभाव और रक्त के बाहुल्य में लोग अपनी प्रेमिकाओं या परिजनों को रक्त से बहुधा पत्र लिखा करते थे।

"महाशय," नौकर ने कहा—"मैं नहीं जानता कि आपको मैडम-डी-माण्टपेंसियर पेरिस में मिलेंगी या नहीं; किन्तु फ़ाबर्ग सेण्ट-ऐण्टोनी के 'बेल-इस्त्रत' नामक मकान में जाइए, जो डचेज का है। वह विसेन्स जाते समय बायीं ओर पहला ही मकान है, जो जैकोबिन्स मठ से परे है। वहाँ आपको डचेज़ का कोई विश्वास-पात्र सेवक अवश्य मिल जायगा, जो आपको यह बतला सकेगा कि इस समय डचेज़ महोदया कहाँ है।"

"धन्यवाद।" एर्नाटन ने कहा। उसने देखा कि वह आदमी इससे अधिक या तो बोलेगा नहीं, या बोल ही नहीं सकता।

बिना किसी जाँच-पड़ताल के एर्नाटन को बेल-इस्त्रत मिल गया, और उसकी घण्टी बजने पर दरवाजा खुला।

"अन्दर आ जाइए।" एक आदमी ने, जो किसी सांकेतिक

शब्द की प्रतीक्षा करता मालूम पड़ता था, कहा; किन्तु जब एर्नाटन ने कोई ऐसा शब्द नहीं कहा, तो उसने पूछा कि वह क्या चाहता है।

"मैं मैडम-डी-डचेज़-डी-माण्टपेंसियर से बातें करना चाहता हूं।" एर्नाटन ने जवाब दिया।

"पर आप उनके लिये यहाँ क्यों आये हैं?"

"इसलिए कि होटल-डी-गाइज़ के ड्योढ़ीवान ने मुझे यहाँ भेजा है।"

"डचेज़ महोदया न तो यहाँ हैं और न पेरिस में ही।"

"तो," एर्नाटन ने कहा—"मुझे महाशय-डी-मेन ने जिस सन्देश के साथ भेजा है, उसे किसी और शुभ अवसर के लिये डाल रक्खूँगा।"

"सन्देश मैडम-डी-डचेज़ के लिये है?"

"हाँ।"

"महाशय-ली-ड्यूक-डी-मेन ने भेजा है?"

"हाँ।"

नौकर ने क्षण-भर विचार किया। "महाशय," उसने कहा—"मैं कोई बात नहीं कर सकता; एक व्यक्ति और हैं, जिससे मैं सलाह ले लूँ। कृपया ठहरिये।"

"ये लोग अच्छी सेवा कर रहे हैं," एर्नाटन ने सोचा—"वास्तव में जो इस रूप में अपने को छिपाते होंगे, वे भयंकर आदमी होंगे। गाइज़ के घर में कोई ऐसी सरलता के साथ प्रवेश

नहीं पा सकता, जितनी आसानी से लावर में पा सकता है। मैं यह सोचता हूँ कि जिसकी नौकरी में मैं हूँ, वह फ़्रांस का वास्तविक सम्राट् नहीं है।"

उसने चारों ओर देखा। आँगन बिल्कुल सूना था, पर अस्तबल के सारे दरवाजे खुले थे। ऐसा मालूम होता था कि वह स्थान किसी सेना के आकर ठहरने के लिये तैयार रक्खा गया है। थोड़ी देर में वह नौकर एक और आदमी को साथ लिये हुए उसके पास आ उपस्थित हुआ।

"आपका घोड़ा मैं पकड़े रहूँ," उसने कहा—"आप मेरे साथी के पीछे-पीछे जाइये; यह आपको ऐसे व्यक्ति से मिला देगा, जो आपके प्रश्नों का उत्तर मेरी अपेक्षा अधिक उत्तमता से दे सकेगा।"

एर्नाटन नौकर के पीछे हो लिया, जो उसे एक छोटे कमरे में ले गया, जहाँ एक बेल-बूटे-दार बैठकी पर एक सादा किन्तु सुन्दर वस्त्र पहने हुए एक महिला बैठी थी।

"यही महाशय महाशय-डी-मेन के पास से आये हैं।" नौकर ने कहा।

उसने मुँह फेरा, तो एर्नाटन के मुँह से आश्चर्य-ध्वनि निकल पड़ी।

"आप हैं, महाशया!" उसने तुरन्त अपने खवास और गाड़ीवाली महिला का तीसरा परिवर्तित रूप पहचानकर कहा।

"आप हैं!" महिला ने भी अपना काम छोड़कर एर्नाटन

की ओर देखते हुए कहा—"चले जाओ यहाँ से।" उसने नौकर की ओर देखकर कहा।

"आप मैडम-डी-माण्टपेंसियर की निजी महिला हैं?" एर्नाटन ने साश्चर्य पूछा।

"हाँ; पर आप ड्यूक-डी-मेन के पास से किस प्रकार सन्देश ला रहे हैं, महाशय?"

"ऐसी परिस्थितियों के अन्दर जिनके सुनाने में बहुत समय लग जायगा।" एर्नाटन ने सावधान होकर कहा।

"ओह, आप बड़े ही विचारवान पुरुष हैं।" महिला ने मुस्कराकर कहा।

"हाँ, महाशया, ज़रूरत पड़ने पर मैं ऐसा ही हो जाता हूँ।"

"पर यहाँ तो ऐसा विवेक करने का कोई मौक़ा नहीं है; क्योंकि यदि आप वास्तव में जिसके पास सन्देश लाने की बात कहते हैं, उसके पास से लाये हैं (इससे आप क्रोध न करें) तो मुझे इसमें इतनी दिलचस्पी है कि हमारे पूर्व-परिचय की स्मृति में—यद्यपि वह थी बहुत थोड़े समय के लिये—आपको मुझे वह बतला देना चाहिए।"

यह कहकर वह महिला स्त्री-सुलभ सौन्दर्य का पूर्ण प्रदर्शन करके प्रेम और मोहक लावण्य के भाव से उसकी ओर देखने लगी।

"महाशया," एर्नाटन ने जवाब दिया—"आप मुझसे वह बात नहीं कहलवा सकतीं, जिससे मैं अनभिज्ञ हूँ।"

"और जो बात आप नहीं कहेंगे, उसे और भी नहीं कहलवा सकती ?"

"महाशया, मेरा कार्य केवल श्रीमती डचेज़ के हाथ में पत्र दे देना है।"

"अच्छा, तो पत्र मुझे दीजिए।" महिला ने हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"महोदया, मैं समझता हूँ कि मैंने आपसे अर्ज कर दिया है कि यह पत्र डचेज़ के नाम है।"

"पर चूँकि डचेज़ अनुपस्थित हैं, और यहाँ मैं उनकी प्रतिनिधि हूं, इसलिये आप—"

"मैं ऐसा नहीं कर सकता, महाशया।"

"आप मेरा अविश्वास करते हैं, महाशय ?"

"मुझे ऐसा करना चाहिए, महाशया; किन्तु," युवक ने अभ्रान्त अभिव्यक्ति के साथ कहा—"आपके व्यवहार में रहस्य होते हुए भी, मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरे मनमें एक बिल्कुल ही भिन्न प्रेरणा उत्पन्न हुई है।"

"सचमुच।" महिला ने एर्नाटन की स्थिर दृष्टि के सामने कुछ बनते हुए कहा।

एर्नाटन झुका।

"सावधान हो जाइए!" महिला ने हँसते हुए कहा—"आप तो प्रेम की घोषणा कर रहे हैं।"

"हाँ, महाशया; मैं नहीं जानता कि मैं कभी आपको फिर

देख सकूँगा, इसलिए इस अवसर को मैं हाथ से नहीं जाने देना चाहता।"

"तो महाशय मैं समझती हूँ—"

"कि मैं आपको प्रेम करता हूँ? यह तो सरलता-पूर्वक समझा जा सकता है।"

"नहीं, पर आप यहाँ कैसे आ गये?"

"ओह, क्षमा कीजिए, महाशया! पर अब मैं आपकी बात नहीं समझ रहा हूँ।"

"हाँ, मैं समझती हूँ कि मुझे फिर देखने के लिये आप बहाना बनाकर अन्दर आ गये।"

"मैं महोदया! बहाना बनाकर! आप मुझे ग़लत समझ रही हैं। मुझे इस बात का ज्ञान भी नहीं था कि मैं कभी आप-को फिर देखूँगा; केवल संयोग-वश मिल जाने की आशा थी, और इस प्रकार मैं दो बार आपके मार्ग में भी पड़ गया हूँ; पर क्या मैं कभी बहाना बनाऊँगा?—कदापि नहीं! मैं शायद दुनिया से भिन्न हूँ और अन्य लोगों की तरह नहीं सोचता।"

"ओह, आप कहते हैं कि आप प्रेम करते हैं, और फिर भी दुबारा मिलने पर आप पुनर्परिचय देते हुए हिचकिचा रहे हैं। इसे आप प्रेम करते हैं? यह तो बड़ी अद्भुत बात है, महाशय; मुझे पहले ही सन्देह था कि आप सन्दिग्ध आदमी होंगे।"

"ऐसा क्यों, महाशया?"

"उस दिन आप मुझसे मिले थे। मैं गाड़ी में थी; आपने मुझे पहचान लिया; फिर भी आपने मेरा अनुसरण नहीं किया।"

"महाशया, आप खुद स्वीकार कर रही हैं कि आपने मेरी ओर कुछ ध्यान दिया था।"

"क्यों नहीं? जिस रूप में हम पहले मिले थे, उसके विचार से मेरा गाड़ी से सिर बाहर निकालकर आपको जाते हुए देखना सुसंगत ही था। पर आप 'ओह' कहकर घोड़ा दौड़ा ले गये। मैं उस 'ओह!' को सुनकर गाड़ी में काँप उठी।"

"मैं तो जाने के लिये बाध्य था, महाशया।"

"क्यों, सावधानी के लिए?"

"नहीं, कर्त्तव्य के खयाल से।"

"अच्छा!" महिला ने हँसकर कहा—"मैं देख रही हूं कि आप युक्ति-संगत और सावधान प्रेमी हैं, जो अन्य बातों की अपेक्षा मिलाप से अधिक डरते हैं।"

"यदि आपने मुझे भय से प्रेरित किया है, तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं है। क्या यह व्यावहारिक बात है कि स्त्री-पुरुष का वेश धारण कर ले और सब रुकावटों को पार करती हुई एक अभागे को टुकड़े-टुकड़े होते देखे; और बीच-बीच में ऐसे-ऐसे संकेत करे, जिसे बिल्कुल ही न समझा जा सके?"

महिला का रंग उतर गया, यद्यपि उसने मुस्कराने की भरसक चेष्टा की।

एर्नाटन कहता ही गया—"क्या यह भी स्वाभाविक है कि वह महिला ऐसे विलक्षण संकेतों के बाद गिरफ़्तार होने के भय से चोर की तरह भागे—ऐसी महिला जो मैडम-डी-माण्टपेंसियर-जैसी ज़बर्दस्त प्रिंसेज़ की सेवा में है, और जो दरबार के पक्ष में नहीं है।"

इस बार भी महिला मुस्करायी; पर यह मुस्कराहट व्यंगात्मक थी। "आपकी दृष्टि स्वच्छ नहीं है, महाशय," उसने कहा—"यद्यपि आप पर्यवेक्षक होने का बहाना करते हैं, क्योंकि यदि आप जरा बुद्धि से काम लेते, तो जो बात आपको अन्धकारमय प्रतीत होती थी, वह स्पष्ट हो जाती। क्या यह बिल्कुल स्वभाविक नहीं था कि मैडम-डी-माण्टपेंसियर महाशय-डी-सालसेड के भाग्य में दिलचस्पी लें और उसके लिये लोरेन-घराने में समझौता कराने के लिये सच्चे या झूठे भेद कहने का लोभ-संवरण न कर सके? और अगर यह स्वाभाविक था, महाशय, तो क्या यह स्वाभाविक नहीं था कि प्रिंसेज़ (डचेज़) किसी को—किसी विश्वासपात्र और घनिष्ठ मित्र को भेजतीं, जो उन्हें सब विवरण आकर सुनाता? वह व्यक्ति मैं हूँ, महाशय। अब क्या आप समझते हैं कि मैं इस स्त्री-वेश में जा सकती थी? डचेज़ के साथ मेरा ऐसा घनिष्ठ सम्बन्ध होने पर भी क्या आप समझते हैं कि मैं उस शिकार के कष्ट सहन करके रहस्य प्रकट करने देने की सम्भावना होते हुए भी उदासीन रह सकती थी?"

"आप ठीक कह रही हैं, महाशया, और अब मैं आपकी तर्क-बुद्धि की प्रशंसा उसी प्रकार कर रहा हूँ, जिस प्रकार मैंने आपके सौन्दर्य की की थी।"

"धन्यवाद, महाशय। और अब चूँकि हम एक दूसरे को जान गये हैं, और प्रत्येक बात स्पष्ट हो गयी है, अतः पत्र मुझे दे दीजिए, क्योंकि पत्र वास्तव में आपके पास है और आप बहाना नहीं कर रहे हैं।"

"यह तो असम्भव है, महाशया।"

ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपरिचिता क्रोध न करने की चेष्टा कर रही है। "असम्भव ?" उसने कहा।

"हाँ, असम्भव; क्योंकि मैं महाशय-डी-मेन से शपथ ले चुका हूँ कि पत्र डचेज़ के अतिरिक्त और किसी के हाथ में नहीं दूँगा।"

"तो यह कहिए," महिला ने कुछ क्रुद्ध-भाव से कहा—"कि आपके पास पत्र-वत्र कुछ नहीं है और आपके बहुत सावधान रहने पर भी यह मालूम हो गया कि यह केवल अन्दर आने का बहाना-मात्र था। आप मुझे फिर देखना चाहते थे; बस यही बात है। अच्छा महाशय, अब आप सन्तुष्ट हो गये; क्योंकि आप न-केवल अन्दर ही आ गये, बल्कि आपने मुझे देख भी लिया और साथ ही मुझसे कह दिया कि आप मुझे प्रेम करते हैं।"

"अन्य बातों की तरह मैंने यह बात भी सच कही है, महाशया।"

"अच्छा, यही सही। आप मुझे प्रेम करते हैं, और मुझे देखना चाहते थे, सो अब देख चुके। मैंने आपको एक सेवा के बदले आनन्द दे दिया। अब हम पृथक् हो जायँ। विदा!"

"मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा; चूँकि आप मुझे भगाना चाहती हैं, इसलिये मैं चला जाऊँगा।"

"हाँ," उसने सचमुच क्रुद्ध होकर कहा—"अगर आप मुझे जानते हैं, तो मैं आपको नहीं जानती। आपने मुझसे बहुत अधिक लाभ उठाया। ओह, आप समझते हैं, आप बहाना बनाकर, किसी प्रिंसेज़ के घर में घुसकर निकल जाने के बाद यह कह सकते हैं कि 'मैं अपनी धूर्तता में सफल हो गया हूँ!' महाशय, यह काम बहादुरों का तो नहीं है।"

"मुझे ऐसा मालूम होता है, महाशया, कि जिस बात को केवल प्रेम-चेष्टा कह सकते हैं, उसे आपने कठोर रूप दे दिया है। यदि, जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं, यह न होता, तो यह बड़े ही म[illegible]व की और सच्ची बात होती। मैं आपकी समस्त दुःखद बातों को अलग रख दूँगा, और उन सभी प्रेम-पूर्ण और कोमल बातों को भूल जाऊँगा, जो मैं कहना चाहता था, क्योंकि आप मुझसे बुरी तरह नाराज़ हो गयी हैं। किन्तु मैं यहाँसे आपका सन्देह-भाजन बनकर नहीं जाऊँगा। मेरे पास ड्यूक का भेजा हुआ मैडम माण्टपेंसियर के नाम का पत्र है, और वह यह है। आप उनकी हस्तलिपि और पता देख सकती हैं।"

एर्नाटन ने पत्र उक्त महिला की ओर बढ़ा दिया, किन्तु उसे दिया नहीं। महिला वह हस्तलिपि देखकर चिल्ला उठी—"उनका हस्ताक्षर! रक्त से लिखा हुआ!"

एर्नाटन ने बिना कोई उत्तर दिये पत्र पुनः अपनी जेब में रख लिया, और झुककर अत्यन्त कड़ुवाहट-पूर्ण और उतरे हुए चेहरे से जाने के लिये मुड़ा। किन्तु वह उसके पीछे-पीछे दौड़ी और उसने पीछे से उसका अंगरखा पकड़ लिया।

"यह क्या, महाशया?" एर्नाटन ने कहा।

"कृपया, मुझे क्षमा कीजिए! क्या ड्यूक को किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ा है?"

"आप मुझसे यह पत्र पढ़ने के लिये माफ़ी माँग रही हैं, और मैं पहले ही कह चुका हूँ कि डचेज के अतिरिक्त और कोई यह पत्र नहीं पढ़ सकता।"

"ओह, आप कैसे हठी और नासमझ हैं!" डचेज ने उच्च स्वर में शानदार क्रोध के साथ कहा—"क्या आप मुझे नहीं पहचानते, क्या आप यह नहीं अनुमान कर सके कि मैं ही मालकिन हूँ? क्या नौकरानी ऐसी आँखें दिखा सकती है? डचेज़-डी-माण्टपेंसियर मैं ही हूं; पत्र मुझे दीजिए।"

"आप डचेज हैं?" एर्नाटन ने विस्मित होकर पीछे हटते हुए कहा।

"हाँ, मैं ही हूँ! मुझे दीजिए! मैं जानना चाहती हूँ कि मेरे भाई को क्या हुआ है।"

किन्तु डचेज की आशा के विपरीत, युवक ने आज्ञा-पालन के वजाय आश्चर्य के भाव दूर करके अपनी बाहें खींच लीं। "मैं आप पर कैसे विश्वास कर सकता हूँ," उसने कहा—"जबकि आप दो बार मुझसे झूठ बोल चुकीं ?"

यह शब्द सुनकर डचेज़ की आँखों से ज्वाला निकलने लगी; किन्तु एर्नाटन चुपचाप दृढ़ता-पूर्वक खड़ा रहा। "ओह, आप अब भी सन्देह करते हैं; आप मेरी बातका प्रमाण चाहते हैं ?" उसने क्रोध-पूर्वक अपने रफल की झालर नोचते हुए कहा।

"हाँ, महाशया।" एर्नाटन ने शान्त भाव से कहा।

उसने घण्टी की ओर लपककर क्रोध-पूर्वक उसे वजा दिया; एक नौकर आ उपस्थित हुआ।

"श्रीमतीजी, क्या चाहती हैं ?" उसने कहा।

उसने क्रोध-पूर्वक अपने पाँव ज़मीन पर पटके। "मेनीविले !" उसने चिल्लाकर कहा—"मैं मेनीविले को चाहती हूँ ! क्या वह यहाँ नहीं है ?"

"हैं, महाशया।"

"उसे यहाँ भेजो।"

नौकर चला गया और क्षण-भर बाद मेनीविले आ पहुँचा।

"आपने मुझे बुलाया है, महाशया ?" उसने कहा।

"महाशया, और मैं सिर्फ़ 'महाशया' कब से हो गयी हूँ।" उसने क्रोध-पूर्वक पूछा।

"श्रीमतीजी !" मेनीविले ने आश्चर्यान्वित होकर कहा।

"अच्छा!" एर्नाटन ने कहा—"अब मेरे पास एक सज्जन आ गये हैं, और अगर यह झूठ बोल रहे होंगे, तो मैं जानता हूँ कि मुझे क्या करना है।"

"तो आख़िर आपने विश्वास किया?"

"हाँ, महाशया, मैं विश्वास करता हूँ, और यह पत्र लीजिए।" कहकर झुकते हुए युवक ने मैडम-डी-माण्टपेंसियर को वह पत्र दे दिया।

---

# बयालीसवाँ परिच्छेद

—:卐:—

## महाशय-डी-मेन का पत्र

डचेज़ ने फ़ौरन पत्र हाथ में लेकर खोल डाला, और उसे अत्यन्त उत्सुकता के साथ पढ़ा। इस समय उसके चेहरे पर विभिन्न भाव व्यक्त हो रहे थे; जैसे आकाश को बादलों ने घेर लिया हो। जब वह पढ़ चुकी, तो उसने पत्र मेनीविले को पढ़ने को दे दिया। पत्र निम्नलिखित था:—

मेरी प्यारी बहन,

जो काम मुझे औरों पर छोड़ना चाहिए था, उसे मैंने खुद करने की चेष्टा की। उस आदमी की तलवार से मुझे ज़ख़्मी होना पड़ा। इससे भी बुरा यह हुआ कि उसने मेरे पाँच आदमियों को जान से मार दिया, जिनमें बोलारों और

देसनाइज़े—अर्थात् मेरे दो सर्वोत्तम आदमी—थे,और इसके बाद वह भाग गया । मुझे यह भी बतला देना चाहिये कि उसे इस पत्र के वाहक—सुन्दर नवयुवक, जिसे तुम देखोगी—ने मदद दी थी । मैं इसकी सिफ़ारिश करता हूँ । यह युवक सावधानी और दूरदर्शिता की मूर्ति है ।

प्यारी बहन, मैं समझता हूँ, तुम्हारी नज़र में यह व्यक्ति इसलिये भी श्रेष्ठ जँचेगा कि इसने मुझ पर विजय प्राप्त करने-वाले से मेरी जान बचायी है, क्योंकि उसने मेरे मूर्च्छित हो जाने पर मेरे मुँह पर से नक़ाब हटाकर मुझे पहचान लिया था ।

मैं चाहता हूँ, प्यारी बहन, कि तुम इस विचारशील सवार का नाम और पेशा मालूम करो, क्योंकि मैं इसमें दिलचस्पी रखने के साथ ही इसे सन्देह की दृष्टि से देखता हूँ । मेरे यह कहने पर कि मैं इसे इसकी सेवा का पुरस्कार दूँगा, इसने कहा है कि जिस मालिक की यह नौकरी करता है, उसने इसे किसी चीज़ के लिये इच्छुक नहीं रक्खा है ।

इस व्यक्ति के सम्बन्ध में इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कह सकता कि यह मुझे न जानने का ढोंग करता है । मुझे कष्ट बहुत है; पर विश्वास है कि मेरा जीवन ख़तरे में नहीं है । मेरे सर्जन* को तुरन्त भेजो, मैं यहाँ उसी तरह पड़ा हूँ, जैसे तिनकों के ढेर पर घोडा पड़ा होता है । पत्र-वाहक तुम्हें इस स्थान का नाम वतला देगा ।

तुम्हारा प्यारा भाई,

—मेन

---

*चीर-फाड़ करनेवाला डाक्टर ।

जब दोनों ने पत्र पढ़ लिया, तो डचेज़ और मेनीविले ने एक दूसरे की ओर आश्चर्यपूर्वक देखा। आखिर डचेज़ बोली।

"आपने हमारी जो सेवा की है," उसने कहा—"उसके लिये हम किसके कृतज्ञ हों?"

"एक ऐसे आदमी के, जो सबलों के विरुद्ध निर्बलों की मदद करता है।"

"क्या आप कुछ विस्तार-पूर्वक बतला सकते हैं, महाशय?"

एर्नाटन ने अपनी आँखों-देखी समस्त घटना कह सुनायी, और ड्यूक के पराजित होने की जगह का नाम बतलाया।

मैडम डी-मा॰टपेंसियर और मेनीविले ने बड़ी दिलचस्पी के साथ उसकी बातें सुनी। जब वह अपनी बात खत्म कर चुका, तो डचेज़ ने कहा—"क्या मैं आशा कर सकती हूँ, महाशय, कि आपने जिस कार्य को इतनी सुन्दरता से आरम्भ किया है, उसे जारी रक्खेंगे और अपना सम्बन्ध हमारे घराने से जोड़े रहेंगे!"

डचेज़ ने ये बातें बड़े ही दयालुतापूर्ण ढंग से कहीं, जो एर्नाटन के बयान के बाद चापलूसी से भरी प्रतीत हुईं; किन्तु युवक ने गर्व दूर करके उसे उत्सुकता के रूप में लिया। वह जानता था कि सम्राट् ने यह शर्त, कि वह डचेज के निवास-स्थान का पता लगाये, किसी उद्देश्य से लगायी होगी। उसके मन में दो स्वार्थ थे—उसका प्रेम जिसे वह त्याग सकता था, और उसकी प्रतिष्ठा, जिसे वह नहीं छोड़ सकता था। यह प्रलोभन

बड़ा ज़बर्दस्त था कि वह अपनी इस स्थिति का बयान करके कि वह सम्राट् का निकटवर्ती है, डचेज़ की नज़रों में अत्यन्त महत्त्व-पूर्व व्यक्ति बन जायगा; और गैस्कन के इस नव-युवक के लिये डचेज़ डी-माण्टपेंसियर की नजरों में अपना महत्त्व बढ़ाना साधारण विचार की बात नहीं थी। सेण्ट-मालिन ऐसे मौक़े पर एक क्षण के लिये भी न रुकता। ये सभी विचार एर्नाटन के मस्तिष्क में चक्कर लगा गये, और वह पहले की अपेक्षा और भी दृढ़ हो गया।

"महाशया," उसने कहा—"मैं श्रीमान् महाशय-डी-मेन की सेवा में पहले ही निवेदन कर चुका हूँ कि मैं एक अच्छे स्वामी की सेवा में हूं, जो मेरे साथ ऐसा अच्छा व्यवहार करता है कि मैं दूसरा मालिक खोजने की इच्छा नहीं रखता।"

"मेरे भाई ने मुझे पत्र में लिखा है, महाशय, कि आप उन्हें पहचानते नहीं। तो मेरे पास तक आने के लिये आपने उनका नाम कैसे लिया ?"

"महाशय-डी-मेन अपने वेश छिपाये रखने की इच्छा रखते मालूम होते थे, महाशया; इसलिये मैंने उन्हे पहचानना उचित नहीं समझा। यह बात उनके लिये इस कारण असुविधा-जनक प्रतीत हो सकती थी कि किसान यह जान जाते कि वे कैसे प्रख्यात आदमी की मेहमानदारी कर रहे हैं। किन्तु यहाँ तो उस बात को गुप्त रखने की कोई जरूरत नहीं थी; बल्कि इसके विपरीत महाशय-डी-मेन का नाम ही मुझे आप तक

ला सका, इसलिये मैंने तो यही समझा था कि वहाँ की तरह यहाँ भी मैं ठीक कार्य कर रहा हूँ।"

डचेज़ ने मुस्कराकर कहा—"ऐसे उलझन-पूर्ण प्रश्न से इससे अच्छे ढंग से पीछा छुड़ाना सम्भव नहीं था; और मैं मानती हूँ कि आप एक चतुर मनुष्य हैं।"

"मैंने आपसे जो कुछ निवेदन किया है, उसमें मैं कोई चतुरता नहीं देखता, महाशया।"

"अच्छा, महाशय," डचेज़ ने अधीरता-पूर्वक कहा—"मैं स्पष्ट देख रही हूँ कि आप कुछ नहीं बतलायेंगे। आप यह नहीं सोचते कि मेरे घराने के लिये कृतज्ञता का भारी बोझ सहन करना बहुत कठिन है, और आपने दो बार मेरी सेवा की है; और अगर मैं आपका नाम जानने की इच्छा करूँ, और यह जानना चाहूँ कि आप क्या काम करते—"

"मैं जानता हूँ, महोदया, कि यह आपको सरलता-पूर्वक मालूम हो जायगा; पर यह बात आपको किसी दूसरे व्यक्ति से मालूम हो जायगी, और मुझे कुछ भी नहीं कहना चाहिए।"

"उनका कहना हमेशा ठीक होता है।" डचेज़ ने उच्च स्वर से कहा, और एर्नाटन की ओर एक ऐसी चितवन से देखा, जिससे एर्नाटन को अपूर्व आनन्द मिला। ऐसी अवस्था में उसने और कुछ नहीं पूछा, वल्कि उस चटोरे की भाँति, जो बढ़िया स्वादिष्ट भोजन करने के बाद मेज़ से उठकर चला जाता है, वह झुककर विदा होने की तैयारी करने लगा।

"तो महाशय, आपको मुझसे यही कहना था ?" डचेज़ ने पूछा।

"मैंने सन्देश-वाहक का कर्त्तव्य पूरा कर दिया, अब मुझे केवल श्रीमतीजी को सलाम करना रह गया।"

डचेज़ ने एर्नाटन को चले जाने दिया; पर जब उसके चले जाने पर पीछे से दरवाज़ा बन्द कर लिया गया, तो वह अधीरता-पूर्वक अपने पैर ज़मीन पर पटकने लगी। "मेनीविले," उसने कहा—"इस युवक का पीछा करो।"

"यह असम्भव है, महाशया। हमारे सभी आदमी बाहर गये हुए हैं; मैं खुद घटनाओं की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। हम लोगों ने जो-कुछ निश्चय किया है, उसके अतिरिक्त और कुछ करना बुरा होगा।"

"ठीक कहते हो, मेनीविले; पर बाद में—"

"ओह! अगर आप चाहेंगी, तो बाद में देख लेंगे।"

"हाँ; क्योंकि भाई की तरह मैं भी इस पर सन्देह करती हूँ।"

"यह बड़ा बहादुर आदमी है; और वास्तव में हम लोग बड़े भाग्यवान् हैं—जो एक अपरिचित और अज्ञात व्यक्ति आकाश से टपककर हमारी ऐसी सेवा कर गया।"

"तो भी, मेनीविले, बाद में इस पर किसी भी तरह नज़र रखना।"

"महाशया! मेरा विश्वास है कि बाद में हमें किसी पर नज़र रखने की ज़रूरत नहीं होगी।"

"सचमुच। मैं नहीं जानती, आज रात को मैं कह क्या रही हूँ। मेरा दिमाग़ पलट गया है।"

"आप-जैसी प्रधान महिला के लिये यह क्षम्य है कि वह निश्चयात्मक कार्य के समय किसी पूर्व-विचार में प्ररत हो।"

"सच है। पर रात होती जा रही है, और वैलोई विंसेन्स से लौट रहा होगा।"

"ओह, अभी बहुत समय है; अभी आठ नहीं बजे हैं, पर हमारे आदमी अभी नहीं आये।"

"सभी बुलाये गये हैं?"

"हाँ, सभी।"

"सभी विश्वस्त हैं न?"

"जँचे हुए, महाशया।"

"कितनों के आने की आशा है?"

"पचास की; इतने ज़रूरत से ज़्यादा होंगे, क्योंकि इनके अतिरिक्त हमारे पास दो सौ ऐसे साधु भी हैं, जो सिपाहियों से अच्छे नहीं, तो ख़राब भी नहीं हैं।"

"ज्यों ही हमारे आदमी आ जायँ, अपने सिपाहियों को सड़क पर तैयार रक्खो।"

"वे सब तैयार हैं, महाशया। वे लोग रास्ता बन्द करेंगे; हमारे आदमी उनकी ओर गाड़ी बढ़ा देंगे, दरवाज़ा खुल जायगा, और गाड़ी अन्दर आते ही बन्द कर दिया जायगा।"

"तो हम लोग खाना खा लें, मेनीविले; इससे समय आसानी

से कट जायगा। मैं ऐसी अधीर हो रही हूँ कि घड़ी की सुइयाँ आगे बढ़ाने की इच्छा होती है।"

"वह समय आयेगा; धीरज धरिए।"

"पर हमारे आदमी ?"

"वे यहाँ आ जायँगे। अभी तो मुश्किल से आठ बजे है।"

"मेनीविले, मेरे दुखी भाई ने अपने सर्जन को बुलाया है। उसके लिये सब से अच्छा सर्जन और सबसे अच्छी दवा यही होगी कि उसके पास वैलोई के केश का अवगुण्ठन भेजा जाय; और जो आदमी उनके पास यह भेंट लेकर जायगा, उसका अवश्य स्वागत होगा, मेनीविले।"

"दो घण्टे में वह आदमी ड्यूक को खोजने के लिये रवाना हो जायगा; वही व्यक्ति जो पेरिस से भागकर गया था, अब एक विजेता के रूप में वापस आयेगा।"

"एक बात और, मेनीविले; क्या हमारे पेरिस-स्थित मित्रों को सचेत कर दिया गया है ?"

"कौन मित्र ?"

"संघवादी ?"

"खुदा बचाये, महाशया! एक नागरिक से कोई बात कह देने का अर्थ है सारे शहर से कह देना। एक बार काम हो जाय, तो याद रखिए, हमें यह बात प्रकट होने के पूर्व पचास दूत भेजने हैं; कैदी मठ में रक्खा जायगा और हम फ़ौज के विरुद्ध

भी अपनी रक्षा कर सकेंगे। फिर मठ की छत से उसे लेने में कोई खतरा नहीं होगा—"हम वैलोई को पा लेंगे!"

"तुम कुशल और बुद्धिमान दोनों ही हो, मेनीविले। पर क्या तुम जानते हो कि मेरा उत्तरदायित्व बहुत बड़ा है, और कभी भी किसी स्त्री ने ऐसा ज़बर्दस्त कार्य करने का विचार नहीं किया, जैसा मैं कर रही हूँ ?"

"मैं यह जानता हूँ, महाशया, इसीलिये मैं सन्देह से काँपता हुआ आपसे परामर्श ले रहा हूँ।"

"साधु लोग अपनी पोशाक में ही शस्त्र धारण करेंगे ?"

"हाँ।"

"सिपाही लोग रास्ते में हैं ?"

"इस समय उन्हें वहीं होना चाहिए।"

"उन नागरिकों को घटना के बाद सूचना दी जायगी ?"

"तीन दूत यह कार्य करेंगे। दस मिनट में लाशापेल मार्त्यू, ब्रिगार्ड और बसी-लेकलर्क को सूचित कर दिया जायगा; बाक़ी लोगों को ये लोग स्वयं सूचना दे देंगे।"

"यह ध्यान रखना कि उन दोनों घुड़सवारों को मार देना है, जिन्हें हमने गाड़ी के दोनों बग़ल जाते देखा है; फिर हम घटना का वर्णन सुन्दर रूप में कर सकते हैं।"

"उन बेचारों को मार देना है, महाशया! क्या आप इसे ज़रूरी समझती हैं ?"

"लाइना को! क्या उससे कोई बड़ा नुक़सान होगा ?"

"वह एक बहादुर सैनिक है ।"

"वह तुच्छ साहसी जो बाईं ओर घोड़ा कुदाता हुआ जा रहा था; वही कुरूप आदमी जिसकी आँखें भयानक और रंग काला था ।"

"ओह, उसकी तो मैं वैसी पर्वाह नहीं करता ! मैं उसे जानता भी नहीं, और श्रीमती की तरह मैं भी उसकी आँखों को घृणा की दृष्टि से देखता हूँ ।"

"तो उसे मुझ पर छोड़ते हो ?" डचेज ने हँसकर कहा ।

"हाँ, महाशया ! मैंने यह आपकी ख्याति के लिये कहा है, साथ ही हमारे दल का सदाचार भी इससे क़ायम रहेगा ।"

"ठीक है, मेनीविले, मैं जानता हूँ कि तुम यशस्वी आदमी हो, और अगर तुम चाहो, तो मैं इसके लिये तुम्हे प्रशंसापत्र दे सकती हूं । तुम्हें कुछ भी नहीं करना पड़ेगा; वे तो वैलोई के बचाने में ही मारे जायँगे । तुम्हारे जिम्मे तो मैं उस युवक को सौंपती हूँ ।"

"कौन-सा युवक ?"

"जो अभी-अभी हमारे पास से गया है । देखो कि वह वास्तव में चला गया और वह हमारे शत्रुओं का दूत तो नहीं है ।"

मेनीविले ने खिड़की खोलकर बाहर देखने की कोशिश की—"ओह, कैसी अँधेरी रात है !" उसने कहा ।

"अद्भुत रात्रि है; जितनी ही अंधेरी हो, उतना ही अच्छा है । खूब साहस रक्खो, कप्तान !"

"हाँ, पर हम लोग देख तो सकेंगे ही नहीं।"

"जिस खुदा के लिये हम लोग लड़ेंगे, वह हम लोगों के बदले देखेगा।

मेनीविले, जो ऐसे मामले में ईश्वर के हस्तक्षेप पर पूरा विश्वास नहीं करता प्रतीत होता था, खिड़की पर खड़े-खड़े बाहर की ओर देखता ही रहा।

"क्या कोई दिखाई दे रहा है ?"

"नहीं; पर मैं घोड़ों की टाप की आवाज़ सुन रहा हूँ।"

"अच्छा, वे ही लोग हैं; बहुत अच्छा हुआ।" कहकर डचेज़ ने प्रसिद्ध सुनहली कैंची का स्पर्श किया।

# तैंतालीसवाँ परिच्छेद

——::o::——

## गोरेनफ्लोट का आशीर्वाद

एर्नाटन जब डचेज़ के पास से चला, तो उसका हृदय भरा हुआ और मन शान्त था। उसे प्रिंसेज़ के सम्मुख प्रेम-घोषणा का अनोखा अवसर मिला था, और बीच में आवश्यक बात आ जाने तथा उस (प्रेम-घोषणा) से कोई तत्कालीन हानि होने की सम्भावना न होने के कारण वह बात डचेज़ के मन से उतर गयी, और दोनों में से किसी को यह ख़याल नहीं हुआ कि भविष्य में समय आने पर उस बात का कोई परिणाम निकल सकता है। एर्नाटन ने न तो सम्राट् को धोखा दिया, न मेन को, और न अपने आपको ही। ऐसी

अवस्था में वह सन्तुष्ट था; किन्तु फिर भी वह बहुत बातों की इच्छा रखता था, और अन्य बातों में एक यह भी थी कि वह शीघ्र विसेंस पहुँच जाय, जहाँ सम्राट् उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे; और इसके बाद शय्या पर लेटकर स्वप्न देखे। बेल-इस्बत से रवाना होकर उसने पूरे सरपट के साथ अपना घोड़ा दौड़ा दिया; किन्तु वह मुश्किल से सौ गज़ आगे गया होगा कि उसे सामने सवारों की एक टोली नज़र आयी, जिसने तुरन्त उसे चारों ओर से घेर लिया, और क्षण-भर में आधी-दर्जन तलवारें और इतने ही पिस्तौल उस के ऊपर तने दिखायी दिये।

"ओह," एर्नाटन ने कहा—"सड़क पर डाकू और पेरिस के संघवादी आ गये दीखते हैं! इस देशका सत्यानाश जाय! सम्राट् ने अयोग्य कोतवाल नियत किया है; मैं उनसे उसे बदल देनेके लिए कहूँगा।"

"चुप रहो!" एक स्वर ने, जिसे एर्नाटन ने अपनी समझ में पहचान लिया, कहा—"अपनी तलवार और हथियार रख दो!" जल्दी करो!"

एक आदमी ने उसके घोड़े की लगाम छीन ली और दो ने उसके हथियार छीन लिये।

"ईश्वर! कैसे चालाक चोर हैं," एर्नाटन ने कहा—"भले आदमी, कम-से-कम मुझे यह बतलाने की कृपा तो करते कि—"

"क्यों, आप महाशय डी-कार्मेंजस हैं न!" उसकी तलवार छीननेवाले व्यक्ति ने कहा।

"महाशय डी-पिंकार्ने !" एर्नाटन ने कहा—"छिः ! आपने यह कैसा बुरा पेशा अख़्त्यार कर लिया है ?"

"मैंने कह दिया कि 'चुप रहो' !" मुखिया ने कहा—"इस आदमी को 'भण्डार' में ले जाओ।"

"पर, महाशय डी-सेण्ट-मालिन, यह तो आपके साथी एर्नाटन-डी-कार्मेंजस हैं।"

"एर्नाटन और यहाँ !" सेण्ट-मालिन ने क्रुद्ध-भाव से कहा "वह यहाँ क्या कर रहे हैं ?"

"गुड इवनिंग,* महाशयो," कार्मेंजस ने कहा—"मैं मानता हूँ कि मुझे ऐसा अच्छा साथ मिलने की आशा नहीं थी।"

सेण्ट-मालिन चुप रहा।

"ऐसा मालूम होता है कि मैं गिरफ़्तार कर लिया गया हूँ" एर्नाटन ने कहा—"क्योंकि मैं समझता हूँ कि आप मुझे लूटना नहीं चाहते ?"

"वाहियात बात है !" सेण्ट-मालिन ने घुड़ककर कहा—"यह तो ऐसी घटना हो गयी, जिसकी पूर्व-सम्भावना ही नहीं थी।"

"मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे लिये भी यही बात है।" एर्नाटन ने हँसकर कहा।

"बड़ी मुश्किल बात है। आप यहाँ कर क्या रहे थे ?"

---

*शाम की सलाम।

"अगर मैं यही सवाल आपसे करूँ तो क्या आप जवाब देंगे ?"

"नहीं ।"

"तो मुझे भी अपनी ही तरह करने दीजिए ।"

"तो आप यह नहीं बतायेंगे कि आप सड़क पर क्या कर रहे थे ?"

एर्नाटन मुस्कराया; पर उसने कोई जवाब नहीं दिया ।

"न यही बतायेंगे कि आप जा कहाँ रहे थे ?"

एर्नाटन ने जवाब नहीं दिया ।

"तो महाशय, चूँकि आप बात स्पष्ट नहीं बतलाते हैं, इसलिये मैं आपके साथ अन्य लोगों की तरह व्यवहार करूँगा ।"

"आप जो चाहें, करें; पर मैं आपको सावधान किये देता हूँ कि इसके लिये आपको जवाब देना पड़ेगा ।"

"महाशय-डी-लाइना को ?"

"नहीं; उनसे बड़े अधिकारी को ।"

"महाशय-डी-एपर्नों को ?"

"नहीं; उनसे भी बड़े को ।"

"अच्छा, मैं अपना हुक्म पूरा करूँगा, और आपको विंसेंस भेजूँगा ।"

"बहुत अच्छा; मैं वहीं जा भी रहा था ।"

"मुझे ख़ुशी है, कि इस छोटी यात्रा से आप ख़ुश हैं, महाशय ।"

दो आदमियों ने हाथ में पिस्तौल लिये हुए क़ैदी को सँभाला, और वे उसे दो अन्य आदमियों के पास ले गये, जो पाँच सौ फ़ीट आगे थे। उन दो आदमियों ने भी उसी तरह उसे आगे पहुंचाया और इस प्रकार एर्नाटन विसेंस के आँगन तक अपने साथियों के ही तत्त्वावधान में पहुंचाया। यहाँ उसने पचास निहत्थे घुड़सवार देखे, जो बहुत उदासीन दिखायी दे रहे थे और उन्हें पचास सशस्त्र घुड़सवारों ने घेर रक्खा था। बेचारे निहत्थे सवार अपने भाग्य को कोस रहे थे और वे उस दुःखपूर्ण अन्त की प्रतीक्षा कर कर रहे थे, जिसके लिये सब प्रबन्ध कर लिया गया था। पैंतालीस रक्षकों ने इन आदमियों को या तो जबर्दस्ती पकड़ा था, या चालाकी से, क्योंकि वे सावधानी के साथ इक्का-दुक्की करके अड्डे पर आये थे। यदि एर्नाटन इन बातों को समझ पाता, तो वह प्रसन्न होता; पर उसने उन्हें बिना कुछ समझे ही देखा। "महाशय," उसने सेण्ट-मालिन से कहा—"मैं देखता हूँ कि आपको मेरे कार्य का महत्त्व बतला दिया गया था, और मुझे दुर्घटना से बचाने के लिये आपने मुझे यहाँतक पहुँचाने की कृपा की है। अब मैं आपसे कहूँगा कि आपने ठीक किया, सम्राट् मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं, और मुझे उनसे आवश्यक बातें करनी हैं। मैं सम्राट् से कहूँगा कि आपने उनकी सेवा के लिये यह काम किया है।"

सेण्ट-मालिन पहले तो लाल हो उठा, फिर उसका रंग पीला

पड़ गया, किन्तु चूंकि वह उत्तेजित अवस्थाओं को छोड़कर वैसे बुद्धिमान आदमी था, इसलिये समझ गया कि एर्नाटन सच कह रहा है, और महाशय-डी-एपर्नों के साथ सम्राट् की वह बात कोई मजाक नहीं थी। इसलिये उसने कहा—"आप आज़ाद हैं, महाशय एर्नाटन, आपके साथ मैंने जो सदूव्यवहार किया, उसके लिये मुझे प्रसन्नता है।"

एर्नाटन अधिक न रुककर उस ज़ीने पर चढ़ने लगा, जो सम्राट् के कमरे को जाता था। सेण्ट-मालिन ने उसे उधर जाते देखा और ज़ीने में ही लाइना को उस (एर्नाटन) को देखते और इशारे से उसे आगे बढ़ाने के लिये कहते देखा। इसके बाद लाइना गिरफ़्तार-शुदा आदमियों को अपनी आँखों देखते के लिये नीचे उतरा और इस बात की सूचना दी कि सड़क सम्राट् की वापसी के लिये सुरक्षित और साफ़ कर दी गयी है। उसे जैकोबिन मठ और साधुओं की तोपों-बन्दूकों की कुछ भी ख़बर नहीं थी। किन्तु डी-एपर्नों सब बातें जानता था, क्योंकि निकोला पोलेन ने उसे सब ख़बर दे दी थी। इसलिये जब लाइना ने आकर अपने अफ़सर से कहा—"महाशय, सड़क साफ़ है," तो डी-एपर्नों ने जवाब दिया—"बहुत अच्छा; सम्राट् ने हुक्म दिया है कि पैंतालीसों रक्षकों की तीन ठोस टोलियाँ बना दी जायँ—एक आगे-आगे जाय, दो गाड़ी के दोनों बग़ल में रहें, जिससे यदि कोई फ़ायर भी हो, तो वह गाड़ी तक न पहुँच सके।"

"बहुत अच्छा!" लाइना ने कहा—"पर मैं समझ नहीं सकता कि फ़ायर कहाँ से हो सकता है।"

"जैकोबिन की मठ से, महाशय। रक्षकों को अपनी क़तारें खूब सघन बनाकर चलना चाहिए।"

इसी समय ज़ीने से सम्राट् के नीचे आ जाने के कारण वार्तालाप बन्द हो गया। सम्राट् के पीछे-पीछे और कई सज्जन थे, जिनमें सेण्ट-मालिन ने क्रोध-पूर्वक एर्नाटन को भी पहचाना।

"महाशयो," सम्राट् ने उनकी ओर रुख करके कहा—"क्या हमारे पैंतालीसों वीर यहाँ हैं?"

"हाँ, हुज़ूर," डी-एपर्नों ने उनकी ओर देखकर कहा।

"क्या हुक्म दे दिये गये?"

"हाँ, हुज़ूर, दे दिये गये, और उनका पालन किया जायगा।"

"तो हमें चलना चाहिए।"

सशस्त्र घुड़सवारों को क़ैदियों को क़ब्ज़े में रखने का हुक्म दे दिया गया था और यह कह दिया गया था कि वह उनसे एक शब्द भी न बोले। सम्राट् ने गाड़ी पर चढ़कर नंगी तलवार अपने बग़ल में रख ली। महाशय-डी-एपर्नों ने "खूब" कहा, और बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए अपनी तलवार आजमायी कि वह मियान से तुरन्त निकलती है, या नहीं। ठीक नौ बजे वे रवाना हो गये।

एर्नाटन के रवाना होने के एक घण्टे बाद तक मेनीविले खिड़की पर खड़ा रहा, जहाँ से, जैसा कि हम देख चुके हैं,

उसने उस युवक ( एर्नाटन ) को देखने की यह व्यर्थ चेष्टा की कि वह अँधेरे में किधर गया; किन्तु एक घण्टा पूरा हो जाने पर वह और भी बेचैन और निराश होने लगा, क्योंकि उसके सिपाहियों में से एक भी नहीं दिखायी दिया और निस्तब्ध सड़क पर केवल कभी-कभी घोड़ों की टाप की आवाज़ सुनायी दे जाती थी। यह आवाज़ सुनकर मेनीविले और डचेज़—दोनों यह जानने की व्यर्थ चेष्टा कर रहे थे कि सड़क पर क्या हो रहा है। आख़िर मेनीविले ऐसा चिन्तित हो उठी कि उसने एक घुड़सवार यह कहकर भेजा कि वह सवारों की पहली टोली के बारे में जाँच करे। वह घुड़-सवार भी वापस नहीं आया; डचेज़ ने दूसरा आदमी भेजा; पर वह भी ग़ायब।

"हमारे अफ़सर ने," सदा आशापूर्ण रहनेवाली डचेज़ ने कहा—"काफ़ी फ़ौज़ न होने के ख़याल से हमारे आदमियों को मदद के लिये रख लिया होगा; बात तो बुद्धिमानी की है; पर इससे चिन्ता हो रही है।"

"हाँ, बड़ी चिन्ता।" मेनीविले ने अँधेरे और सुनसान छितिज पर से नज़र हटाये बिना ही कहा।

"मेनीविले, क्या घटना हुई होगी, भला ?"

"मैं ख़ुद जाकर मालूम करूँगा।"

"ओह, नहीं ! मैं नहीं जाने दूँगी। मेरे साथ कौन रहेगा ? समय आने पर हमारे मित्रों को कौन जानेगा ? नहीं ठहरो,

मेनीविले। ऐसे महत्त्वपूर्ण भेद की बातों में सन्देह तो होता ही है; पर वास्तव में व्यवस्था अत्यन्त संयुक्त और इतनी गुप्त थी कि उसमें असफलता नहीं हो सकती थी।"

"नौ बज रहे हैं!" मेनीविले ने डचेज़ की अपेक्षा अपने आपको विशेष रूप में सम्बद्ध करते हुए कहा—"अच्छा, जैकोबिन लोग अपनी मठ से बाहर निकलकर दीवार के पास क़तार बाँधकर खड़े हो रहे है।"

"सुनो!" डचेज़ ने कहा।

उन्होंने दूर से बिजली के कड़कने-जैसी आवाज सुनी।

"यह घुड़सवार-सेना है!" डचेज़ ने कहा—"वे उसे ला रहे हैं; आख़िर हमने उसे पा लिया।" और उसने अत्यन्त प्रसन्न होकर दोनों हाथ मिला लिये।

"हाँ," मेनीविले ने कहा—"मैं एक गाड़ी की गड़गड़ाहट और घोड़ों के दौड़ने की आवाज सुन रहा हूँ।" और वह उच्च स्वर में चिल्ला उठा—"दीवार से बाहर आ जाओ, साधू बाबा लोगो।"

मठ का दरवाज़ा तुरन्त खुल गया और सौ सशस्त्र साधु आगे बढ़े, जिनका प्रधान बोरेमे था। यह दल ठीक सड़क पर आ खड़ा हुआ। इसके बाद उन्होंने गोरेनफ़्लोट को चिल्लाकर यह कहते सुना कि "मेरा इन्तज़ार करो! ठहरो! मैं संगत के प्रधान के रूप में सम्राट् का योग्य स्वागत करूँगा।"

"झरोखे पर चले जाइए, महन्तजी, और वहीं से हम लोगों को देखिए।"

"ओह, सच है ! मैं भूल गया कि मैंने अपने लिये वही जगह चुनी थी; सौभाग्य-वश आप मुझे स्मरण दिलाने के लिये यहाँ हैं, ब्रदर बोरोमे।"

बोरोमे ने चार साधुओं को महन्त के पीछे उनकी प्रतिष्ठा करने के बहाने भेज दिया।

शीघ्र ही बहुत-से मशालों की जगमगाहट से सड़क प्रदीप्त हो उठी, जिससे डचेज़ और मेनीविले ने बख्तर और तलवारों की चमचमाहट देखी। डचेज़ उमंग और प्रसन्नता के मारे अपने आपेसे बाहर हो रही थी। "नीचे जाओ, मेनीविले," उसने चिल्लाकर कहा—"और उसे बाँधकर रक्षकों के पहरे में मेरे पास लाओ !"

"हाँ, महाशया; पर मुझे एक बात बेचैन कर रही है।"

"वह क्या ?"

"मैं वह संकेत-ध्वनि नहीं सुन रहा हूँ, जो हम लोगों ने निश्चित की थी।"

"संकेत-ध्वनि की क्या ज़रूरत है, जब वे खुद उसे ही ला रहे हैं ?"

"पर वे तो उन्हें यहाँ मठ के सामने गिरफ़्तार करने-वाले थे।"

"उन्हें पहले ही अच्छा मौक़ा हाथ लग गया होगा।"

"हमारा अफ़सर नहीं दिखाई दे रहा है।"

"मैं देख रही हूँ।"

"कहाँ है वह ?"

"वह लाल कलँगी देखो।"

"हाँ ! लाल कलँगी—"

"क्यों ?"

"वह तो हाथ में तलवार लिये हुए डी-एपर्नों खड़ा है।"

"उन्होंने उसकी तलवार छोड़ दी होगी ?"

"अरे ! वह तो हुक्म दे रहा है।"

"हमारे आदमियों को ! तब तो धोखा हुआ।"

"ओह, महाशय ! ये हमारे आदमी नहीं है।"

"तुम पागल हो गये हो, मेनीविले !"

"किन्तु उसी समय लाइना रक्षकों की पहली टुकड़ी साथ लिये अपनी लम्बी तलवार हिलाते हुए बोला—"सम्राट् की जय !"

"सम्राट् की जय !" पैंतालीसों रक्षकों ने गैस्कन उच्चारण में एक साथ कहा। डचेज़ का चेहरा पीला पड़ गया और वह बेहोश-सी होकर बैठ गयी। मेनीविले ने उदास किन्तु दृढ़ होकर यह न जानते हुए कि उस मकान पर आक्रमण होगा, अपनी तलवार खींच ली। दल आगे बढ़कर बेल-इस्बत पहुँच गया था। बोरोमे कुछ आगे बढ़ा, और चूँकि लाइना सीधे उसके पास घोड़ा ले गया, इसलिये उसने देखा कि सर्वनाश हो गया, और उसने अपना कर्त्तव्य निश्चय कर लिया।

"सम्राट् के लिये जगह दो !" लाइना ने कहा। गोरेनफ़्लोट ने 'जयकार' की आवाज, हथियारों की झनकार और मशालों

की रोशनी से उत्तेजित होकर झरोखे से अपनी विशाल बाहें बढ़ाकर सम्राट् को आशीर्वाद दिया। हेनरी ने उसे देखा और मुस्कराकर झुका, और उस कृपा के उत्तरस्वरूप गोरेनफ़्लोट ने अपने विशिष्ट उच्चारण में सम्राट् की जय बोली। बाक़ी सब लोग मौन रहे; वे लोग अपने दो मास के सैन्य-शिक्षण का भिन्न परिणाम सोचे हुए थे। किन्तु बोरोमे ने डचेज़ की सेना को उपस्थित न देख समझ लिया कि उनके उद्योग का परिणाम कुछ नहीं होगा और उसने एक क्षण भी हिचकिचाये विना गोरेनफ़्लोट की सी उच्च और गुञ्जार-युक्त आवाज़ में सम्राट् की जय बोली। फिर बाक़ी लोगों ने भी जयकारों के नारे लगाये।

"धन्यवाद, पूज्य महन्तजी, धन्यवाद !" हेनरी ने कहा, और फिर वे मठ से गुज़रकर आग की लपक की तरह नारों और यशोगान के बीच में अभीष्ट स्थान को बढ़े। उनके पीछे बेल-इस्वत अन्धकारमय हो गया।

अपने सुनहली ढाल से ढके हुए खरोखे से, जिसके पीछे वह झुकी हुई थी, डचेज़ ने मशाल की रोशनी में प्रत्येक व्यक्ति का चेहरा ध्यान से देखा।

"ओह," उसने चिल्लाकर कहा—"देखो, मेनीविले ! वह मेरे भाई का सन्देश-वाहक युवक सम्राट् की सेवा में है। हम लोगों का सर्वनाश हो गया !"

"हमें तुरन्त यहाँ से भाग निकलना चाहिए; महाशया, अब तो वैलोई विजयी हो गया।"

"हमें धोखा दिया गया ! उस युवक ने हमें धोखा दिया ! वह सब कुछ जानता था !"

सम्राट् अपने दल-बल समेत सेण्ट-ऐण्टोनी के दरवाज़े से घुसे, जो उनके आने के पहले खुल गया था और घुसने के बाद बन्द हो गया ।

# चवालीसवाँ परिच्छेद

—:✻✻✻:—

## चिको का सम्राट् लुई एकादश को आशीर्वाद

पाठक अब हमें चिको की ओर ध्यान देने की आज्ञा देंगे। चिको का अन्तिम साहसिक कार्य अत्यन्त वेग से समाप्त हुआ था। वह अच्छी तरह समझता था कि ड्यूक और उसके दरम्यान अब एक ऐसा घातक युद्ध होगा कि जिसका अन्त-जीवन के साथ होगा।

"चलो!" बहादुर गैस्कन (चिको) ने बीजेंसी की ओर बढ़ते हुए कहा—"अगर कभी अड्डों के घोड़ों पर समय काटने का मौक़ा था, तो हेनरी-डी-वैलोई, डाम माडे-ट गोरेनफ़्लोट और सेबास्टीन चिको का सम्मिलित धन व्यय करके शीघ्र-से-शीघ्र भाग निकलने का (अवसर) यही है।"

चिको चूँकि प्रत्येक अवस्था का सदुपयोग करने में बड़ा ही पटु था, इसलिये उसने अब अपनी शक्ल उसी तरह एक बड़े लार्ड की तरह बना ली, जैसे पहले अच्छे नागरिक की बनायी थी। जब उसने एर्नाटन का घोड़ा सस्ते-दामों पर बेच दिया और अड्डे के मैनेजर से आध घण्टे तक बातें कीं, तो उसकी ख़िदमत बड़े उत्साह और गर्म-जोशी से की गयी। एक बार घोड़े पर सवार होकर वह निश्चय कर लेता था कि जब तक किसी सुरक्षित स्थान पर न पहुँच जायगा, तब तक वह रास्ते में नहीं रुकेगा। वह लगातार तेज-चाल से घोड़े दौड़ाता और एक के बाद दूसरा घोड़ा बदलता हुआ बिना रुके आगे बढ़ता जाता था। वह खुद लोहे का बना मालूम होता था, और बीस घण्टे में साठ लीग का सफ़र तय कर चुकने पर भी उसे थकावट नहीं मालूम हुई। इस तेज़ रफ़्तार की बदौलत वह तीन दिन में बार्डो पहुँच जाने पर दम मारने की बात सोच सका।

घोड़ा दौड़ाते समय भी आदमी विचार कर सकता है, और चिको ने भी विचार खूब किया। वह हेनरी को कैसे अद्भुत सम्राट् के रूप में देखने जा रहा है, जब कि अन्य लोग उसे मूर्ख, डरपोक और धर्म-विरोधी समझते थे? किन्तु चिको की राय सारी दुनिया से भिन्न होती थी, और वह प्रत्येक बात की तहतक पहुँचने में कुशल था। उसकी समझ में हेनरी-डी-नवार एक बिना सुलझी हुई पहेली था, किन्तु इतना जान लेना कि वह एक पहेली है, बहुत-कुछ जान लेना था। अन्य लोगों

की अपेक्षा ग्रीस के ऋषियों की तरह चिको उसे अधिक समझता था और जानता था कि वह किसी बात का ज्ञान नहीं रखता। इसलिये, जहाँ अधिकांश लोग दिल खोलकर बातें करते, चिको ने सोच लिया कि उसे बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए, और उसके मुँह से प्रत्येक शब्द जँचे हुए निकलने चाहिए।

चिको की तीक्ष्ण-बुद्धि ने यह परिणाम निकाला कि अब उसे कपटपूर्ण व्यवहार करने की ज़रूरत है। जिस देश में होकर वह गुज़र रहा था, उसमें यही बात सापेक्ष थी। एक बार नवार की छोटी सरहद के अन्दर जहाँ की ग़रीबी फ्रांस में एक विख्यात बात थी, चिको ने बड़े ही आश्चर्य-पूर्वक देखा कि वहाँ बेचैनी के वह चिह्न नहीं दीख रहे हैं, जो फ्रांस के उन अन्य उपजाऊ प्रान्तवालों के चेहरों और प्रत्येक घरों में दृष्टिगोचर होता था, जिन्हें वह अभी पार करके आया है। लकड़हारा जो उसके पास होकर अपने प्यारे बैल के कन्धे पर हाथ रक्खे हुए गुज़रा, छोटा पेटीकोट पहने सिर पर घड़ा रक्खे फुर्ती के साथ क़दम उठाते हुए जो लड़की उधर से गयी थी; बुड्ढा जो रास्ते के निकट अपनी जवानी के गीत गुनगुना रहा था; चिड़िया जो अपने पिंजड़े में चहचहाता या प्रचुरता के साथ रक्खे हुए चारे में चोंच मारता है; भूरे रंग के दुबले लड़के जो सड़क के आस-पास खेल रहे थे—सब स्पष्ट भाषा में चिको से कह रहे थे—"देखो, हम यहाँ सुखी हैं।"

रह-रहकर चिको के कान में गाड़ी के पहियों की आवाज़ आती, तो वह सहसा भय से काँप उठता था; उसे उन लोगों की याद आ गयी, जिन्होंने फ्रांस की सड़कें तोड़ दी थीं; किन्तु सड़क के मोड़ पर जब अंगूरों से लदे हुए छकड़े दिखायी देते, जिनमें पीले और लाल-चहरोंवाले बच्चे दिखायी देते। कभी-कभी झाड़ी, अंगूर की बेलों या अंजीर के पेड़ों के पीछे बन्दूक़ की नली दिखायी देती, तो वह काँप उठता कि कहीं कोई उसकी घात में तो नहीं है; पर ऐसे बन्दूक-धारी हमेशा शिकारी ही निकलते थे, जिनके पीछे बड़े-बड़े कुत्ते खरगोशों से भरे हुए मैदान में होकर पहाड़ों की ओर जा रहे थे, जहाँ तीतरों और जंगली मुर्गों की बहुतायत होती है। यद्यपि यहाँ ऋतु समय से बहुत आगे थी, क्योंकि जिस समय चिको पेरिस से रवाना हुआ था, वह कुहरा और सफ़ेद पाला पड़ रहा था। यहाँ काफ़ी गर्मी थी और मोसिम सुहावना हो चला था। बड़े-बड़े वृक्ष, जिसकी पत्तियाँ अभी तक पूर्णतः गिरी नहीं थीं, जो वास्तव मे दक्षिण मे पूर्णतः गिरती भी नहीं, सड़क पर घनी छाया डाल रहे थे।

बीरनाई किसान कानतक खिची हुई टेढ़ी टोपी लगाये, गाँव के सस्ते घोड़ों पर सवार इधर-उधर फिरते नज़र आ रहे थे। वे घोडे मानो थकने का नाम ही नहीं जानते थे और एक दौड़ में बीस मील की खबर लेते थे। उनके बदन पर न कभी खरहरा चलाने की जरूरत, न चारजामा कसने की। लम्बे

सफ़र के बाद उन घोड़ों पर से उतरते ही वे बदन हिलाकर फ़ौरन जंगल की घास चरने लगते। यही उनका काफ़ी चारा था।

"ख़ूब !" चिको ने कहा—"मैंने गैस्कनी को ऐसा उर्वर नहीं देखा। मैं मानता हूँ कि पत्र का बोझ मेरे मस्तिष्क पर बहुत पड़ रहा है, यद्यपि मैंने उसका अनुवाद लैटिन में कर लिया है, तो भी मैंने यह कभी नहीं सुना कि हेनरिवट (जैसा कि चार्ल्स नवम उसे कहता है) लैटिन जानता है; इसलिये मैं उसे शुद्ध फ्रांसीसी अनुवाद दूँगा।"

चिको के पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ कि सम्राट् नेराक में हैं। वह उक्त स्थान पर पहुँचने के लिये बायीं ओर मुड़ा और देखा कि सड़क पर कंडम के बाज़ार से आनेवाले लोगों की भीड़ लग रही है। चिको दूसरों के सवाल का जवाब देनेमें सावधान होने के साथ ही दूसरों से प्रश्न करने में भी बड़ा चतुर था। उसने लोगों से मालूम किया कि नवार-सम्राट् बड़े आनन्द से जीवन व्यतीत कर रहे हैं, और सदा एक प्रणयिनी को छोड़कर दूसरी को प्रेम किया करते हैं।

सड़क पर चिको ने एक युवक केथोलिक धर्माचार्य, एक भेड़ बेचनेवाले और एक अफ़सर से मित्रता कर ली, जो सड़क पर मिल गये थे और एक साथ यात्रा कररहे थे। संयोग-वश इन लोगों से मित्रता हो जाने के कारण चिको को नवार के पूरे प्रतिनिधि मिल गये, क्योंकि ये तीनों तीन दल के—शिक्षित,

व्यापारी और सैनिक—थे। धर्माचार्य ने कई ऐसे पद्य सुनाये जो नवार सम्राट् और बैरन-डी-फ़ारेनी-डी-माण्टमोरेन्सी की लड़की फ़ास्यू के सम्बन्ध में बनाये गये थे।

"ओह," चिको ने कहा—"हम पेरिसवाले तो यह समझते हैं कि-सम्राट् मैडमाइसिल-डी-राबर्स के पीछे पागल हो रहे हैं।"

"ओह," अफ़सर ने कहा—"यह तो पक्की घटना है।"

"क्या! सम्राट् हर शहर में एक प्रणयिनी रखते हैं?"

"बहुत सम्भव है; मैं जानता हूँ कि जब मैं कैसिलनादारी की गढ़-रक्षिणी सेना में था, तो वे मैडमाइसिल-डी-डेली के प्रेमपाश में फँसे थे।"

"ओह! मैडमाइसिल डेली तो ग्रीक लड़की थी न?"

"हाँ," धर्माचार्य ने कहा—"साइप्रियट थी।"

"मैं ऐगन का रहनेवाला हूँ," मेडोंक व्यापारी ने कहा—" और मैं जानता हूँ कि जब सम्राट् वहाँ थे, तो उन्हों ने मैडमाइसिल टिगनोंविलो को अपनी प्रेमिका बनाया था।"

"शाबाश!" चिको ने कहा—"तब तो सम्राट् सार्वभौम प्रेमी है। पर मैडमाइसिल डेली के परिवार को तो मैं जानता था!"

"वह बड़ी ही ईर्ष्यालु प्रकृति की थी और सदा धमकी दिया करती थी। उसके पास एक बड़ी ही बढ़िया छोटी कटार थी, जिसे वह अपनी मेजपर रखती थी। एक दिन सम्राट् उसकी वह कटार यह कहकर उठा लाये कि वह यह

नहीं चाहते कि उनके बाद जो व्यक्ति उसे प्रेम करे, उसे किसी दुर्भाग्य का सामना करना पड़े।

"और मेडमाइसिल-डी-रावर्स ?"

"ओह ! उससे उन्होंने लड़ाई कर ली।"

"तो फिर आख़िरी ला-फ़ास्यू है ?"

"ओह ! हाँ; सम्राट् उसके सम्बन्ध में पागल हो रहे हैं— ख़ासकर इसलिये कि वह गर्भवती है।„

"पर सम्राज्ञी क्या कहती हैं ?"

"वह ईसामसीह की मूर्ति के समक्ष रोती है।" धर्माचार्य ने कहा।

"इसके अतिरिक्त," अफ़सर ने कहा—वह इन बातों को जानती भी नहीं।"

"यह असम्भव है।" चिको ने कहा।

"यह क्यों ?"

"क्योंकि नेराक कोई ऐसी बड़ी जगह नहीं है कि वहाँ सब बातें चुपके-चुपके हो सकें।"

"इसका भी इन्तज़ाम है," अफ़सर ने कहा—"वहाँ एक बाग़ है, जिसमें तीन हज़ार फ़ीट लम्बे कुञ्ज है, उनमें साइप्रस के शानदार साइकामोर* वृक्ष लगे हुए हैं, जिनकी छाया ऐसी घनी है कि दिन-दहाड़े वहाँ अँधेरा रहता है। सोचिए रात को वहाँ कैसा अन्धकार रहता होगा।"

---

*बरगद की तरह का एक सघन वृक्ष।

"और सम्राज्ञी लवलीन भी तो हो रही है।" धर्माचार्य ने कहा।

"लवलीन ?"

"हाँ।"

"किसके साथ भला ?"

"ईश्वर के साथ।" धर्माचार्य ने गम्भीरता-पूर्वक कहा।

"ईश्वर के साथ ?"

"क्यों नहीं ?"

"ओह, सम्राज्ञी धार्मिक है ?"

"बड़ी धार्मिक।"

"तो भी मैं समझता हूं, महल मे प्रार्थना-भवन नहीं है।" चिको ने कहा।

"आपका खयाल ग़लत है, महाशय। प्रार्थना-भवन नहीं है! क्या आप हम लोगों को नास्तिक समझते हैं ? सुनिए महाशय, अगर सम्राट् अपने आदमियों के साथ गिर्जे में जाते हैं, तो सम्राज्ञी अपने निजी गिर्जे में प्रार्थना सुनती है।"

"सम्राज्ञी ?"

"हाँ, हाँ।"

"सम्राज्ञी मार्गरिट ?"

"हाँ; और मैं; यही नाचीज़ मैं; वहां प्रर्थना करने पर दो चार दो क्राउन प्राप्त कर चुका हूँ। यहाँ तक कि मैंने 'ईश्वर ने गेहूं और चोकर को अलग कर दिया है' पर धर्मोपदेश भी

दिया है। बाइबिल में 'ईश्वर पृथक् करेगा' आया है, किन्तु चूँकि उसको लिखे हुए बहुत समय व्यतीत हो गया, इसलिये मैंने समझा कि ईश्वर वह कार्य कर चुका होगा।"

"क्या सम्राट् को इस धर्मोपदेश की बात मालूम थी।"

"उन्हें इसकी खबर लग गयी थी।"

"और वे क्रुद्ध नहीं हुए?"

"बल्कि उल्टे वे प्रसन्न हुए।"

"आप मुझे अचरज में डाल रहे हैं!"

"मैं यह भी बतला दूँ," अफ़सर ने कहा—"कि वे महल में धर्मोपदेश सुनने के अतिरिक्त और काम भी करते हैं; वे दावतें खिलाते और खेल भी दिखाते हैं। मैं नहीं समझता फ्रांस में और किसी जगह इतनी मूँछें दिखलायी जाती होंगी, जितनी नेराक में।"

"चिको को अपना मार्ग निश्चित करने के लिये ज़रूरत से ज़्यादा समाचार उपलब्ध हो गये थे। वह सम्राज्ञी मार्गरिट को अच्छी तरह जानता था, और वह यह भी जानता था कि अगर वह इन प्रेम-सम्बन्धी बखेड़ों को देखते हुए भी नहीं देख रही है, तो इसका कोई ख़ास उद्देश्य है, जिसके कारण उसने अपनी आँखों पर पट्टी बाँध रक्खी है।"

"हाँ?" उसने कहा—"साइप्रस के वे कुञ्ज और तीन हज़ार फ़ीट की सघन छाया तो मुझे बड़ी घबराहट में डाल रही है। मैं पेरिस से नेराक सच्ची बात कहने के लिये जा रहा हूँ;

जहाँ ऐसी अन्धकारमयी छाया है कि स्त्री अपने पति को दूसरी स्त्री के साथ टहलती नहीं देख सकती। इन लोगों की सुन्दर क्रीड़ाओं में बाधा डालने पर तो ये लोग मुझे जान से ही मार डालेंगे। सौभाग्य-वश मैं जानता हूँ कि सम्राट् एक दार्शनिक विचार का आदमी है, और मैं इसमें विश्वास करता हूँ। इसके अतिरिक्त मैं एक राजदूत और पवित्र व्यक्ति हूँ।

शाम के वक्त चिको ने नेराक में प्रवेश किया, जो फ्रांस-सम्राट् और उसके दूत की क्रीड़ा का समय था। चिको इस बात से सन्तुष्ट हुआ कि वह सम्राट् से सरलता-पूर्वक भेंट कर सका। नौकर दरवाजा खोलकर उसे एक सादे से कमरे में ले गया, जो केवल फूलों से सजा हुआ था, और जिसके ऊपर सम्राट् का गुप्त भवन और बैठक थी। यदि कोई सम्राट् से मिलना चाहता था, तो एक अफ़सर या ख़वास सम्राट् को, चाहे वह जहाँ हों, बुलाने के लिये दौड़ जाता था, और वह उसके बुलाते ही आ जाते। चिको इस बात से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने समझा कि सम्राट् खुले दिल का और सरल आदमी है, और उसने जब सम्राट् को गुलाब और तज की वाटिका से, पुरानी टोपी लगाये, हरा अंगरखा पहने और भूरा बूट पहने हाथ में गेंद लिये हुए द्रुत गति से आते देखा तो उसकी वह धारणा और भी पक्की हो गयी। वह ऐसा प्रसन्न और मग्न नजर आ रहा था, मानो अप्रसन्नता उसके पास कभी फटकती ही नहीं।

"कौन मुझसे मिलना चाहता है ?" उसने खवास से कहा।

"एक आदमी है, जो आधा तो दरबारी मालूम होता है, आधा सैनिक।"

चिको ने ये शब्द सुन लिये और भीरुता-पूर्वक आगे बढ़ा। "मैं मिलना चाहता हूँ, हुज़ूर।"

"क्या! चिको और नवार में! स्वागत है, प्यारे महाशय चिको!"

"हुज़ूर को सहस्रों धन्यवाद।"

"अब भी जीवित हो, ईश्वर को धन्यवाद!"

"मुझे भी ऐसी ही आशा है, हुज़ूर।" चिको ने प्रसन्नता से गद्गद होकर कहा।

"ओह, सचमुच! हम दोनों साथ पियेंगे। सचमुच तुम्हें देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है, चिको; बैठो यहाँ।" कहकर सम्राट् ने उसे घास से ढके हुए चबूतरे की ओर सङ्केत किया।"

"ओह, नहीं हुज़ूर।

"तुम दो सौ लीग के फ़ासले से मुझसे मिलने आये हो, और मैं तुम्हें खड़ा रक्खूँ ? नहीं नहीं; बैठ जाओ। खड़े होकर बातें नहीं की जातीं।"

"लेकिन, हुज़ूर, आदर-प्रदर्शन—"

"आदर-प्रदर्शन! यहाँ नवार में! तुम पागल हो, प्यारे चिको।"

"नहीं हुज़ूर, मैं पागल नहीं, राजदूत हूँ।"

हेनरी की भौंं जरा-सी खिचकर फिर पूर्ववत् हो गयी। "किसके भेजे हुए दूत?" उन्होंने पूछा।

"हेनरी तृतीय का। मैं पेरिस के लावर से आ रहा हूँ, हुजूर!"

"ओह, यह तो कठिन है! मेरे साथ आओ," सम्राट् ने ठण्डी साँस लेकर उठते हुए कहा—"खवास, शराब ऊपर गुप्त-भवन में ले आओ—नहीं दीवान खास में। आओ, चिको, मैं तुम्हें लिवा ले चलूँगा।"

चिको सम्राट् के पीछे यह सोचते हुए हो लिया—"कैसा अप्रिय कार्य है!—ऐसे ईमानदार आदमी को तंग करना, जो शान्ति ओर अज्ञान की गोद में पड़ा हुआ है। यह तो दार्शनिक पुरुष सिद्ध होगा।"

---

# पैंतालीसवाँ परिच्छेद

## नवार-सम्राट की अनुमान-शक्ति।

नवार-सम्राट् का दीवान-ख़ास कोई बड़े ठाट-बाट का नहीं था, क्योंकि वह धनी नहीं थे, और जो-कुछ उनके पास था, वह व्यर्थ ख़र्च करना चाहता था। यह काफ़ी बड़ा था और उसके बग़ल के मकान के भाग में उसका शयनागार भी था। यह राजकीय ढंग से तो नहीं, पर साधारणतः अच्छा सजाया हुआ था और इसकी खिड़कियों से नदी के किनारे तक फैला हुआ विस्तृत और हरा-भरा मैदान दिखायी देता था, जहाँ-तहाँ बड़े-बड़े वृक्ष, और बेत के जुट्ट नदी के जल को छिपाये हुए थे, जो सूर्य की किरणों में सुनहले और चन्द्रमा की स्निग्ध

चाँदनी में रुपहले रंग का दिखाई देता था। यह सुन्दर दृश्य पहाड़ की श्रेणियों तक, जो सन्ध्या की रोशनी में बैजनी रंग की दीखती थीं, जाकर समाप्त हो जाता था। दूसरी ओर की खिड़कियों से देखने पर बगलवाले मकान का दरबारवाला भाग दीखता था। उस कमरे की सजावट की अपेक्षा, जिसमें हेनरी की बैठक थी, चिको प्राकृतिक दृश्य की ओर अधिक आकर्षित हुआ।

सम्राट् अपनी साधारण सादगी और मग्नता के भाव से एक बड़ी चमड़े की गद्दी और गिलट की घुण्डी लगी हुई आराम-कुर्सी पर बैठ गये, और चिको उनकी आज्ञा से उसी ढंग की बनी हुई एक तिपाई पर बैठा। हेनरी ने उसकी ओर मुस्कराहट, किन्तु उत्सुकता के साथ देखा।

"तुम समझोगे कि मैं बहुत उत्सुक हूं, प्यारे चिको," सम्राट् ने कहना शुरू किया—"पर मैं और कर ही क्या सकता हूँ। मैंने इतने अधिक दिनों तक तुम्हे मृतक समझ रक्खा था, कि तुम्हारे पुनर्जन्म से प्रसन्न होते हुए भी, मैं मुश्किल से यह समझ सकता हूँ कि तुम जीवित हो। तुम यकायक इस संसार से ग़ायब क्यों हो गये थे?"

"हुजूर!" चिको ने अपनी साधारण स्वतंत्रता व्यक्त करते हुए कहा—"आप भी तो विंसेन्स से एकदम ग़ायब हो गये थे। हरेक व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार छिप जाया करता है।"

"तुम्हारी उपस्थित बुद्धि से मैं यह तो समझ गया कि मैं तुम्हारे प्रेत से न बात करके तुम्हीं से कर रहा हूँ।" सम्राट् ने अधिक गम्भीर बनकर फिर कहा—"पर अब हमें दिल्लगी छोड़कर काम की बात करनी चाहिए।"

"अगर इससे श्रीमान् को थकावट न हो, तो मैं तैयार हूँ।"

हेनरी की आँखें चमक उठीं। "मुझे थकावट ! यह सच है कि मैं यहाँ कुछ सुस्त हो गया हूं, पर मैं थका नहीं हूँ, क्योंकि मैंने कुछ किया ही नहीं है। मैंने आज शारीरिक परिश्रम खूब किया है, पर मानसिक थोड़ा।"

"हुज़ूर, मुझे इसकी बड़ी खुशी है; क्योंकि आपके रिश्तेदार और मित्र सम्राट् के पास से मैं एक बड़ा नाज़ुक सन्देश लाया हूँ।"

"जल्दी कहो; तुम मेरी उत्सुकता को सन्देह के रूप में परिवर्त्तित कर रहे हो।"

"हुज़ूर—"

"पहले, अपनी साख का पत्र दो। मैं जानता हूँ कि यह कहना व्यर्थ है, क्योंकि तुम राजदूत हो, पर मैं तुम्हें दिखाना चाहता हूँ कि बीरनाई किसान होते हुए भी हम सम्राट् का कर्त्तव्य जानते हैं।"

"श्रीमान, मैं आपसे क्षमा चाहता हूं; पर मेरे पास जितने भी साख के पत्र थे, उन्हें मैंने या तो नदी में डुबो दिया, या आग में डाल दिया या फाड़कर फेंक दिया।"

"यह क्यों ?"

"इसलिये कि अपने साथ सन्देश-पत्र लेकर नवार का सफ़र करना उतना आसान नहीं है, जितना लियोन की दुकानों में जाकर कपड़े ख़रीदना; और अगर कोई राजकीय सन्देश साथ लेकर चलता है, तो उसे अपनी क़ब्र की ओर जाता हुआ समझना चाहिए।"

"यह सच है," हेनरी ने कहा—"सड़कें बड़ी सुरक्षित नहीं हैं, और नवार में रुपयों की बड़ी तंगी हो रही है, पर लोग ऐसे विश्वासपात्र हैं कि अधिक चोरी आदि नहीं करते।"

"नहीं हुज़ूर; वे लोग भेड़ों या देवताओं के समान सीधे हैं। पर यह बात केवल नवार के लिये ही लागू है; इसके बाहर जाते ही हरेक शिकार के पीछे भेड़िये और गिद्ध लग जाते हैं। मैं एक शिकार था, श्रीमान, इसलिये मेरे पीछे दोनों ही लग गये थे।"

"ख़ैर, मुझे ख़ुशी है कि वे तुम्हें खा नहीं गये।"

"हाँ! हुज़ूर, पर यह उनकी त्रुटि नहीं थी; उन्होंने भरसक कोशिश की थी, पर उन्होंने मुझे बहुत सख़्त पाया और मेरे चमड़े में उनके दाँत धँस नहीं सके। किन्तु मुझे तो अपने पत्र का हाल बताना है।"

"पर पत्र तो चूँकि तुम्हारे पास कोई है ही नहीं, प्यारे चिको, इसलिये मुझे उसकी चर्चा व्यर्थ मालूम होती है।"

"मुझे यह कहना चाहिए कि यद्यपि मेरे पास अब नहीं है, पर पहले तो था।"

"बहुत अच्छा," हेनरी ने हाथ बढ़ाकर कहा—"तो फिर लाओ।"

"यही तो दुर्भाग्य की बात है, हुज़ूर—मेरे पास पत्र था, और मैं श्रीमान् को एक ऐसा सन्देश देनेवाला था, जिससे अच्छा कभी शायद ही किसी ने दिया हो।"

"तो वह तुमसे खो गया ?"

"मैंने चटपट उसे फाड़ डाला, हुज़ूर, क्योंकि महाशय-डी-मेन मुझसे पत्र छीनने के लिये झपटे थे।"

"हमारा चचेरा भाई मेन ?"

"जी हाँ, खुद मेन।"

"सौभाग्य-वश वह तेज़ नहीं दौड़ सकता। क्या वह अब-भी मोटा हो रहा है ?"

"अब तो मोटा नहीं हो रहा होगा, मैं समझता हूँ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि आप समझते हैं, हुज़ूर, दुर्भाग्य का मारा वह मुझे पकड़ने को झपटा था और उसे तलवार का घाव लग गया।"

"फिर क्या हुआ ?"

"मैंने इतनी सावधानी से काम लिया कि वह पत्र को एक नज़र भी नहीं देख सका।"

"शाबाश ! तुम्हारी यात्रा बड़ी मनोरंजक रही। मुझे सारा हाल सविस्तर सुनाओ। किन्तु एक बात मुझे बेचैन कर रही है, अगर पत्र महाशय-डी-मेन के कारण नष्ट किया गया, तो

वह मेरे लिये भी तो अब नष्ट ही है। मैं अब जान कैसे सकूँगा कि मेरे भाई हेनरी ने उसमें क्या लिखा था ?"

"क्षमा करें, हुजूर; तो भी वह मेरी स्मरण शक्ति में मौजूद है।"

"यह कैसे ?"

"फाड़ने के पहले मैंने उसे कण्ठस्थ कर लिया था।"

"खूब किया, चिको ! तब तो तुम उसे ज़बानी सुनाओगे न ?"

"खुशी से, हुजूर।"

"शब्दशः ?"

"हाँ, हुजूर, यद्यपि मैं वह भाषा नहीं जानता, पर मेरी स्मरण-शक्ति अच्छी है।"

"कौन-सी भापा ?"

"लैटिन।"

"मैं तुम्हारी बात नहीं समझता। क्या मेरे भाई ने पत्र लैटिन में लिखा था ?"

"हाँ, हुजूर।"

"क्यों ?"

"हुजूर, इसलिये कि लैटिन ऐसी वीरतापूर्ण भापा है, जिसमे कुछ भी लिखा जा सकता है, और जिसमें पर्सियस और जुवेनेल ने सम्राटों की वेवक़ूफ़ियों को अमर कर दिया है।"

"सम्राटों की ?"

"और सम्राज्ञियों की भी, श्रीमान ।"

सम्राट् की भवें खिचने लगीं ।

"मेरा मतलब शाहंशाहों और सम्राज्ञियों से है ।" चिक्को ने कहना जारी रक्खा ।

"तुम लैटिन जानते हो, चिक्को ?"

"हुज़ूर 'हाँ' भी और 'नहीं' भी ।"

"अगर 'हाँ' है, तब तो तुम भाग्यवान हो, क्योंकि तब तो तुम मुझसे भी अच्छे रहे, क्योंकि मैं वह भाषा नहीं जानता । इस शैतानी भाषा लैटिन के ही. न जानने के कारण मैं कभी गम्भीरता-पूर्वक प्रार्थना में नहीं सम्मिलित हो सका । तो तुम तो लैटिन जानते हो न ?"

"मैंने लैटिन के अतिरिक्त ग्रीक और हिब्रू भाषा पढ़ लेना सीखा था ।"

"तब तो बड़ी सुविधा की बात है; तुम तो जीवित पुस्तक हो, चिक्को ।"

"श्रीमान ने ठीक शब्द प्रयोग किया है—'पुस्तक' । वे मेरी स्मरण-शक्ति पर सन्देश छापकर मुझे जहाँ-तहाँ भेजते रहते हैं । मैं पहुँचने पर पढ़कर समझ लिया जाता हूँ ।"

"या नहीं समझे जाते ।"

"यह कैसे, हुज़ूर ?"

"अगर कोई वह भाषा न जानता हो, जिसमें तुम छापे गये हो, तब ?"

"ओह, हुजूर, सम्राट् लोग सब कुछ जानते हैं।"

"यह तो हम, लोगों से कह दिया करते है, और चापलूस लोग भी हम लोगों से ऐसा कहा करते हैं।"

"तब तो हुजूर, मेरे लिए वह पत्र सुनाना ही व्यर्थ होगा, जो मैंने ज़बानी याद कर रक्खा है, क्योंकि हम दोनों में से एक भी उसे नहीं समझेगा।"

"क्या लैटिन इटैलियन* से मिलती-जुलती नहीं होती ?"

"लोग कहते तो ऐसा ही हैं, हुजूर।"

"ओर स्पेनी से भी ?"

"मेरा भी यही विश्वास है।"

"तो हमें कोशिश करनी चाहिए। मैं इटैलियन कुछ-कुछ जानता हूँ और हमारी गैस्कन बोली स्पेनी-जैसी है; शायद मैं बिना सीखे लैटिन समझ लूँ।"

"तो हुजूर मुझे सुनाने की आज्ञा देते है ?"

"हाँ, सुनाओ, चिको।"

चिको ने ज़बानी सुनाना शुरू किया।

फ्रेटर कैरीसिम,

सिसेर ऊमर को टी प्रासकेबेटर जसीनस नोस्टर कैरोलस मानस, फंक्टस सुपस, कालेट अस्क रेजिअम नोस्ट्रम एट पिक्टरो रिंसयो पर्टिनासिर एढारेट।

"अगर मैं ग़लती नहीं करता हूँ," हेनरी ने बाधा डालते

---

*इटली की भाषा।

हुए कहा—"तो इस अंश में उन्होंने प्रेम, हठ, और मेरे भाई चार्ल्स नवम का ज़िक्र किया है ।"

"बहुत सम्भव है," चिको ने कहा—"लैटिन ऐसी सुन्दर भाषा है कि यह सभी बातें एक ही वाक्य में आ गयी होंगी ।"

"आगे सुनाओ ।" सम्राट् ने कहा ।

चिको ने फिर शुरू किया, और हेनरी ने बड़ी शान्ति के साथ सभी वाक्यों को तूरिन और उसकी स्त्री के सम्बन्ध में लिखा हुआ समझा, क्योंकि एक वाक्य में 'तूरेनियस' शब्द आया था । उसने कहा—"'तूरेनियस' का मतलब 'तूरिन' होता है न ?"

"मैं भी ऐसा ही समझता हूँ ।"

"और 'मार्गोटा' मेरी प्यारी स्त्री मार्गरिट का प्यार का नाम होगा, जो मेरे भाइयों ने अपनी बहन का रक्खा होगा ।"*

"सम्भव है ।" कहकर चिको ने पत्र अन्त तक सुनाया । सम्राट् की मुखाकृति उसे सुनकर कुछ भी नहीं बदली ।

"क्या समाप्त हो गया ?" चिको के रुक जाने पर हेनरी ने पूछा ।

"हाँ, हुज़ूर ।"

"बड़ा शानदार पत्र होगा, यह ।"

---

* नाते में भाई-बहन होने पर भी फ्रांस में विवाह में कोई बाधा नहीं पड़ती । केवल दूध बचाते हैं—अर्थात् सगी बहन के साथ शादी नहीं करते ।

"मेरा भी यही खयाल है, हुजूर।"

"कैसे दुर्भाग्य की बात है कि मैं केवल इसके दो शब्द 'तूरेनियस' और 'मार्गोटा' समझ सका हू !"

"जब तक हुजूर किसी से इसका अनुवाद करवाने का निश्चय नहीं करते, तबतक तो यह असाध्य दुर्भाग्य है।"

"ओह, नहीं ! चिको, खुद तुम, जिसने सावधानी और विवेक के साथ पत्र फाड़ दिया था, मुझे इस पत्र को सब पर प्रकट करने की सलाह न दो।"

"पर मै समझता हूँ कि सम्राट् के पत्र में, जो ऐसी सावधानी के साथ मुझे सिपुर्द किया गया था, और व्यक्तिगत रूप से श्रीमान् की सेवा में भेजा गया था, यत्र-तत्र ऐसी खबरें हो सकती है, जिनसे हुजूर को कुछ लाभ हो सकता है।"

"हाँ, पर ऐसी बातें दूसरे का विश्वास करके तभी प्रकट की जा सकती है, जब मेरा उन पर अत्यधिक भरोसा न हो।"

"अवश्य।"

"अच्छा, मेरे मन में एक बात आयी है। जाकर मेरी स्त्री से मिलो। वह सुशिक्षिता हैं, अगर तुम यही मज़मून शब्दशः उनके सामने दुहरा जाओगे, तो वह समझ लेंगी, इसके बाद वह मुझे समझा देंगी।"

"यह तो बहुत ही अच्छा उपाय है।"

"है न ? अच्छा, जाओ !"

"जा रहा हूँ, हुजूर।"

"ध्यान रहे कि पत्र के एक शब्द में भी अदल बदल न हो।"

"यह तो असम्भव है, हुजूर। ऐसा तो मैं तभी कर सकता था, अगर लैटिन जानता होता।"

"अच्छा, तो जाओ, दोस्त।"

इसके बाद चिको मैडम मार्गरिट का पता पूछकर यह सोचता हुआ वहाँ से चला कि सम्राट् एक पहेली हैं।

---

# छियालीसवाँ परिच्छेद

—:*:—

## तीन हज़ार फ़ीट लम्बा कुञ्ज

सम्राज्ञी महल के दूसरे भाग में रहती थीं। उनकी खिड़की के पास से ही वह प्रख्यात् कुञ्ज शुरू होता था, और उनकी आँखें सदा घासों और फूलों पर लगी रहती थी। एक स्थानीय कवि (मार्गरिट पेरिस की तरह प्रान्तों में भी कवियों की प्रशंसा का विषय थी) ने उसके सम्बन्ध में एक कविता बना रक्खी थी।

"उसकी इच्छा है," कवि का कथन था—"कि इन सुन्दर दृश्यों को देखकर वह दुःखद स्मृतियों से अपना पीछा छुड़ाये।"

सम्राट् की लड़की, सम्राट् की बहन और सम्राट् की स्त्री होते हुए भी मार्गरिट ने वास्तव में बहुत कष्ट सहन किये थे। उसका अध्यात्मवाद, यद्यपि सम्राट् के अध्यात्मवाद की अपेक्षा अधिक गर्व का विषय बना हुआ था, पर था कम ठोस, क्योंकि वह अध्ययन के फल-स्वरूप उत्पन्न हुआ था, जबकि सम्राट् का उक्त ज्ञान स्वाभाविक था। इसलिये दार्शनिक होने, या बनने की कोशिश करने, के कारण अवस्था या शोक का प्रभाव उसके चेहरे से दूर होना आरम्भ हो गया था। वह अब भी एक विलक्षण सुन्दरी थी। उसकी आह्लादपूर्ण एवं मधुर मुस्कान और उसकी चमकीली तथा कोमल आँखें, अब भी प्रशंसनीय थीं। नेराक में लोग उसकी पूजा किया करते थे, जहाँ उसके सौन्दर्य ने, आनन्द और जीवन का स्रोत उमड़ा रक्खा था। पेरिस की राजकुमारी होते हुए भी वह ग्राम्य जीवन धैर्य-पूर्वक व्यतीत करती थी; वहाँ के निवासियों की आँखों में यही गुण काफ़ी था। प्रत्येक व्यक्ति उसे सम्राज्ञी और महिला के रूप में प्रेम करता था।

अपने शत्रुओं के प्रति घृणा के भाव रखते हुए भी वह धैर्य इसलिये रखती थी कि वह स्वयं बदला लेने की आशा रखती थी। यह समझती थी कि लापर्वाही के बहाने हेनरी-डी-नवार उसके प्रति दुर्भावना रखता है, और इसीलिये उसने अपने आप को काव्य-प्रेम का अभ्यस्त बना लिया, और सभी सम्बन्धियों, पति तथा मित्रों को समान प्रेम की दृष्टि से देखने लगी थी।

मृत्यु-पुरी से लौटा हुआ चिको, कैथेराइन-डी-मेडिसी के अतिरिक्त और किसीसे यह न कहता कि मार्गरिट के कपोल प्रायः पीले क्यों बने रहते हैं; उसकी आँखें प्रायः आँसू से क्यों भरी रहती हैं, और उसके हृदय से शून्य उदासीनता क्यों प्रकट होती है। मार्गरिट का और कोई विश्वासपात्र नहीं रहा था, क्योंकि उसे प्रायः धोखा दिया गया था।

तो भी उसका यह विश्वास कि हेनरी उसके प्रति विरोधी-भाव रखता है, केवल काल्पनिक था, और वह सचेतन रूप में उसके निजी अपराध के फल-स्वरूप उत्पन्न हुआ था, हेनरी के व्यवहार के कारण उसकी यह धारणा नहीं बनी थी। वह उसके साथ फ्रांस की लड़की का सा व्यवहार करता था, उससे सदा आदर-युक्त नम्रता या कृतज्ञता-पूर्ण दया के साथ बात करता था और हमेशा उसके साथ पति और मित्र का सा आचरण करता था।

चिको जब हेनरी के बतलाये हुए महल में पहुँचा, तो वहाँ उसे कोई नहीं मिला। लोगों ने बतलाया कि मार्गरिट उस प्रसिद्ध कुञ्ज के दूसरे छोर पर है। जब वह उस कुञ्ज का दो-तिहाई हिस्सा पार कर चुका, तो उसे छोर पर चमेली, क़ेमती और झाडओं से ढका हुआ एक मण्डप दिखायी दिया, जिसमें रेशमी फ़ीते, पंख, मखमल और तलवारें सजी हुई थीं। यह चीज़ें कुछ पुराने ढंग की होनेपर भी नेराक के लिये बहुत बढ़िया थीं, और सीधे पेरिस से आनेवाला चिको भी उन्हें देखकर सन्तुष्ट हुआ।

चिको के आगे-आगे सम्राट् का एक ख़वास आ गया था। सम्राज्ञी ने अपनी अस्थिर, उदासीन और बेचैन आँखों से उसकी ओर देखकर कहा—"क्या चाहते हो, डि-आबियाक ?"

"पेरिस से एक सज्जन आये हैं, श्रीमती। उन्हें लावर से सम्राट् ने नवार-सम्राट् के पास राजदूत के रूप में भेजा है। सम्राट् ने उन्हें श्रीमती के पास भेज दिया है और वे आपसे बातें करना चाहते हैं।"

मार्गरिट का चेहरा सहसा लाल हो उठा, और उसने तुरन्त मुह फेरकर देखा। चिको पास ही खड़ा था। मार्गरिट साथ बैठे हुए लोगों को छोड़कर चिको की ओर बढ़ी।

"महाशय-चिको !" उसने आश्चर्य-पूर्वक कहा।

"मैं श्रीमती के चरणों में उपस्थित हुआ हूँ," उसने कहा—"लावर की तरह मैं यहाँ भी आपको अच्छी, सुन्दर और सम्राज्ञी के रूप में देख रहा हूँ।"

"तुमको यहाँ देखकर विस्मित होना पड़ा; लोग तो कहते थे कि तुम्हारी मृत्यु हो गयी !"

"हाँ, मैंने ऐसा ही बहाना बनाया था।"

"और हमसे तुम्हारा क्या काम है, महाशय-चिको ? क्या अब भी लोग मुझे फ्रांस में याद करते हैं ?"

"ओह, महाशया," चिको ने मुस्कराकर कहा—"हम लोग आपकी अवस्था और सुन्दरता की सम्राज्ञियों को नहीं भूला करते। फ्रांस-सम्राट् ने इस सम्बन्ध में नवार-सम्राट् को लिखा भी है।"

मार्गरिट का चेहरा लाल हो गया। "उन्होंने लिखा है ?"

"हाँ, महाशया।"

"और तुम पत्र लाये हो ?"

"मैं लाया नहीं, क्योंकि मेरा ख़याल था कि नवार-सम्राट् आपको समझा देंगे, पर मैंने उसे ज़बानी याद कर लिया है, और सम्राट् को सुना भी दिया।"

"मैं समझ गयी। पत्र बहुत आवश्यक था और तुम्हें डर था कि वह खो न जाय, या कोई उसे चुरा न ले।"

"यही सच है, महाशया; पर पत्र लैटिन में लिखा हुआ था।"

"ओह, बहुत अच्छा; तुम्हें तो मालूम ही था कि मैं लैटिन जानती हूँ।"

"और नवार-सम्राट् भी जानते है ?"

"प्यारे चिको, यह जानना बहुत मुश्किल है कि वह क्या जानते हैं, और क्या नहीं जानते। अगर कोई आकृति देखकर जानना चाहे, तब तो वे बहुत ही कम लैटिन जानते है, क्योंकि मैं जब कभी किसीसे इस भाषा में बात करती हूँ, तो वह कभी उसे समझते नहीं प्रतीत होते। तो तुमने उन्हे पत्र का मतलब समझा दिया ?"

"वह उन्हीं के नाम था।"

"तो क्या वह उसे समझते मालूम हुए ?"

"सिर्फ दो शब्द।"

"कौन-कौन से ?"

"'तुरेनियस' और 'मार्गोटा' ।"

"'तुरेनियस' और 'मार्गोटा' ?"

"हाँ, ये दो शब्द पत्र में आये थे।"

"तो उन्होंने क्या कहा ?"

"उन्होंने मुझे आपके पास भेज दिया, महाशया।"

"मेरे पास ?"

"जी हाँ, यह कहकर कि पत्र ऐसा महत्त्वपूर्ण है कि दूसरे पर विश्वास नहीं किया जा सकता, इसलिये आपके पास, जो सुशिक्षित महिलाओं में सबसे अधिक सुन्दरी हैं, और परम सुन्दरियों में से सर्वाधिक सुशिक्षिता हैं, ले जाना ठीक है।"

"सम्राट् का ऐसा हुक्म है, तो मैं तुम्हारा पत्र सुनूँगी, चिको।"

"धन्यवाद, महोदया; किस जगह आप उसे सुनना चाहेंगी?"

"मेरे ख़ास कमरे में आओ।"

मार्गरिट ने चिको की ओर ध्यान से देखा। चिको ने उस पर दया करके अपनी मुखाकृति कृत्रिमतापूर्ण न बनाकर स्वाभाविक ही रक्खी। उस अभागिनी स्त्री को सहायता की आवश्यकता मालूम हुई, जो शायद उसे प्रेम प्राप्त करवाने का अन्तिम अस्त्र सिद्ध होता। उसने घूमकर अपने आदमियों में से एक की ओर देखकर कहा—"महाशय-डी-तूरेन, महल पर चलो; चलो, महाशय-चिको।"

---

# सैंतालीसवाँ परिच्छेद

—○—

## मार्गरिट का ख़ास कमरा

मार्गरिट का ख़ास कमरा सुन्दरता-पूर्वक सजाया गया था। सुचित्रित वस्त्रों, मीनाकारी की चीज़ों, चीनी मिट्टी की कारीगरी की चीजों, पुस्तकों तथा ग्रीक, लैटिन एवं फ्रांसीसी भाषाओं की पाण्डुलिपियों से मेज़ें ढकी हुई थीं; पिंजड़ों में पक्षी, और दरियों पर कुत्ते बैठे हुए मार्गरिट के इस कमरे को सजीव बना रहे थे।

मार्गरिट एक ऐसी स्त्री थी, जो दर्शन शास्त्र को समझती थी—और उसे न केवल ग्रीक-भाषा का ही ज्ञान था, बल्कि उसने अपने जीवन को ऐसा व्यस्त बना रक्खा था कि सहस्रों दुःखों में भी वह सुख का अनुभव प्राप्त करती थी।

चिको को एक ऐसे क़ालीन की बिछी हुई आराम-कुर्सी पर बैठने को कहा गया, जिसपर गुलदस्ते के अन्दर फूलों के बादल उठते दिखाये गये थे; और एक बढ़िया वर्दी पहने हुए सुन्दर खवास ने उसे कुछ मिठाइयाँ आदि लाकर दीं। चिको ने उन मिठाइयों को नहीं स्वीकार किया और ज्यों ही विकम-डी-तूरिन वहाँ से गया, वह अपना पत्र सुनाने लगा। हम उस पत्र को सुन चुके हैं, इसलिये यहाँ उसका लैटिन अनुवाद फिर देना व्यर्थ है। चिको ने किसी भी शब्द पर कोई ज़ोर दिये बिना तोते की तरह पढ़ दिया, जिससे मार्गरिट समझने में कुछ शिथिल सिद्ध हो; किन्तु मार्गरिट ने उसे पूर्णतया समझ लिया और अपने क्रोध को छिपा नहीं सकी। वह अपने प्रति अपने भाई की घृणा अच्छी तरह समझती थी, और उसका मन क्रोध और भय से भर उठा था। किन्तु चिको ने समझ लिया कि मार्गरिट ने अपना कर्त्तव्य निश्चित कर लिया है।

पर मार्गरिट ने चिको के पत्र समाप्त करने पर कहा—"मेरे भाई अच्छी लैटिन लिख लेते हैं! कैसी ओजपूर्ण और शैली-युक्त भाषा है! मैं तो उन्हें इतना योग्य कभी नहीं समझती थी, पर क्या तुम इसे नहीं समझते, महाशय चिको? मैं तो समझती थी कि तुम लैटिन के अच्छे ज्ञाता हो।"

"मैं लैटिन भूल गया, महोदया, अब तो मुझे केवल इतना ही याद रहा है कि लैटिन में वाक्य-खण्ड नहीं होते, न सम्बोधन

ही, और यह भी कि 'सिर' को लैटिन में नपुंसक लिङ्ग मानते हैं।"

"सचमुच!" किसी ने शान्त और मीठे स्वर में कहा। यह नवार-सम्राट् थे। "सिर नपुंसक लिंग है, महाशय चिको? यह पुल्लिंग क्यों नहीं है?"

"हुज़ूर, मैं नहीं जानता; मुझे भी श्रीमान् की तरह इस बात पर आश्चर्य होता है।"

"इसका कारण यह है कि अपने-अपने स्वभाव के अनुसार कभी स्त्री शासन करती है, और कभी पुरुष।"

"यह तो अद्भुत कारण है, हुज़ूर।"

"मुझे प्रसन्नता है कि मैंने अपने को जैसा बड़ा दार्शनिक समझा है, उससे अधिक बड़ा हूँ। पर बात पत्र के सम्बन्ध में करनी है। श्रीमती, मैं फ्रांस के दरबार का हाल सुनने के लिए विकल हो रहा हूँ और महाशय चिको उसे एक अज्ञात भाषा में लाये हैं। अन्यथा—"

"अन्यथा?" मार्गरिट ने दुहराया।

"अन्यथा मुझे प्रसन्नता होती! तुम जानती हो, मुझे ख़बरें कैसी पसन्द हैं, ख़ासकर ऐसी कुत्सित ख़बरें, जैसी मेरे भाई हेनरी-डी-वैलोई बड़ी अच्छी रीति से सुनाया करते हैं।" कहकर हेनरी-डी-नवार अधीरता-पूर्वक बैठ गया।

"महाशय चिको," सम्राट् ने मग्न होते हुए कहा—"तुमने वह प्रसिद्ध पत्र मेरी स्त्री को सुना दिया न?"

"हाँ, हुजूर।"

"अच्छा तो प्यारी, बतलाओ उसमें क्या लिखा है ?"

"आप इस बात से डरते नहीं, हुजूर, कि लैटिन एक कुस्वप्न होता है ?" चिको ने कहा।

"ऐसा क्यों ?" सम्राट् ने कहा। फिर अपनी स्त्री की ओर रुख करके बोले—"कहिए, श्रीमती।"

मार्गारिट क्षण-भर के लिये हिचकिचाहट में पड़ गयी, मानो वह चिको के मुँह से निकले हुए एक-एक शब्द याद कर रही हो। "हमारा सन्देश-वाहक ठीक कह रहा है; हुजूर," विचार करने के बाद वह बोली—"लैटिन बुरे लक्षण की चीज़ है।"

"क्या !" हेनरी ने कहा—"क्या पत्र में आपके भाई ने, जो ऐसे चतुर और नम्र हैं, कोई अप्रिय बात लिखी है ?"

"जब मैं पेरिस से आपसे मिलने उस समय आयी थी, उन्होंने मेरी गाड़ी में मेरी अप्रतिष्ठा की थी, हुजूर।"

"जब किसी का भाई ऐसा है कि उसका अपना ही चरित्र अकलङ्क है," हेनरी ने आधी दिल्लगी और आधी गम्भीरता के स्पष्ट भाव से कहा—"तो एक सम्राट् भाई, जो अत्यन्त सौजन्य-पूर्ण—"

"उसे अपनी बहन और उसके घराने की सच्ची इज्ज़त करनी चाहिए। मैं नहीं समझती, हुजूर, कि अगर आपकी बहन कैथेराइन-डी-एल्बर्ट पर कोई कलङ्क लगे, तो आप उसे अपने कमान द्वारा सर्वत्र घोषित करा देंगे।"

"मैं तो सम्राट् नहीं, एक सत्स्वभाव का नागरिकमात्र हूँ, पर यह पत्र, चूँकि मेरे नाम लिखा गया था, इसलिए मैं जानना चाहता हूँ कि उसमें क्या लिखा था।"

"यह पत्र तो कपटपूर्ण था, श्रीमान्।"

"अच्छा!"

"जी हाँ, और इसमें कलङ्क की वे तमाम बातें लिखी हुई थीं, जो पति को अपनी पत्नी से और मित्र को मित्र से विमुख करके उनमें झगड़ा लगाने के लिये आवश्यक होती हैं।"

"पति को पत्नी से विमुख करने की बातें? आपके और मेरे लड़ाने की बातें हुईं, फिर तो?"

"हाँ, श्रीमान्।"

"और वह भी किस रूप में झगड़ा लगाना!"

चिको का बुरा हाल था। भूखा होते हुए भी उसे सो रहने की इच्छा हो रही थी। "तूफान अब आने ही वाला है।" उसने सोचा।

"श्रीमान," मार्गरिट ने कहा—"मुझे बड़ा अफसोस है कि हुजूर लैटिन भूल गये।"

"श्रीमती, मैंने जितनी लैटिन पढ़ी थी, उसमें से केवल एक वाक्य अब याद रह गया है—'डियट एट चर्चू एटर्नी'—जो पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग का एक अद्भुत सामंजस्य है। मेरा शिक्षक इसे सिवा ग्रीक के और किसी भाषा में नहीं समझा सकता था, जिसे मैं लैटिन से भी कम समझता हूँ।"

"श्रीमान्, अगर आपने पत्र समझा है, तो आप देखेंगे कि उसमें मेरी बड़ी प्रशंसा की गयी है।"

"पर प्रशंसा से हमें कैसे लड़ाया जा सकता है, श्रीमती? क्योंकि जब तक आपके भाई आपकी प्रशंसा करते हैं, मैं उनसे असहमत कैसे हो सकता हूँ; अगर वह तुम्हारी बुराई करेंगे, तो मैं उनकी चाल समझ जाऊँगा।"

"अगर वह मेरी बुराई करेंगे, तो आप उसे समझ लेंगे?"

"हाँ; वह जिस मतलब से हमें लड़ाना चाहते हैं, वह मैं समझता हूँ।"

"अच्छा तो हुज़ूर, यह प्रशंसा मेरे और आपके दोस्तों के विरुद्ध कलङ्क लगाने का श्रीगणेश है।"

इस बात को साहसपूर्वक कहने के बाद मार्गरिट इसके खण्डन की प्रतीक्षा करने लगी। चिको ने अपना सिर झुका लिया और हेनरी ने अपना सिर ऊपर उठाया।

"ओह, प्यारी," सम्राट् ने कहा—"आखिर आपने भी लैटिन अच्छी तरह नहीं समझी; मेरे भाई का ऐसा कुअभिप्राय नहीं हो सकता।"

यद्यपि सम्राट् ने ये शब्द बड़े ही कोमल और प्रिय स्वर में कहे, पर मार्गरिट ने उनकी ओर तुच्छ दृष्टि से देखा—"मुझे अन्त तक भली भाँति समझ लीजिए।" उसने कहा।

"ईश्वर मेरा साक्षी है, मैं और कुछ नहीं चाहता।" हेनरी ने जवाब दिया।

"आप अपने अनुयायियों को चाहते हैं, या नहीं ?" मार्गरिट ने कहा।

"मैं उन्हें चाहता हूँ ? यह कैसा सवाल है ? मैं उनके बिना कर ही क्या सकता हूँ; अपने-आप किस साधन से काम कर सकता हूँ ?"

"अच्छा तो हुज़ूर, सम्राट् आपके सर्वश्रेष्ठ सेवकों को आपसे अलग कर लेना चाहते हैं।"

"मैं उन्हें तुच्छ समझता हूँ।"

"खूब, हुज़ूर, शाबाश !"

"हाँ।" हेनरी ने, प्रकट तथा उस स्वच्छ-हृदयता के साथ, जिससे वे जीवन के अन्त तक लोगों को धोखा देते थे, कहा—"मेरे सेवक मेरे साथ प्रेम-सूत्र में बँधे हैं; मेरे पास उन्हें देने के लिये कुछ नहीं है।"

"आप उन्हें अपना हृदय और पूर्ण विश्वास देते हैं, हुज़ूर; सम्राट् के लिये अपने दोस्तों को देने की यही सब से बड़ी चीज़ है।"

"हाँ, प्यारी, तो फिर ?"

"तो फिर श्रीमन्, उनपर और अधिक विश्वास कीजिए।"

"हाँ ! मैं तो तब तक उनपर से अपना विश्वास नहीं हटाऊँगा, जब तक वे मुझे बाध्य नहीं कर देंगे; अर्थात् जब तक वे मेरे विश्वास को नष्ट नहीं कर देंगे।"

"अच्छा तो हुज़ूर, पत्र में यह दिखलाने की कोशिश की गयी है कि वे विश्वास खो देने के पात्र हैं; बस यही।"

"ओहो! पर यह कैसे ?"

"मैं नहीं बतला सकती, हुजूर, बिना सन्धि किये—" कह-कर उसने चिको की ओर देखा।

"प्यारे चिको," हेनरी ने कहा—"कृपया मेरे लिये गुप्त कमरे में प्रतीक्षा करो; समाज्ञी को मेरे साथ कोई ख़ास बात करनी है।"

# अड़तालीसवाँ परिच्छेद

—:*:*:—

## पत्र का मतलब

मार्गरिट का विश्वास था कि चिको लैटिन अच्छी तरह जानता है, इसलिये उससे छुटकारा पाकर उसने एक प्रकार की विजय प्राप्त की और अपने को अधिक सुरक्षित समझा; क्योंकि अब वह अपने पति को लैटिन का अनुवाद यथेष्ट रूप से समझा सकती थी।

अब हेनरी अपनी स्त्री के साथ अकेले रह गये। उनके चेहरे पर चिन्ता और भय का कोई चिह्न नहीं था; निश्चय ही वह लैटिन नहीं समझ सके थे।

"श्रीमान्" मार्गरिट ने कहा—"मैं आपके प्रश्न का इन्तजार कर रही हूँ।"

"इस पत्र की ओर मेरा ध्यान बहुत खिंच गया है, प्यारी; आप कोई भय न करें।"

"श्रीमान्, यह पत्र एक विशेष घटना का द्योतक है, या होना चाहिए। कोई सम्राट् अपने भाई सम्राट् को बिना किसी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कारण के सन्देश नहीं भेजता।"

"अच्छा फ़िलहाल इसे जाने दीजिए; क्या आज शाम को कोई बाल* नहीं है।"

"हाँ, श्रीमान्," मार्गरिट ने आश्चर्यान्वित होकर कहा—"पर वह असाधारण नहीं है; आप जानते हैं, हम सब रोज़ शाम को नाचती हैं।"

"कल मुझे एक बड़े शिकार पर जाना है।"

"हरेक अपने-अपने आनन्द का काम करता है; आपको शिकार पसन्द है, तो मुझे नृत्य।"

"हाँ, प्यारी; इसमें कोई हर्ज भी नहीं है।" हेनरी ने ठण्डी साँस लेकर कहा।

"बिल्कुल नहीं; पर हुज़ूर यह कहते हुए ठण्डी साँस ले रहे हैं।"

"मेरी बात सुनिए, श्रीमती; मैं बेचैन हो रहा हूँ।"

"किसके सम्बन्ध में?"

"एक रिपोर्ट के।"

---

*एक प्रकार का नृत्य, जिसमें भोजन की दावत भी शामिल होती है।

"रिपोर्ट के! श्रीमान् रिपोर्ट के सम्बन्ध में बेचैन हो रहे हैं ?"

"कैसी सीधी बात है—पर यह रिपोर्ट सुनकर आप क्रुद्ध हो सकती हैं ?"

"मैं ?"

"हाँ, आप।"

"हुजूर, मैं आपकी बातें नहीं समझती।"

"क्या आपने कुछ नहीं सुना ?"

मार्गरिट काँपने लगी। "मैं तो संसार-भर में कम उत्सुकतावाली स्त्री हूँ," उसने कहा—"जो बात मेरे कानों में चिल्लाकर न कही जाय, उसे मैं नहीं सुनती। इसके अतिरिक्त मैं विचार इतना कम करती हूँ कि अगर मैं सुनूँगी भी, तो मैं उधर ध्यान ही नहीं दूँगी।"

"तो आपकी यह राय है, श्रीमती, कि इन रिपोर्टों को तुच्छ समझना चाहिए।"

"पूरे तौर से, हुजूर; विशेषकर सम्राट् और सम्राज्ञी को तो अवश्य ही इन्हें तुच्छ समझना चाहिए।"

"ऐसा क्यों ?"

"इसलिये कि चूँकि प्रत्येक व्यक्ति हमलोगों के बारे में चर्चा करता है, इसलिये अगर हम उसकी ओर ध्यान देने लगेंगे, तो हमारा काम बहुत बढ़ जायगा।"

"अच्छा, मैं मानता हूँ कि आप ठीक कहती हैं, प्यारी;

और मैं आपको अपनी दार्शनिकता का उपयोग करने के लिये अद्भुत अवसर देने जा रहा हूँ।"

मार्गरिट ने समझ लिया कि निश्चयात्मक समय आ गया है, और अपना समस्त साहस संचय करके बोली—"यही सही, श्रीमान्।"

हेनरी ने ऐसे स्वर में कहना शुरू किया, जैसे कोई रोगी अपने अपराध को स्वीकार कर रहा हो—"आप जानती हैं कि मैं फ़ास्यूज़ की ओर कितनी दिलचस्पी रखता हूँ?"

"ओह!" मार्गरिट ने यह देखकर कि वह उसपर कलङ्क नहीं लगा रहा है, कहा—"हाँ, हाँ, वही नन्हीं फ़ास्यूज़, आपकी मित्र।"

"हाँ, श्रीमती।"

"मेरी दासी?"

"हाँ।"

"आपकी प्रेमिका—प्रणयिनी।"

"ओह! आप तो उसी रिपोर्ट की तरह ही बोल रही हैं, जिसकी निन्दा आपने अभी-अभी की है।"

"यह सच है, हुज़ूर, और मैं इसके लिये माफ़ी चाहती हूँ।" मार्गरिट ने मुस्कराकर कहा।

"आप ठीक कहती हैं, प्यारी। सार्वजनिक रिपोर्टें प्रायः ग़लत होती हैं, और हम शासकगण बहुत कारणों से इस सूत्र को स्वयंसिद्ध मानते हैं। श्रीमती, मैं समझता हूँ, मैं ग्रीक बोल रहा हूँ।" कहकर सम्राट् ठठाकर हँस पड़े।

मार्गरिट ने इस हास्य में व्यंग का अंश देखा ! खासकर उस तीक्ष्ण दृष्टि के कारण जो हँसी के साथ उसपर पड़ा था। कुछ बेचैन-सी होकर उसने जवाब दिया—"अच्छा, तो फ़ास्यूज के बारे में आप क्या कह रहे थे ?"

"वह बीमार है; और डाक्टर लोग उसके रोग का निदान बताने में असमर्थ है।"

"यह तो विलक्षण बात है, हुजूर। फ़ास्यूज़, जो आपके कथनानुसार बिल्कुल निष्कलङ्क है; फ़ास्यूज जो किसी सम्राट् के प्रेम-भिक्षा माँगने पर भी इन्कार कर देती; फ़ास्यूज जिसे आप शुद्धता का पुष्प मानते हैं, वही श्वेत स्फटिक फ़ास्यूज वैज्ञानिक ढंग से अपने सुख-दुख की परीक्षा करवाती है !"

"अफ़सोस! बात यह नही है।" हेनरी ने शोक-पूर्वक कहा।

"क्या ?" सम्राज्ञी ने कहा—"क्या वह शुद्धता का पुष्प नहीं है ?"

"मैं यह नहीं कहता," हेनरी ने शुष्क भाव से जवाब दिया —"ईश्वर करे, मैं किसी को कलङ्क न लगाऊँ। मेरा मतलब यह है कि वह डाक्टर से अपने रोग का कारण छिपाने का हठ कर रही है।"

"पर आपसे भी, हुजूर, जो उसके विश्वासपात्र और पिता-तुल्य हैं ?"

"मैं कुछ नहीं जानता, या जानने की इच्छा नहीं रखता।"

"तब तो, हुजूर," मार्गरिट ने यह समझते हुए कि उसे

क्षमा माँगने के बजाय देनी होगी, कहा—"तब तो, मैं नहीं समझती कि आप क्या चाहते हैं और इसका मतलब समझने की प्रतीक्षा कर रही हूँ।"

"अच्छा तो प्यारी, आपको बतलाऊँगा। मैं चाहता हूँ कि आप—पर यह माँग बहुत बड़ी होगी।"

"कहिए, श्रीमान् ?"

"क्या आप फ़ास्यूज के पास जाने की कृपा करेंगी ?"

"मैं उस लड़की को देखने जाऊँ, जिसे सब लोग आपकी प्रेमिका कहते हैं—और जिसे आप भी इन्कार नहीं करते !"

"धीरे-धीरे बोलिए, प्यारी। आप तो ज़ोर-ज़ोर से बोलकर बदनाम कर देंगी, और मैं सचमुच विश्वास करता हूँ कि इससे फ़्रांस-दरबार को प्रसन्नता होगी, क्योंकि चिको ने मेरे साले साहब का जो पत्र सुनाया था, उसमें 'कोटी डाई स्कैण्डलम' शब्द आये हैं, जिनका मतलब अवश्य ही 'दैनिक बदनामी' होगा। ये शब्द समझने के लिये लैटिन-भाषा के ज्ञान की आवश्यकता भी नहीं है। ये तो फ्रांसीसी-से ही हैं।"

"पर हुज़ूर, ये शब्द लागू किस पर होते है ?"

"ओह, यह तो मैं समझने में असमर्थ हूँ; पर आप लैटिन जानती हैं, अतः मुझे इसे समझने में मदद दे सकती हैं।"

मार्गारिट के कपोल कानों तक लाल हो गये, और सम्राट् सिर नीचा किये और हाथ हवा में फैलाये हुए निष्कलङ्क-भाव से यह सोचने लगे कि उनके दरबार के किस व्यक्ति पर

'कोटी डाई स्कैण्डलम' लागू हो सकता है। "अच्छा, हुजूर," मार्गरिट ने कहा—"आप मुझसे शान्ति के लिये लज्जाजनक काम कराना चाहते हैं; और शान्ति के लिये मैं आपकी बात मानूँगी।"

"धन्यवाद, मेरी प्यारी, धन्यवाद!"

"पर उसके पास जाने का उद्देश्य क्या है?"

"यह तो बड़ी सीधी बात है, श्रीमती।"

"तो भी आप मुझे बतायें, क्योंकि मैं इतनी बुद्धिमती नहीं हूं कि इसे समझ सकूँ।"

"अच्छा! फ़ास्यूज़ तुम्हें 'प्रतिष्ठित' महिलाओं के पास उनके कमरे में मिलेगी; और तुम जानती हो, वे ऐसी विलक्षण और गुस्ताख़ है कि मालूम नहीं फ़ास्यूज़ की वहाँ क्या गति हो रही होगी।"

"तो क्या उसे किसी बात का डर है?" मार्गरिट ने क्रोध और घृणा से उबलते हुए कहा—"वह अपने-आपको छिपाना चाहती है?"

"मैं नहीं जानता। मैं तो केवल यही जानता हूँ कि वह प्रतिष्ठित महिलाओं के कमरे को छोड़ देना चाहती है।"

"अगर वह छिपना चाहती है, तो उसे मुझ-पर भरोसा नहीं करना चाहिए। मैं कुछ बातों से चश्मपोशी कर सकती हूँ; पर मैं कभी उनमें सहायक नहीं सिद्ध होऊँगी।" मार्गरिट ने कहा। इसके बाद वह अपनी ललकार का असर देखने लगी।

पर ऐसा मालूम होता था कि हेनरी ने ये बातें सुनी ही नहीं। उन्होंने अपना ढंग ऐसा विचार-पूर्ण बना लिया था, जिसे मार्गरिट ने क्षण-भर पहले ही देखा था। "मार्गोटा कम तूरेनियो" सम्राट् ने कहा—"यही वह नाम हैं, जिन्हें मैं खोज रहा था, श्रीमती—'मार्गोटा कम तूरेनियो।'"

मार्गरिट का चेहरा लाल हो गया। "कलङ्क की बातें, हुजूर!" उसने उच्च स्वर में कहा—"क्या आप मुझे कलङ्क की बातें सुनाने जा रहे हैं?"

"कैसा कलङ्क?" सम्राट् ने अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से जवाब दिया—"क्या आप इसमें कोई कलङ्क की बात समझती हैं? यह तो मेरे भाई के पत्र का एक अंश है—'मार्गोटा कम तूरेनियो कन्विनियण्ट इन कैसेलियो नामिन लाइना।' निश्चय ही मुझे इस पत्र का अनुवाद कराना है।"

"इस बात को छोड़िए, श्रीमान," मार्गरिट ने काँपते हुए कहा—"और फ़ौरन मुझे बतलाइये कि आप मुझसे क्या चाहते हैं?"

"मैं तो यह चाहता हूँ, प्यारी, कि आप फास्यूज़ को और लड़कियों से अलग करके उसे एक अलग कमरा दे दें, और एक होशियार डाक्टर—उदाहरण के लिये अपना निजी डाक्टर—नियत कर दें।"

"ओह, मैं समझ गयी, इसका मतलब," सम्राज्ञी ने कहा—"आदर्श सुन्दरी फास्यूज़ को बच्चा होनेवाला है।"

"मैं यह नहीं कहता, प्यारी; यह तो आप ही कह रही हैं।"

"यही बात है, हुज़ूर; आपका सङ्केत-सूचक स्वर और झूठी नम्रता यही सिद्ध करती है। किन्तु कुछ ऐसी क़ुर्बानियाँ हैं, जो किसी को अपनी स्त्री से नहीं माँगनी चाहिएँ। आप फ़ास्यूज को ख़ुद संभालें, हुज़ूर; यह आपका काम है। तकलीफ़ अपराधी को उठानी चाहिए; निर्दोष को नहीं।"

"अपराधी ! ओह ! इससे मुझे फिर पत्र की याद आ गयी।"

"यह कैसे ?"

"अपराधी 'नासेन्स' है न ?"

"हाँ।"

"यह शब्द पत्र में आया है—'मार्गोटा कम तूरेनियो, अम्बो नासेण्ट्स, कन्वेनियण्ट इन कैसेलिवो नामिन लाइना।' मुझे इस बात का बड़ा अफ़सोस है कि मेरी स्मरण-शक्ति जैसी तेज़ है, वैसा ज्ञान मुझमें नहीं है !"

"'अम्बो नासेण्ट्स,'" मार्गरिट ने धीमे स्वर में कहा। उसका चेहरा पीला पड़ गया—"ये समझते हैं, ज़रूर समझते हैं।"

"'मार्गोटा कम तूरेनियो, अम्बो नासेण्ट्स,'" हेनरी ने दुहराया—"मेरे भाई का 'अम्बो' शब्द से क्या मतलब होगा ? प्यारी, यह आश्चर्य की बात है कि आप अच्छी तरह लैटिन जानते हुए भी अभीतक मुझे इसका मतलब नहीं समझा सकीं।"

"हुज़ूर," मैं तो पहले ही आपकी सेवा में निवेदन कर चुकी—"

"ओह," सम्राट् ने फिर कहा—"वह तूरेनियस आपकी खिड़की के नीचे टहल रहा है, और आपकी ओर इस प्रकार देख रहा है, जैसे वह आपकी बाट देख रहा हो। मैं उसे यहाँ बुलाऊँगा; वह बड़ा सुशिक्षित है, और मुझे समझा देगा।"

"श्रीमान, फ्रांस के कलङ्कियों से तो आपको उच्च होना चाहिए।"

"ओह, प्यारी, मुझे ऐसा मालूम होता है कि नवार के लोग फ्रांसवालों से अधिक कोमल नहीं हैं; आपने अभी-अभी बेचारी फ़ास्यूज़ के प्रति कैसी कठोरता प्रदर्शित की है।"

"मैंने कठोरता प्रदर्शित की है?"

"हाँ; और फिर भी हमें यहाँ नम्रता प्रदर्शित करनी चाहिए—हम यहाँ कैसे सुखपूर्वक रहते हैं—आप अपने नृत्यों में मग्न हैं, मैं अपने शिकारों में।"

"हाँ, हुज़ूर; आप ठीक कह रहे हैं। हमें नम्र बनना चाहिए।"

"ओह, मुझे निश्चय था कि आपका हृदय बड़ा कोमल है, प्यारी।"

"आप मुझे अच्छी तरह जानते हैं, श्रीमान।"

"हाँ। अच्छा तो आप फ़ास्यूज़ को देखने जायँगी न?"

"हाँ, हुज़ूर।

"और उसे और सबसे अलग कर लायेंगी?"

"हाँ, हुज़ूर।"

"और उसके पास अपना डाक्टर भेज देंगी?"

"हाँ, हुज़ूर।"

"दाई न भेजें। डाक्टर-लोग अपने पेशे की बात किसी पर नहीं प्रकट करते, और दाइयाँ बक देती हैं।"

"सच है।"

"और अगर जो बात आप कह रही हैं, दुर्भाग्य-वश वही ठीक निकली, और वह कमज़ोर सिद्ध हुई, क्योंकि औरतें प्रायः निर्बल—"

"हुज़ूर मैं स्त्री हूँ, इसलिये यह बात जानती हूँ।"

"ओह, आप सब-कुछ जानती हो, मेरी प्यारी; आप तो पूर्णता की मूर्ति हैं, और—"

"और क्या?"

"और मैं आपका हाथ चूमता हूँ।"

"पर यह विश्वास रखिए, हुज़ूर, कि केवल आपके प्रेम के कारण ही मैं यह क़ुर्बानी कर रही हूँ।"

"हाँ, हाँ, प्यारी; मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ और मेरे फ्रांस-स्थित भाई भी आपको कम नहीं जानते, जिन्होंने आपके बारे में इस पत्र में बहुत-कुछ कहा है और लिखा कि 'फ़्रेट सैनम एग्ज़ाइम स्टेटिम, ऐट्करेस सर्टियर इवनीट।'

निस्सन्देह आपने ऐसा उत्तम उदाहरण रक्खा होगा।" कह-कर हेनरी ने मार्गरिट का शीतल हाथ चूम लिया। फिर दरवाज़े की तरफ़ मुड़ते हुए उन्होंने कहा—"मेरी तरफ़ से फ़ास्यूज़ से दयालुतापूर्ण बातें कहना, और जैसी प्रतिज्ञा आपने की है, वह पूरी करना। मैं शिकार के लिये जाता हूँ। शायद मैं वापसी तक तुमसे नहीं मिल सकूँगा; शायद कभी न मिल सकूँ। भेड़िये बड़े खूँख़ार जानवर होते हैं। आइए, आपका आलिङ्गन कर लूँ, प्यारी।"

इसके बाद वह लगभग पूर्ण प्रेम के भाव से मार्गरिट का आलिङ्गन करके चलते बने। मार्गरिट ने जो-कुछ देखा, उससे मूर्तिवत् स्तम्भित रह गयी।

---

# उंचासवाँ परिच्छेद

——::०::——

## स्पेनी राजदूत

सम्राट् चिको से फिर मिले, जो अभी तक पत्र को स्पष्ट करने के भय से उद्विग्न हो रहा था। "अच्छा चिको," हेनरी ने कहा—"तुम जानते हो, सम्राज्ञी क्या कह रही हैं?"

"नहीं, हुजूर।"

"वह यह बहाना करती हैं कि तुम्हारी यह अभागी लैटिन हमारी शान्ति में बाधा डालेगी।"

"हुजूर, उसे भूल जाइये, बस सारा मामला समाप्त है। वह पत्र यद्यपि लिखा गया था; पर वास्तव में उसको पढ़ सुनाना लद्दत नहीं था; एक को हवा उड़ा ले जाती थी, तो दूसरे को आग भी कभी-कभी कष्ट नहीं पहुँचा सकती।"

"मैं अब इसकी बात नहीं सोचता।"

"ठीक है।"

"मुझे इसके सोचने के अलावा और भी काम करने हैं।"

"हुजूर दिल-बहलाव चाहते होंगे?"

"हाँ, बेटे," हेनरी ने चिको की उपरोक्त बात से कुछ अप्रसन्नता के स्वर में कहा—"हुजूर अब दिल-बहलाव चाहते हैं।"

"क्षमा करे, शायद मेरी बात से श्रीमान् क्रुद्ध हो गये।"

"हाँ! बेटे," हेनरी ने सिर हिलाते हुए कहा—"मैं पहले ही तुमसे कह चुका हूँ कि यहाँ का मामला लावर से भिन्न है; यहाँ हम लोग प्रत्येक बात खुली रीति से करते है—प्रेम, युद्ध और राजनीति—सभी कुछ।"

"इन तीनों में पहली बात अधिक खुले तौर पर होती है न, हुजूर।"

"हाँ, मैं मानता हूँ, दोस्त। यह देश बड़ा सुन्दर है और इसको स्त्रियाँ अत्यन्त रूपवती हैं।"

"ओह, हुजूर, आप सम्राज्ञी को भूल रहे हैं; क्या नवार की स्त्रियाँ उनकी अपेक्षा अधिक आनन्ददायिनी और रूपवती हैं? अगर वे सचमुच ऐसी हैं, तो मैं उनकी सराहना करता हूँ।"

"हाँ, तुम ठीक कहते हो, चिको। और मुझे यह भूल जाना चाहिए कि तुम एक राजदूत और हेनरी तृतीय के प्रतिनिधि हो, जो मार्गरिट के भाई हैं, और फलतः तुम्हारे

सामने मुझे उनको सबके सामने रखना चाहिए। पर तुम्हें मेरी बेवक़ूफ़ी के लिये माफ़ी देनी चाहिए; मैं राजदूतों से बात करने का अभ्यस्त नहीं हूं।"

इसी समय कमरे का दरवाज़ा खुला और डी-आविआक ने सूचना दी—"स्पेन का राजदूत आया है।" चिको चौंक-सा उठा, जिससे सम्राट् मुस्करा उठे।

"मैं सच कहता हूं," हेनरी ने कहा—"यह एक ऐसी बात है, जिसकी मुझे पहले से आशा नहीं थी। स्पेन का राजदूत! भला वह यहाँ किसलिये आया है?"

"हाँ," चिको ने प्रकटतः कहा—"भला वह यहाँ किसलिये आया है?"

"हमें शीघ्र ही मालूम हो जायगा; शायद हमारा पड़ोसी स्पेन कोई सीमा-प्रान्त का झगड़ा हमसे तय करना चाहता होगा।"

"तो मैं यहाँ से चला जाऊँ," चिको ने कहा—"यह आदमी तो सम्राट् फ़िलिप द्वितीय का राजदूत होगा, और मैं—"

"फ्रांस का राजदूत स्पेनवाले को स्थान दे रहा है, और सो भी नवार में! यह नहीं होगा। इस पुस्तकालय का दरवाज़ा खोलकर इसीके अन्दर चले जाओ, चिको।"

"पर वहाँ से तो मैं इच्छा न करने पर भी सारा वार्तालाप सुन लूँगा।"

"तुम सब सुन लेना ! मुझे कुछ छिपाना नहीं है। और हाँ, क्या तुम्हें अपने सम्राट् की तरफ़ से मुझे कुछ और नहीं कहना है ?"

"बिल्कुल कुछ नहीं, हुज़ूर।"

"बहुत अच्छा, तुम्हें अन्य राजदूतों की तरह देखने और सुनने के अलावा और कुछ नहीं करना है, और इसके लिये पुस्तकालय सब से अच्छी जगह है। अपनी सारी आँख खोलकर देखो और अच्छी तरह कान लगाकर सुनो, प्यारे चिको। डी-आबिआक, राजदूत को अन्दर लिवा लाओ।"

चिको अपने छिपने की जगह चला गया और उसने पर्दा खींचकर बन्द कर दिया।

जब शिष्टाचारोचित आरम्भिक बातें समाप्त हुईं, और चिको ने अपने छिपने के स्थान से देख-सुनकर यह निश्चय कर लिया कि सम्राट् मुलाक़ात करना अच्छी तरह जानते हैं, तो स्पेनी राजदूत ने कहा—"क्या मैं, हुज़ूर से स्पष्ट रूप से बात कर सकता हूँ ?"

"हाँ, आप कह सकते हैं, महाशय।"

"मैं कैथोलिक सम्राट् के पास से जवाब ले आया हूँ।"

"जवाब !" चिको ने सोचा—"तब तो कोई सवाल किया गया होगा।"

"कैसा जवाब ?" हेनरी ने राजदूत से पूछा।

"गत मास में आपके किये हुए प्रस्तावों का जवाब।" राजदूत ने उत्तर दिया।

"ओह, मुझे बातें बहुत भूल जाया करती हैं! कृपया मुझे याद दिलाइये कि वे प्रस्ताव क्या थे?"

"लोरेन प्रिसेज़ की अनधिकार चेष्टा के सम्बन्ध में।"

"हाँ, मुझे याद आगया, ख़ासकर महाशय-डी-गाइज़ के बारे में; अच्छा, कहिए।"

"हुज़ूर, मेरे मालिक-सम्राट् को यद्यपि लोरेन के साथ किये हुए एक समझौते पर हस्ताक्षर करने की आवश्यकता हुई थी, किन्तु उन्होंने नवार को अपना घनिष्ठतर सम्बन्धी माना है, और स्पष्ट बात यह है कि उन्होंने इसे हितकर समझा है।"

"हाँ, हमें अधिक स्पष्टतापूर्वक बात करनी चाहिए।"

"मैं सब बातें साफ़-साफ़ कहूँगा, श्रीमान्, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरे मालिक आपके प्रति कैसे विचार रखते हैं।"

"हाँ, क्या मैं उन विचारों को भी जान सकता हूँ?"

"हुज़ूर, मेरे मालिक नवार की कोई बात अस्वीकार नहीं करेंगे।"

चिको ने इस बात का निश्चय करने के लिये कि वह स्वप्न तो नहीं देख रहा है, अपनी उँगलियाँ दाँतों के नीचे जोर से दबायीं।

"चूँकि वह मेरी कोई बात अस्वीकार नहीं करेंगे, इसलिये हमें यह देखना चाहिए कि उनसे क्या माँगना चाहिए।" हेनरी ने कहा।

"श्रीमान् जो-कुछ चाहें।"

"फ़ज़ूल बात है!"

"अगर हुज़ूर, साफ़ तौर पर कहेंगे—"

"हाँ! पर यह तो बड़ी ही उलझन की बात है।"

"तो क्या मैं श्रीमान् स्पेन-सम्राट् का प्रस्ताव सुनाऊँ?"

"सुनाइए।"

"फ्रांस-सम्राट् नवार की सम्राज्ञी को शत्रु समझते हैं; वह उन्हें बहन के रूप में नहीं स्वीकार करते, और उनको निन्दनीय भी समझते हैं। यह सब—पर मैं ऐसे नाज़ुक मामले पर कुछ कहने के लिये श्रीमान् से माफ़ी चाहता हूँ—"

"हाँ, कहते चलिए।"

"तो यह सब बातें सार्वजनिक हो चुकी हैं।"

"महाशय, आपका मतलब क्या है?"

"जब उनके भाई उन्हें अपनी बहन होने से इन्कार करते हैं, तो हुज़ूर के लिये उन्हें अपनी स्त्री होने से अस्वीकार करना सरल है।"

हेनरी ने पर्दे की ओर देखा, जिसके पीछे चिको आँखें खोले काँपते हुए यह देख रहा था कि देखें अब आगे क्या होता है।

"सम्राज्ञी को अपनी स्त्री होने से अस्वीकार करने पर," राजदूत ने बोलना जारी रक्खा—"नवार और स्पेन के सम्राटों में पूर्णतः मित्रता स्थापित हो जायगी; स्पेन-सम्राट् अपनी कन्या

इन्फैण्टा का विवाह आपके साथ कर देंगे और वे अपना विवाह श्रीमान् की बहन मैडम-कैथेराइन-डी-नवार से कर लेंगे।"

गर्व के मारे हेनरी हिल उठा, और भय के मारे चिको का शरीर काँपने लगा। एक ने प्रभात-कालीन सूर्य की भाँति अपना सितारा ऊँचा चढ़ते देखा; और दूसरे ने वैलोई के राज-चिह्न और सौभाग्य को नीचे गिरते देखा।

क्षण-भर के लिये पूर्ण स्तब्धता छा गयी; इसके बाद सम्राट् बोले—"महाशय, यह प्रस्ताव शानदार है, और इसमें मैं अपनी प्रतिष्ठा समझता हूँ।"

"श्रीमान् सम्राट् ने," राजदूत ने उत्साह-पूर्वक स्वीकृति को भाँपते हुए कहा—"इसके लिये केवल एक शर्त लगायी है।"

"एक शर्त! यह तो ठीक ही है; क्या है वह?"

"लोरेन-प्रिंसों के विरुद्ध श्रीमान् को मदद देने—अर्थात् श्रीमान् के लिये सिंहासन का मार्ग प्रशस्त करने—के लिये मेरे मालिक यह चाहते हैं कि आपकी मदद से वे फ्लैंडरों को अधिक सुरक्षित बना दें, जिन पर ड्यूक-डी-अंजो हमला कर रहे हैं। श्रीमान् यह बात समझेंगे कि मेरे मालिक के हक़ में यह बात लोरेन-प्रिंसेज़ की अपेक्षा हुजूर के प्रति अधिक शुद्ध अनुराग की है, क्योंकि महाशय-डी-गाइज़ उनके मित्र हैं, और वे कैथोलिक प्रिंस के रूप में फ्लैण्डर्स में ड्यूक-डी-अंजो के विरुद्ध दल संगठित कर रहे हैं। यही एकमात्र शर्त है, जिसे आप उचित समझेंगे।

श्रीमान् स्पेन-सम्राट् इस प्रकार के दुहरे विवाह से आपके साथ सम्बद्ध हो जाने पर इस बात में आपको मदद देंगे कि—" राजदूत किसी उचित शब्द की खोज में मालूम पड़ता था—"आप फ्रांस के सम्राट् बनें, और आप उन्हें फ्लैण्डरों का निश्चय दिला दें। मैं अब श्रीमान की बुद्धिमता का परिचय पाकर सन्देश का शुभ अन्त समझता हूँ ?"

हेनरी कमरे में टहलने लगा। "तो यही वह जवाब है," अन्ततः उसने कहा—"जो आप मेरे पास लाने के लिये भेजे गये थे ?"

"हाँ, हुजूर।"

"और कुछ नहीं ?"

"और कुछ नहीं, हुजूर।"

"अच्छा, तो मैं स्पेन-सम्राट् का प्रस्ताव नामंजूर करता हूँ।"

"आप इन्फैण्टा से विवाह करना अस्वीकार करते हैं !" स्पेनी ने इस तरह चौंककर कहा, जैसे किसी ने उसे अकस्मात् चोट पहुँचायी हो।

"यह तो मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात होती, किन्तु फ्रांस की लड़की लेने की जगह स्पेन की लड़की लेना मैं अधिक प्रतिष्ठा की बात नहीं समझता।"

"नहीं, पर उस सम्बन्ध से तो आपने लगभग अपना सत्यानाश कर लिया, जबकि इस सम्बन्ध से आपको सिंहासन मिलेगा।"

"यह अप्रतिम सौभाग्य की बात है, महाशय; मैं जानता हूँ, पर मैं अपनी भावी प्रजा के रक्त और प्रतिष्ठा के बदले इसे नहीं खरीद सकता। क्या आप समझते हैं, कि ! मैं अपने साले फ्रांस-सम्राट् के विरुद्ध स्पेनियों की मदद करूँगा ! मैं फ्रांस की विश्व-विख्यात कीर्ति में बाधक सिद्ध होऊँगा ! मैं भाइयों के हाथों भाई का वध कराऊँगा ! मैं अपने देश में विदेशियों का प्रभुत्त्व बढ़ाऊँगा ! नहीं, महाशय; मैंने स्पेन-सम्राट् की मदद गाइज़ों के विरुद्ध माँगी थी, जो मेरा पैतृक अधिकार छीनना चाहते हैं, पर अपने साले ड्यूक-डी-अंजो और अपने मित्र हेनरी तृतीय के विरुद्ध नहीं, सम्राट् को बहन और अपनी स्त्री के विरुद्ध नहीं। आप कहेंगे कि आप गाइज़ों को मदद देंगे। आप ख़ुशी से ऐसा करें। मैं आपपर जर्मनी और फ्रांस के सारे प्रोटेस्टेण्टों* को डाल दूँगा। स्पेन-सम्राट् फ्लैण्डरों को पुनः जीतना चाहते है, जो उनके हाथ से निकला जा रहा है; उन्हें वही करने दीजिए, जो उनके बाप चार्ल्स पञ्चम ने किया था, और वह घेंट का नागरिक बनने के लिये बसने की आज्ञा माँगें। मुझे निश्चय है कि फ्रांसिस प्रथम की तरह वह भी उन्हें वह प्रदान कर देंगे। कैथोलिक-सम्राट् कहते हैं कि मैं फ्रांस का सम्राट् बनना चाहता हूँ। यह सम्भव है, पर इसके लिये मैं उनकी मदद नहीं चाहता। एक बार फ्रांस का सिंहासन खाली हो जाने पर सारे संसार के सम्राटों के विरुद्ध भी मैं

---

* ईसाई धर्म के विशेष फ़िर्के के अनुयायी।

उसे प्राप्त करके छोड़ूँगा। अच्छा तो अब विदा, महाशय! मेरे भाई फ़िलिप से कहिए कि मैं उनके प्रस्तावों के लिये कृतज्ञ हूँ, पर इस बात का बिल्कुल विश्वास नहीं कर सकता कि उन्होंने यह समझा होगा कि मैं उसे मंजूर कर लूँगा। विदा, महाशय!"

राजदूत विस्मय-स्तब्ध रह गया। उसने अस्फुट स्वर में कहा—"सावधान होकर बोलें, हुज़ूर! आपके और आपके पड़ोसी सम्राट् के बीच जो सद्भावना है, वह शीघ्रतापूर्वक बोले हुए शब्दों से नष्ट न हो जाय।"

"महाशय, इसे समझ लीजिए—मेरे लिये नवार-सम्राट् या शून्य-सम्राट् होना एक ही बात है। मेरा मुकुट इतना हल्का है कि अगर वह उतर भी जाय, तो मुझे कोई विशेष अन्तर नहीं मालूम होगा; इसके अतिरिक्त मेरा विश्वास है कि मैं इसकी रक्षा कर सकूँगा। इसलिये, महाशय, अब विदा! अपने मालिक से कहिए कि जिसका स्वप्न वे देख रहे हैं, मैं उससे बड़ी अभिलाषाएँ रखता हूँ।" कहकर सम्राट् की आकृति वैसी बन गयी, जो उसकी वास्तविक नहीं, अपितु कृत्रिम थी। इसके बाद वह मुस्कराते हुए राजदूत को द्वार की तरफ़ ले चला।

---

# पचासवाँ परिच्छेद

## हेनरी डी-नवार की विवशता

चिको घोर आश्चर्य-सागर में डूब-उतरा रहा था। हेनरी ने पर्दा उठाया और उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा—"कहो, चिको, तुम्हारी समझ में मैंने उसे कैसा टरकाया?"

"आश्चर्य-जनक रीति से, हुजूर; ख़ासकर यह सोचते हुए कि हुज़ूर का राजदूतों से कम काम पड़ता है।"

"मेरे भाई हेनरी ही ये राजदूत भेजते हैं।"

"यह कैसे, हुजूर?"

"अगर वह अपनी बेचारी बहन को लगातार दिक़ न करते, तो और किसी को इसका हौसला न होता। क्या आपका

विश्वास है कि यदि स्पेन-सम्राट् सम्राज्ञी की की गयी उस सार्वजनिक अप्रतिष्ठा का हाल न सुने होते, जो एक शाही रक्षक दल के कप्तान द्वारा उनकी गाड़ी की तलाशी लेकर की गयी थी, तो वह मुझसे उन्हें त्याग देने का प्रस्ताव कर सकते थे ?"

"मुझे यह देखकर खुशी हो रही है, हुजूर", चिको ने जवाब दिया—"कि सारी कोशिशें बेकार जायँगी, और सम्राज्ञी तथा आपके बीच जो सौहार्द्र स्थापित है, उसमें कोई बाधा नहीं पड़ेगी।"

"दोस्त, वे हमें लड़ाने में जो दिलचस्पी ले रहे हैं, वह बहुत स्पष्ट है।"

"मैं यह मानता हूँ, हुजूर, कि मामले की तह तक जैसा आप पहुँचे हुए हैं, वैसा मैं नहीं पहुँच सका हूँ।"

"इसमें शक नहीं कि अगर मैं उनकी बहन को छोड़ दूँ, तो हेनरी प्रसन्न होंगे।"

"ऐसा क्यों ? कृपया मुझे समझाइये। मैं नहीं जानता था कि मैं ऐसे अच्छे स्कूल में आ रहा हूँ।"

"चिको, तुम जानते हो कि वे मुझे मेरे विवाह का दहेज देना भूल गये हैं।"

"इतना तो मैं समझ गया था, हुजूर।"

"इस दहेज में तीन लाख सुनहले क्राउन देने थे—साथ ही कुछ नगर भी, जिनमें काहोर भी सम्मिलित था।

"अच्छा नगर है, काहोर।"

"मैंने रुपये का नहीं, काहोर का दावा किया है।"

"हुजूर, आपकी जगह मैं भी ऐसा ही करता।"

"यही कारण है—अब तुम समझ गये ?"

"नहीं, सचमुच मैं नहीं समझ सका, हुजूर ?"

"इसीलिये वे चाहते हैं कि मैं अपनी स्त्री से लड़ूँ और उसे त्याग दूँ। न स्त्री रहे, न दहेज—तीन लाख सुनहले क्राउन और काहोर का प्रश्न न उठे। यह भी प्रतिज्ञा-भंग का एक तरीक़ा है, और हेनरी ऐसी उलझनें डालने में बड़े चतुर हैं।"

"आप काहोर को रखना अधिक पसन्द करेंगे, हुजूर।"

"निस्सन्देह; क्योंकि आखिर मिआर्न की बादशाहत ही क्या है ? यह तो छोटा-सा इलाक़ा है, जो मेरी सास और साले की लोलुपता का शिकार बनकर ऐसा बन गया है कि इलाक़े के मालिक को सम्राट् कहना भी हास्यास्पद है।"

"और काहोर—"

"काहोर मेरा रक्षक होगा—मेरे धर्म का संरक्षक !"

"हुजूर, काहोर के लिये शोक करते रहें; क्योंकि चाहे आप मैडम मार्गरिट को छोड़ें या नहीं, पर फ्रांस-सम्राट् काहोर आपको नहीं देंगे, और जब तक आप इसे नहीं लेते—"

"मैं तो इसे शीघ्र ही ले लेता, यदि कठिनाई न होती, और सब से बड़ी बात तो यह कि अगर मैं लड़ाई से घृणा न करता होता—"

"काहोर तो अजेय है, हुजूर।"

"ओह, अजेय! पर अगर मेरे पास सेना होती, जिसका कि अब बड़ा अभाव है—"

"सुनिये, श्रीमान्। यहाँ हम एक दूसरे की चापलूसी करने के लिए नहीं बैठे हैं। काहोर पर, जो अब महाशय डी-वेसिन के क़ब्ज़े में है, अधिकार करने के लिये हैनीवाल या सीज़र का सा परिश्रम चाहिए, और हुज़ूर—"

"और मैं?" हेनरी ने मुस्कराकर कहा।

"श्रीमान ने अभी-अभी कहा है कि हुज़ूर लड़ाई से घृणा करते हैं।"

सम्राट् ने ठण्डी साँस ली, और क्षण-भर के लिये उनकी आँखें चमक उठीं। फिर वह बोले—"यह सच है कि मैंने कभी तलवार नहीं खींची, और शायद कभी खींचूँ भी नहीं। मैं घास-फूस का सम्राट् हूँ, और शान्ति पसन्द करता हूँ; पर एक विलक्षण मंद की अवस्था आ जाने पर मैं युद्ध की बातें सोचने में रस लेने लगता हूँ—यह बात मेरे रक्त में घुली हुई है। सेण्ट लुई, जो मेरे पूर्वज थे, शिक्षित और मृदुल स्वभाव के धार्मिक पुरुष थे—एक मौक़ा ऐसा आ गया कि वह बड़े कुशल सैनिक बन गये। अच्छा, अब हम महाशय-डी-वेसिन के सम्बन्ध से बात करें, जो सीज़र और हैनीवाल के सदृश प्रतापी है।"

"हुज़ूर, अगर मेरी बातों से आपको दुःख या क्रोध हुआ हो, तो माफ़ करें। मैंने महाशय-डी-वेसिन का नाम इसलिये ले दिया था कि युवावस्था और अनभिज्ञता के फल-स्वरूप आपके

हृदय में यदि उन्माद-पूर्ण आशाएँ भर गयी हों, तो वे बुझ जायँ। काहोर बहुत अच्छी तरह सुरक्षित है, क्योंकि वह दक्षिण की कुंजी है।"

"अफ़सोस! मैं यह बातें जानता हूँ। मैं काहोर पर अधिकार करने की ऐसी प्रबल इच्छा रखता था कि मैंने अपनी बेचारी माँ से कहा था कि वह हमारी शादी को अनिवार्य बना दे। काहोर मेरी स्त्री को दहेज में मिला था। उन्हें मुझे वह नगर देना है—"

"देना और चुकाना, हुज़ूर—"

"दोनों भिन्न बातें हैं। तो तुम्हारा मत यह है कि वे मुझे कभी नहीं चुकायेंगे?"

"मुझे भय है कि नहीं।"

"फ़जूल बात है।"

"और यह स्पष्ट है—"

"क्या?"

"कि वे ऐसा करके ठीक ही करेंगे।"

"यह क्यों?"

"इसलिये कि आप सम्राट् का कर्त्तव्य नहीं जानते। आपको तुरन्त प्राप्त कर लेना चाहिए था।"

"तो क्या तुम्हें सेण्ट जर्मन-एल-आक्सेरोई की खतरे की घण्टी याद है?" हेनरी ने कटु स्वर में कहा—"मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जिस पति को वे विवाह की रात को ही मार

डालने का निश्चय कर चुके थे, वह दहेज की बात सोच सकता था, या अपने प्राण बचाने की ?"

"हाँ; किन्तु उसके बाद हमें शान्ति भी तो प्राप्त हुई थी, हुज़ूर—आपको उस समय उस अवसर से लाभ उठाना चाहिए था, और मुझे माफ़ करें, हुज़ूर, प्रेम-प्रपंच में पड़ने की बजाय इस काम में लग जाना था। यह काम वैसे आनन्द का नहीं था, मैं मानता हूँ; पर यह लाभदायक अधिक था। मैं अपने सम्राट् की तरह आपके हित की बात भी कर रहा हूँ, हुज़ूर। यदि हेनरी-डी-फ्रांस, हेनरी-डी-नवार की घनिष्ठ मित्रता प्राप्त करते, तो वह और भी घनिष्ट मित्र बन जाते। और अगर फ्रांस और नवार के कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट संगठित होकर एक हो जायँ, तो सारे संसार को कँपा सकते हैं।"

"ओह, जबतक कि मैं खुद न काँपूँ तब तक औरों को कँपाने की अभिलाषा नहीं रखता। पर तुम समझते हो कि मुझे काहोर नहीं मिल सकेगा, मैं—"

"मेरा ऐसा ही खयाल है, हुज़ूर। इसके तीन कारण हैं।"

"कौन-कौन-से कारण हैं, सुनाओ।"

"खुशी से सुनिए, हुज़ुर। पहला कारण तो यह है कि काहोर बढ़िया और आमदनी की जगह है, इसलिये हेनरी तृतीय उसे अपने पास रखना चाहेंगे।"

"यह तो बड़ी ईमानदारी की बात नहीं है।"

"यह राजकीय बात है, हुज़ूर।"

"ओह, क्या यही राजकीय वात है कि जो चीज़ तुम्हें पसन्द हो, उसी पर कब्जा जमा लो ?"

"जी हाँ, शेरों का काम ऐसा ही होता है; और शेर जानवरों का राजा होता है।"

"अगर मैं कभी सम्राट् वना, तो इस वात को याद रक्खूँगा, चिको। अव दूसरा कारण वताओ।"

"दूसरा कारण है, मैडम कैथेराइन—"

"ओह! क्या मेरी बूढ़ी माता कैथेराइन अव भी राज-नीति में भाग लेती हैं ?"

"हमेशा; और वह अपनी लड़की को नेराक की अपेक्षा अपने निकट देखना अधिक पसन्द करेंगी।"

"तुम्हारा ऐसा ख़याल है ? तो भी वह अपनी लड़की को आनन्द नहीं करने देतीं।"

"नहीं; पर मैडम मार्गरिट तो आपकी सेवा क्रीतदासी की तरह करती हैं, हुज़ूर।"

"तुम वड़े चालाक हो, चिको। यदि मैंने इसका विचार किया हो, तो शैतान मेरा नाश कर दे। पर तुम्हारा ख़याल ठीक हो सकता है। हाँ, हाँ! फ्रांस की लड़की ज़रूरत पड़ने पर क्रीतदासी वन सकती है, क्यों ?"

"हुज़ूर, किसी का साधन कम करके आप उसे ऐसा वना सकते हैं कि उसके लिये किसी खास स्थान में कोई आकर्षण नहीं रह सकता। नेराक वहुत सुन्दर जगह है, इसमें ऐसे

सुन्दर बाग़ और कुञ्ज हैं, जैसे और कहीं नहीं मिल सकते; किन्तु मैडम मार्गरिट साधनहीन होकर नेराक से उकता जायँगी, और लावर जाना चाहेंगी।"

"मैं तुम्हारा पहला कारण पसन्द करता हूँ, चिको।" हेनरी ने सिर हिलाते हुए कहा।

"अच्छा तो अब तीसरा कारण सुनिए। ड्यूक-डी-अंजो फ़्लैण्डरों का सिंहासन हथियाना चाहते हैं। महाशय-डी-गाइज़ फ्रांस और स्पेन दोनों ही को पराजित करके उनका मुकुट अपने सिर पर रखना चाहते हैं, और स्पेन-सम्राट् सारे संसार की बादशाहत करना चाहते हैं—इन सब के बीच में आप अपना एक ख़ास बोझ बनाना चाहते हैं।"

"मैं—बिना किसी वज़न के हो?"

"बिल्कुल यही बात है। अगर आप सशक्त हुए; अर्थात् आप में वज़न अधिक हुआ, तो आप पलड़ा पलट देंगे। फिर तो आप पासंग न रहकर एक ख़ास वज़न बन जायँगे।"

"मैं यह कारण पसन्द करता हूँ और यह खूब तर्क के साथ प्रमाणित किया गया है। यही मेरी स्थिति का वर्णन है?"

"पूरा वर्णन।"

"और मैं इन बातों को बिना देखे ही बराबर ऐसी ही आशा करता आया हूँ!"

"हुज़ूर, मैं श्रीमान् को सलाह देता हूँ कि आप आशा करना बन्द कर दें।"

"तो मैं फ्रांस-सम्राट् के नाम के आगे भी उस ऋण के लिये उसी प्रकार 'व' लिख दूँ, जैसे मैं अपने किसानों की मालगुज़ारी के लिये लिखा करता हूँ।"

"जिसका अर्थ होगा 'वसूल'?"

"हाँ।"

"दो बार 'व' लिखिये, हुज़ूर, और फिर ठण्डी साँस लीजिए।"

"ऐसा ही होगा, चिको। तुम देखते हो कि मैं बिना काहोर के भी बियार्न में रह सकता हूँ।"

"हाँ, मैं यह देखता हूँ, और साथ ही यह भी देखता हूँ कि आप बुद्धिमान और दार्शनिक सम्राट् हैं। पर यह शोर कैसा है?"

"शोर! कहाँ?"

"मैं समझता हूं बाहर आँगन में।"

"खिड़की से देखो!"

"हुज़ूर, कोई आधे दर्जन आदमी फटे-पुराने कपड़े पहने नीचे खड़े हैं।"

"ओह! वे ग़रीब आदमी हैं।" सम्राट् ने उठते हुए कहा।

"तो, हुज़ूर के पास ग़रीब आदमी भी हैं?"

"निस्सन्देह; क्या परमात्मा दान देने की आज्ञा नहीं देता? मैं कैथोलिक नहीं, तो ईसाई तो हूं ही, चिको।"

"ख़ूब, हुज़ूर!"

"आओ, हम लोग साथ-साथ दान देंगे, चिको, और फिर खाना खाने चलेंगे।"

"हुजूर, मैं आपके साथ चलता हूँ।"

"मेज़ पर मेरी तलवार के पास रुपयों की थैली रक्खी है, उसे उठा लो; देख रहे हो न ?"

दोनों नीचे गये; पर हेनरी कुछ चिन्तित और विचार-ग्रस्त मालूम हो रहा था। चिको ने उसकी ओर देखकर विचार किया। "मुझे किस शैतान ने प्रेरित करके इस बहादुर राजा से राजनीति पर बातें करवायीं, जिसके फल-स्वरूप यह शोकान्वित मालूम हो रहा है ? मैंने बड़ी मूर्खता की !"

दरबार में जाकर हेनरी फ़क़ीरों की टोली के पास गया। लगभग एक दर्जन ऐसे आदमी थे, जो शक्ल-सूरत और कपड़े-लत्तों में एक दूसरे से भिन्न थे। मामूली देखनेवाला यही समझता था कि वह राही होंगे। ध्यान से देखनेवाला समझ सकता था कि वे भले आदमी हैं और भेस बदलकर भीख माँगने के बहाने आये हुए हैं। हेनरी ने चिको के हाथ से थैली ले ली और एक इशारा किया। ऐसा मालूम हुआ कि सभी फ़क़ीरों ने उस इशारे का मतलब समझ लिया। वे अभागे आकर बड़ी नम्रता से हेनरी को प्रणाम करके खड़े हो गये, जिसके साथ ही सम्राट् पर उनकी अर्थ-पूर्ण दृष्टि पड़ी। हेनरी ने भी सिर के इशारे से ही उसका उत्तर दिया। फिर चिको ने थैली खोलकर उसमें से एक सिक्का निकाला।

"क्या आप जानते हैं कि इसमें मुहरें भरी हैं, हुज़ूर ?" चिको ने कहा।

"हाँ, दोस्त, जानता हूँ।"

"आपके पास इतना धन है ?"

"क्या तुम यह नहीं देखते कि इसमें से प्रत्येक सिक्का दो की सेवा करता है। इसके विपरीत मैं तो ऐसा ग़रीब हूँ कि मुझे मजबूर होकर हर सोने के सिक्के में से दो बनाकर काम चलाना पड़ता है।"

"यह सच है," चिको ने आश्चर्य-पूर्वक कहा—"ये आधे सिक्के तो मनमौजी तौर पर बनाये गये हैं।"

"ओह, तब तो मैं अपने भाई हेनरी की प्रवृत्ति का हो गया हूँ, जो मूर्तियों को तोड़ने में आनन्द मानता है। मैं अपने सुनहले सिक्कों को काटकर प्रसन्न होता हूँ।"

"तो भी हुज़ूर, दान देने की यह एक अद्भुत शैली है।" चिको ने कहा। वह इसके अन्दर किसी छुपे रहस्य का सन्देह कर रहा था।

"तुम दान देते होते, तो क्या करते ?"

"बजाय हर सिक्कों के काटने के पूरा दे देता, और कह देता कि—'यह दो आदमियों के लिये है।'"

"और दोनों लड़ते, तो मैं भलाई की जगह बुराई करता।"

तब हेनरी ने एक टुकड़ा उठाया और एक भिखमंगे की ओर बढ़कर उसकी ओर प्रश्न-सूचक ढंग से देखा।

"राजन्।" उस आदमी ने कहा।

"कितने ?" हेनरी ने पूछा।

"पाँ सौ।"

"काहोर।" कहकर उन्होंने उसे वह टुकड़ा दिया, और फिर दूसरा उठाया।

वह आदमी झुककर पीछे हट गया।

इसके बाद दूसरा भिखमंगा आगे बढ़कर बोला—"ऐश।"

"कितने ?"

"तीन सौ पचास।"

"काहोर।" कहकर उन्होंने उसको सोने का टुकड़ा दिया।

"नार्बोन।" तीसरे ने कहा।

"कितने ?"

"आठ सौ।"

"काहोर।" कहकर उसने उसको भी एक टुकड़ा दिया।

"माण्टाबान।" चौथे ने कहा।

"कितने ?"

"छः सौ।"

"काहोर।"

इस प्रकार प्रत्येक ने एक-एक नाम ले-लेकर एक-एक सोने का टुकड़ा प्राप्त किया, और संख्या बताकर पीछे हटता गया। कुल संख्याओं का जोड़ लगभग आठ हज़ार था।

प्रत्येक को हेनरी ने 'काहोर' का जवाब एक ही स्वर में दिया। दान समाप्त हुआ, थैली में अब सिक्कों के आधे कटे टुकड़े शेष नहीं रहे थे, और न कोई भिखमंगा ही दरबार में रह गया था।

"दान समाप्त हो गया, हुजूर ?" चिको ने पूछा।

"हाँ, समाप्त कर दिया गया।"

"हुजूर, क्या मुझे इसपर उत्सुक होने का अधिकार है ?"

"क्यों नहीं ? उत्सुकता तो स्वाभाविक है।"

"इन भिखमंगों ने क्या कहा है, और आपने क्या जवाब दिया है ?"

हेनरी मुस्कराया।

"सचमुच," चिको ने कहना जारी रक्खा—"यहाँ तो सभी बातें भेद-भरी मालूम होती हैं।"

"तुम्हारा ऐसा ख़याल है ?"

"हाँ, मैंने इस प्रकार कभी दान दिये जाते नहीं देखा।"

"नेराक में यही रिवाज है। तुम यह लोकोक्ति तो जानते ही होगे कि 'हर शहर की रीति निराली होती है'।"

"यह तो अद्भुत रीति है, हुज़ूर।"

"नहीं, इससे आसान तो और कोई रीति ही नहीं है। इनमें से प्रत्येक आदमी विभिन्न नगरों से आया था।"

"तो फिर, हुज़ूर ?"

"जिससे मैं सदा एक ही शहर के भिक्षुकों को दान न

दकर अपने राज्य के सब शहरों को बराबर दान देता रहूँ और सब जगह के भिक्षुक बराबर लाभ उठा सकें।"

"हाँ, हुजूर; पर आपने 'काहोर्स' कहकर क्यों जवाब दिया है?"

"ओह!" सम्राट् ने अत्यन्त स्वाभाविक ढंग पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—"क्या मैंने 'काहोर' कहा है?"

"हाँ!"

"तुम्हारा यह खयाल है?"

"मुझे इसका निश्चय है।"

"ऐसे ही कह दिया होगा, क्योंकि हम लोग काहोर की बाबत बातचीत कर रहे थे। मैं इसके प्राप्त करने की ऐसी प्रवल इच्छा रखता हूँ कि बिना मतलब के भी मैंने उसका नाम ले लिया होगा।"

"हूँ!" चिको ने सन्दिग्ध भाव से कहा—"कुछ और भी तो सुनने में आया था।"

"क्या! और क्या?"

"हरेक ने कुछ नम्बर भी तो बोले थे, जिनका जोड़ आठ हज़ार से भी अधिक होता है।"

"ओह! उसे तो मैं भी नहीं समझ सका, चिको। पर चूँकि भिखमंगे अनेक मण्डलों में विभक्त होंगे, इसलिये सम्भवतः हर भिखमंगे ने अपने-अपने मण्डल की संख्या का उच्चारण किया होगा।"

"हुज़ूर—!"

"आओ, अब खाना खायें, दोस्त; खाने और पीने से बढ़कर मस्तिष्क को कोई भी बात प्रसन्न नहीं रखती। मेरी मेज़ पर चलो। तुम देखोगे कि यद्यपि मेरे सिक्के कटे थे; पर मेरी बोतलें पूरी भरी होंगी।"

फिर घनिष्टता-पूर्वक चिको का हाथ अपने हाथ में लेते हुए, सम्राट् अपने कमरे को वापस गये, जहाँ खाना परोसा जा रहा था। सम्राज्ञी के कमरे के पास से जाते हुए उन्होंने उसकी ओर देखा, पर वहाँ रोशनी नहीं थी।

"खवास," सम्राट् ने कहा—"क्या सम्राज्ञी अन्दर नहीं हैं ?"

"सम्राज्ञी मैडमासिल-डी-माण्टमारेन्सी को देखने गयी हैं, जो वीमार हैं।"

"ओह, बेचारी फ़ास्यूज।" हेनरी ने कहा—"यह सच है कि सम्राज्ञी बड़ी ही सहृदया हैं! चिको, आओ खाना खायें।"

---

# इक्यावनवाँ परिच्छेद

—:※:—

## नवार-सम्राट् का सच्चा भेद

खाना बड़ा मज़ेदार रहा। हेनरी के हृदय और मस्तिष्क पर अब कोई बोझ अवशिष्ट नहीं मालूम होता था, और अब वह अपने साथी के साथ बड़ी प्रसन्नता-पूर्ण मुख-मुद्रा बनाये हुए बैठा था; किन्तु चिको अपनी घबराहट को जितना छिपा सका, छिपाने की चेष्टा करता रहा, क्योंकि स्पेनी राजदूत और भिक्षुकों के दृश्य ने उसे किं कर्त्तव्य विमूढ़ बना रक्खा था। वह थोड़ा पीकर अपनी तबीयत को भरसक ठण्डी रखने का यत्न करते हुए पर्यवेक्षण जारी रखना चाहता था। तो भी चिको का मस्तिष्क फ़ौलादी था और हेनरी तो खुद कहा करता था कि वह शराब को दूध की तरह पी सकता है।

"मैं आपसे ईर्ष्या करता हूँ," चिको ने सम्राट् से कहा—"आपका दरबार मज़े की जगह है और आप का जीवन आनन्द से पूर्ण है।"

"अगर मेरी स्त्री यहाँ होतीं, तो मैं यह बात न कहता, जो अब कहने जा रहा हूँ; पर उनकी ग़ैर-हाज़िरी में मैं तुम्हें बताता हूँ कि मेरे जीवन का सुन्दर अंश तो वह है, जो तुमने नहीं देखा है।"

"हाँ, हुज़ूर, लोग सचमुच आपके सम्बन्ध में सुन्दर कहानियाँ कहते हैं!"

हेनरी अपनी कुर्सी में पीछे उठँगकर हँसा—"लोग कहते हैं कि मैं अपनी पुरुष-प्रजा की अपेक्षा स्त्री-प्रजा पर अच्छा शासन करता हूँ। क्यों, कहते हैं न यही बात?" उसने कहा।

"हाँ, श्रीमान; और मुझे इससे आश्चर्य होता है।"

"क्यों?"

"क्योंकि हुज़ूर के अन्दर बेचैनी की वे उमंगें भरी हुई हैं, जिससे सम्राट् बना करते हैं।"

"ओह, चिको, तुम्हारा खयाल ग़लत है। मैं तो सुस्त हूँ और मेरा जीवन इसीसे भरा है। अगर मैं किसी प्रेमिका को चुनता हूँ, तो निकटतम प्राप्त होनेवाली को लेता हूँ; और अगर शराब की इच्छा होती है, तो हाथ के बिल्कुल पास रक्खी बोतल उठाता हूँ। तुम्हारे सुस्वास्थ्य के नाम पर पीता हूँ!"

"हुज़ूर, आप मुझे बड़ी इज़्ज़त दे रहे हैं।" चिको ने अपना गिलास खाली करते हुए कहा।

"इस प्रकार," सम्राट् ने कहा—"मेरे घर में कोई झगड़ा नहीं है!"

"हाँ, मैं समझता हूँ; सभी पट-महिलाएँ आपको प्रेम करती हैं, हुज़ूर।"

"पट-महिलाएँ नहीं, वे मेरी पड़ोसिनें हैं, चिको।"

"तो हुज़ूर, इसका तो यह परिणाम होता होगा कि यदि आप नेराक की बजाय सेण्ट-डेनिस में रहें, तो सम्राट् को शान्ति नहीं मिलेगी।"

"सम्राट्! तुम कह क्या रहे हो, चिको? क्या मुझे गाइज़ समझ रहे हो? मैं तो काहोर चाहता हूँ, जो मेरे क़रीब है, और वह भी 'अपने' ढंग से चाहता हूँ।"

"हुज़ूर, आपकी पहुँच में जो चीज़ें हैं, उनके प्रति आपकी अभिलाषा वैसी ही है, जैसी सीज़र बोर्जिया को इटली की थी। उसने एक-एक नगर क़ब्ज़ा करते-करते बादशाहत जमा ली और यह कहा करता था कि इटली एक ऐसा सुखाद्य पौदा है, जिसे एक-एक पत्ती करके हज़म कर जाना चाहिए।"

"मुझे तो ऐसा मालूम होता था कि सीज़र बोर्जिया बुरा राजनीतिज्ञ नहीं था, दोस्त!"

"नहीं; पर वह पड़ोसी के लिये बड़ा ही ख़तरनाक, और अपने भाई के लिये बड़ा ही बुरा था।"

"तो क्या मेरी तुलना पोप के लड़के से करोगे—मेरी, एक ह्यूगोनाट शासन की ?"

"श्रीमान, मैं आपकी तुलना किसी से नहीं करता।"

"क्यों नहीं ?"

"इसलिये कि मेरा विश्वास है कि जो व्यक्ति आपकी उपमा औरों से देगा, वह ग़लती करेगा। आप अभिलाषी शासक हैं, हुज़ूर।"

"तुम्हीं एक आदमी हो, जो मुझमें कोई-न-कोई अभिलाषा उत्पन्न करना चाहते हो।" हेनरी ने कहा।

"ईश्वर बचाये, हुज़ूर! बल्कि इसके विपरीत मैं तो यह चाहता हूँ कि हुज़ूर किसी बात की इच्छा न रक्खें।"

"तुम्हें पेरिस लौटने की ज़रूरत तो नहीं है न, चिको ?"

"नहीं, श्रीमान्।"

"तो तुम मेरे साथ कुछ दिन रहोगे ?"

"यदि हुज़ूर, मुझे अपने साथ रखने की प्रतिष्ठा प्रदान करना चाहते हैं, तो मैं एक सप्ताह हुज़ूर की सेवा में व्यतीत कर सकता हूँ।"

"यही सही; एक सप्ताह में तुम मुझे भाई की तरह मानने लगोगे, चिको।"

"मुझे अब प्यास नहीं है, हुज़ूर।" चिको ने कहा। वह अब इस बात से निराश हो रहा था कि सम्राट् और अधिक खाना-पीना जारी रक्खेंगे।

"तो फिर मैं तुमसे अलग हो जाऊँगा; यदि कोई खाना-पीना न कर रहा हो, तो उसे मेज़ पर नहीं बैठना चाहिए, चिको।"

"यह क्यों, हुज़ूर?"

"जिससे नींद अच्छी तरह आ सके। क्या तुम्हें शिकार पसन्द है, चिको?"

"बहुत नहीं, हुज़ूर; और आपको?"

"बहुत अधिक—क्योंकि मैं चार्ल्स नवम के दरबार में रह चुका हूँ।"

"तो श्रीमान् ने मुझसे पूछने की कृपा क्यों की?"

"क्योंकि मैं कल शिकार पर जाऊँगा और तुम्हें भी साथ ले चलना चाहता हूँ।"

"हुज़ूर, यह तो मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात होगी; पर—"

"शिकार से तो हरेक शस्त्रधारी का दिल और उसकी आँखें मुग्ध हो जाती हैं। मैं अच्छा शिकारी हूँ, चिको, और मैं तुम्हें अपना कौशल दिखाना चाहता हूँ। तुम कहते हो कि तुम मुझे जानना चाहते हो?"

"यह मैं जानता हूँ कि मेरी यह प्रबलतम इच्छा है, हुज़ूर।"

"यह ऐसी लाइन है, जिसमें तुमने मेरा अध्ययन कभी नहीं किया है।"

"हुज़ूर, मैं आपका आज्ञाकारी हूँ।"

"अच्छा, तो यह निश्चित रहा। ओह! खवास बाधा डालने के लिये आ रहा है।"

"कोई बड़ा ज़रूरी काम होगा, हुज़ूर?"

"भोजन के समय काम! तुम समझोगे कि तुम अब भी फ्रांस के दरबार में हो, चिको। यह बात समझ लो कि नेराक में हम लोग भोजन के बाद शयन ही किया करते हैं।"

"लेकिन यह खवास?"

"क्या यह कोई काम न होने पर नहीं आ सकता?"

"मैं समझ गया, और अब मैं सोने जाऊँगा।"

चिको उठा; सम्राट् भी उठ खड़े हुए और चिको का हाथ अपने हाथ में ले लिया। चिको ने इस बात पर सन्देह किया कि वह (सम्राट्) उसे वहाँ से जल्दी क्यों टरकाना चाहते हैं; और उसने निश्चय किया कि भरसक वह कमरे से नहीं निकलेगा।

"ओहो," चिको ने मुँह बनाकर कहा—"यह तो आश्चर्य की बात है, हुजूर।"

सम्राट् हँसे। "क्या आश्चर्य की बात है?" उन्होंने पूछा।

"मेरा सिर चक्कर खा रहा है; जब तक मैं चुपचाप बैठा रहा, मेरी तबियत ठीक थी; पर अब उठते ही—"

"वाह!" हेनरी ने कहा—"हमने तो शराब केवल चखी ही थी।"

"उसे आप चखना कहते हैं, श्रीमान । आप तो पूरे पियक्कड़ हैं, और मैंने आपके सत्कार-वश पी है।"

"दोस्त चिको," हेनरी यह देखने की कोशिश करते हुए कि चिको को वास्तव में नशा हो गया है, या वह बहाना बना रहा है, कहा—"तुम्हारे लिये तो इस समय सो रहना सबसे अच्छा होगा।"

"हाँ, हुज़ूर ! गुड-नाइट* ।"

"गुड-नाइट, चिको।"

"हाँ, हुज़ूर, आप ठीक फ़र्माते हैं; चिको के लिये तो सबसे अच्छी बात है सो रहना।" कहकर वह फ़र्श पर लेट गया।

हेनरी ने दरवाज़े की ओर नज़र डाली और फिर चिको के पास आकर बोला—"तुमने इतनी पी ली है, चिको, कि तुम्हें मेरे फ़र्श पर ही लेटना पड़ा ?"

"चिको इन छोटी-मोटी बातों की पर्वाह नहीं करता।"

"पर मैं किसी और की प्रतीक्षा में हूँ।"

"खाने की, हमें खाना—" चिको ने उठने की व्यर्थ चेष्टा की।

"तुम कितनी जल्दी पी कर मस्त हो जाते हो ! पर जल्दी जाओ ! वह अधीर हो रही है।"

"वह ! कौन ?"

"वही महिला जिसके आने की मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

---

*रात्रि का प्रणाम।

"महिला; तुमने यही कहा है न, हेनरीकट ? ओह, माफ़ करें ! मैंने समझा, मैं फ़्रांस-सम्राट् से बात कर रहा हूँ। उसने मेरा नाश कर दिया, वही हेनरीकट। ओह ! मैं जाऊँगा।"

"तुम बड़े भले आदमी हो, चिको। जल्दी चले जाओ।"

चिको उठा और झूलते हुए दरवाज़े की ओर बढ़ा।

"विदा, दोस्त," हेनरी ने कहा—"विदा, अच्छी तरह सोना।"

"और आप, हुज़ूर ?"

"चु—!"

"हां हां, चु——?" कहकर उसने दरवाज़ा खोला।

"बरामदे में तुम्हें ख़वास मिलेगा, वह तुम्हें तुम्हारे कमरे में पहुँचा देगा।"

"धन्यवाद, श्रीमान्।" चिको ने इतना झुककर प्रणाम करते हुए कहा, जितना कि एक शराबी के लिये सम्भव था। किन्तु ज्यों ही उसके पीछे दरवाज़ा बन्द हुआ, उसके अन्दर से नशे के सारे चिह्न ग़ायब हो गये। तीन क़दम आगे चलने के बाद वह सहसा लौट पड़ा और अपनी आँख दरवाज़े के चाबीवाले बड़े सूराख़ में लगा दी। हेनरी दूसरे अज्ञात व्यक्ति के लिये दूसरा दरवाज़ा खोल रहे थे, जिसे चिको अपनी राजदूत-सुलभ उत्सुकता के कारण देखना चाहता था। वह व्यक्ति जो अन्दर आया, स्त्री के बजाय पुरुष था। उस आदमी

ने अन्दर आकर टोपी उतार ली, और चिको ने डुप्लेसिस-मार्ने का भला किन्तु कठोर चेहरा देखा। यह आदमी हेनरी-डी-नवार का कठोर और सावधान मंत्री था।

"ओह," चिको ने सोचा—"इससे तो हमारा दोस्त मेरी अपेक्षा और भी क्रुद्ध होगा।"

किन्तु हेनरी के चेहरे पर केवल प्रसन्नता की रेखा दौड़ गयी; और दरवाज़े का ताला बन्द करके वह उत्सुकता-पूर्वक कुछ नक़शों, खाकों और पत्रों का निरीक्षण करने बैठ गये, जो उनका मंत्री साथ लाया था। इसके बाद वह (सम्राट्) लिखने और नक़शों पर निशान लगाने लगे।

"क्या हेनरी-डी-नवार इसी तरह प्रेम किया करता है।" चिको ने सोचा।

इसी समय उसने अपने पीछे किसी के आने की आहट सुनी और आगन्तुक को आश्चर्य में डालने के भय से जल्दी से आगे बढ़ा। खवास से मिलते ही उसने अपने सोने के कमरे की बाबत दरियाफ़्त किया।

"मेरे साथ आइये," डी-आबिआक ने कहा—"मैं आपको दिखाता हूँ।" और चिको को दोमंज़िले पर ले गया, जहाँ उसके लिये शयन-गृह तैयार था।

चिको ने अब नवार-सम्राट् को समझना शुरू कर दिया, इसलिये वह सोने के बजाय पलंग पर उदासीन-भाव से बैठे-बैठे कुछ विचार करता रहा। खिड़की से चन्द्रमा की रजत-

चन्द्रिका नदी की धारा और मैदान की हरियाली पर पूर्णतः फैली हुई दिखायी देती थी।

"हेनरी एक वास्तविक सम्राट् है; और यह षड्यंत्र भी करता है," चिको ने सोचा—"यह सारी जगह बाग़ और नगर—सारा सूबा—षड्यंत्र का केन्द्र है। सभी स्त्रियाँ यहाँ प्रेम करती हैं; पर वह प्रेम होता राजनीतिक है, सभी मनुष्य भविष्य की आशा पर जीते हैं। हेनरी चालाक है—उसकी बुद्धि काफ़ी सूक्ष्मता तक पहुंची हुई है, और यह कपटी देश स्पेन से पत्र-व्यवहार कर रहा है। कौन जानता है कि स्पेन के राजदूत को दिखाये जाने की वह सारी कार्यवाही दिखावटी नहीं थी, और उसने किसी ऐसे इंगित से सन्देश भेजा हो, जो मेरे लिये अज्ञात हो? हेनरी के पास गुप्तचर हैं और वे भिखमंगे अवश्य ही वेश बदले हुए गुप्त आदमी थे। सोने के वे टुकड़े प्रतिज्ञा के चिह्न थे—और थे एक ख़ास पहचान के निशान।

"हेनरी किसी भी बात की पर्वाह न करने का ढोंग करता है, और यह दिखाने की कोशिश करता है कि वह केवल प्रेम-प्रपंच-रत और जीवन के आनन्द लूटने मे मग्न है तथा अपना समय मार्गो के साथ काम करने में गुज़ारता है, जो सोने का नाम भी नहीं जानता और प्रेम-जैसी चीज से कोसों दूर रहता है। सम्राज्ञी मार्गरिट के प्रेमी बहुत-से हैं और सम्राट् इसे जानता भी है, फिर भी वह उन्हें सहन करता है, क्योंकि

सम्भवतः उसे उनकी या सम्राज्ञी की—या शायद दोनों ही की—ज़रूरत है। सौभाग्य-वश ईश्वर ने उसे षड्यंत्र करने की बुद्धि देते समय युद्ध-कौशल का गुण नहीं दिया, क्योंकि लोगों का कहना है कि वह बन्दूक़ों की आवाज़ से डरता है, और बिल्कुल नवयौवनावस्था में वह एक बार लड़ाई पर गया, तो पन्द्रह मिनट भी घोड़े की पीठपर नहीं ठहर सका था। यह अच्छी बात है, नहीं तो यदि यह व्यक्ति सुशस्त्रज्ञ भी होता, तो सब-कुछ कर सकता था।

"पर ड्यूक-डी-गाइज़ वास्तव में ऐसा आदमी है, जिसमें दोनों ही गुण मौजूद हैं; पर त्रुटि यही है कि वह एक कुशल योद्धा प्रसिद्ध हो चुका है, इसलिये सभी उससे सतर्क रहते हैं, और इस हेनरी से कोई नहीं डरता। केवल मैंने ही इसे अच्छी तरह देखा है। और इसे अच्छी तरह देख लेने के बाद अब मुझे यहाँ ठहरने की ज़रूरत नहीं है, इसलिये वह जबतक काम करने और सोने में व्यस्त रहेगा, मैं चुपचाप नगर के बाहर निकल जाऊँगा। मैं समझता हूँ एक ही दिन में अपना अभीष्ट प्राप्त करने का ऐसा गर्व और किसी राजदूत को नहीं प्राप्त हुआ, जैसा मुझे हो रहा है। इसलिये मैं नेराक छोड़ने के बाद घोड़े को तबतक दौड़ाता रहूँगा, जबतक फ्रांस की सरहद में नहीं घुस जाऊँगा।" कहकर वह सवारी का नोकदार जूता पहनने लगा।

---

# बावनवाँ परिच्छेद

———✻०✻———

## नेराक में चिको की ख्याति

चिको ने सब-कुछ निश्चय करने के बाद अपना छोटा पुलिन्दा बाँधना शुरू किया। "मुझे सम्राट् के पास पहुँचने और यह सब समाचार कहने में कितना समय लगेगा," उसने सोचा—"मैंने जो-कुछ देखा है, उससे मुझे डर लग रहा है। किसी भी ऐसे नगर में पहुँचने में दो दिन लग जायँगे, जहाँ से गवर्नर सन्देश-वाहक भेज सकता है—उदाहरण के लिये काहोर जाना भी ठीक हो सकता है, जिसके सम्बन्ध में हेनरी-डी-नवार इतना सोचता है। एक बार वहाँ पहुँच जाऊँ, तब कुछ आराम कर सकता हूँ, क्योंकि आखिर आदमी को कुछ

विश्राम भी तो करना चाहिए। फिर मैं काहोर पहुँचकर सुस्ताऊँगा। मेरे पीछे घुड़-सवार दौड़ सकते हैं। चलो फिर, चिको, रफ़्तार बढ़ाओ और धैर्य रक्खो! तुमने समझा था कि तुम अपना कार्य पूरा कर चुके, पर अभी तो काम अधूरा ही समझना चाहिए।"

चिको ने अब रोशनी बुझा दी, और धीरे से दरवाज़ा खोलकर दबे-पाँवों बाहर निकला। वह दहलीज़ में मुश्किल से चार क़दम ही रख पाया था कि किसी चीज़ में उसके पाँव की ठोकर लगी। यह 'चीज' और कुछ नहीं ड्योढ़ी में फ़र्श पर ही चटाई बिछाकर सोया हुआ ख़वास था, जो जगकर बोल उठा "गुड् इवनिग*, महाशय चिको, गुड् इवनिंग।"

चिको ने आबियाक का स्वर पहचाना। "गुड् इवनिग, महाशय-डी-आबियाक," उसने कहा—"पर ज़रा रास्ते से हट जाओ, मैं टहलने जाना चाहता हूँ।"

"पर चेस्यू में तो रात को टहलना मना है।"

"क्यों ?"

"क्योंकि सम्राट् को डाकुओं का डर रहता है, और सम्राज्ञी को आशिकों का।"

"वाहियात बात है!"

"डाकुओं और आशिक़ों के अतिरिक्त रात को कौन टहलना चाहेगा, जबकि वास्तव में सोने का समय होता है।"

*शाम का प्रणाम।

"तो भी प्यारे डी-आबियाक," चिको ने अत्यन्त स्नेह-स्निग्ध स्वर में मुस्कराकर कहा—"मैं इन दोनों (डाकू या आशिक़) में से कोई भी नहीं हूँ। मैं तो राजदूत हूँ, और सम्राज्ञी से लैटिन में देर तक बात करने और सम्राट् के साथ खाना खाने के कारण थक गया हूँ। मुझे बाहर जाने दो, दोस्त, क्योंकि मैं ज़रा बाहर टहलना चाहता हूँ।"

"बाहर क्या शहर में ?"

"नहीं जी, बाग में।"

"फ़ज़ूल बात है ! शहर की अपेक्षा बागों में टहलने की तो और भी मनाही है।"

"इस उम्र में भी तुम बड़े चौकस रहते हो, दोस्त। क्या तुम्हें और कोई काम नहीं है।"

"नहीं।"

"तुम जुआ नहीं खेलते, न प्रेम के ही पचड़े में पड़ते हो ?"

"जुआ खेलना के लिये रुपयों की ज़रूरत होती है, चिको; और प्रेम में पड़ने के लिये स्त्री की।"

"निश्चय ही," चिको ने कहा; और जेब में हाथ डालकर दस पिस्तोल* निकालकर ख़वास के हाथ पर रखते हुए कहा—"ख़ूब ध्यान से याद करो, मैं शर्त बद सकता हूँ कि तुम्हे कोई-न-कोई सुन्दरी स्त्री मिलेगी, जिसे तुम इससे ख़रीदकर कुछ भेंट देना।"

---

*सोने का सिक्का जो गिन्नी से कुछ कम मूल्य का (लगभग १८ शिलिंग के बराबर) होता है।

"ओह, महाशय चिको!" खवास ने कहा—"आप सचमुच फ्रांस के दरबारी हैं; आप ऐसे ढंग से बातें करते हैं कि कोई इन्कार कर ही नहीं सकता। अच्छा जाइये, पर किसी तरह की आवाज़ न हो।"

चिको आगे बढ़ा। वह दहलीज़ से छाया की तरह आगे सरक गया और ज़ीने से नीचे उतरा, किन्तु नीचे आकर उसने देखा, तो एक अफ़सर कुर्सी पर सो रहा था। कुर्सी ठीक दरवाज़े के सामने ही रक्खी हुई थी, इसलिये बिना उसे जगाये निकल जाना असम्भव था।

"ओह! डाकू खवास," चिको धीरे से बड़बड़ाया—"तू जानता था कि यहाँ यह बैठा है, लेकिन तूने मुझसे बतलाया नहीं।"

चिको ने चारों ओर नज़र दौड़ाकर देखा कि बाहर निकलने का और कोई मार्ग तो नहीं है, जिधर से वह अपनी लम्बी टाँगों के सहारे निकल जाय। अन्ततः उसे अपना अभीष्ट प्राप्त हुआ; एक मेहराबदार खिड़की का शीशा टूटा हुआ था। वह अपनी अभ्यस्त स्फूर्ति के साथ दीवार पर चढ़ गया। उसके चढ़ने में उतनी ही आवाज़ हुई, जितनी पतझड़ की हवा के झोंके से एक पत्ती गिरने पर होती है; किन्तु दुर्भाग्य-वश खिड़की से निकलने का रास्ता तंग था और जब वह अपना सिर और एक कन्धा खिड़की से बाहर निकाल चुका तथा उसने अपना पैर नीचे से उठाकर दीवार पर रक्खा, तो उसे मालूम हुआ कि वह अब न तो आगे ही बढ़ सकता

है, न पीछे खिसक सकता है। इस प्रकार वह ज़मीन और आसमान के बीच में अधड़ लटक गया।

फिर उसने बड़ी कोशिश की, जिसके फल-स्वरूप उसका अँगरखा फट गया और कई जगह बदन से चमड़ा छिल उठा। सबसे बड़ी कठिनाई यह आ पड़ी कि उसकी तलवार की मूँठ किसी तरह बाहर नहीं निकल पाती थी। उस तलवार के आधार पर चिको खिड़की की चौखट पर बँधा हुआ लटक रहा था। उसने अपनी तमाम ताक़त, धैर्य और परिश्रम लगाकर अपनी कन्धे की पट्टी को, जिसमें तलवार कमर के पास बँधी हुई थी, छुड़ाना चाहा; पर बन्धन के सहारे ही उसका शरीर झुका हुआ था, इसलिये उसकी मुक्ति व्यर्थ जाती। आख़िर वह अपना हाथ अपनी पीठ के पीछे ले जाने में सफल हुआ, और इस प्रकार उसने तलवार खींचकर म्यान के बाहर निकाल ली। तलवार तिरछी बनावट के कारण निकाल जाने पर इतनी जगह मिल गयी कि मूँठ बाहर जा सकती थी, इसलिये चिको तलवार नीचे डाल देने के बाद उसके पीछे आसानी से निकल सका। किन्तु यह बिना किसी आवाज़ के नहीं हो सका और चिको ने खिड़की के नीचे से उठने पर सिपाही को सामने खड़ा देखा।

"ओह! क्या चोट आ गयी, महाशय चिको?" उसने पूछा।

चिको को आश्चर्य हुआ, पर उसने कहा—"नहीं दोस्त, बिल्कुल नहीं।"

"तब तो बड़े सौभाग्य की बात है, क्योंकि ऐसे आदमी थोड़े ही हैं, जो ऐसा काम बिना अपना सिर फोड़े कर सकते हों। वास्तव में आपके अतिरिक्त और कोई यह काम नहीं कर सकता था, महाशय चिको।"

"पर आपको मेरा नाम कैसे मालूम हो गया?"

"मैंने आज आपको महल में देखा था, और मालूम किया था कि सम्राट् से बातें करनेवाला आदमी कौन है।"

"अच्छा, मुझे जल्दी का काम है, जाने दीजिए।"

"पर रात को कोई महल के बाहर नहीं जाता; यह तो मेरा हुक्म है।"

"पर लोग बाहर जाते हैं, क्योंकि देखिए मैं यहाँ आ गया हूँ न?"

"हाँ, पर—"

"पर क्या?"

"आपको वापस जाना होगा, महाशय चिको।"

"नहीं।"

"नहीं, क्यों?"

"इस प्रकार उस रास्ते से हमेशा नहीं निकला जा सकता। यह बड़ा ही कष्टदायक कार्य है।"

"अगर मैं सिपाही के बजाय अफ़सर होता, तो पूछता कि आप इस प्रकार क्यों निकले; पर यह काम मेरा नहीं है, मेरा काम तो यही है कि आपको वापस भेज दूँ। इसलिये आप

अन्दर जाइए, महाशय चिको। मेरी प्रार्थना है कि आप अन्दर चले जाइए!"

सिपाही ने यह बात ऐसे फुसलाहट-भरे स्वर में कहा कि चिको के हृदय पर असर हुआ। फलतः उसने अपना हाथ जेब में डाला और उसमें से दस पिस्तोल निकाले।

"आपको समझना चाहिए, दोस्त," उसने कहा—"कि एक बार निकलने में मेरे कपड़े फट गये हैं, इसलिये वापस जाने में तो सारे फट जायेंगे और मुझे नंगा जाना पड़ेगा, जो ऐसे दरबार के लिये, जिसमें अनेक अल्प-वयस्का सुन्दरी महिलाएँ हैं, बुरी बात होगी, इसलिये मुझे अपने दर्ज़ी के पास जाने दीजिए।" और रक़म सिपाही के हाथ पर रक्खी।

"अच्छा तो जल्दी जाइए, महाशय चिको।" आदमी ने कहा।

आख़िर चिको सड़क पर पहुँचा। रात भागने के लिये अच्छी नहीं थी, क्योंकि चन्द्रमा का प्रकाश निखर रहा था, और आकाश में बादल का नाम नहीं था। चिको को पेरिस की कुहरे से आच्छादित रात्रियों पर अफ़सोस हुआ, जिनमें एक आदमी दूसरे के पास से ही बिना अपने को प्रकट किये गुज़र सकता है। यह अभागा राजदूत ज्यों ही सड़क के चौराहे पर पहुँचा कि उसे पहरेदारों की एक टोली दिखी। चिको यह सोचकर खुद रुक गया कि यदि वह बिना उधर देखे निकल जाने की चेष्टा करेगा, तो सन्देह में पकड़ा जायगा।"

"गुड् इवनिंग, महाशय चिको !" टोली के अफ़सर ने कहा—"क्या हम लोग आपको महल तक पहुँचा आयें ? आप रास्ता भूल गये मालूम पड़ते हैं।"

"अद्भुत बात है," चिको ने ओठों के अन्दर ही कहा—"यहाँ प्रत्येक व्यक्ति मुझे जानता है।" फिर ऊँचे स्वर में अत्यन्त बेपर्वाही के साथ बोला—"नहीं साहब, मैं महल की ओर नहीं जा रहा हूँ।"

"आप ग़लती पर हैं, चिको महाशय।" अफ़सर ने गम्भीरता-पूर्वक कहा।

"यह क्यों, महाशय ?"

"क्योंकि नेराक-वासियों को रात में बाहर न निकलने की कठोर राजाज्ञा है; केवल ख़ास ज़रूरत के वक्त आज्ञा प्राप्त करके और लालटेन लेकर बाहर निकला जा सकता है।"

"माफ़ कीजिएगा, महाशय, पर यह राजाज्ञा मेरे ऊपर लागू नहीं हो सकती, क्योंकि मैं नेराक-निवासी नहीं हूँ।"

"पर आप नेराक में तो हैं। 'निवासी' का मतलब तो रहनेवाले से है; और मैं आप को नेराक में देख रहा हूँ।"

"आप तो बड़े तार्किक हैं, महाशय। दुर्भाग्य-वश मुझे जल्दी है; आप अपने नियम में एक का अपवाद कर दीजिए, और मुझे जाने दीजिए।"

"आप भटक जायँगे, महाशय चिको; नेराक आपके लिये अपरिचित स्थान है—आप मेरे आदमियों में से तीन को

अपने साथ ले लीजिए, ये आपको महल तक पहुँचा आयेंगे।"

"पर मैं तो महल नहीं जा रहा हूँ न ?"

"तो फिर आप कहाँ जा रहे हैं ?"

"मुझे रात को अच्छी तरह नींद नहीं आती, इसलिये हमेशा टहलने की आदत है। नेराक एक अच्छा शहर है, इसलिये मैं घूमकर इसे देखना चाहता हूँ।"

"आप जहाँ चाहेंगे, मेरे आदमी आपको ले जायँगे, महाशय चिको। चलो, तीन आदमी !"

"महाशय, मैं तो अकेला जाऊँगा।"

"आपको चोर मार डालेंगे।"

"मेरे पास तलवार है।"

"हाँ, सच है; पर इससे तो शस्त्र लेकर घूमने के अपराध में आप गिरफ़्तार हो जायँगे।"

चिको निराश होकर अफ़सर को एक तरफ़ ले गया और उससे बोला—"महाशय आप युवक हैं; आप जानते हैं कि प्रेम क्या चीज़ है—यह बड़ी ही ज़ालिम चीज़ है !"

"निस्सन्देह, महाशय चिको।"

"आपसे क्या छिपाऊँ, साहब, मुझे एक महिला से मिलना है।"

"कहाँ ?"

"एक ख़ास जगह पर।"

"नवयुवती से ?"

"तेईस-वर्षीया महिला से।"

"वह है तो सुन्दरी ?"

"साक्षात् सुन्दरता है।"

"अच्छा, मैं आपको सुविधा दे दूँगा, महाशय चिको।"

"तो मुझे जाने दीजिएगा न ?"

"हाँ, मुझे मालूम हो गया कि आपका मामला ज़रूरी है।"

"बहुत ही ज़रूरी, महाशय।"

"अच्छा, तो जाइए।"

"और अकेले न ? आप समझ सकते हैं कि मैं किसी के साथ जाकर उस (महिला) से—"

"हाँ, साथ तो ठीक नहीं होगा; अच्छा जाइये, महाशय चिको।"

"आप बहादुर आदमी हैं, साहब। पर आप मुझे कैसे जानते हैं ?"

"मैंने आपको सम्राट् के साथ महल में देखा था, और हाँ, आप जाते किस दिशा को हैं ?"

"आजेन दरवाज़े की ओर। क्या मैं ठीक रास्ते से नहीं जा रहा हूँ ?"

"हाँ, सीधे चले जाइए, मैं आपकी सफलता चाहता हूँ।"

"धन्यवाद !" कहकर चिको अत्यन्त आनन्द से प्रफुल्लित होकर आगे बढ़ा। पर अभी सौ क़दम भी नहीं जा पाया था कि दूसरी पहरे की टोली सामने से आयी।

"इस शहर में तो रक्षा का बड़ा ही कठोर प्रबन्ध है ।" चिको ने सोचा।

"आप आगे नहीं बढ़ सकते !" कोतवाल ने गर्जकर कहा।

"पर महाशय, मैं—"

"ओह, महाशय चिको, आप हैं ? इस ठण्ड में सड़क पर क्यों घूम रहे हैं ?" अफ़सर ने पूछा।

"अवश्य ही इसे मुझपर कुछ शक हुआ होगा।" सोचकर चिको झुककर आगे निकल जाने की कोशिश करने लगा।

"महाशय चिको, सावधान हो जाइए !" कोतवाल ने कहा।

"सावधान किस बात से ?"

"आप ग़लत रास्ते पर जा रहे हैं; आप तो दरवाज़ों की तरफ़ जा रहे हैं।"

"हाँ, दरवाज़ों की तरफ़ तो मैं जा ही रहा हूँ।"

"तो मैं आपको गिरफ़्तार करता हूँ, महाशय चिको !"

"नहीं, महाशय; ऐसा करके तो आप बड़ी ही ग़लती करेंगे।"

"तो भी—"

"मेरे पास आजाइए महाशय, जिससे सिपाही लोग न सुन सकें।"

वह आगे बढ़ा।

"सम्राट् ने मेरे हाथ आजेन दरवाज़े के लेफ़्टिनेंट के पास सन्देश भेजा है।"

"अच्छा !"

"आपको आश्चर्य हो रहा है ?"

"हाँ।"

"आपको तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि आप मुझे जानते हैं।"

"हाँ, मैंने आपको सम्राट् के साथ महल में देखा था, इसी-से जानता हूँ।"

चिको ने अपने पाँव आधीरता-पूर्वक ज़मीन पर पटके। "इससे आप समझ गये होंगे कि मैं सम्राट् का विश्वासपात्र हूँ।" उसने कहा।

"निस्सन्देह; अच्छा तो जाइये, अपना काम कर आइये।"

"अच्छा," चिको ने सोचा—"मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा हूँ, पर बढ़ ज़रूर रहा हूँ। यह दरवाज़ा दीख रहा है। यही आजेन दरवाज़ा होगा। पाँच मिनट में मैं बाहर निकल जाऊँगा।"

वह दरवाज़े पर पहुँचा, जिस पर एक सन्तरी का पहरा था। सन्तरी बन्दूक़ कन्धे पर रक्खे फाटक पर इधर से उधर चक्कर लगा रहा था।

"दोस्त, क्या मेरे लिये दरवाज़ा खोल दोगे ?" चिको ने कहा।

"मैं ऐसा नहीं कर सकता, महाशय चिको," सिपाही ने कहा—"मैं तो केवल एक सिपाही हूँ।"

"तुम भी मुझे जानते हो ?" चिको ने क्षुब्ध होकर कहा।

"मुझे यह इज़्ज़त हासिल है, महाशय चिको; आज सुबह मैं महल के पहरे पर था और मैंने आपको सम्राट् के साथ बातचीत करते देखा था।"

"दोस्त, सम्राट् ने ही मुझे आजेन को ले जानेके लिये एक ज़रूरी सन्देश दिया है; दरवाज़े की खिड़की मेरे लिये खोल दो।"

"मैं ख़ुशी से ऐसा कर देता; पर मेरे पास चाबियाँ नहीं हैं।"

"तो किसके पास हैं ?"

"रात के अफ़सर के पास।"

चिको ने ठण्डी साँस ली। "वह कहाँ हैं ?"

सिपाही ने अपने अफ़सर को जगाने के लिये एक घण्टी बजायी।

"क्या बात है ?" उसने खिड़की से सिर निकालकर पूछा।

"लेफ़्टिनेण्ट साहब, एक महाशय दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं।"

"ओह, महाशय चिको," अफ़सर ने कहा—"अभी नीचे आ रहा हूँ।"

"क्या हरेक आदमी मुझे जानता है ?" चिको ने कहा—"मेरा नाक तो लालटेन-सा मालूम होता है और मैं मोमबत्ती-सा।"

"क्षमा कीजिएगा, महाशय," अफ़सर ने पास आकर कहा—"मैं सो गया था।"

"ओह, महाशय, रात तो बनी ही इसीलिये है; क्या आप कृपा करके दरवाज़ा खोल देंगे ? दुर्भाग्यवश मैं नींद का आनन्द नहीं ले सकता, क्योंकि सम्राट्--निस्सन्देह आप भी जानते होंगे कि सम्राट् मुझे जानते हैं ?"

"मैंने आज आपको श्रीमान् सम्राट् से महल में बातें करते देखा था।"

"अवश्य," चिको ने मुँह बनाकर कहा—"सम्राट् ने मुझे एक सन्देश देकर आजेन भेजा है; इसी दरवाज़े से जाना ठीक होगा न ?"

"हाँ, महाशय चिको।"

"क्या कृपया आप खुलवा देंगे ?"

"अवश्य। अंथेना, दरवाज़ा जल्दी खोल दो।"

चिको ने अब अच्छी तरह साँस ली। दरवाज़ा खुला—जो चिको के लिये स्वर्ग-द्वार से कम नहीं था। दरवाज़े के बाहर उसे तमाम स्वतंत्रता दीखती थी। अफ़सर को शिष्ट ढंग से सलाम करके वह दरवाज़े की ओर बढ़ा। "नमस्कार," उसने कहा—"धन्यवाद !"

"नमस्कार, महाशय चिको ! यात्रा सुखद हो ! पर ज़रा ठहरिये तो; मैं आपका पास माँगना तो भूल ही गया।" कहकर उसने चिको की बाँह पकड़कर रोका।

"क्या ! मेरा पास ?"

"अवश्य, महाशय चिको ? आप जानते हैं कि पास क्या

चीज़ होती है ? आप समझते हैं कि नेराक-जैसे नगर में कोई बिना पास बाहर नहीं जा सकता; ख़ासकर तब जब सम्राट् अन्दर शहर में हों।"

"और पास पर दस्तख़त किसके होने चाहिएँ ?"

"स्वयं सम्राट् के, इसलिये अगर उन्होंने आपको भेजा है, तो वे पास देना नहीं भूले होंगे।"

"ओह, आपको इसमें सन्देह है कि सम्राट् ने मुझे भेजा है ?" चिको ने उच्च स्वर में कहा। उसकी आँखें चमक उठीं, क्योंकि उसने देखा कि अब तो बना-बनाया काम बिगड़ना चाहता है। उसने निश्चय कर लिया कि वह अफ़सर और संत्री दोनों को मारकर फाटक से निकल भागेगा।

"मैं कोई सन्देह नहीं करता; पर सोचता हूँ कि अगर सम्राट् ने आपके हाथ सन्देश भेजा है, तो—"

"उन्होंने ख़ुद मुझे भेजा है, महाशय।"

"यह तो और भी तर्क की बात है। अगर वह जान पायेंगे कि आप बाहर गये, तो मुझे कल सुबह गवर्नर को पास दिखाना होगा।"

"गवर्नर कौन है ?"

"महाशय-डी-मार्ने, जो आज्ञा-भंग को कभी माफ़ नहीं करते, महाशय चिको।"

चिको ने अपना हाथ तलवार पर रक्खा, पर दूसरी ओर नज़र दौड़ाकर उसने देखा कि दरवाज़े के बाहर भी एक

आदमी का पहरा है, जो अफ़सर और संतरी को मारकर भागने पर चिको को रोक सकता था।

"अच्छा," चिको ने ठण्डी सांस लेकर कहा—"मैं हार गया!" और वह पीछे मुड़ा।

"क्या मैं आपके साथ आदमी भेज दूँ, महाशय चिको?" अफ़सर ने कहा।

"नहीं, धन्यवाद!"

चिको वापस लौटा, पर उसके अफ़सोस का अन्त यहीं नहीं था। वह पहरे के अफ़सर से फिर मिला, जिसने कहा—"क्या! इतनी जल्दी सन्देश दे आये, महाशय चिको? बहुत जल्दी की आपने!"

थोड़ा आगे चलकर दूसरे अफ़सर ने पुकारा—"कहिए, चिको महाशय, उस महिला का क्या रहा? आप नेराक देखकर प्रसन्न हुए न?"

अन्ततः फाटक के सिपाही ने पूछा—"महाशय चिको, दर्ज़ी ने अच्छा काम नहीं किया। अब तो आप पहले से भी और थके नज़र आ रहे हैं।"

चिको ने अब खिड़की के रास्ते घुसने की इच्छा नहीं की और उसने दरवाज़े के सामने लेटकर सोने का ढोंग कर लिया। संयोग या सौभाग्यवश दरवाज़ा खुल गया और वह महल में वापस आ गया। वहाँ उसने ख़वास को देखा, जिसने कहा—"महाशय चिको! क्या मैं आपको चाबी दूँ?"

"हाँ।" चिको ने कहा।

"सम्राट् आपसे इतना प्रेम करते हैं कि उन्होंने आपसे साथ धोना नहीं चाहा।"

"और तुमने सब-कुछ जानते हुए भी मुझे नहीं बतलाया ?"

"यह तो राज-भेद की बात थी, महाशय चिको, यह असम्भव था।"

"पर मैंने तुझे रक़म दी थी, बेईमान !"

"महाशय चिको, वह भेद दस पिस्तोल से ज़्यादा क़ीमत का था।"

चिको क्रोध में जलता हुआ अपने कमरे को लौटा।

# तिरपनवाँ परिच्छेद

## शिकार का अफ़सर

सम्राट् के पास से विदा होकर मार्गरिट प्रतिष्ठित महिलाओं के अन्तःपुर में गयी। रास्ते में उसने अपने डाक्टर को भी साथ ले लिया, जिसका नाम था शीराक। उस (डाक्टर) को भी चैन्यू में एक कमरा मिला हुआ था। डाक्टर के साथ सम्राज्ञी ने बेचारी फ़ास्यूज़ के पास जाकर उसे देखा, जो बिल्कुल पीली पड़ गयी थी। उसके पास रहनेवाली स्त्रियाँ उससे अनोखा बर्ताव रखती थीं। उसने अपने पेट में दर्द की शिकायत बतलायी—उसे इतना अधिक कष्ट था कि किसी सवाल का जवाब देना या चिकित्सा स्वीकार करना उसकी इच्छा के विपरीत बात थी।

फ़ास्यूज़ इस समय लगभग इक्कीस वर्ष की थी। वह लम्बी और खूबसूरत स्त्री थी। उसकी आँखें नीली, बाल हल्के और शरीर पतला एवं लावण्य-युक्त था। तीन महीने से वह अपने कमरे से बाहर नहीं निकली थी—अन्ततः वह आलस्य में पड़े-पड़े कमज़ोर होकर चारपायी पर पड़ गयी थी।

शीराक ने पहले कमरे में खड़ी हुई अन्य स्त्रियों को वहाँ से विदा कर दिया और केवल सम्राज्ञी के साथ रोगिणी के पास रह गया।

फ़ास्यूज़ स्त्रियों के हटाने आदि से घबरा गयी, पर शीराक और सम्राज्ञी की स्थिर और ठण्डी मुखाकृति देखकर कुछ गम्भीरता-पूर्वक तकिये के सहारे उठकर सम्राज्ञी के पधारने की कृपा के लिये धन्यवाद दिया।

मार्गरिट फ़ास्यूज़ से भी अधिक पीली पड़ गयी; क्योंकि गर्व को चोट लगने से जो मनोव्यथा होती है, वह क्रूरता या बीमारी के दुख से अधिक कष्टदायक होती है।

फ़ास्यूज के अनिच्छा प्रकट करने पर भी शीराक ने उसकी नब्ज़ देखी। "कहाँ दर्द होता है?" क्षण-भर की परीक्षा के बाद उसने पूछा।

"पेटमें, महाशय," लड़की ने जवाब दिया—"पर अगर मुझे मानसिक शान्ति होती, तो इस दर्द से कुछ नहीं हो सकता था।"

"तुम्हारा मतलब क्या है, महाशया।" सम्राज्ञी ने पूछा।

फ़ास्यूज की आँखों से आँसू उमड़ पड़े।

"दुखी मत होओ, महाशया," मार्गरिट ने फिर कहा—"सम्राट् ने मुझे तुम्हारे पास आकर तुम्हें प्रसन्न करने के लिये कहा है।"

"ओह, बड़ी कृपा हुई, श्रीमती!"

शीराक ने रोगिणी का हाथ छोड़ते हुए कहा—"मैं अब जान गया कि तुम्हें कैसी तकलीफ़ है।"

"आप जान गये?" फ़ास्यूज़ ने काँपते हुए कहा।

"हाँ, हम जान गये कि तुम्हें बहुत ज़्यादा तकलीफ़ है।" मार्गरिट ने कहा।

फ़ास्यूज़ अब भी चिकित्सा-विज्ञान और ईर्ष्या की शरण में भय से काँप रही थी, जिनमें से दोनों ही चीज़ें सहानुभूति-शून्य होती हैं।

मार्गरिट ने शीराक को इशारा किया और वह कमरे के बाहर चला गया। अब फ़ास्यूज का भय प्रकम्पन के रूप में बदल गया और वह क़रीब-क़रीब बेहोश-सी होने लगी।

"महाशया," मार्गरिट ने कहा—"यद्यपि कुछ समय तक तुमने मुझे अजनबी के रूप में समझा है, और यद्यपि प्रति दिन मुझे बतलाया जाता रहा है कि तुमने मेरा कितना अपकार किया है—"

"मैंने, श्रीमती?"

"मेरी बात में बाधा न डालो। यद्यपि तुमने अपनी समुचित अभिलाषा से अधिक सौभाग्य प्राप्त करने की आशा की

है, तो भी मेरे हृदय में तुम्हारे प्रति और प्रतिष्ठित महिलाओं के प्रति (जिनमें से तुम एक हो) सौहार्द्र है, जिसने मुझे तुम्हारे दुर्भाग्य के समय में तुम्हारी सेवा करने के लिये बाध्य किया है।"

"श्रीमती, मैं शपथपूर्वक कहती हूँ—"

"इन्कार मत करो—मैं पहले ही से बहुत दुखी हूँ। अपनी और मेरी प्रतिष्ठा में बट्टा न लगाओ। मैं 'अपनी' प्रतिष्ठा इसलिये कह रही हूं कि मैं भी तुम्हारी इज़्ज़त का उतना ख़याल रखती हूँ, जितना तुम रख सकती हो, क्योंकि तुम मेरी ही हो। महाशया, मुझसे सारी बातें साफ़-साफ़ कह दो, मैं तुम्हें माँ की तरह मदद दूँगी।"

"ओह, श्रीमती, क्या आप लोगों की उन बातों पर विश्वास करती हैं?"

"मेरी बातों में बाधा न डालो, क्योंकि मुझे समय कम है। मैं कहती हूं कि महाशय शीराक इस समय गुप्त भवन में चले गये हैं—वे तुम्हारे रोग को समझ गये हैं (उनके शब्द तुम्हें याद होंगे) और वहाँ सबसे कह रहे हैं कि छूत की बीमारी जो देश में फैली हुई थी, अब राजमहल में भी आ गयी है और तुम्हे अब छूत की बीमारी हो रही है। तो भी, मैं तुम्हें समय रहते मास-डी-अजेनोई ले चलूँगी, जो बिल्कुल एकान्त स्थान है और सम्राट् के निवास-स्थान से दूर है। वहाँ हम अकेली रहेंगी। सम्राट् अपने नौकर-चाकरों के साथ शिकार पर जा रहे हैं,

और उनका कहना है कि इस काम में उन्हें कई दिन लग जायँगे; तुम जबतक स्वस्थ न हो जाओगी, हम 'मास-डी-अजेनोई में रहेंगी !"

"श्रीमती ! श्रीमती !" ला-फ़ास्यूज़ ने लज्जा और शोक से लाल होकर कहा—"यदि आप मेरे सम्बन्ध में उड़ायी हुई तमाम अफ़वाहों पर विश्वास करती हैं, तो मुझे दुखद मृत्यु से मरने दीजिए !"

"तुम मेरी दयालुता के प्रति कोई कृतज्ञता न प्रकाशित करो, महाशया, और सम्राट् की मित्रता पर विश्वास करो, जिन्हों ने मुझे कह दिया है कि मैं तुम्हारे पास से न हटूँ ।"

"सम्राट् ! सम्राट् ने कहा है कि—"

"क्या तुम्हें मेरी बात पर सन्देह है ? अगर मैं तुम्हारी बीमारी के लक्षण न समझती, अगर मैं तुम्हारे कष्ट से यह न समझ पाती कि जोखिम का समय निकट है, तो शायद मैं तुम्हारे इन्कार करने पर ही विश्वास कर लेती ।"

इसी समय मानो सम्राज्ञी की बात के समर्थन के रूप में बेचारी फ़ास्यूज़ भयानक पीड़ा से तड़पकर गिर पड़ी । उसका शरीर काला हो गया ।

मार्गरिट ने क्षण-भर के लिये उसके प्रति क्रोध और करुणा का भाव त्याग दिया ।

"क्या तुम अब भी समझती हो कि मैं तुम्हारे इन्कार पर विश्वास करती हूँ, महाशया ?" उसने अन्ततः उस बेबस लड़की

से, ज्यों ही वह ज़रा सँभली, फिर कहा। लड़की का चेहरा ऐसा व्याकुल और आँखें ऐसी अश्रुपूर्ण हो रही थीं कि उस दृश्य को देखकर, स्वयं कैथेराइन पिघल उठती।

इसी समय मानो ईश्वर ने बेचारी लड़की पर दया करके दरवाज़ा खोल दिया और नवार-सम्राट् शीघ्रतापूर्वक अन्दर आ पहुँचे। हेनरी भी चिको की तरह उस रात सोये नहीं थे। मार्ने के साथ एक घण्टा परिश्रम करने के बाद शिकार का सारा इन्तज़ाम ठीक करके, जिसकी सूचना चिको को समय पर दी जा चुकी थी, वह प्रतिष्ठित महिलाओं के आवास की ओर लपके थे।

"क्यों, क्या हाल है?" उन्होंने अन्दर आते ही पूछा—"क्या मेरी बच्ची फ़ास्यूज़ को अब भी तकलीफ़ है?"

"आप मानती नहीं, श्रीमती," लड़की ने अपने प्रणयी को अन्दर आया देख उसकी कुमक के बल पर उत्तेजित होकर कहा—"आप मानतीं नहीं कि सम्राट् ने कुछ नहीं कहा था, और मेरा इन्कार करना ठीक है?"

"हुज़ूर," सम्राज्ञी ने हेनरी की ओर मुड़कर फ़ास्यूज़ की बात में बाधा डालते हुए कहा—"मेरी प्रार्थना है कि आप इस लज्जाजनक झगड़े को समाप्त कर डालिये। मैंने समझा था कि श्रीमान् ने मेरा विश्वास करके मेरी इज़्ज़त की थी, और मुझे फ़ास्यूज़ का सच्चा हाल बताया था, इसलिये आप इसे बतला दीजिए कि मैं सब-कुछ जानती थी, जिससे यह मेरी बात का अविश्वास न करे।"

"बच्ची," हेनरी ने ऐसे भावावेग के साथ कहा, जिसे छिपाने की उन्होंने कोशिश नहीं की—"क्या तुम इन्कार करने का हठ कर रही हो ?"

"भेद मेरा नहीं है, हुजूर," साहसी लड़की ने जवाब दिया—"और जबतक मैं आपकी ज़बान से सब-कुछ कह देने की आज्ञा न प्राप्त कर लूँ—"

"मेरी बच्ची, फ़ास्यूज़ बड़ी हिम्मती है, श्रीमती," हेनरी ने कहा—"मेरी प्रार्थना है कि तुम इसे माफ़ कर दो; और तुम मेरी बच्ची, अपनी सम्राज्ञी की कृपा पर पूरा विश्वास करो; स्वीकृति का सम्बन्ध मुझसे है और मैं यह अपने ऊपर लेता हूँ।" और हेनरी ने मार्गरिट का हाथ अपने हाथ में लेकर दबाया।

ठीक उसी समय लड़की को फिर दर्द शुरू हो गया, और वह एक आह के साथ इस प्रकार मुड़ गयी, जैसे जलीय तूफ़ान आने पर कमल-नाल मुड़ जाती है।

सम्राट् उसकी मुरझाई भवें, अश्रुपूर्ण आँखें और बिखरे बाल देखकर करुणा से पिघलकर पानी-पानी हो गये—उन्होंने फ़ास्यूज़ के ओठों और कनपटियों पर पसीने की बूँदें देखीं, जो मर्मान्तक वेदना की सूचक थीं। वह बाँहें खोलकर उसके ऊपर गिर पड़े। "फ़ास्यूज ! फ़ास्यूज़" पलॅग के पास घुटनों के बल बैठते हुए उन्होंने कहा।

मार्गरिट रूक्ष-भाव से चुपचाप अपनी जलती हुई भवों को खिड़की के शीशों से लगाकर ठण्डी करने के लिये खिसक गयी।

फ़ास्यूज़ में अब भी इतनी शक्ति थी कि वह अपनी बाहें अपने प्रणयी के गले में डाल सके। इसके बाद उसने यह समझकर कि अब वह मरने जा रही है, अपने ओठ सम्राट् के ओठों से मिला दिये। फिर वह पीछे गिरकर बेहोश हो गयी।

हेनरी भी उसी की तरह पीले पड़ गये। उनकी आवाज़ भी बन्द हो गयी और उन्होंने अपना सिर अपनी प्रणयिनी की रोग-शय्या पर रख दिया, जो उस समय उसके लिये भी लग-भग बेहोशी की शय्या बन चुकी थी।

मार्गरिट इस दृश्य के पास आयी, जहाँ शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक वेदना भी समान रूप से कार्य कर रही थी।

"उठिए, हुजूर, और मुझे आपने जो कर्त्तव्य बताया है, उसे पूरा करने दीजिए," उसने गौरव के साथ कहा। हेनरी चूँकि इस प्रदर्शन से विकल हो रहे थे, इसलिये वह घुटनों के बल आधे उठे। "डरिये नहीं, हुजूर," मार्गरिट ने फिर कहा—"चूँकि मेरे गर्व-मात्र को चोट लगी है, इसलिये मैं बलवती हूँ; अगर मेरा हृदय भी व्यथित होता, तो मैं कुछ नहीं कर सकती थी; पर सौभाग्य-वश मेरा हृदय इससे सम्बद्ध नहीं है।"

हेनरी ने सिर उठाया। "श्रीमती ?" उन्होंने कहा।

"और कुछ मत कहिए, श्रीमान," मार्गरिट ने हाथ आगे बढ़ाकर कहा—"नहीं तो मैं समझूँगी कि आप इस अवस्था

में मन-ही-मन कोई हिसाब लगा रहे थे। हम परस्पर भाई-बहन की तरह सहमत हो जायँगे।"

हेनरी उसे फ़ास्यूज़ की ओर ले गया, जिसकी बरफ़-सी ठण्डी उँगलियाँ उसने मार्गरिट के जलते हाथ में रख दीं।

"जाइये, हुज़ूर, जाइये," सम्राज्ञी ने कहा—"शिकार के लिये जाइये। जितने ही अधिक व्यक्तियों को आप अपने साथ ले जायँगे, उतनी ही कम पूछ-ताछ बीमारी के बारे में होगी।"

"पर मैंने तो गुप्त भवन में किसी को नहीं देखा।"

"नहीं हुज़ूर," मार्गरिट ने मुस्कराकर जवाब दिया—"वे समझते हैं कि यहाँ प्लेग की बीमारी है, इसलिये आप अपने को प्रसन्न करने के लिये अन्यत्र चले जाइये।"

"श्रीमती," हेनरी ने कहा—"मैं रवाना होता हूँ और दोनों के लिये शिकार करूँगा।" और फास्यूज़ के कोमल और अचेत शरीर पर अन्तिम दृष्टि डालकर वह बाहर निकल गये। गुप्त भवन में जाकर उन्होंने इस प्रकार सिर हिलाया, मानो वह अपने सिर से बेचैनी का अन्तिम चिह्न झाड़ रहे हों। इसके बाद वह अद्भुत मुस्कराहट के साथ चिको को खोजने चले, जो मुट्ठियाँ बाँधे ऊँघ रहा था।

"ओह, साथी, उठो, उठो—सुबह के दो बज गये हैं।"

"ओह!" चिको ने कहा—"आप मुझे 'साथी' कह रहे हैं, हुज़ूर; आप मुझे ड्यूक-डी-गाइज़ समझते हैं?"

हेनरी ड्यूक-डी-गाइज़ को 'साथी' कहने के अभ्यस्त थे ।

"मैं तुम्हें अपना दोस्त समझता हूं ।" उन्होंने कहा ।

"और आप मुझे क़ैदी भी बनाते हैं,-मुझे जोकि दर-असल राजदूत हूँ ! आप राष्ट्रों के नियम का उल्लङ्घन करते हैं ।"

हेनरी हँसने लगे। चिको, जो बुद्धिमान आदमी था, सम्राट् के साथ खुद भी हँसने लगा ।

"तुम पागल हो । तुम यहाँ से जाना क्यों चाहते थे ? क्या तुम्हारे साथ कोई दुर्व्यवहार हो रहा है ?"

"नहीं, बहुत अच्छा व्यवहार हो रहा है; बहुत ही अच्छा; मेरी अवस्था यहाँ उस बत्तख़ की सी है, जिसे खेत के घेरे के अन्दर पाला जाता है । हरेक आदमी कहता है 'चिको, कैसा अच्छा है !' पर वे उसका पर काटकर उसे बन्द रखते हैं ।"

"चिको, मेरे दोस्त," हेनरी ने सिर हिलाकर कहा—"बिल्कुल मत डरो; तुम मेरे खाने-योग्य काफ़ी मोटे नहीं हो ।"

"हुजूर," चिको ने सिर उठाकर कहा—"आज सुबह-ही-सुबह आप बहुत खुश नजर आते हैं; क्या खबर है ?"

"मैं बताऊँगा; मैं अब शिकार के लिये रवाना होनेवाला हूँ, और इससे मुझे सदा प्रसन्नता होती है । आओ, जल्दी उठो । दोस्त, जल्दी !"

"क्या ! मुझे आपके साथ चलना होगा, हुजूर ?"

"तुम मेरे वृत-लेखक होगे, चिको ।"

"तो क्या मुझे गोलियों के दग़ने की आवाज़ें गिननी पड़ेंगी ?"

"ठीक यही बात है।"

चिको ने सिर हिलाया।

"क्यों, बात क्या है ?" सम्राट् ने पूछा।

"मैंने कभी इतनी उच्च प्रसन्नता बिना चिन्ता के नहीं देखी।"

"वाह !"

"यह तो उस सूर्य की भाँति है, जा—"

" 'जो' क्या ?"

"जो उस अवस्था में दीखता है, जब बारिश, गर्जन और वज्रपात निकट होता है।"

हेनरी ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा, और फिर मुस्करा-कर बोले—"अगर तूफ़ान शुरू हुआ, चिको, तो मेरा अँगरखा काफ़ी बड़ा है, इससे तुम्हारी रक्षा हो जायगी।" इसके बाद वह गुप्त भवन को गये। इधर चिको अपने-आप बड़-बड़ाते हुए कपड़े पहनकर तैयार होने लगा।

"मेरा घोड़ा लाओ !" सम्राट् ने कहा—"और महाशय-डी-मार्नें को सूचना दो कि मैं तैयार हूँ।"

"मार्नें महाशय शिकार के अफ़सर होंगे ?" चिको ने पूछा।

"मार्नें महाशय पर मेरा पूर्ण विश्वास है, चिको," हेनरी